

GOVERNMENT OF INDIA
NATIONAL LIBRARY, CALCUTTA.

Class No.

I.C

Book No.

V.A

8

N. L. 38.

V. 1

MGIPC—SS—6 LNL/56—25-7-56—50,000.

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

गुरुमण्डलग्रन्थमालाया एकादशपुष्पम्

ब्रह्मपुराणम्

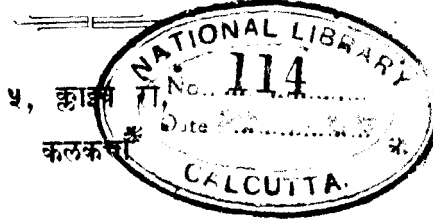


श्रीमन्महर्षिकृष्णद्वैपायनन्यासविरचितम्

तस्य

प्रथमो भागः

श्रीनाथादि गुरुत्रयं गणपतिं पीठत्रयम्भैरवम्,
सिद्धौघं षट्कुत्रयम्पद्भुगं दूतीक्रमं मण्डलम् ।
वीरान्द्व्यष्ट चतुष्कषष्टिं नवकं वीरावलीपञ्चकम्,
श्रीमन्मालिनिमन्त्रराजसहितं वन्दे गुरोर्मण्डलम् ॥



वैक्रमाब्दः

२०१०

प्रथमं संस्करणम्

५०००

ख्रीस्ताब्द

१९५४

मुद्रन — श्री अचय किशोर सिंह,
गोपाल प्रिण्टिंग वर्क्स, १६८१, कार्नवालिस स्ट्रीट, कलकत्ता

१०/१५
५(११)



Surumandal Series No. XI.

THE
Brahma Puranam

—:(o):—

By
MAHARSHI KRISHNADWAIPAYAN VYAS

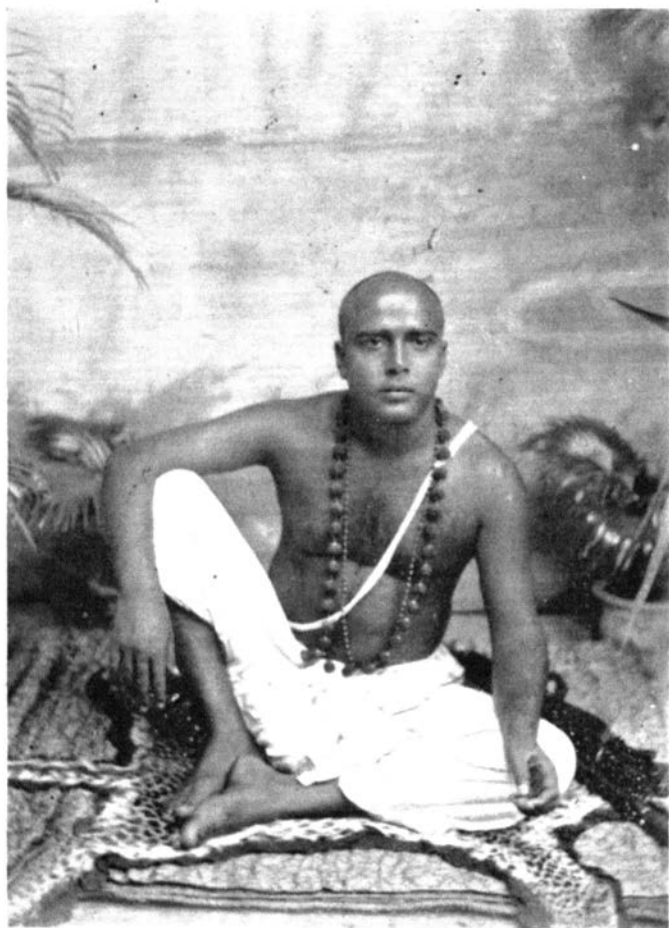
VOLUME I.

**5, Clive Row,
Calcutta,**

Vikram Era
2010

First Edition
5000

Christian Era
1954



आचार्य करुणामय सरस्वती

॥ श्रीः ॥

सादरं समर्पणम्

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः ।

गुरुः साक्षात्परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

श्रीमतां पदवाक्यप्रमाणपाराचारीणधुरीणानां विविधविद्या-
ग्रन्थप्रणयनचणानां प्राच्यप्रतीच्यबहुशास्त्रविचक्षणानां शास्त्र-
जीवनानां निखिलानवद्यगुणगणालंकृतानां समस्तभूमण्डलनिग्रह-
स्थानीकृतप्रतिपक्षजन्मनाम् धर्मधुरन्धराणां जगद्म्बाप्रसादासुख-
विश्वविभ्रुतवैदुष्यजुषाम् विद्वद्धौरेयाणां सर्वतन्त्रस्वतन्त्राणां श्रीद्
गुरुचरणानां सरस्वत्यपराघताराणां दुस्तरविद्यार्णवसमुत्तरज-
प्रकटीकृतमहार्घपरक्रमाणां शिष्यानुग्रहकाङ्क्षया प्रत्यक्ष-
शिष्यावताराणाम् करुणावरुणालयानां बहुप्रान्तीयविद्वन्मण्डल-
मण्डनानाम् विक्रमपुरान्तर्गतटोलवासाइल ग्रामवास्तव्यानां
प्रातःस्मरणीयपुण्यश्लोकविद्यालङ्कारोपाधिकषामावरणात्मजानां
तत्रभवतां आचार्यप्रवराणां श्री करुणामयसरस्वतीमहाभागानां
करकमलयोमिलिन्दायताम् गुरुमण्डल द्वादशपुण्यं

ब्राह्मपुराणमिदम् सादरम्

गुरुर्देव !

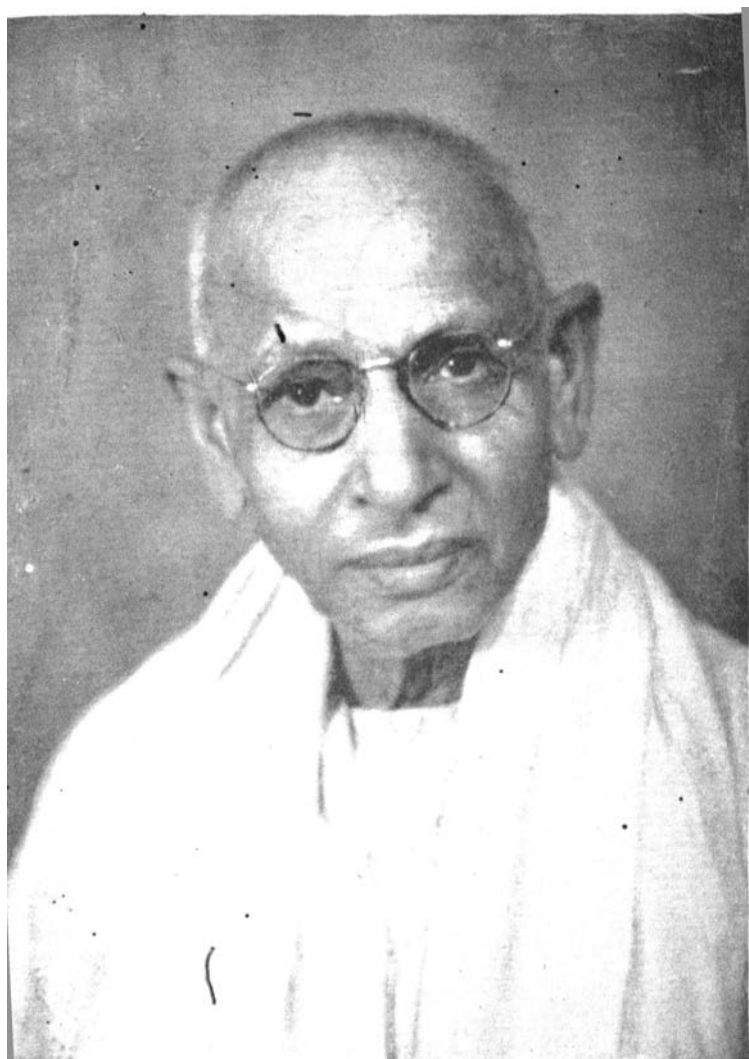
न किञ्चिन्नूतनं वस्तु दातुं निष्ठाऽस्ति मामिका ।

ब्राह्ममेतद्भि भगवन्नर्पितं प्रातयेमुदा ॥

इति

कलिकाता
शिखरात्रिमत्तम्
२०१० वि०

} श्री श्रीगुरुचरणौक शरणस्य
मनसुक्तरायमोरस्य



राजगुरु पं० हरिदत्त शास्त्री
विद्यारत्न, विद्यालङ्कार,

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

पुराण विद्या

मानवीय जिज्ञासा की उत्कट पिपासा को गवेषणा द्वारा शान्त किया जाता है। गवेषणा का आधार है प्राचीन साहित्य, प्राचीन निर्माण तथा पुरातत्त्व सफल जिज्ञासा से देश एवं जाति की प्रायः सब समस्याओं का सुलभ और उपयोगी समाधान हो जाता है। गवेषणा से ही वेदादि सच्छास्त्र तथा कालोपयोगी वैज्ञानिक सिद्धियाँ प्रकाशित और व्यवहृत हुई हैं। प्रखर क्रान्तिकारी जीवन का उद्गम गवेषणा है, तत्त्वानुसन्धान, तत्त्वविनिमय एवं तत्त्व विश्लेषण से कितनी गूढ़ और बलवती कार्योपयोगी शक्तियों का आदान-प्रदान व्यवहार में आ रहा है यह सब गवेषणा का ही फल है।

भारतीय गवेषणा के स्रोत पुराण ग्रन्थ हैं। वेदोंमें आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक, दैव, मानुषी, आसुरी तथा चैतन्य एवं जड़ सब प्रकार की गवेषणा का सूक्ष्मरूप से विधान है। ब्राह्मण भाग और आरण्य भाग में विशेषतः आधिदैविक एवं अधियज्ञ की गवेषणा प्रधानतया दिखाई देती है। पुराणों में सब प्रकार की बौद्धिक, व्यावहारिक, नैतिक, एवं सांस्कृतिक गवेषणाओं को इतिहास और कथानक के स्वरूप में

आकर्षक और बुद्धिगम्य साहित्य में श्री वेदव्यासजी ने विस्तृत किया है। इसमें न केवल स्मृति शास्त्राभिप्रेत, आचार, व्यवहार प्रायश्चित्तादि दैनिक क्रियाओं की गवेषणा मात्र है, अपितु मनुष्य जीवनोपयोगी महती भावनाओं का विस्तृत विधान है। भारतीय ज्ञान गाथा में वेद वेदार्थ का ज्ञान प्राप्त करने में मनुष्यता रूपी रासायनिक निधिकी प्राप्ति बताई गई है। “इतिहासपुराणाभ्यां वेदं समुपवृंहयेत्” महाभारतादि इतिहास तथा अष्टादश पुराणों को समझने से वेद की निधि प्राप्त हो सकती है।

बिना पुराण ग्रन्थों के अध्ययन से तथा निरुक्तादि शास्त्रों के न जानने से वेदार्थ का यथार्थ ज्ञान एवं मानव जिज्ञासा की पूर्ति असम्भव है। तपस्वी कृष्णद्वैपायन वेदव्यासजी ने उत्तर मीमांसा ब्रह्मसूत्र में वेद प्रतिपाद्य अध्यात्म-निष्ठा से त्रिविध सन्ताप से मुक्त होने का सरल उपाय ज्ञाननिष्ठा का प्रतिपादन किया है तथापि ज्ञाननिष्ठा का परिपाक और स्थितप्रज्ञ भूमि का साधन पुराण पाठों का अध्ययन बताया है। प्रत्येक साधन को बुद्धि में सरलता पूर्वक इतिहास कथानक ही ला सकते हैं। यजुर्वेद में “ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत् तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधःकस्य स्विजनम्”। मनुष्यता के विकास का पूरा २ साधन इस मन्त्रमें आया है, परन्तु केवल मन्त्र पाठ और उसके अर्थ ज्ञानमात्र से ही जीवन में उस भावना का अभ्युपगम सञ्चार होना कठिन है अतः पुराणों में जो सत्यनिष्ठा, तदर्थ-निष्ठा, अद्रोह-निष्ठा के इतिहास हरिश्चन्द्र शंखलिखित एवं

च्यवन आदि के उन इतिहासों से मनन करते हुए रोमाञ्चकारी कान्ति एवं अधुधारा पात से जीवन में सत्य एवं करुणा का रासायनिक सञ्चार तत्काल होने लगता है। अतः वेदों में “सत्यं वद धर्मञ्चर” आदि वेद वाक्य बोधित अर्थों का इतिहास कथानक के रूप में चारु और ग्राह्य प्रयास वेदव्यासजी ने पुराण ग्रन्थों में किया है।

मानवीय ऐहिक, एवं पारमार्थिक जिज्ञासाओं की सफलता रूपी कल्प पादप अष्टादश पुराण व्यासजी के द्वारा प्रकट हुए हैं।

यद्यपि पौराणिक शैली प्रधानतया त्रैगुण्य रचना और प्रकृति को विकाशक हैं और प्रत्येक पुराण में गुणत्रय और गुणा-तोत संसार और अव्यक्त ब्रह्म का प्रतिपादन और उस प्रतिपाद्य की प्राप्ति के विधान हैं। तथापि कोई पुराण प्रधानतया सात्विक और कोई राजसिक एवं कोई तामसिक होनेसे ६ होते हैं। नवशक्त्यात्मक और नवशिवात्मक होने से अठारह संख्या होता है वस्तुतः संख्या नौ ही है। परन्तु तन्त्र शास्त्र में शिवशक्त्यात्मक योग से ६ संख्या अष्टादश हो जाती हैं।

इसी सिद्धान्त पर अष्टादश पुराण, अष्टादश प्रधान स्मृतिकार, अठारह पर्व, अष्टादश गीता के अध्याय आदि होते हैं। अठारह पुराणों को गणना इस प्रकार है।

ब्रह्म, पद्म, विष्णु, वायु, भागवत, भविष्य, नारद, मार्कण्डेय, ब्रह्मवैवर्त, अग्नि, लिङ्ग, वराह, वामन, मत्स्य, कूर्म, स्कन्द, गरुड और ब्रह्माण्ड।

निरुक्त में पुराण शब्द का निर्वचन इस प्रकार आया है :—
 “पुरा नवं भवति” जिसकी नवद्युति सबसे प्रथम प्रगट हुई वह पुराण है। इसलिये भगवान् को भी पुराणपुरुष कहते हैं। पुराण का अर्थ जोर्ण नहीं है अपितु आदि विकास का है। गीता में भगवान् की प्रार्थना में आया है “कवि पुराणमनुशासितारं” भगवान् क्रान्तदर्शी तथा पुराण होने से सबके अनुशासक हैं अतः पुराण शब्द से आदि साहित्य का तात्पर्य है। आदि साहित्य वह है जिसमें आदिदेव आत्मज्ञान का प्रबोध हो इस आदि विद्या को मानव जागृति के हेतु एवं जगत्कल्याणार्थ वेदव्यासजी ने इस प्रकार प्रस्तुत किया है—

“सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।

वंशानुचरितञ्चैव पुराणं पञ्चलक्षणम्॥”

प्रधानतया पञ्चलक्षणों को लेकर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चतुर्वर्गों का पुराणों में बड़ी प्रभावपूर्ण शैली में इतिहास कथाओं को लेकर मानव संसार के ज्ञान प्रसारार्थ विश्व में विस्तार किया है। जितना सरलतासे पुराणोंके द्वारा चतुर्वर्ग सिद्धि का साधन मिलेगा उतना अन्यत्र नहीं। व्यासजी ने अष्टादश पुराणों में इतना महान् साहित्य और विज्ञान, कला, योग तथा तपस्या सबका सार परोपकार अर्थात् सब जीवमात्र पर दया और मैत्री करुणा करना पुण्य कहा है। दूसरों को पीड़ा देना पाप है। यह पाप पुण्य की परिभाषा मानव प्रगति को कितने सुचारु रूपसे जीवनचर्या का आधार बनाने के लिये आदेश करती है

और मनुष्यता का कितना सुन्दर मौलिक आचरण बता रही है।

अष्टादश पुराणानां व्यासस्य वचनद्वयम् ।

परोपकारः पुण्याय पापाय परपोइनम् ॥

पुराणोंमें सत्य की गवेषणा पर महाराज सत्यवादी हरिश्चन्द्र के कथानक से ज्ञात हो जायगा कि हरिश्चन्द्र जैसे सत्यव्रत आदर्श राजा ने सत्य की खोज में कितना मूल्य लगाया है। सुकन्या ने देवियों की दृढ़ निष्ठा से अपनी निष्ठा और सत्य से किस अलौकिक चमत्कार की सिद्धि प्राप्त की है यह आप लोगों से छिपा नहीं है। भगवान् रामचन्द्र की जीवन चर्चा में उनके चरित्र की विशेषता और मर्यादा की गवेषणा की कैसी हृदय-ग्राही शिक्षा बताई है। देखिये—जनमत के सामने झुक कर उन्होंने अपनी धर्मपत्नी सती सीता को छोड़ दिया। पैतृक अनुशासन और आज्ञा का आदर्श स्थिर करने के लिये राज्य तक का त्याग किया एवं दुराचार शमन के लिये एक अधितन्त्रवादी अधिनायकका विध्वंस किया। जो आदर्श श्रीराम के चरित्र में है जिस उच्च भूमिका पर समाज के जीवन का नैतिक, सामाजिक, चारित्रिक, धार्मिक, व्यावहारिक, आध्यात्मिक और आधिभौतिक रूप में स्तर प्रतिष्ठित करने का अद्वितीय लक्ष्य है वह संसार की किसी भी सभ्यता में दिखलाई नहीं पड़ता। रामराज्य के शासनिक विवरण को वेदव्यासजी ने इस प्रकार दिया है :-

“न पुत्र मरणं केचिद्रामे राज्यं प्रशासति ।”

इसे ही रामायण में महर्षि वाल्मीकि ने इस प्रकार कहा है :-

न पुत्रमरणं केचिद्द्रक्ष्यन्ति पुरुषाःकचित् ।

नार्यश्चाविधवा नित्यं भविष्यन्ति पतिव्रताः ॥ .

राम के राज्य में किसी प्रकार का उपद्रव नहीं होता था । पुण्य शासन का यही आदर्श है संसार के शासन का राम के शासन के अतिरिक्त क्या और दूसरा उदाहरण कहीं मिल सकेगा ?

मार्कण्डेय के चरित्र से दीर्घायु की गवेषणा एवं दिलीप और कौत्स के विनयाधिकार की खोज से विद्या का चमत्कार और आदि मानवीय उच्च नीच भावनाओं की अनुकरणीय गाथाओं से अनेक गुरु शिष्य का सम्बन्ध तथा अनुशासनमय जीवन की घटनाओं की गवेषणा पुराण साहित्य से प्राप्त होती है । इसी प्रकार मानव जीवन को उदात्त बनाने वाली चारित्र्य और पुरुषार्थ की गवेषणा पुराण ग्रन्थों से प्राप्य है । इतना ही नहीं, आध्यात्मिक और आधिदैविक गवेषणा के अतिरिक्त आधिभौतिकवाद और आधिभौतिक सिद्धान्त अणुशक्ति की गवेषणा की भी प्रचुर सामग्री पुराण ग्रन्थों में है ।

पुराण ग्रन्थों से अणुशक्ति का ज्ञान प्राप्त कर वैशेषिक दर्शन-कार कणाद ने आकाश में निश्चेष्ट परमाणु के परस्पर सम्मिश्रण से सप्त पदार्थों की रचना को मीमांसा का प्रशिक्षण बताया है । इस समय अणुगवेषणा पर भौतिक अनुसन्धान के विशेषज्ञों ने संहारक अणु शक्ति का पता लगाया है परन्तु प्रजनन और पालन अणुशक्ति का अभी उनको ज्ञान नहीं है । वह विज्ञान संस्कृत

साहित्य में मिलता है। इस पर ध्यान देकर यन्त्रों द्वारा अनु-
सन्धानकर प्रत्यक्षीकरण किया जाय तो संसार का महान् उप-
कार होगा। जैसे, “तनीयांसं पांसुं तव चरणपङ्केरुह भवम् विरञ्चिः
संचिन्वन् विरचयति लोकानविकलम्। वहत्येनं शौरिः कथमापि
सहस्रेण शिरसां, हरः संश्रुभ्यैनं भजति भसितोद्भूलनविधिम्
॥ (सौन्दर्यलहरी)

अर्थात् शक्ति जिसे भगवती या महाशक्ति के नाम से
संस्कृत साहित्यमें कहा गया है उस आकाश रूपिणी अव्यक्त
शक्ति से अणुवृष्टि हुई। उन अणुओं में से सर्जनात्मक अणुओं को
संचित कर संसार की रचना की गई। इसे ब्राह्मी अणुशक्ति कहा
है। दूसरे प्रकार के अणुओंको गवेषणा द्वारा संचित कर वैष्णव
अणुसे संसार की पालनात्मक सामग्री बनी है। संहारात्मक अणु
(विस्फोटक पदार्थ) एकत्र कर रौद्र अणुओं के पिण्डीकरण
से संसार के विनाश की शक्ति बनी है। इस क्रम से ब्राह्मी,
वैष्णवी, और रौद्र अणुशक्ति—ये तीन प्रकार के अणु
बताये गये हैं। इस गवेषणाको यदि वर्तमान अणु परीक्षण समिति
आधुनिक साधनों से गम्भीर परीक्षण का प्रयत्न करे तो वर्तमान
काल भी पुराण काल के सदृश वैज्ञानिक महत्त्व को प्राप्त कर
सकता है।

पुराणों में सिद्धपीठ स्थली, भूमण्डलके विभाग, पुण्यसरिता
महानद, सरोवर, भूगर्भवाहिनी नाड़ियां, मरुस्थली और शस्यश्यमम्भ
भूभाग आदिका वर्णन दिया है जिनसे प्रचुर मात्रा में ब्राह्मी,

वैष्णवी और रौद्री आणवी शक्ति के विषय में अनुसन्धान सफल हो सकते हैं। स्कन्द पुराण में एक राजकन्या वर्करी नामकी आई है जिसने शारीरिक निर्माण के कारणों का ज्ञान प्राप्त कर अपने मुखमण्डल को वैज्ञानिक प्रक्रियाओं द्वारा बकरी मुख से इसी देह में सुन्दर मुखमण्डल के रूप में बदल दिया और स्वयं विधुवदना बन गई। इसके आठ भाई और एक बहिन थी। उस राजा ने समस्त देश नव विभागों में विभाजित कर प्रत्येक को एक एक खण्ड दिया था तब से नवखण्ड नामसे भारतवर्ष की ख्याति हुई। उन पृथक् पृथक् खण्डों में अनेक प्रकार के भूगर्भगत धातुओं का वर्णन है। पुराणों में केवल भूमि की ही गवेषणा नहीं है अपितु आकाशचारी ग्रह नक्षत्रों की दूरी और उनकी गति, शिशुमार चक्र, ध्रुवस्थान आदि तथा उत्तरायण, दक्षिणायन ऋतु और मास विज्ञान भी पर्याप्त मात्रा में है। इसलिए पुराण ग्रन्थ भारतवर्ष की बड़ी निधि है।

गुरुमण्डल के संरक्षक मनसुखराय मोरजी ने स्मृति एवं निरुक्त का तथा पुराण ग्रंथों का स्वयं अध्ययन कर मानव जीवन की निधि जानकर गुरुमण्डल के प्रकाशन ग्रन्थों में पुराण प्रकाशन का कार्य तन, मन, धनसे प्रारम्भ कर दिया है। मोरजी के आजकल समाचार पत्रों में हिन्दी और संस्कृत के लेख पढ़ने से ज्ञात होता है कि उनकी उत्तरोत्तर विद्या प्रकाशन की प्रगति अहर्निश तीव्र भावना में है।

श्री मोरजी ने मत्स्य पुराण, अग्नि पुराण और लिङ्ग पुराणको

मनन कर कितनी ही अज्ञात समस्याओं का सुचारु रूप से समाधान कर दिया है। मत्स्य पुराण से श्राद्ध कर्म(अ० १६)का यथार्थ ज्ञान अर्थात् मृतात्मा जिस योनि में हो पुत्रों से शास्त्र विहित श्राद्धान्न उसे उस योनि की तृप्ति के पदार्थ में परिणत होकर मिलता है। अग्नि पुराण और लिङ्ग पुराण से तो उन्होंने मनुष्य हित का बहुत साहित्य एकत्रित किया है। पुराण प्रकाशन में उन्होंने सबसे प्रथम उत्पत्ति स्थिति संहार इस क्रम के अनुसार उत्पत्ति प्राधान्य ब्रह्मपुराण का प्रकाशन अग्रिम रखवा है। संस्कृत साहित्य में आप देखेंगे प्रथम उत्पत्ति प्रकरण तब स्थिति अनन्तर लय। आदि कवि वाल्मीकि के योगवासिष्ठ में यही क्रम आया है'।

ब्रह्मपुराण में सृष्टि क्रम से लेकर वंश वर्णन, कर्तव्य वर्णन और तीर्थवर्णन अध्यात्मनिष्ठा आई है। मोरजी ने अपनी भूमिका में अति सुन्दरता से पुराण मीमांसा का वर्णन किया है। गुरुमण्डल दीन दुर्बल दुःखी जनता के सुख समृद्धि के लिए यथासाध्य कृत प्रयत्न है। इस मण्डल का प्रथम पुष्प श्रमजीवन होने से विचारवती जनता समझ सकती है कि सबसे प्रथम श्रमजीवी कृषक कुलियों की स्थिति पर विचार करना भारत का आदर्श कार्यक्रम सृष्टि के प्रारम्भ से चलता रहा है। श्रमजीवियों की तथा दीनदुःखियों की स्थिति को ठीक कर देना भारतीय धर्म परम्परा से चला आया है। यहाँ से ही भूमण्डल के अन्यान्य देशों ने श्रमजीवियों से अन्याय करने का मार्ग त्याग देना सीखा

हैं। यथा “कामये दुःखतप्तानाम्प्राणिनामासि नाशनम्” (महाभारत)
यह भारत का धर्म एवं पुराणों की शिक्षा है। हम प्राणी मात्र को
आशीर्वाद देने हैं कि इन पुराणों के अध्ययन से आप में दूसरी
जनता के हित के भाव दैनन्दिन समृद्ध होकर संसार मात्र के मित्र
बन्धु विश्वस्त होने के पात्र बनें।

पं० ब्रह्मदत्त शास्त्री एम० ए० जो गुरुमण्डल के शास्त्र प्रका-
शन में श्री मोरजा के आमन्त्रण पर कार्य कर रहे हैं। पण्डित
जी गुरुमण्डल के बड़े धन्यवाद पात्र हैं हम इन्हें आशीर्वाद देते
हैं इनके अक्षुण्ण परिश्रम से जो प्रकाशन कार्य तीव्र गति से हो
रहा है यह कार्य संसार की शान्ति, सुख एवं परस्पर सद्भावना का
दृढ़ स्तम्भ बना रहे।

गीता जयन्ता
२०१०

} हरिदत्त शास्त्री

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

पुराण परिचय

संसार के प्राणी मात्र इष्ट प्राप्ति और अनिष्ट के परिहार के लिए दिन रात प्रयत्नशील हैं। “इष्टप्राप्त्यनिष्टपरिहारयो-रलौकिकमुपायं यो वेदयति स वेदः” इष्ट प्राप्ति और अनिष्ट परिहार का जो अलौकिक उपाय बताता है वह ही वेद है। जो व्यक्ति ज्ञान उपार्जन से संसार की सम्पूर्ण कठिनाइयों को अपनी विमल बुद्धि द्वारा निर्विघ्नता पूर्वक सरल करते जाते हैं वे पुरुषार्थी और सफलजन्मा हैं। गंगाजल की सदा बहने वाली धारा के समान उनके पवित्र ज्ञान की वाणी संसार के प्राणी मात्र का उद्धार करता है।

ज्ञानका क्षेत्र विमल, व्यापक और अखण्ड है। ज्ञान, इच्छा एवं प्रयत्न की त्रिपुटीसे सत्संस्कार एवं सत्फल मिलते हैं जो वास्तवमें गौरव की वस्तु हैं। ज्ञानी वास्तव में धन्य है “विप्राणां ज्ञानतो-ज्यैष्ठ्यम्” (मनु० २।११५) वे लोक संग्रह की भावना से कर्तव्य कर श्रेयः साधन के ज्वलन्त उदाहरण बनते हैं। उन्हें सुख दुःख से पूर्ण इस संसार में ज्ञान रूपी खड्ग से अज्ञान एवं दुःख का नाश कर सदैव सुख प्राप्ति और आत्म लाभ का संतोष मिलता है।

प्राचीन भारतीय परम्परा में निष्कारण वेद एवं वेदाङ्ग का अध्ययन अवश्य कर्तव्यत्वेन बताया गया है “ब्राह्मणेन निष्कारणो-धर्मः षडङ्गो वेदोऽध्येयो ज्ञेयश्च” (महाभाष्य नवान्हिक) ।

भगवान् वेद इस आज्ञा के द्वारा निष्कारण षडङ्ग वेदाध्ययन को कर्तव्य कहते हैं हमारे जीवन के श्वास प्रश्वास के साथ मिली हुई इस निधि का सम्यग्दर्शन पुराण साहित्य में सुन्दरता से प्रतिपादित है ।

भारतीय जीवन से प्रेरणा लेता हो तो भारतीयों के प्राण-स्वरूप श्रुतिस्मृति के शीर्ष स्थानीय पुराणों से लेना चाहिए । अलौकिकपुराण साहित्य सम्पूर्ण ज्ञान का भण्डार है । चौदह विद्यास्थानों में महर्षि याज्ञवल्क्य ने इन्हें प्रथम स्थान दिया है :—देखिये याज्ञवल्क्य स्मृ० प्रथ० अ० । पुराणन्यायमीमांसा-धर्मशास्त्रांगमिश्रिताः । वेदाः स्थानानि विद्यानां धर्मस्य च चतुर्दश ॥ ३ श्लो० ।

मानव जीवन का लक्ष्य परमात्मप्राप्ति है अपने जीवन में निष्काम कर्म द्वारा त्याग वृत्ति को ग्रहण कर स्वमार्गप्रशस्ति का सुलभ साधन पुराण हैं । ये सर्ववेदमय सम्पूर्ण साधन, योग क्रिया सिद्धियाँ तन्त्र, मन्त्र एवं कल्याण सिद्धान्तों से परिपूर्ण हैं ।

सम्पूर्ण शास्त्रों में पुराण साहित्य की गरिमा और प्राचीनता प्रसिद्ध है ।

“पुराणं सर्वशास्त्राणां प्रथमं ब्रह्मणास्मृतम् ।

उत्तमं सर्वलोकानां सर्वज्ञानोपपादकम् ।

त्रिवर्ग साधनं पुण्यं शतकोटिप्रविस्तरम् ॥

(पद्मपुराण प्रथमाध्याय)

भावार्थ :—सम्पूर्ण शास्त्रों में सर्वप्रथम पुराणको ब्रह्माजी ने स्मरण किया यह सब लोकों में उत्तम, सम्पूर्ण ज्ञान का बताने-वाला धर्म, अर्थ, काम का साधन, परम पुण्यमय और शतकोटि विस्तरवाला है (पुराणों से प्रेरणा लेकर अनेकानेक महर्षियों ने नाना शास्त्र, स्मृति, तन्त्र, उपपुराण, ज्योतिष, मीमांसा, न्यायदर्शन, आधुर्वेद और इतिहास आदि एवं साहित्य रूपाओं ने अगणित विषयों के ग्रन्थों की रचना की। अतः नाना शाखा प्रशाखाभेद से शतकोटि विस्तरवाले पुराण हैं)।

इतिहासपुराणञ्च गाथाश्चोपनिषत्तथा।

आथर्वणानि कर्माणि अग्निहोत्रकृतेऽभवन् ॥ (पद्म पु०)

इतिहास, पुराण, नाराशंसी आदि गाथा उपनिषद् और आथर्वणिक कर्म अग्निहोत्र करनेवालों के लिये हुए।

पुराणों के सम्बन्ध में और भी वचन उपलब्ध होते हैं :—

ऋचः सामानि छन्दांसि पुराणं यजुषा सह।

उच्छिष्टाज्जिरे सर्वं दिवि देवादिषश्चिताः ॥

(अथर्ववेद ११।७।२४)

भाष्यम् :—ऋचः पादवद्धा मन्त्राः सामानि गीत विशिष्टा मन्त्राः। छन्दांसि गायत्र्युष्णिगादीनि चतुरक्षराधिकानि सप्तसङ्ख्याकानि पुराणं पुरातनवृत्तान्तकथनरूपमाख्यानम् यजुषा यजुर्मन्त्रेण सह। उच्छिष्टात्—उच्छिष्यमाणात् ब्रह्मणः सकाशात् जिह्वे आविर्भूताः।

यह से यजुर्वेद के साथ ऋक्, साम, छन्द और पुराण हुए ।
सुगोपनीयस्वेदेषु पुराणेषु च दुर्लभम्—(ब्रह्म वै० ३ अध्याय)
वेदों में सुगोपनीय और पुराणों में दुर्लभतत्त्व हैं ।

वेदेषु च पुराणेषु हरिः सर्वत्र गीयते । (मत्स्य०)

वेदों और पुराणों में भगवान् हरि की प्रशस्ति सर्वत्र गाई
गई है इस से स्पष्ट है कि वेद और पुराणों का तादात्म्य है ।

शतपथ ब्राह्मण का प्रमाण है :—

स यथाद्वैधाग्नेरभ्याहितात्पृथग् धूमा विनिश्चरन्त्येवं वा
अरेऽस्य महतो भूतस्य निःश्वसितमेतद्रूग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदो-
ऽथर्वाङ्गिरस इतिहासः पुराणं विद्या उपनिषदः श्लोकाः सूत्राण्यनु
व्याख्यानानि व्याख्यानान्यस्यैतानि सर्वाणि निःश्वसितानि ।

(बृहदारण्यक उपनिषद् २।४।१०)

यथाऽप्रयत्नेनैव पुरुष निःश्वासो भवत्येवमेव । भगवन्निः-
श्वास के रूप में भगवत्स्वरूप प्रतिपादन विराट् विश्वरूपदर्शन
पुराणों की विशेषता है यही पुराण और वेदों की एकवाक्यता है ।

शतपथ ब्राह्मण १३ अ० ४।३।६ में पुराणं वेदः सोऽयमिति
“किञ्चित्पुराणमाचक्षातैवमेवाध्वर्युः” कह कर वेद ही पुराण है
यह प्रतिपादित है । आश्वलायन गृह्यसूत्र में पुराणों का स्वाध्याय
अवश्य कर्तव्यत्वेन निरूपण किया है ।

आशान्तरात्रादायुष्मतां कथाः कीर्तयन्तो माङ्गल्यानातिहास
पुराणानीत्याख्यापयमानस्तं ग्रहणम् ।” ४।६।

मनुजी ने विशेषरूप से उसे स्पष्ट किया है :—

स्वाध्यायं श्रावयेत् पित्र्ये धर्मशास्त्राणि चैव हि ।

आख्यानानोतिहासांश्च पुराणानिखिलानि च ॥

३ अध्याय—२३२

पिण्डुद्देश्यक स्वाध्याय कर धर्मशास्त्र, पुराण, इतिहास और सम्पूर्ण आख्यानो को इस अवसर पर सुनाओ । पुराणों का कथन वेद के समान ही अप्रतर्क्य है :—

पुराणो मानवोधर्मः साङ्गोवेदश्चिकित्सकः ।

आद्याः सिद्धानि चत्वारि न कर्तव्यानि हेतुभिः ॥

ब्रह्मोक्तयाज्ञयस्क्य संहिता १—४७ ।

पुराण, मानव धर्म, साङ्ग वेद, चिकित्सा शास्त्र ये आदि काल से सिद्ध हैं इन्हें कुतर्कों से दूषित नहीं करना चाहिए ।

पुराण वेदों के समानही प्राचीन है ।

पुराणं सर्वं शास्त्राणां प्रथमं ब्रह्मणा स्मृतम् ।

अनन्तरञ्च वक्त्रेभ्यो वेदास्तस्य विनिर्गताः ॥

मत्स्यपुराण ५३—१

भारतीय संस्कृति के रक्षक के रूप में इनका स्वाध्याय मनन और उपदेशानुसार आचरण सदा ही इष्ट फल को देनेवाला है ।

वेदाश्च सेतिहासाश्च पुराणा देवतागणाः ।

भूधराः सागराः सर्वे पूजनीयाः समन्ततः ॥ पद्मपुराण ।

वेद, पुराण, इतिहास, देवतागण, पर्वत और सागर इनको सदा ही पूजा करनी चाहिये ।

याज्ञवल्क्य स्मृति १ अध्याय ४५ श्लोक में आया है :—

वाक्कोवाक्यं पुराणञ्च नाराशंसीञ्च गाथिकाः ।

इतिहासांस्तथा विद्यां योऽधीते शक्तितोऽन्वहम् ॥

प्रति दिन वाक्योवाक्य आपस में वार्तालाप पुराण, नाराशंसी गाथा, इतिहास और अन्य सभी विद्याओंका यथाशक्ति स्वाध्याय करना चाहिये । (इस से यह स्पष्ट प्रगट होता है कि प्रथम ज्ञानार्जन में ऊहापोहमूलक वार्तालापसे स्थिर सिद्धान्तपुराणका प्रतिपादन होता है नाराशंसी गाथा, यज्ञविधान, इतिहास और विद्याओं का तदनन्तर निरूपण है जो भारतीय साहित्य परम्परा में अद्वितीय है) संक्षेप में पुराण का महत्त्व अनुलनीय है :—

इदं पुराणं परमं पुण्यं वेदैश्च सम्मितम् ।

नानाश्रुतिसमायुक्तं नास्तिकाय न कीर्तयेत् ॥

मत्स्य पुराण १४७-८५

यह पुराण परमपुण्यमय, वेदार्थयुक्त, नानाश्रुतिसमवेत है, इसे नास्तिक लोगों को न सुनावे ।

ऋणुष्वादि पुराणेषु वेदैभ्यश्च यथाश्रुतम् । मत्स्य २६३—१४

आदि पुराणों में और वेदों में अलौकिकतत्त्व प्रतिपादित है ।

इस प्रकार यह सिद्ध हो गया कि पुराण चतुर्दिक् प्राण हैं प्रथम परमपिता परमात्मा के निःश्वास भूत प्राण हैं, वेदों के ये प्राण हैं । सम्पूर्ण प्राणियों के उद्धारार्थ इनका आविर्भाव हुआ इसलिये सारे प्राणियों के प्राण हैं और सम्पूर्ण ज्ञान का मन्थन रूप सार होने से उसके भी प्राण ये पुराण हैं ।

ज्ञान, कर्म, अभ्यास एवं ध्यान सभीका संक्षेपमें बहुत महत्त्वपूर्ण वर्णन इनमें है। जीवन के जितने सैद्धान्तिक एवं यथार्थवादी दृष्टिकोण हैं उनका पुराण विशदीकरण कर संसार का महान् उपकार साधन किया है।

जीवन की दुविधा कष्ट एवं दुःखों को रोकने का सरल उपाय बताने वाले पुराण हैं इनसे आबालवृद्ध शूद्रादि नर नारी समान रूप से लाभ उठा सकते हैं। भवरोग का यह अमोघ रसायन है। सम्पूर्ण समस्याओं को सरल उपाय से सुलभानेवाली यह अद्वितीय समाधानकारक ब्रह्मराशि भगवान् कृष्ण द्वैपायन व्यासदेव की सहज कृपा का फल है। संसार ताप से प्रताड़ित लोगों को सान्त्वना, अन्धकार में पड़े हुए को प्रकाश, भूले भटकों को सन्मार्ग, निराश लोगों को आशा की ज्योति देने वाले, शोक उद्वेग से पीड़ित जनों को उल्लासमय प्रसाद, कर्तव्य विमुख को कर्तव्यज्ञान, पापियों के पाप नाश का सहज साधन, राजनीति विशारदों को नीति शिक्षा, निष्काम कर्मियों को साधन उपदेश, भक्तों को भक्ति का मार्ग और ज्ञानियों को दिव्य मार्ग का प्रकाश ये पुराण देते हैं।

संक्षेप में, जो जिज्ञासु जिस उच्च लक्ष्य से इनमें श्रद्धा विश्वास पूर्वक मनोयोग देकर स्वाध्याय करता है वह एक चतुर गोताखोर के समान अनन्त राशि की खान समुद्र में से अमूल्य रत्न निकाल कर अपना उद्देश्य पूर्ण कर लेता है वैसे ही यथेच्छज्ञान की तृप्ति और लोक कल्याण की भावना इन महापुराणों की आधृत्ति और

अमूल्य शिक्षाओं के आवरण से उद्बुद्ध हो जाती है। यदि अतीत के गौरव को प्राण बतलाते हैं तो वर्तमान के निर्माण और भविष्य की कृति के लिये उनका महत्त्व कम नहीं है। सम्पूर्ण प्राणियों को शाश्वत सुख और शान्ति का वरदान देकर विपत्तिग्रस्त, कलह क्लेश से दुःखित, सन्देह एवं अविश्वास की सशक्त पाश में जकड़े प्राणियों को मुक्ति सन्देश देते हैं। भवरोग से ग्रस्त जनता के उद्धारार्थ पुराण ही एक मात्र शरण है।

साधना के मार्गों में ज्ञान, कर्म, भक्ति और उनके विविध भेदों के साथ कठिनता से प्राप्य और सुलभता से गम्य कई लक्ष्य भेदोपभेदों के साथ बने हैं उन सबका निबन्धन पुराणों में है। इसके साथ ही सभी श्रेणी एवं वर्ग के व्यक्तियों के लिये उनके अधिकारानुसार अलग २ जीवन में उतारने योग्य सन्मार्ग साधन, उनमें आने वाले विघ्नों और उनसे छुटकारा पाने का बड़ा ही सुन्दर और रोचक उपाय प्रतिपादित किया गया है। जन्म और जगत् के परिपूर्ण स्वरूप की प्राप्ति अभ्युदय और निःश्रेयस् की सिद्धि की प्राप्ति में जीव मात्र का कल्याण साधन कर मानव आगे बढ़ कर परमात्मतत्त्व का योग्य अधिकारी कैसे बन सकता है इन सब का सुन्दर साधनों और शाश्वत चिरन्तन सत्य उपदेशों से परिपूर्ण इतिहास से युक्त विषयों का पुराणों में विशद निरूपण है।

पुराण में प्रतिपादित सर्ग, प्रसि सर्ग, वंश, मन्वन्तर एवं वंशानुचरित इस पञ्चाङ्ग से सृष्टि में अनादि काल से चली आते

इस अविच्छिन्न क्रम का हृदयङ्गम ज्ञानबद्धक आस्वाप्त उपलब्ध होता है।

सर्गोऽस्याथ विसर्गश्च वृत्तीरक्षान्तराणि च ।
 वंशो वंशानुचरितं संस्था हेतुरपाश्रयः ।
 दशमिलक्षणैर्युक्तं पुराणं तद्विदो विदुः । (भागवत)
 ब्रह्म विष्णवर्करुद्राणां माहात्म्यं भुवनस्य च ।
 ससंहारप्रदानाश्च पुराणे पञ्चवर्णके
 धर्मश्चार्थश्च कामश्च मोक्षश्चैवात्र कीर्त्यते ।
 सर्वेष्वपि पुराणेषु तद्विरुद्धञ्च यत्फलम् ।
 सात्विकेषु पुराणेषु माहात्म्यमधिकं हरैः ।
 राजसेषु च माहात्म्यमधिकं ब्रह्मणो विदुः ।
 तद्वदग्नेश्च माहात्म्यं तामसेषु शिवस्य च ।
 सङ्कीर्णेषु सरम्बतयाः पितृणाञ्च निगद्यते ।
 अष्टादश पुराणानि कृत्वा सत्यवतीसुतः । (त्र० पुराण)

आचार्य :—

सर्ग, विसर्ग, वृत्ति, रक्षा, अनन्तर, वंश, वंशानुचरित, संस्था, हेतु और अपाश्रय इन दश लक्षणों से युक्त को पुराण जाननेवाले पुराण नाम से कहते हैं ।

इन सर्ग विसर्ग आदि में ब्रह्मा विष्णु, सूर्य और रुद्र देवता के माहात्म्य का और भुवन कोष का अधिकल वर्णन दिया गया है धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चतुर्विध पुरुषार्थों का निरूपण है और इन पुरुषार्थों के बाधक तत्त्वों का सम्यक्तया प्रतिपादन है ।

ये पुराण सात्त्विक, राजस और तामस भेद से तीन प्रकार के हैं। सात्त्विक में विशेष भगवान् हरि का, राजस में ब्रह्माजी का और तामस पुराणोंमें शिव और अग्नि का माहात्म्य वर्णन है। पितरों और सरस्वती का सर्वत्र ही वर्णन मिलता है। अठारह पुराणों के रचयिता भगवान् व्यासजी हैं।

पुराण मानव के ऐहिक आमुष्मिक लोककल्याण साधन के सच्चे मार्गदर्शक हैं। एक ओर जहां सृष्टि की नियमावली का यथार्थ परिदर्शन करने के लिये श्रुति का अनुगमन करती हुई स्मृतियां हमारे लिये विधान निर्माण करती हैं तो अनादिकाल से जीवन में होती आई अपूर्णता के फलस्वरूप भूलों से मानव को बचाने के लिये पुराण सफल ज्ञानचक्र हैं। इनमें आख्यान, उपाख्यानों द्वारा मानव जाति का मार्ग प्रशस्त करने के लिये व्यासजी की त्रिकाल अबाधित सत्य की अनुभूति पूर्णज्ञान के फलित सत्य इन पुराणों से संसार का कितना महान् उपकार हुआ है यह बताने की आवश्यकता नहीं है।

सुतराम्, भारतीय जीवन में पुराणों का महत्त्व निर्विवाद है यह भगवन्निःश्वास रूप वेदों के समान ही प्राचीन तथापि चिरनवीन और चिरन्तन सत्य की अनुभूतियों का चरम उत्कर्ष बताने वाले सिद्धान्त ग्रन्थ हैं—पुरे अग्रे अनति गच्छति इति पुराणम्। मानव को मार्ग दर्शन करने के लिये आगे चलाने वाले साहित्य का नाम पुराण अन्वर्थ है।

ब्रह्माण्ड पुराण में लिखा है :—

यो विद्याश्चतुरो वेदान् साङ्गोपनिषदो द्विजः ।
न चेत्पुराणं समं विद्यान्नेव स स्याद्विचक्षणः ॥
यस्मात्पुराह्वनकीदं पुराणं तेन तत्स्मृतम् ।
निरुक्तमस्य यो वेद सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥

अध्याय—१

भावार्थ :—

जो द्विज चारों वेदों को जानता है और साङ्गोपाङ्ग विद्याओं में पारङ्गत है यदि पुराण का उसे ज्ञान नहीं तो वह विद्वान् नहीं हो सकता । सर्वप्रथम ज्ञान का प्रकाश करने से इनकी पुराण संज्ञा हुई । इसका जो निर्वचन जानते हैं वे सब पापों से छूट जाते हैं ।

अनादि नित्य और शाश्वत होने से अनादि चिरन्तन शाश्वत तत्त्व का ही प्रतिपादन इनकी विशेषता है । सर्व साधारण की चतुर्दिक् विकसित उन्नति और आभ्युदयिक निःश्रेयस् साधन सम्पत्ति के ये अक्षय भण्डार हैं । आप की जैसी रुचि, श्रद्धा एवं निष्ठा होगी वैसी ही रत्न निधि आपको प्राप्त होगी । ज्ञान, वैराग्य, भक्ति, प्रेम, श्रद्धा, विश्वास, यज्ञ, दान, तप, संयम, यम, नियम, सेवा, भूतदया, वर्णधर्म, आश्रम धर्म, राज धर्म, मानवधर्म, व्यक्ति धर्म, स्त्री धर्म, सदान्वार और नाना श्रेणियों के पुरुषों के विभिन्न कल्याणकारी उपदेश सुन्दर सरल और उपादेय भाषा में

इनमें लिखे गये हैं । इससे ऊपर पुरुष, प्रकृति, महत्त्व, प्रकृति, विरुति, भूगोल, खगोल, ऋषि, मुनि वंशों का वर्णन, राजवंश तथा स्थावर जङ्गम सृष्टि का बहुत सुन्दर रीति से सूक्ष्म विवेचन किया गया है ।

इस आदिपुराण ब्रह्मपुराण को आप महानुभावों के कर-कमलों में उपहार प्रस्तुत करते हुए अपार आनन्द होता है ऊपर प्रतिपादित ये सभी विषय आख्यान रूपमें इस महापुराण में आये हैं ।

मत्स्य महापुराण की ५३ वीं अध्याय में पुराणों का परिगणन करते हुए जो विवरण दिया गया है वह विशेष रूपसे प्रयोजनीय है अतः उसका आवश्यक अंश यहां प्रस्तुत किया जाता है :—

पुराणानि दशाष्टौ च साम्प्रतं तदिहोच्यते ।

नामतस्तानि वक्ष्यामि शृणुष्वं मुनिसत्तमाः ।

ब्रह्मणामिहितं पूर्वं यावन्मात्रं मरीचये ।

ब्राह्मन्त्रिंश साहस्रं पुराणं परिकीर्त्यते ।

एतदेव यदापद्मभूद्वैरण्मयं जगत् ।

तद्वृत्तान्ताश्रयं तद्वत् पाद्ममित्युच्यते बुधैः ।

पाद्मं तत्पञ्चपञ्चाशत्सहस्राणीह कथ्यते ।

बाराह कल्प वृत्तान्तमधिकृत्य पराशरः ।

यत्प्राह धर्मानखिलान् तद्युक्तं वैष्णवम्बिदुः ।

त्रयोविंशति साहस्रं तत्प्रमाणं बिदुर्बुधाः ।

श्वेतकल्प प्रसङ्गेन धर्मान् वायुविहासवीम् ।

यत्र तद्वायवीयं स्यात् ख्यमाहात्म्यसंयुतम् ।
 चतुर्विंशत्सहस्राणि पुराणं तदिहोच्यते ।
 यत्राधि कृत्य गायत्रीं वर्ण्यते धर्मविस्तरः ।
 वृत्रासुरवधोपेतं तद्भागवतमुच्यते ।
 सारस्वतस्य कल्पस्य मध्ये ये स्युर्नरोत्तमाः ।
 तद् वृत्तान्तोद्भवलोके तद्भागवतमुच्यते ।
 अष्टादश सहस्राणि पुराणं तत्प्रचक्षते ।
 यत्राह नारदोधर्मान् बृहत्कल्पाश्रयाणि च ।
 पञ्चविंशत्सहस्राणि नारदीयं तदुच्यते ।
 यत्राधिकृत्य शकुनीन् धर्माधर्मविचारणा ।
 व्याख्याता वै मुनिप्रश्ने मुनिभिर्धर्मचारिभिः ।
 मार्कण्डेयेन कथितं तत्सर्वं विस्तरैः तु ।
 पुराणं नवसाहस्रं मार्कण्डेयमिहोच्यते ।
 यत्तदीशानकं कल्पं वृत्तान्तमधिकृत्य च ।
 वशिष्ठायाग्निना प्रोक्तमाग्नेयं तत्प्रचक्षते ।
 तच्च षोडशसाहस्रं सर्वकृतुफलप्रदम् ।
 यत्राधिकृत्य माहात्म्यमादित्यस्य चतुर्मुखः ।
 अघोरकल्पवृत्तान्तप्रसङ्गेन जगत्स्थितम् ।
 मनवे कथयामास भूत ग्रामस्य लक्षणम् ।
 चतुर्दश सहस्राणि तथा पञ्चशतानि च ।
 भविष्य चरित्राण्यं भविष्यन्तदिहोच्यते ॥
 रथन्तरस्य कल्पस्य वृत्तान्तमधिकृत्य च ।

सावर्णिर्नानारदाय कृष्णमाहात्म्यमुत्तमम् ॥

यत्र ब्रह्म घराहस्य चोदन्तं वर्णितं मुहुः ।

तदष्टादश साहस्रं ब्रह्मवैवर्त्तमुच्यते ॥

यत्राग्नि लिङ्ग मध्यस्थः प्राहदेवो महेश्वरः ।

धर्मार्थकाममोक्षार्थमाग्नेयमधिकृत्य च ॥

कल्पान्तेलैङ्गमित्युक्तं पुराणं ब्रह्मणा स्वयम् ।

तदेकादश साहस्रम् ।

महावराहस्य पुनर्माहात्म्यमधिकृत्य च ।

विष्णुना मिहितं श्रोण्यै तद्वाराहमिहोच्यते ॥

मानवस्य प्रसङ्गेन कल्पस्य मुनिसत्तमाः ।

चतुर्विंशत्सहस्राणि तत्पुराणमिहोच्यते ।

यत्र माहेश्वरान्धर्मानधिकृत्य च षण्मुखः ।

कल्पे तत्पुरुषवृत्तं चरितरूपवृत्तं हितम् ।

स्कन्दनाम पुराणञ्च ह्येकाशोतिनिगद्यते ।

सहस्राणि शतञ्चैकमिति मर्त्ये युगद्यते ।

त्रिविक्रमस्य माहात्म्यमधिकृत्य चतुर्मुखः ।

त्रिवर्गमभ्यधात्तच्च वामनं परिकीर्तितम् ।

पुराणं दशसाहस्रं कूर्म कल्पानुगं शिवम् ।

यत्र धर्मार्थकामानां मोक्षस्य च रसातले ।

माहात्म्यं कथयामास कूर्मरूपी जनार्दनः ।

इन्द्रद्युम्न प्रसङ्गेन ऋषिभ्यः शक्रसन्निधौ ।

अष्टादश सहस्राणि लक्ष्मी कल्पानुषङ्गिकम् ।

श्रुतीनां यत्र कल्पादौ प्रवृत्त्यर्थं जनार्दनः ।
 मत्स्यरूपेण मनवे नरसिंहोपवर्णनम् ।
 अधिकृत्याब्रवीत्सप्त कल्पवृक्षं मुनीश्वराः ।
 तन्मात्स्यमिति जानीध्वं सहस्राणि चतुर्दश ।
 यदा च गारुडेकल्पे विश्वाण्डादुगुरुङ्गोद्भवम् ।
 अधिकृत्याब्रवीत्कृष्णो गारुडं तदिहोच्यते ।
 तदष्टादशकञ्चैव सहस्राणीहपठ्यते ।
 ब्रह्मा ब्रह्माण्डमाहात्म्यमधिकृत्याब्रवीत्पुनः ।
 तच्च द्वादश साहस्रं ब्रह्माण्डं द्विशताधिकम् ।
 भविष्याणाञ्च कल्पानां श्रूयते यत्र विस्तरः ।
 तद्ब्रह्माण्डपुराणञ्च ब्रह्मणा समुदाहृतम् ।
 चतुर्लक्षमिदं प्रोक्तं व्यासेनाद्भुत कर्मणा ।
 उपभेदान्प्रवक्ष्यामि लोके ये सम्प्रतिष्ठिताः ।
 पाद्मे पुराणे तत्रोक्तं नरसिंहोपवर्णनम् ।
 तच्चाष्टादश साहस्रं नारसिंहमिहोच्यते ।
 नन्दाया यत्र माहात्म्यं कार्तिकेयेन वर्ण्यते ।
 नन्दी पुराणं तल्लोकै रारुयात्तमितिकीर्त्यते ।
 यत्र शाम्भं पुरस्कृत्य भविष्येऽपिकथानकम् ।
 प्रोच्यते तत्पुनर्लोके शाम्भमेतन्मुनिव्रताः ।
 पुरातनस्य कल्पस्य पुराणानि विदुर्बुधाः ।

उपरि वर्णित विवरण में ब्रह्म, पद्म, विष्णु, शिव,
 (वायु) देवीभागवत, (भागवत) भविष्य, नारद, मार्कण्डेय,

ब्रह्मवैवर्त, अग्नि, लिङ्ग, वराह, वामन, मत्स्य, कूर्म, स्कन्द, गरुड़ और ब्रह्माण्ड इन अठारह पुराणों में आये हुए उनके प्रतिपाद्य विषयों का संक्षेप में प्रतिपादन है।

महा पुराणा के सम्बन्ध में विभिन्न मत हैं पाठकों की सेवा में वामन पुराण का एक प्रचलित श्लोक प्रस्तुत है जिसमें आद्याक्षर से अठारहों पुराणों का पूर्ण ज्ञान हो सकता है।

मद्वयं भद्वयंचैव ब्रत्रयं च चतुष्टयम्

अनापलिङ्गं कूस्कानि पुराणानि पृथक् पृथक्।

म द्वयम् = मार्कण्डेय एवं मत्स्य।

भ द्वयम् = भागवत एवं भविष्य।

वृ त्रयम् = ब्रह्म, ब्रह्माण्ड एवं ब्रह्म वैवर्त।

च चतुष्टयम् = विष्णु, वराह, वामन तथा वायु।

अ = अग्नि। ना = नारद, प = पद्म।

लि = लिङ्ग। ग = गरुड़। कू = कूर्म और स्क = स्कन्द।

कुछ विद्वद्बृन्द महा पुराण, उप पुराण, अतिपुराण और पुराण भेद से अठारह अठारह संख्या मानते हैं। उनके अनुसार महा पुराण ये हैं :—

ब्रह्म, पद्म, शिव, विष्णु, भागवत, नारद, मार्कण्डेय, अग्नि, भविष्य, ब्रह्मवैवर्त, लिङ्ग, वराह, स्कन्द, वामन, कूर्म, मत्स्य, गरुड़ और ब्रह्माण्ड।

उप पुराण :— भागवत, माहेश्वर, ब्रह्माण्ड, आवित्य, पराशर, सौर, नन्दिकेश्वर, साम्ब, कालिका, वासुध, औशनस्,

ब्रह्माव, कापिल, दुर्वासस्, शिव धर्म, बृहदारदीय, नारसिंह, सनत्कुमार ।

अति पुराण :— कार्तव, ऋजु, आदि, मुद्गगल, पशुपति, गणेश, सौर, परानन्द, बृहत्सर्म, महाभागवत, देवी, कल्कि, भार्गव, वशिष्ठ, कौर्म, गर्ग, चण्डी और लक्ष्मी ।

पुराण :— बृहद्विष्णु, शिव उत्तर खण्ड, लघु बृहदारदीय, मार्कण्डेय, बह्वि, भविष्योत्तर, वराह, स्कन्द, वामन, बृहद्वामन, बृहन्मत्स्य, खलपमत्स्य, लघु वैवर्त और ५ प्रकार के भविष्य ।

मेरी तुच्छ बुद्धि में पुराणों के सम्बन्ध में इस प्रकार के क्रम का जं. भी रूप रहे फिर भी इतना स्पष्ट है कि न्यूनाधिक रूपमें एक या दूसरी सूचीमें सभी पुराणों का इसमें समावेश होगया है ।

समुद्र मन्थन के समय चतुर्दश रत्नों की प्राप्ति उन महामहिम देवासुरों को हुई यह प्रसिद्ध है परन्तु इन पुराणों के अवगाहन से बहुमूल्य असंख्य रत्नों की प्राप्ति होती है यह ध्रुव सत्य है । पुराणों में माहात्म्य कथाओं के प्रसङ्ग में नाना इतिहास और आख्यान उपलब्ध हैं जो महत्त्व पूर्ण हैं । प्रसङ्गानुसार, इतना अधिक व्यापक विषयों का समावेश हुआ है कि ध्यान पूर्वक स्वाध्याय करने से एवं उन्हें आचरण का रूप देने से आदर्श जीवन बनाने की प्रत्यक्ष प्रेरणा मिलती है इस महान् ज्ञान बिधि को विश्वम्भर का शब्दकोश (Encyclopedia) कहें तो कोई अत्युक्ति नहीं । पुराणों की विषय सूची इतनी व्यापक है कि उन्हें यहां देना इस छोटे से लेख के कलेवर में सम्भव

नहीं है। हाँ, हम नाना पुराणों को मुख्य २ विषयानुक्रमणिका को तत्तत्स्थानों से उद्धृत कर अलग से पाठक महानुभावों के अबलोकनार्थ दे रहे हैं। आशा है, इसको अधिकल पढ़ कर विद्वद्बृन्द विषय व्यापकता से उत्साहित होकर सम्पूर्ण पुराण साहित्य के अध्ययन से संसार का हित सम्पादन करेंगे।

अधिकन्तु, तन्त्र मन्त्र इन्हीं के अन्तर्गत हैं। वैद्यक शास्त्र के सभी विषय गरुड़ पुराण अग्नि पुराणादि सभी मुख्य पुराणों में पाये जाते हैं। दर्शन, विज्ञान, राजनीति तो सभी काक्रमबद्ध प्रतिपादित विषय हैं। आध्यात्मिक साधना के लिये स्तोत्र, कवच, एवं सहस्रनाम आदि पुराणों में उपलब्ध हैं। वेदों एवं पुराणों में प्रकृति (पृथ्वी) को गाया है। वेदों में सूक्ष्मरूप से (नारा-शंसी गाथा-यज्ञगाथा) का निरूपण किया है तथा पुराणों में अधिष्ठात्री देवी प्रकृतीश्वरी का विशदीकरण किया है, एवं महर्षियों ने स्मृतियों में इसी आधार पर व्यवहार मार्ग की प्रसस्ति गाई है। वेद, वेदाङ्ग, पुराण एवं स्मृतियों को धर्म-शास्त्र कहा है। ये शाश्वत सत्य हैं। इनके निरन्तर श्रवण मनन एवं निधिध्यासन करने से अपना कल्याण है।

इसके साथ साथ जो विवरण भू वृत्तान्त के सम्बन्ध में आया है उसमें तीर्थ प्रधान वर्णन होने से गवेषणा और अनु-सन्धान कर्ता महानुभावों को पूर्ण सहायता मिल सकती है।

सम्पूर्ण पुराणों में प्रथम यह ब्रह्म पुराण आदिकल्प का है इसीलिये सुमेरु स्थानीय है। आज की विघटित दुरवस्थाओं

का संकेत युगधर्मों के प्रकरणों के पढ़ने से दर्पण में प्रतिबिम्बित दर्शक बिम्ब के समान स्पष्ट ज्ञान होता है ।

इसके साथ की लगी विषयसूचि का निर्माण इसी उद्देश्य से परिश्रम पूर्वक किया गया है कि विद्वज्जनों की तुलना में संस्कृत के प्रति प्रेम रखते हुए भी संस्कृत भाषा का लाभ न उठाने वाले पुराण प्रेमी महानुभाव इसके विषय ज्ञान से वञ्चित न रहें बल्कि इस सूचि से प्रभावित होकर अधिक संस्कृत की ओर आकर्षित हो अपने संस्कृत के अध्ययन को बढ़ा कर कृतकार्य हों ।

अपने गत दर्शकों के दिन प्रति दिन के श्रुति स्मृति एवं पुराणों के स्वाध्याय से मुझे जीवन की गरिमा बढ़ानेवाले तत्त्वों और उसे उच्चस्तर पर ले जाने वाले क्रिया कलापों को हृदयङ्गम करने का सुअवसर मिला है । मैं इनका स्वाध्याय करता हुआ अघाता नहीं हूँ जब जब अपने स्वाध्याय कालमें मैं इन ग्रन्थरत्नों को देखता हूँ तो चिरन्तन तथ्य सार्वजनीन लोककल्याण के लिये प्रतिपादित इनके विषय मुझे अधिकाधिक आकर्षित कर लेते हैं । मैं इन्हें हृदय से लगा लेता हूँ । फिर दुःख भी होता है कि भारत की इतनी अमूल्य निधि भारतीयों के पास रहते दैन्य, अभाव, और दुर्दशा, कलह आदि जहां समूल नष्ट होने चाहिए वहां वे अपनी जड़ हमारे समाज में इतनी गहरी जमा चुके हैं कि इनसे छुटकारा कठिन सा हो रहा है । मेरा बूढ़ विश्वास है कि सृष्टि के इन प्राणों का व्यापक रूप में प्रचार होने से ही समूल बुराईयां नष्ट हो सकती हैं ।

मेरी सभी महानुभावों से यह विनम्र प्रार्थना है कि इनमें प्रतिपादित वस्तु तत्त्व को हृदय की विशालता व्यापक दृष्टिकोण और सत्य शिष्य तथा सुन्दर की रचना के उद्देश्य से अनुशीलन करने का प्रयत्न करें इसी में हम लाभान्वित होकर अपना और अपने आत्मीय जन एवं सृष्टि का कल्याण कर सकते हैं ।

अपने जीवन की अनुभूतियों को साकार रूप देनेवाली महती ज्ञान देवता को पूजा अहनिश स्वाध्यायके रूप में हो (स्वाध्या-यान्मा प्रमदः) इसी लक्ष्य से गुरुमण्डल ग्रन्थमाला के नवम पुष्प के रूप में सम्पूर्ण स्मृतियों का संग्रह प्रकाशित करने का प्रयास किया गया है आशा है शताधिक संख्या में प्राप्त इन स्मृतियों को हस्तलिखित ग्रन्थों की प्रतिलिपियां उपलब्ध हो जाने से जीवन को प्रेरणा और स्फूर्ति देनेवाला महर्षि कल्प उन प्रातः स्मरणीय प्राप्त पुरुषों का मान्य निर्णय संसार को मार्ग दर्शन के लिये मिलेगा । आप महानुभावों की शुभाशोः तथा भूतभावन भगवान् विश्वनाथ के कृपाद्रि कटाक्ष से सफलतापूर्वक प्रकाशित कर प्रस्तुत की जायगी ऐसी आशा है ।

वेदों और पुराणों का स्वाध्याय हम भारतीयों के अध्ययन एवं पाठ्यक्रम से कितना दूर हो गया है यह सभी महानुभावों को विदित है । इसीका यह दुष्परिणाम है कि विश्व के उपदेष्टा वेदमार्ग प्रवर्तक भारत के गौरव ऋषिमहर्षियों की सन्तान होकर भी हम भारतीय नैतिक स्तर से नीचे गिरते जा रहे हैं और हमारी पतनावस्था चरम सीमा को पार कर गई है ।

इनके पठनपाठन क्रम का श्री गणेश निरुक्त जैसे महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ रत्न से कर शनैः२ इसके विशद अध्ययन से सारे विश्व की ज्ञान सूर्य का प्रकाश मिले और अज्ञानान्धकार से जर्जर विश्व को महती प्रेरणा मिले इसी उद्देश्य से गुरुमण्डल के दशम पुष्प के रूप में आप महानुभावों को निरुक्त का उपहार प्रस्तुत किया है। हमारी यही एक अमर अमिलाषा है कि सम्पूर्ण वेदनिधि का अविकल प्रकाशन कार्य कोई उदारमना शास्त्रव्यसनी महानुभाव लें तो विश्व का एक बड़ा भारो अभावपूर्ण होगा। इस महान् ग्रन्थ को पुराण प्रेमी शास्त्रैकाध्यायी विद्वज्जनों की सेवामें उपस्थित कर यह प्रार्थना करते हैं कि आप लोग वेदवेदाङ्गादि के अध्ययन अध्यापन क्रम को पुनरुज्जीवित कर स्वतन्त्र भारत के उत्थान काल में प्रातःस्मरणीय आर्ष ज्ञान की उत्कृष्ट विभूतियां उन ऋषियों को अपनी सच्ची श्रद्धाञ्जलि समर्पित कर हमलोगों के इस प्रयास को सफल करेंगे।

मनुष्य ने अनादि काल से यावन्मात्र प्राणियों के उद्धार का प्रण लिया हुआ है इस दिशा में उसके लिये श्रुति स्मृति, जो सृष्टि की नियमावली है और पुराण जो उसके उपबृंहक हैं वे सदा से हो दृढ़ आधार शिला पर निर्मित प्रकाशस्तम्भ का काम करते हैं। आज की महती अनर्थ परम्परा में बिपरीत अवस्थाओं का कटु अनुभव करता हुआ मनुष्य जो निराशा, अशान्ति और संघर्ष के थपेड़ों से दुःखी हो रहा है उसका समाधान ये पुराण हैं। मेरी मान्यता है कि इस निराशापूर्ण वातावरण में [आशा

का अज्ञानान्धकार में ज्ञानालोक का जीवन में अपनी कर्मण्यता की सेवानि सम्भरने वाले पुरुष को पुरुषार्थ का यहाँ तक कि संसारमें जो कुछ अस्त अचिवेक, अविद्या, अज्ञानादि रूपी अन्धकार हैं उनसे छुटकारा दिलानेवाला यह महातन्त्र है बलिक तारकमन्त्र है। अस्त्रों से विश्व को अहिंसा, सत्य, और प्रेम और शान्ति का सन्देश दीजिये।

गत चैत्र मास में नवरात्रों के पूर्व जबसे पुराण पारायण में श्री मोर ग्रन्थानुसन्धान समिति की पण्डित मण्डली ने समय देना आरम्भ किया तो मुझे ऐसा लगा कि इनका अधिकल दोहन कर अपने जीवन को कृतकृत्य करना हम भारतीयों का प्रधान कर्तव्य है। उसी समय इसके प्रकाशन का संकल्प अङ्कुरित हुआ और ब्रह्मपुराण के प्रकाशन का बीज उसी में निहित है जो पुष्पित एवं पल्लवित रूप में सेवा में उपस्थित है।

मेरी यह प्रबल इच्छा थी कि उसे शीघ्रातिशीघ्र गुरुमण्डल ग्रन्थमाला के एकादश पुष्प के रूप में आप महानुभावों की सेवा में प्रस्तुत करूँ इतने अल्प समय में शीघ्रतावश जो कुछ बुद्धियाँ प्रेस के कर्मचारियों तथा कार्यकर्तृवृन्द की अनवधानता से रह गई हैं उन्हें रूपातु चिह्नवृन्द सुधारने की उदारता दिखला कर रूपा करें।

इस महत्कार्य में आरम्भ से ही श्री ब्रह्मदत्त त्रिवेदी भूतपूर्व अध्यक्ष श्री ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम संस्कृत कालेज लक्ष्मणगढ़ एवं भूत० सहायक सञ्चालक राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिर जयपुर का

भूमिकालेखन व शोधन कार्य में तथा श्री पं० कजोड़ीलालजी मिश्र एवं पं० श्री रामनाथजी दाधीच साहित्य शास्त्री का प्रोफ कार्य संशोधन में पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ है उन्हें अपने अभिन्न अङ्ग के नाते किसी प्रकार का धन्यवाद प्रदान करना शिष्टता के विरुद्ध है। श्रीपरमपूज्य राजगुरुजी हरिदत्तजी शास्त्री विद्यालङ्कार विद्यारत्न के सञ्चालकत्व में यह सब होने से उनकी विभूति एवं आशीर्वाद का ही फल है। आपने पुराण महिमा लिख हमें उत्साह एवं कर्त्तव्य पथ की प्रेरणा दी है। अन्त में मैं आप सभी महानुभावों का हृदय से आभार प्रदर्शन करता हुआ इस ज्ञान राशि के प्रचार का स्वाध्याय द्वारा पुण्य लाभ करने की करबद्ध प्रार्थना करता हूँ।

आशा है आप सभी उदारशय आपेक्षिक अपूर्णता की उपेक्षा बुद्धि से क्षमा करें इस परिश्रम को सच्चे अर्थों से सफल बना हमें कृतकृत्य करेंगे।

कलकत्ता—
गीता जयन्ती
मार्गशीर्ष शुक्ला
११।२०१०

} कृपाभिलाषी
मनसुखराय मोर

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

अष्टादशपुराणानां विषयानुक्रमणिका प्रारम्भते ।

॥ श्रीः ॥

ब्रह्मपुराण



वेदव्यास प्रणीते महापुराणादि तत्प्रतिपाद्य विषयाश्च

बृहन्नारदाये ४ पा० ६२ अ० उक्ता यथा—

ब्राह्मं पुराणं तत्रादौ सव्वलोकहिताय वै ।

व्यासेन वेदविदुषा समाख्यातं महात्मना ॥

तद्वै सर्वपुराणाग्र्यं धर्मकामार्थमोक्षदम् ।

नानाख्यानेतिहासाढ्यं दशसाहस्रमुच्यते ॥

तत्पूर्वभागे—

“देवानाम पुराणाञ्च यत्रोत्पत्तिः प्रकीर्तिता ।

प्रजापतीनाञ्च तथा दक्षादीनां मुनीश्वर ! ॥

ततो लोकेश्वरस्यात्र सूर्यस्य परमात्मनः ।

वंशानुकीर्त्तनं पुण्यं महापातकनाशनम् ॥

तत्रावतारः कथितः परमानन्दरूपिणः ।

श्रीमतो रामचन्द्रस्य चतुर्गूहावतारिणः ।

ततश्च सोमवंशस्य कीर्त्तनं यत्र वर्णितम् ।

कृष्णस्य जगदीशस्य चरितं कल्मषापहम् ।

(३५)

झीपानाम्नीच सिन्धूनां वर्षाणाञ्चाप्यशेषतः ।
 वर्णनं यत्र यस्तालस्वर्गाणाञ्च प्रदृश्यते ।
 नरकाणां समाख्यानं सूर्यस्तुतिकथानकम् ।
 पार्वत्याञ्च तथा जन्म विवाहञ्च निगद्यते ।
 दक्षाख्यानं ततः प्रोक्तमेकाग्रक्षेत्रवर्णनम् ।
 पूर्वभागोऽयमुदितः पुराणस्यास्य मानद ! ॥”

तदुत्तरभागे—

अस्योत्तरे विभागे तु पुरुषोत्तमवर्णनम् ।
 विस्तरेण समाख्यातं तीर्थयात्राविधानतः ॥
 अत्रैव कृष्णचरितं विस्तरात् समुदीरितम् ।
 वर्णनं मम लोकस्य पितृश्राद्धविधिस्तथा ॥
 वर्णाश्रमाणां धर्माञ्च कीर्तिता यत्र विस्तरात् ।
 विष्णुधर्मयुगाख्यानं प्रलयस्य च वर्णनम् ॥
 योगानां च समाख्यानं सांख्यानाञ्चाऽपि वर्णनम् ।
 ब्रह्मवादसमुद्देशः पुराणस्य च संशनम् ।
 एतद् ब्रह्मपुराणन्तु भागद्वयसमाचितम् ॥
 वर्णितं सर्वं पापघ्नं सर्वसौख्यप्रदायकम् ॥

तत्फलश्रुतिः—

सूतशौनकसम्भावं भुक्तिमुक्तिप्रदायकम् ।
 लिखित्वैतत्पुराणं यो वैशाख्यां हेमसंयुतम् ॥
 जलधेनुयुतञ्चापि भक्त्या दद्याद् द्विजातये ।

पौराणिकाय सम्पूज्य वस्त्रभोज्यविभूषणैः ॥
 स वसेद् ब्रह्मणोलोके यावच्चन्द्रार्कतारकम् ।
 यः पठेच्छृणुयाद्वाऽपि ब्रह्मानुक्रमणीं द्विज ।
 सोऽपि सर्वपुराणस्य श्रोतुर्वक्तुः फलं लभेत् ।
 शृणोति यः पुराणन्तु ब्राह्मं सर्वं जितेन्द्रियः ।
 हविष्याशो च नियमात् स लभेद् ब्रह्मणः पदम् ।
 किमत्र बहूनोक्तेन यद् यदिच्छति मानवः ।
 तत्सर्वं लभते वत्स पुराणस्यास्य कीर्तनात् ।

पद्मपुराण

तत्स्थ विषयाणाम्प्रतिपादनम् नारदीयपुराणे उक्तं

यथा :—

प्रथमे सृष्टिखण्डे :—

“पुलस्त्येन तु भोष्माय सृष्ट्यादि क्रमतो द्विज ।
 नानाख्यानेति हासार्थेयत्रोक्तो धर्मविस्तरः ।
 पुष्करस्य च माहात्म्यं विस्तरेण प्रकीर्तितम् ।
 ब्रह्मयज्ञविधानञ्च वेदपाठादिलक्षणम् ।
 दानानां कीर्तनं यत्र वृत्तानाञ्च पृथक् पृथक् ।
 चिवाहः शैलजायाश्च तारकाख्यानकं महत् ।
 माहात्म्यञ्च गवादीनां कीर्तितं सर्वपुण्यदम् ।

कालकेयादि दैत्यानां वधो यत्र पृथक् पृथक् ।
 ग्रहाणामर्चनं दानं यत्र प्रोक्तं द्विजोत्तम ॥
 तत्सृष्टिखण्डमुद्दिष्टं व्यासेन सुमहात्मना ।

द्वितीये भूमि खण्डे :—

पितृमात्रादिपूज्यत्वे शिवशर्मकथा पुरः ।
 सुव्रतस्य कथा पश्चात् वृत्रस्य च वधस्तथा ।
 पृथोर्वेणस्य चाख्यानं धर्माख्यानं ततःपरम् ।
 पितृशुश्रूषणाख्यानं नहुषस्य कथा ततः ।
 ययाति चरितञ्चैव गुरुतीर्थनिरूपणम् ।
 राज्ञा जैमिनि सम्वादो बह्वाश्रयकथायुतः ।
 कथाह्यशोकसुन्दर्या हुण्ड-दैत्यवधाचिता ।
 कामोदकाख्यानकं तत्र विहुण्डवधसंयुतम् ।
 कुञ्जुगस्य च सम्वादश्च्यवनेन महात्मना ।
 सिद्धाख्यानं ततः प्रोक्तं खण्डस्यास्यफलोहनम् ।
 सूतशौनकसम्वादं भूमिखण्डमिदं स्मृतम् ।

तृतीये स्वर्ग खण्डे :—

“ब्रह्माण्डोत्पत्तिरुदिता यत्रर्षिभ्यश्चसौतिना
 सभूमिलोकसंस्थानं तीर्थाख्यानं ततःपरम् ।
 नर्मदोत्पत्ति कथनं तत्तीर्थानां कथा पृथक् ।
 कुरुक्षेत्रादितीर्थानां कथा पुण्याः प्रकीर्तिताः ।
 कालिन्दी पुण्यकथनं काशीमाहात्म्यवर्णनम् ।

गयायाश्चैव माहात्म्यं प्रयागस्य च पुण्यकम् ।
 वर्णाश्रमानुरोधेन कर्मयोगनिरूपणम् ।
 व्यासजैमिनि सम्वादः पुण्यकर्मकथाचितः ।
 समुद्रमथनाख्यानं व्रताख्यानं ततःपरम् ।
 ऊर्ज्ज्वलपञ्चाहमाहात्म्यं स्तोत्रं सर्वापराधनुत् ।
 एतत्स्वर्गामिधं विप्र ! सर्वपातकनाशनम् ।”

चतुर्थे पातालखण्डे :—

“रामाश्वमेधे प्रथमं रामराज्याभिषेचनम् ।
 अगस्त्याद्यागमश्चैव पौलस्त्यान्वयकीर्तनम् ।
 अश्वमेधोपदेशश्च हयचर्याततःपरम् ।
 नानाराजकथाः पुण्या जगन्नाथानुवर्णनम् ।
 वृन्दावनस्य माहात्म्यं सर्वपापप्रणाशनम् ।
 नित्यलीलानुकथनं यत्र कृष्णावतारिणः ।
 माधवस्नान माहात्म्ये स्नानदानार्चनेफलम् ।
 धरावराहसम्वादो यम ब्राह्मणयोः कथा ।
 सम्वादो राजदूतानां कृष्णस्तोत्रनिरूपणम् ।
 शिवशम्भुसमायोगो दधीच्याख्यानकन्ततः ।
 भस्ममाहात्म्यमतुलं शिवमाहात्म्यमुत्तमम् ।
 देवरातसुताख्यानं पुराणाञ्च प्रशंसनम् ।
 गौतमाख्यानकञ्चैव शिवगीता ततःस्मृता ।
 कल्पान्तरी रामकथा भारद्वाजाश्रमस्थितौ ।
 पातालखण्डमेतद्दि शृण्वतां श्रामिनां सदा ।

सर्वकामफलप्रदं सर्वाभीष्टफलप्रदम् ॥

पञ्चमे, उत्तर खण्डे :—

पर्वतरूपायनकं पूर्वं गौर्यै प्रोक्तं शिवेन वै ।
जालन्धरकथा पश्चात् धीशैलाद्यनुकीर्तनम् ।
सागरस्य कथा पुण्या ततः परमुदीरिता ।
गंगाप्रयागकाशीनां गयायाश्चाधिपुण्यकम् ।
आम्लादिदानमाहात्म्यं तन्महाद्वादशीव्रतम् ।
चतुर्विंशैकादशीनां माहात्म्यं पृथगीरितम् ।
विष्णुधर्मसमाख्यानं विष्णुनामसहस्रकम् ।
कार्तिकव्रतमाहात्म्यं माघस्नान फलस्ततः ।
जम्बुद्वीपस्य तीर्थानां माहात्म्यं पापनाशनम् ।
साधुमत्याश्च माहात्म्यं नृसिंहोत्पत्तिवर्णनम् ।
देवशर्मादिकाख्यानां गीता माहात्म्यवर्णने ।
भक्ताख्यानञ्च माहात्म्यं श्रीमद्भागवतस्य ह ।
इन्द्रप्रस्थस्य माहात्म्यं बहुतीर्थकथान्वितम् ।
मन्त्ररत्नाभिधानञ्च त्रिपाद्भूत्यनुवर्णनम् ।
अवतारकथा पुण्या मत्स्यादीनामतःपरम् ।
रामनाम शतं दिव्यं तन्माहात्म्यञ्च बाङ्ग ! ।
परीक्षणञ्च भृगुणा श्रीविष्णोर्वैभवस्य च ।
इत्येतदुत्तरखण्डं पञ्चमं सर्वपुण्यदम् ।

तत्फलश्रुतिः —

“पञ्चखण्डयुतं पापं यः शृणोतिनरोत्तमः ।

स लभेद्वैष्णवं धाम भुक्त्वा भोगानिहेप्सितान् ।
 एतद्वैपञ्चपञ्चाशत् सहस्रं पद्मसञ्ज्ञकम् ।
 पुराणं लेखयित्वा वै ज्यैष्ठ्यां स्वर्णाज्यसंयुतम् ।
 यः प्रदद्यात्सुमतये पुराणज्ञाय मानद ।
 स याति वैष्णवं धाम सर्वदेवनमस्कृतः ।
 पद्मानुक्रमणीमेतां यः पठेच्छृणुयात्तथा ।
 सोऽपि पद्मपुराणस्य लभेत्श्रवणजं फलम् ॥”

विष्णुपुराण

तत्प्रतिपाद्य विषयाश्च बृहन्नारदीये—६४ अध्याये उक्ता यथा—
 भृशं घत्स प्रवक्ष्यामि पुराणं वैष्णवं महत् । त्रयोविंशति साहस्रं
 सर्वपातक नाशनम् । यत्रादिभागे निर्दिष्टाः षडंशाः शक्तृजेन ह ।
 मैत्रेयायादिमे तत्र पुराणस्पष्टतारिका ।

तत्र प्रथमभागस्य प्रथमांशे :—

”आदिकारणसर्गश्च देवादीनाञ्चसम्भवः ।
 समुद्रमथनख्यानं दक्षादीनां कथाचयः ।
 ध्रुवस्य चरितं चैव पृथोश्चरितमेव च ।
 प्राचेतसं तथारुधानं प्रह्लादस्य कथानकम् ।
 पृथुराज्याधिकाराख्यः प्रथमोऽश्वत्थीरितः ।

प्रथम भागस्य द्वितीयांशे :—

पातालनरकाख्यां सप्तसर्गनिरूपणम् ।
सूर्यादिचारकथनं पृथग्लक्षणसंगतम् ।
चरितं भरतस्याथ मुक्तिमार्गनिर्दर्शनम् ।
निदाघऋतुसम्बादो द्वितीयोऽशुडदाहृतः ।

प्रथमभागस्य तृतीयांशे :—

“मन्वन्तरसमाख्यानं वेदव्यासावतारकम् ।
नरकोद्वारकं कर्म गदितञ्च ततःपरम् ।
सगरस्यैर्वसम्बादे सर्वधर्मनिरूपणम् ।
श्राद्धकल्पं तथोद्दिष्टं वर्णाश्रमनिबन्धने ।
सदाचारश्च कथितो मायामोहकथा ततः ।
तृतीयोऽशोऽयमुदितः सर्वपापप्रणाशनः ।”

प्रथमभागस्य चतुर्थांशे :—

“सूर्यवंशकथा पुण्या सोमवंशानुकीर्तनम्
चतुर्थेऽशे मुनिश्रेष्ठ नानाराजकथाचितम्”

प्रथमभागस्य पञ्चमांशे :—

“कृष्णावतारसम्प्रश्नो गोकुलोद्या कथा ततः ।
पूतनादिवधोबाल्येकौमारोऽघादिहिंसनम् ।
कैशोरे कंसहननं माथुरं चरितन्तथा ।
ततस्तु यौवने प्रोक्ता लीला द्वारवतीभवा
सर्वदैत्यवधो यत्र विवाहाश्च पृथग्विधाः ।

यत्र स्थित्वा जगन्नाथः कृष्णोयोगेश्वरेश्वरः
भूभारहरणं चक्रे पस्वहृननादिभिः ।
अष्टावक्रीयमाख्यानं पञ्चमोऽंश इतीरितः ।”

प्रथमभागस्य षष्ठांशे :—

कल्लिजं चरितम्प्रोक्तं चानुविध्यं लयस्य च ।
ब्रह्मज्ञानसमुद्देशः खाण्डिक्क्यस्य निरूपितः ।
केशिध्वजेन चेत्येष षष्ठोऽंशः परिकीर्तितः ।

तस्य द्वितीय भागे :—

अतः परन्तु सूत्रेण शौनकादिमिरादरात् ।
पृष्टेन चोदिताः शश्वत्विष्णुधर्मोत्तराह्वयाः ।
नाना धर्मकथाः पुण्या व्रतानि नियमा यमाः ।
धर्मशास्त्रञ्चार्थशास्त्रं वेदान्तं ज्यौनिषन्तथा ।
वंशाख्यानप्रकरणान् स्तोत्राणि मनवस्तथा ।
नाना विद्याश्रयाः प्रोक्ताः सर्वलोकोपकारकाः ।
एतद्विष्णुपुराणं वै सर्वं शास्त्रार्थसंग्रहः ।”

तत्फलश्रुतिः —

“वाराह कल्पवृत्तान्तं व्यासेनकथितन्त्विह ।
यो नरः पठते भक्त्या यः शृणोति च सादरम् ।
तावुभौ विष्णुलोकं हि व्रजेताम्भुक्तमोगकौ ।
तल्लिखित्वा च योदद्यादाषाढ्यां धृतधेनुना ।
सहितं विष्णुभक्ताय पुराणार्थविदे द्विजः ।

स याति वैष्णवं धाम विमानैर्नार्कवर्चसा ।
 यश्च विष्णुपुराणस्य समनुक्रमणीं विज ।
 कथयेच्छृणुयाद्वाऽपि स पुराणफलं लभेत् ।

शिवपुराण

तत्स्थ विषयाणां प्रतिपादनम्

ज्ञानसंहितायाम्:—

ऋषिगणस्य प्रश्नः । ब्रह्मनारदसंवादः ज्योतिर्लिङ्ग प्रादुर्भावश्च ।
 ओंकार प्रादुर्भावः, शिवस्यानुग्रहः, विष्णुकृत शिवस्तुतिः ।
 उभयोःकृते शिवस्य वरदानम् । ब्रह्मणो हंसरूपधारणस्य विष्णोः
 वराहरूपधारणस्य च कारणरूप निर्देशः, ब्रह्मादीनामुत्पत्तिकथनम् ।
 ऋष्यादीनां सृष्टिः । भगवत्या देहत्यागस्य संक्षेपेण वृत्तान्त-
 कथनम् शिवपूजा विधिश्च । पावमान मन्त्रैः शिवपूजा विधिः ।
 तारकोपाख्यानं, ब्रह्मण सर्मापे देवादीनांगमनञ्च । ब्रह्मादेव संवादः
 शिवस्य तपो वर्णनञ्च मदनदहनम्, पार्वत्याश्च प्रत्यावर्त्तनम् ।
 पार्वत्यास्तपः । पार्वतीतपः समुद्दिश्य देशगणानामृषीणाञ्च
 शिवसन्निधाने गमनम्, जटिल ब्राह्मणवेशे पार्वत्याःसकाशं-
 शिवस्यागमनम् । हरपार्वती संवादः । शिवविवाहोद्योगः ।
 शिवविवाह यात्रा । शिवरूप दर्शने मेनकायाःस्नेहस्तौ प्रसि

भगवत्याः ज्ञानोपदेशः । हरपार्वत्योर्विवाहः । कार्तिकेयस्य
जन्मः देवसेनापतित्वं तारकवधश्च एवं ब्रह्मणी वरेण तारकपुत्राणां
त्रिपुरेऽधिष्ठानम् । विष्णुसृष्टौ मुण्डिकर्तृक दैत्यगणानाम्मोहो-
त्पादनम् । मुण्डिन उपदेशेन दैत्यानां धर्मनाशः दरिद्रताञ्च
दूष्वा विष्णुप्रभृतिदेवगणानां शिवस्तवः । विष्णुपदेशेन देव-
गणानां कोटिशिवमन्त्रज्ञापः शिवस्तवश्च । देवमयरथा-
रोहणे शिवकर्तृक त्रिपुरनाशः । देवगणानां वरलाभश्च ।
हरिकर्तृक लिङ्गार्चन फलकथनम् । अधिकारानुसारेण देवेभ्यस्तै-
जसादि लिङ्गदानम् । शिवपूजाविधि कथनम् । आह्निककर्तव्य
शिवपूजाविधिः । षोडशोपचारेण साम्बशिवपूजा । धान्यादिभिः
शिवपूजायाः फलविशेषकथनम् । जानकी शापेन केतकी पुष्पेण
शिवपूजायानिषेधः रामचरित्र कीर्तनञ्च । चम्पक पुष्पस्य शिव-
पूजार्थं राज्ञोमोहस्तदुत्पादनपूर्वकं वृत्तदुष्कर्माब्राह्मण चम्पक-
पुष्पयोश्च नारदस्यशापः । गणेशचरित्रम् । गणेशकर्तृक शिव-
गणानांपराजयः शिवकर्तृक गणेशशिरश्छेदनञ्च । शिरश्छेदनेन-
देव्याः क्रोधः महादेवस्य च गणपतेः प्राणदानं गाणपत्यप्रदानञ्च ।
कार्तिक गणेशयोर्विवादः गणेशस्य जयलाभश्च । गणेशस्य
विवाहस्तच्छ्रुत्वा कार्तिकस्यक्रोधः क्रौञ्चपर्वतगमनञ्च ।
रुद्राक्षधारणमहात्म्यकथनम् । प्रधानज्योर्लिङ्गोपलिङ्गानां नाम-
स्थान कथनम् । नन्दिकेशतीर्थमाहात्म्ये गोवत्ससंवादादिः ।
नन्दिकेश तीर्थमाहात्म्यकथनम् । अत्रीश्वरलिङ्गमाहात्म्य-
कथनम् । ज्योतिर्लिङ्गादीनां समस्त वस्तूनां ग्राह्यत्वकथनम् ।

शिवलिंगमाहात्म्य कथनञ्च । अश्वकेश्वर वर्णनप्रसंगेऽश्वकर्मर्दन-
 कथनम् । शिवरात्रिव्रत संशय हेतुदधीचितनयानां दोषकथनम् ।
 सोमेश्वरकथा ज्योतिर्लिंगोत्पत्तिकथनञ्च । महाकालोक्ता-
 रेश्वरयोत्पत्तिः । केदारेश्वरप्रसङ्गः । भीमशङ्कर प्रादुर्भावः ।
 विश्वेश्वरस्य माहात्म्यम् गौरीप्रति शिवस्य काशीमाहात्म्य-
 कथनम् । गोपेश्वरमाहात्म्य कथनम् । काशीमरणान्मोक्षप्राप्तेः
 शङ्कानिवारणम् । गौतमस्य तपस्यातत्क्षेत्रकथनञ्च । गणेशपूजनं
 गौतमचरित्रञ्च । गौतमप्रशंसा, गंगास्थितिः कुशावर्तमाहात्म्यं
 त्र्यम्बकमाहात्म्यञ्च । रावणस्यतपस्या माहात्म्यम्, वैद्यनाथस्यो-
 त्पत्तिः । रामेश्वर माहात्म्ये नागेशमाहात्म्यञ्च । घुस्मेश्वर माहा-
 त्म्यञ्च, वराहरूपेण हिरण्याक्षवधः प्रह्लादचरित्रञ्च । प्रह्लादहिरण्य-
 कशिपू प्रस्तावः । हिरण्यकशिपुवधः नृसिंहचरित्रञ्च । नल
 जन्मान्तर कथा । पाण्डवगण कर्तृक दुर्वाससः प्रीत्युत्पादनम् ।
 व्यासादेशेन इन्द्रकील पर्वते अर्जुनस्यतपः इन्द्रसमागमञ्च ।
 भिल्लरूपस्य शिवस्यागमनञ्च । भिल्लवेपधारि शिवस्य अर्जुनेन
 सह युद्धः । अर्जुनस्य वरदानम् । पार्थिवशिवपूजाविधिः ।
 बिल्वेश्वरमाहात्म्यम् । विष्णुकर्तृक सहस्रकमलशिवपूजा । शिव-
 कृपया सुदर्शनचक्र लाभः । शिवसहस्रनाम वर्णनम् । विष्णुप्रभृतीन्
 शिवस्य शिवरात्रिव्रत कथनम् । शिवरात्रिव्रतस्योद्यापनविधिः ।
 व्याधयस्येतिहास कथनम् । अज्ञानेन कृतस्य शिवरात्रिव्रतस्य
 प्रशंसा । शिवरात्रिव्रतकरणेन पापिनो वेदनिष्ठे मुक्तिः । चतु-
 र्विध मुक्तिवर्णनम् । शिवकर्तृक विष्णुप्रभृतीनामुत्पत्ति कथनम् ।
 एकमात्रभक्तिसाधनेन शिवभक्तेर्लामकथनम् ।

विद्येश्वर संहितायाम्—

साध्यसाधन निरूपणम् । मननादि स्वरूपवर्णनम् । श्रव-
णाद्यशक्त्यक्तोर्नालिङ्गपूजनसाधनकथनम् । ब्रह्मविष्णवोः युद्धं
दृष्ट्वा शिवसमीपे देवतानां गमनम् । ज्योतिर्मयलिङ्गप्रादुर्भाव-
स्तद् दृष्ट्वा ब्रह्म विष्णवो विवाद शान्तिः । भैरवकर्तृक ब्रह्मणः
शिरश्छेदनं । ब्रह्माणंप्रति शिवस्यानुग्रहः । ब्रह्मविष्णु कृताशिव
पूजा लिंगनिर्माणं लिंगप्रतिष्ठा । लिंगपूजायाः नियम कथनम् ।
शिवतीर्थं सेवामाहात्म्यम् । विप्रादि सदाचारस्य नित्यकृत्यता ।
पञ्चमहायज्ञकथनम् । दिनविशेषे देवपूजायाः कर्तव्यताकथनम् ।
देशकालादि विशेषे पूजाफल कथनम् । पार्थिव प्रतिमा पूजाविधिः ।
प्रणवमाहात्म्यं । शिवभक्तपूजाकथनम् । षड्लिंग माहात्म्यम् ।
बन्धनमुक्त्याः स्वरूपकथनम् । लिंगक्रमकथनम् ।

कैलाश संहितायाम् :—

चाराणसीधाम्नि सूतकर्तृक मुनीनां निकटे प्रणवार्थं कथना-
रम्भः । कैलाशधाम्नि देवीकृता शिवं प्रति प्रणवार्थं जिज्ञासा ।
प्रणवोक्ता मन्त्रदीक्षादि कथनम् । प्रणवोद्धारः, विविध पूजा एवं
न्यासान्तरादि विधिः ।

कार्तिकेयं प्रति वामदेव ऋषेः प्रणवस्य कृते प्रश्नः । कुमार
कर्तृकं वामदेवं प्रति प्रणवोपासना कथनम् । षड्विधार्थं परि-
ज्ञानं । विस्तृत प्रणवार्थं कला कलादि विवरणं कथनम् ।

सनत्कुमार संहितायाम् :—

नैजिषारण्ये सनत्कुमारस्वागमनम् । व्यासादिभिर्मिलनम् ।
 शिवपूजा विषये ऋषीणां प्रश्नः । सनत्कुमारस्य वृथ्वादेः
 संस्थानक्रमप्रभृतोनां कथनम् । प्रकृतितः महदादिक्रमे जगतः
 सृष्टिः सप्तद्वीपवर्णनञ्च । नरकादि वर्णनम् । उद्ध्वलोक द्यौः-
 माहात्म्यकथनम् । सविस्तरं रुद्रमाहात्म्यं, पञ्चमूर्ति कथनम् ।
 रुद्रकीर्तन फलम् । रुद्रस्तवः । सनत्कुमारस्य चरित्रम् । परमसि-
 द्विञ्च । शिवसर्वज्ञादि कथनम् । रुद्रलोक ब्रह्मलोक विष्णुलोकानां
 कथनम् । रुद्रस्थानस्य सर्वं श्रेष्ठत्वं कथनम् । विभीषण महेश्वर
 संवादः । लिङ्ग पूजा शिवनाम कीर्तनफलञ्च । स्थान माहा-
 त्म्य कथनम् । ब्रह्म विष्णु महेश्वराणां मध्ये कस्य ज्येष्ठत्वम्
 इति व्यास प्रश्ने सनत्कुमार समुत्तरदानं शिव लिङ्ग
 माहात्म्यादि कथनञ्च । लिङ्गस्तापनं शिवशक्त्योः पूजनविधिः
 शिव पूजायां पुष्पनिरूपणम् । अनशन विधिः । शिवप्रीतिकरः
 धर्मस्य संक्षिप्त उपदेशः । लक्ष्मणाष्टमीव्रतकथनञ्च । अन्न-
 दान माहात्म्यं मित्र २ दानानां प्रशंसा च । विविध धर्मकार्याणां
 मुपदेशः । सविस्तरं नियमफलकथनम् । पार्वत्याः शिवस्य
 शिरसि चन्द्रधारणे विषमक्षण विषये च प्रश्नः । भस्म प्रशंसा
 भस्म धारणस्य फल कथनम् । शिवस्य श्मशानवासहेतुः ।
 शिवपूजायाः फलकथनम् । शिवविमूर्तकथनम् । शिवस्थान-
 निर्देशः । प्रणवस्योपासना । प्रणवदेवता कथनम् । ज्ञान
 योग कथनम् । दुर्वाससः महादेवं प्रति पुनर्ध्यान वर्णनम् ।

तदर्थं काशीवासनिर्देशश्च । वायुनाडिकादि निरूपणम् । ध्याय-
निजेः प्रशंसा । प्रणवोपासना निरूपणम् । शरीरस्य सर्वदेव-
मयत्व कथनम् । नाडी विस्तार कथनम् । हरपार्वतीसंवादः
काशीमाहात्म्य कथनञ्च । मधूकस्योपाख्यानम् । सपुत्रस्यप्रताप-
मुकुटराज्ञ ओंकारेश्वर दर्शनम् । ओंकारस्तवः । नन्दीश्वरस्य
तपस्या । नन्दिनं प्रति शिवस्य वरदानम् । महादेवस्य स्मरणम् ।
देवानामागमनम् । शिवस्यादेशेन देवानां नन्दिनः गाणत्या-
भिषेककरणम् । नन्दिनःस्तवः नन्दिविवाहश्च । नीलकण्ठमाहात्म्यं,
स्तोत्रञ्च, त्रिपुरवृत्तान्तम् । देवानां सुखं दृष्ट्वा महादेवस्य सन्तोषः ।
त्रिपुरनाशस्योद्योगः । त्रिपुरदाहः । पार्वत्याः प्रश्नः । शिवस्य
ब्रह्मणश्च माहात्म्य कीर्तनम् । पाशुपतयोगः । देहस्थनाडीनां
विवर्णम् । चिमलज्ञानेन ईश्वरपदप्राप्तिः । शिवस्थितिलोक-
कथनम् ।

वायवीय संहितायाम्—

महादेवकृपया श्रीकृष्णस्य पुत्रलाम कथनम् । वेदादि-
व्यवस्था । पुराण संख्या कथनम् । ब्रह्मणोनिकटे ऋषीणां
शिवतत्त्व कथनम् । ब्रह्मण आदेशेन नैमिषारण्ये यज्ञार्थं गमनम् ।
नैमिषारण्ये ऋषीन्प्रतिवायोः कुशलप्रश्नोक्तिः । शिवतत्त्वम्
मायास्वरूपकथनञ्च । शिवस्य कालरूपत्वप्रकटनम् । सविस्तर-
कालमान कथनम् । प्रकृतिसृष्टि कथनम् । ब्रह्मकर्तृक बराह्रूपे
ब्रह्मण जगद्व्यवस्थापनम् । शिवप्रसादाद्ब्रह्मणः सृष्टिकरणम् ।

ब्रह्म विष्णु महेश्वराणां परस्परं वशवर्तित्वम् । ब्रह्मणश्च महा-
 देवादुत्पत्ति कथनम् । ब्रह्माणं प्रतिसृष्टिकरणार्थं रुद्रस्यादेशः ।
 प्रजावृद्ध्यर्थं ब्रह्मण अर्धनारीश्वरप्रसादनम् । रुद्रकर्तृकस्त्रियाः
 सृष्टिः मेथुनसृष्टिश्च । दक्षयज्ञ कथनम् देव्याश्च वेदव्यासः ।
 वीरभद्रनिरूपणम् । काल्याः सृष्टिः । दक्षयज्ञनाशः । वीरभद्रस्य
 शिवनिकटे देवानयनम् । दक्षस्य छागमुखता च । व्याघ्रं प्रतिपार्वत्या
 अनुग्रहः । शिवसमीपे देव्यागमनम् व्याघ्रस्य सोमनंदी नाम करणञ्च ।
 देव्याः समीपे शिवकर्तृक अग्निष्टोमात्मक विश्वप्रपञ्च कथनम् ।
 त्रिविध शब्दार्थ कथनम् । जगतः शब्दरूपित्वकीर्तनम् । महर्षीणां
 शिव शक्तयोः कीर्तनम् । नास्तिकताविनाशाय तयोर्जन्म । वायुना
 सविस्तरं शिवतत्त्वकथनम् मुक्त्यर्थं ज्ञानस्यचोपदेशः । पाशुपत
 योगे मुक्तिलाभकथनम् । पाशुपतव्रतकथनं भस्ममाहात्म्य कथनञ्च ।
 दुग्धप्राप्त्यर्थमपमन्योः महादेवस्य प्रसादेन दुग्धसमुद्रप्राप्तिः ।

उत्तर भागे :—

श्वेतकल्पे प्रयागे मुनिगणैर्जिज्ञासितं प्रश्नं प्रति सूतस्य वायु-
 कथित शिवमाहात्म्यकथनरूपमुत्तरम् । श्रीकृष्णमप्रति उपमन्योः
 पाशुपत ज्ञानकथनम् । सुरेन्द्रादि परीक्षा । ब्रह्मविष्णु प्रभृतयः
 शिवस्वरूप कथनम् । श्रीपुरुषात्मक उमामहेश्वरयोर्जगत्प्रपञ्च-
 कत्वकथनम् । परब्रह्मापरब्रह्मणोरेकत्व कथनम् । महादेवस्य
 अप्राकृतरूपस्य प्रणवात्मकत्वकथनं प्रणवस्वरूप कथनञ्च ।
 भक्त्यादि द्वारा मानवानां शिवप्राप्तियोग्यता । ब्रह्मादिदेवान् देवी-
 मप्रति च शिवस्य वेदसार ज्ञानोपदेशः । शिवावतारस्य कल्प-

बोनेश्वरस्य च कथनम् शिवपञ्चाङ्गर अन्तर्गत्तत्त्वम् माहात्म्यम् ।
 शैवकर्मसंज्ञकस्य कथा । दीक्षाप्रयोगः । षडङ्गयुद्धिप्रभृतिकथनम् ।
 शिवमाहात्म्यः शिवमन्त्रस्य च साधनविधिः । आचार्यत्वसिद्धे-
 रभिवेकादीनां संस्काराणाञ्च कथनम् । शैवादीनाम्मान्तिक कर्म
 कथनम् । अन्तर्याग बहिर्याग कथनकर्मम् । नानाविधानेषु हर-
 कर्तव्याः पूजा विधिः । होमकुण्डानां परिमाणदीनां निर्णयः ।
 वासादि विशेषेषु नैमित्तिक शिवपूजा कथनम् । काम्यशिवपूजा
 कथनम् । शिवस्तोत्रम् प्रकारान्तरेण लिङ्ग पूजा च । शिवपूजाफले
 ब्रह्मादीनां स्वीयस्वीय पदप्राप्तिः । ब्रह्मविष्णोः लिङ्गदर्शनम् ।
 शिवप्रतिष्ठा शिवप्रोक्षणविधिश्च । योगोपदेशः । मुनीनां समीपे
 शिवचरित पूर्वक वायोरन्तर्धानम् । यज्ञ समाप्तौ ब्रह्मणो निकटे
 मुनीनामागमनम् । ब्रह्मण आदेशेन सुमेरु पर्वते सनत्कुमार
 समीपे मुनीनामागमनम् । नन्दिसमागमः । नन्दिकर्तृक शिवकथा
 वर्णनम् ।

धर्मसंहितायाम् :—

शिवमाहात्म्यनिरूपणम् । उपमन्योः समीपे श्राद्धस्य
 शिवमन्त्रे दोक्षाग्रहणम् । रुद्रैत्य वधः । गोपीप्रभृतिरूप महादेवेन
 सह अप्सरसांविहारः । उषाऽनिरुद्धयोःसमागमः । वाणराज्ञोयुद्धादि
 कथनम् । काल्यास्तपस्या, आङ्गीदैत्यवृत्तान्तः । वीरकस्य
 नन्दिरूपेण जन्म कारणम् । शिवस्य कामाचारो लिङ्गोद्भवकथा च ।
 शक्रादीनां कामकिकरत्वकथनम् । महात्मनां कामक्षोभः । विश्वामित्र
 प्रभृतीनां कामवश्यता कथनम् । श्रीरामस्य कामाधीनत्व कथनम् ।

नित्यनैमित्तिक शिव पूजाविधिः । शङ्करक्रियायोगस्तत्फलञ्च ।
 शिवभक्त पूजा तत्फलञ्च । विविधपाप कथनम् पापफलानि च ।
 धर्मप्रसङ्गः । अन्नदानविधिः । जलदान माहात्म्यम् । पुराण
 पाठस्य माहात्म्यम् धर्मध्वज्य माहात्म्यञ्च । महादानकथनम् ।
 सुवर्ण पृथिवी दानम् । कान्तारहस्ति दानम् । एकदिनस्याराधने-
 नेव शङ्करस्य कृपा । शिव सहस्रनाम वर्णनम् धर्मोपदेशस्तु-
 लापुरुषदानञ्च । परशुरामस्य तुलापुरुषदानम् । ब्रह्मणः प्रसङ्गः ।
 नरकादिकीर्तनम् । द्वीपादिकथनम् । भारतवर्षादिकथनम् ।
 ग्रहादीनांकथा मृत्युञ्जयोद्धारश्च । मन्त्रराजप्रभाव कीर्तनम् । पञ्च-
 ब्रह्मकथनं पञ्चब्रह्मविधानञ्च । तत्पुरुष विधानम् । अघोरकृत्व
 वामदेवकृत्व सद्योजातकृत्वादिकथनम् । संसार कथा स्त्री-
 स्वभावादिकथनञ्च । अरुन्धतीदेवानांसम्बादः । विवाहकथा ।
 मृत्युचिन्हस्य आयुषःप्रमाणम् । कालजयः । छाया पुरुषलक्षणम् ।
 धार्मिकाणां गतिर्लिङ्गपूजायाः कारणञ्च । विष्णुकृतः शिवस्तवः
 लिङ्ग पूजायाः फलञ्च । सृष्टि कथनम् । प्रजापतिकृत सृष्टि-
 कथनम् । पृथु राज्ञः पूजायाः कथा । देवदानवादीनां सृष्टि
 विस्तारः । आधिपत्यनिर्णयः । पृथु चरित वर्णनम् । मन्वन्तरा-
 दिवर्णनम् । सञ्ज्ञाछायादीनांकथनम् । सूर्यवंशवर्णनम् । सत्ययुत
 सगर राज्ञोश्च विवरणकथनम् पितृकल्पस्यश्वादस्य च कथा, पितृ-
 सप्तकवर्णनम् । मुनीनां जात्यन्तरप्राप्तिः । साधुसङ्गेन मुनिसप्तकस्य
 सद्गति लाभः । व्यासपूजा ।

विधान सहितं सम्यक् पुराणफलदंश्रुतम् ।

तस्माद्विधानयुक्तन्तु पुराणं फलमुत्तमम् ॥

भागवतम्

तत्प्रतिपादित विषयाश्च

प्रथमस्कन्धे :—

देवीभागवतस्य महापुराणत्वादि सिद्धान्त निर्णयः । ग्रन्था-
रम्भमंगलम्, ऋषीणां पुराणविषयप्रश्नः ग्रन्थ सङ्ख्या विषयश्च ।
ससंख्याक पुराणाख्या तत्तद्युगीय व्यासानुकथनञ्च । देवीसर्वोत्त-
मेति कथनं प्रसङ्गतः शुकजन्म च । देव्या महोत्कर्षः । मधुकैटभयो-
र्युद्धोद्योगः । ब्रह्मणा मधुकैटभर्मातेन पराम्बिकायाः स्तुतिः ।
आराध्यनिर्णयः । देवोपसादान्मधुकैटभयोर्हरिणावधः । शिवस्य-
वरदानम् । बुधोत्पत्तिः । पुरुरवस उत्पत्तिः । पुरुरवसउर्वश्या
श्चरितम् । शुकस्योत्पत्तिः । शुकवैराग्यम् । शुकार्थैतत्पुराणोपदेशः ।
जनकस्य परोक्षार्थं शुकस्य मिथिलागमनम् । शुकार्थजनको-
पदेशः । शुकस्य विवाहादिकम् । शुकनिर्गमनोत्तरं व्यासकृत्योप-
वर्णनम् ।

द्वितीयस्कन्धे :—

व्यासजन्मवृत्तान्तवर्णनम् । पराशरादासकन्थोदरे व्यासस्थ-
जन्म । शन्तनोः सत्यवत्या गङ्गाया च सह विवाहः वसूनामुत्पत्तिश्च ।
शन्तनुना सत्यवत्या वरणम् । व्यासात् पुत्रत्रयोत्पत्तिः पाण्डवो-
त्पत्तिश्च । पाण्डवानां कथानकं मृतानां दर्शनञ्च । यदुकुलस्य-

नाशः उत्तरासूनोर्वृत्तञ्च । रुरुपुरावृत्त कथनेपूर्वको गुतगृहे
राज्ञोवासः । तक्षकं द्विजयोः सम्भाषणं तक्षकेण राज्ञोदर्शनञ्च
सर्पसत्राय बद्धपरिकरस्य जनमेजयस्यास्तीकेन निवारणम् ।
आस्तोकस्योद्भवो भागवतमाहात्म्यञ्च ।

तृतीय स्कन्धे :—

भुवनेश्वरीनिर्णयः । विमानेन ब्रह्मादीनां गतिः । विमानस्थै-
र्हरादिभिर्देवी दर्शनम् । विष्णुनाकृतं देवीस्तोत्रं तदूद्धवं हरस्तुतिर्ब्रह्म-
स्तुतिश्च । ब्रह्मणे श्रीदेव्या उपदेशः । तत्त्वनिरूपणम् । गुणानां
रूपसंस्थानादि । पुनरपिगुणानां लक्षणमधिकृत्य नारद प्रश्नः ।
सत्यव्रतकथा । चाग्नीजोच्चारणान् सत्यव्रतस्य सिद्धिलाभः ।
अंबायज्ञविधिः । अम्बिकामखस्य विष्णुनानुष्ठानम् । राज-
प्रश्नोत्तरं वैभववर्णनञ्च । युधाजिद्वीरसेनयोर्दोहित्रार्थयुद्धम् ।
युधाजितः सुदर्शनजिघांसया भरद्वाजाश्रमं प्रति गमनम् । विश्वा-
मित्रकथोत्तरं राजपुत्रस्य कामबीजप्राप्तिः काशीराजस्य स्वसुता
विवाहोद्योगः । सुदर्शनेन सह राज्ञां स्वयम्बरागमनम् । राज-
संवाद निवृत्तिपूर्वकं कन्याबोधः । राज्ञांकोलाहले कन्यासम्मत्तस्य
राज्ञःस्थानम् । सुदर्शनविवाहः सुबाहोः कन्याया विवाहश्च ।
महारणेशत्रूणां देव्या व्यापादनम् । देवी महिमा काश्यां दुर्गा-
वासश्च । अंबिका तोषणं तत्पुरे देवीस्थापनञ्च । नवरात्रविधे
नृपाय व्यासेन कथनम् । कुमारिकाकथनम् । रामायणकथा
प्रश्नः । रामशोकः । नारदेनव्रतकथनम् ।

चतुर्थ स्कन्धः—

कृष्णावतार प्रश्नः । कर्मणोजन्मादिकारणत्वनिर्हणम् ।
 अदितेः शापकथनम् । अधमजगतः स्थितिः । नारायणकथा ।
 नराग्रजेनोर्वशीसृष्टिः । अहंकारावर्तनम् । प्रह्लादनारायणोः समागमः
 प्रह्लाद नारायणोयुद्धम् । हरये भृगुणाशापदानम् । शुक्रस्य मन्त्रला-
 भार्य गमनं शुक्रमातुर्वधश्च । भृगुणा शुक्रमातुरुज्जीवनम् । जयन्त्या
 शुक्रसेवार्थं प्रेषणम् । शुक्ररूपेण देवानां गुरुणा दैत्यवञ्चना । दैत्यानां
 शुक्र सम्प्राप्तिः । देवदानवयोर्युद्ध शान्तिः । हरैर्नानावताराः । सुरां-
 गनानां नारायणाश्रमे गमनम् । दुष्टराजभाराक्रान्ताया मेदिन्या
 ब्रह्माणं प्रति गमनम् । देवैः शक्तिस्तवनम् । वासुदेवांशावतारकथा ।
 देवक्याः सप्तानां पुत्राणांवधः । देवानामंशावतारणम् । कृष्ण-
 जन्मकथनम् । कृष्णकथा । पराशक्तेः सर्वज्ञत्वकथनम् ।

पञ्चम स्कन्धः—

विष्णोरपेक्षया रुद्रस्य श्रेष्ठत्वम् । देवीमाहात्म्यवर्णनम्
 महिषोत्पत्तिः । देवेन्द्रेण सह समरोद्योगः । देवानां संसदिविमर्शः ।
 देवसेनापराजयः । देवदानवयुद्धम् । पराभूतानां देवानां कैलास-
 गमनम् । जगदम्बायाः पलाशसमिधांज्वालनयोत्पत्ति कथनम् ।
 देवैर्महायुधैर्देव्यर्चनम् । रक्तदूतसंचादकीर्तनम् । महिषासुर-
 संसदि विमृश्यानाम्नोदूतस्यप्रेषणम् । ताम्रस्यागमनोत्तरं बाष्कल
 दुर्मुखयोः प्रेषणम् । बाष्कलदुर्मुखयोर्वधः । ताम्रचिक्षुरयो-
 र्देव्यावधः । महारणेऽसिलोमादीनां निधनम् । महिषासुरस्य

देव्याः संवादः । वंदीर्षाः कथानकम् । ग्रहिन्यवधः । देवैक्य-
महादेवीस्तुतिः अस्तर्धानोत्तरं वृत्तकथनम् । शुभमासुरकथा ।
परादेव्याः सुरकार्यार्थं प्रादुर्भावः । कौशिकीति प्रसिद्धाया देव्या-
गिरौप्रादुर्भावः । दूतसंवादकीर्तनम् । धूम्रलोचनवधः । खण्ड-
मुण्डयोः श्रीदेव्यासहयुद्धम् । रक्तबीजयुद्धम् । रक्तबीजवधः
शुभस्य युद्धस्यविस्तारः । शुभस्ययुद्धोद्योगः । निशंभवधः ।
शुभासुरवधाश्रितकथा । राजवैश्योश्चरित्रत्रयं सेवकयोर्वार्ता ।
भुवनसुन्दर्या राज्ञेकथनम् । राज्ञे तापसोपदेशः । राजवैश्ययोर्देव्याः
प्रत्यक्षदर्शनम् ।

षष्ठ स्कन्धे :—

वृत्रदैत्यवधकथारम्भः । त्रिशिरोवधवर्णनम् । मित्राज्ञया-
वृत्रस्य तपोर्ध्वनगमनम् । वृत्रेण वरगर्वेण पराभूतानां देवानां
शंकरसमीपेगमनम् । देवीस्तुत्या देवैर्वरप्रापणम् । वृत्रदैत्यवधा-
श्रिता कथा । वासवस्य गुप्तवासो नहुषस्य चेन्द्रपदेऽभिषेकः ।
नहुषेण प्रार्थितायाः शच्याश्चिता, देवीप्रसादतस्तस्या इन्द्रदर्शनम् ।
नहुषस्याधःपातः त्रिविधस्य कर्मणो रूपकथनम् । युगोद्गमवानां
धर्माणां कथनं सदसद्वर्माविनिर्णयश्च । आडोबकमहायुद्धस्य-
तीर्थयात्रा प्रसङ्गत उपवर्णनम् । शुनःशेपकथान्ते युद्धस्यस्मरणम् ।
वसिष्ठस्य मित्रावरुणापत्यत्वविस्तारः । निमेर्वहान्तरेगतिः हैहया-
नां कथा । हैहयेन भार्गवाणांवधः । देवीकृपया भृगुवंशस्तुतिः ।
हैहयस्यकथा । हरैरश्विन्यां जन्म । हवीजातस्य हरेः कथानकम् ।
एकवीराभिषेचनोद्भववृत्तकथनम् । एकावल्याः कथानकम् ।

हैदयभूतः कालकेतुना महायुद्धम् । विक्षेपशक्ति कथनम् ।
 व्यासेन स्वप्नोहोपपादनम् । नारदेनापि तथाकरणम् । नारदस्य
 विवाहः । पुरनपि तस्यैव विस्तारः । स्त्रीभावं गतस्यनारदस्य
 पुनःपुरुषत्वप्राप्तिः । हरिणा महामाया प्रभावकथनम् । भगवतो-
 ध्यानादिकम् ।

सप्तम स्कन्धे :—

सूर्य सोमोद्भवानां कथारम्भः । तदन्वयस्यविस्तारः । सुक-
 न्यकाया च्यवनाय प्रदानम् । सुकन्या देवमिषजोः सम्वादः ।
 रविपुत्रप्रसादजा च्यवनस्य युवावस्था । शर्यातिर्यज्ञकरणम् ।
 तत्राश्विनोःसोमपानम् । तद्वंशकथनम् । ककुत्स्थादीनामुत्पत्तिः ।
 सत्यव्रतकथा । त्रिशङ्कोः कथानकम् । त्रिशङ्कोः स्वर्गवासः ।
 हरिश्चन्द्रेनृपे सतित्रिशङ्कोर्विश्वामित्रेण समागमः । हरिश्चन्द्र-
 कथा । राज्ञःपुत्रोत्सवः । शनःशेषवधाश्रयाकथा । विश्वा-
 मित्रेण शनःशेषस्य मोचनम् । हरिश्चन्द्रेण विश्वामित्रवैरम् ।
 हरिश्चन्द्रस्य राज्यविध्वंसः । नृपस्य दक्षिणा दानयत्नः । तत्कृतः
 शोकः । हरिश्चन्द्रेणात्मविक्रयः । चाण्डालेन हरिश्चन्द्रक्रयः ।
 हरिश्चन्द्रस्य चाण्डालगृहेऽवस्थानम् । भूभृतःपुत्रभार्याकथा ।
 पत्नीमभिज्ञाय हरिश्चन्द्रस्य शोकः । हरिश्चन्द्रस्य स्वर्गवासः ।
 शताक्षो महिमा । राजवार्तायाः प्रश्नः । गौरीजन्म नानापीडो-
 द्भवश्च । पार्वत्या हिमालयाजन्म । आत्मतत्त्वनिरूपणम् ।
 विश्वरूपदर्शनम् । ज्ञानस्य मोक्षार्थत्वम् । मन्त्रसिद्धेःसाधनम् ।

ब्रह्मतत्त्वम् । भक्तिमहिमा । देव्या महोत्सवव्रतानि स्थानानि च ।
भगवती, पूजनम् । ब्रह्मपूजा विधानम् ।

अष्टमस्कन्धे :—

मनवे देव्या वरदानम् । वराहेण धरोद्धरणम् । मनुवंशवर्णनम् ।
प्रियव्रतकथानकम् । भूमण्डलस्य विस्तारः । देवीवर्णनं देव्यु-
पास्तिश्च । मूलादूर्ध्वमहार्यवर्णनम् । इलावृत्तवर्णनम् । वर्षान्तर्गत
सेव्यसेवकत्वकथनम् । तत्र सेव्यसेवकरूपाणां वर्णनम् । वर्षान्तरे
क्रमप्राप्ता सेव्यसेवकता । द्वीपान्तरसमाचारः । शिष्टद्वीप
समाचारः । लोकालोकगिरिव्यवस्था । रवेर्गमनमाद्यादिप्रकारः ।
सोमादीनां गत्यनुसारेण विविधं फलम् । ध्रुवमण्डलसंस्थानम् ।
राहुमण्डलस्य सूर्यचन्द्रोपरागश्च । तलादेवर्णनम् । तलातलस्थितिः ।
नरकस्वरूपम् । पातकोपपादनम् । शिष्टानां नरकाणां वर्णनम् ।
देव्याराधनम् ।

नवमस्कन्धे :—

संक्षेपेण शक्तिवर्णनम् । पंचप्रकृतिसंभवः । देवतादिसृष्टिः ।
सरस्वतीस्तोत्र पूजादि । धर्मात्मजेन नारदाय सरस्वती महास्तोत्र
कथनम् । लक्ष्मीगंगा भारतीनां जन्म पृथ्वीलोके । तासां
शापोद्धारप्रकारः । गङ्गादीनां समुत्पत्तिः कलौ वर्त्तनञ्च । शक्त्यु-
त्पत्तिप्रसङ्गतोभूमिशक्तेः समुत्पत्तिः । धरादेव्या अपराधेकृते सति-
नरकादि फलप्राप्तिकथनम् । गङ्गोत्पत्तिः । राधाकृष्णाऽङ्ग-
संभवाया गङ्गाया गोलोके समुत्पत्तिः । जाह्नवी नारायणप्रिया-

अस्तीति कथनम् । वङ्गविष्णोः परस्पर सम्बन्धकरणम् ।
 तुलस्युपाख्यानप्रश्नः । महालक्ष्म्या राजगृहे जन्म । धर्मव्रज-
 सुतायास्तुलस्याः कथा । शङ्खचूडेन तुलस्याः सङ्गतिः संवादश्च ।
 तयोर्विवाहानन्तरं देवानां वैकुण्ठगमनम् । शङ्खचूडस्य देवैः सह
 संग्रामः । शङ्खचूडमहेशयोर्युद्धम् । युद्धारम्भः । जनार्दनेन शङ्ख-
 चूडस्य कवचहरणम् । तुलसीसंगमवर्णनं तन्माहात्म्यञ्च । महामन्त्र
 सहितं तुलसीपूजनम् । सावित्र्याख्यानम् । तस्या राजोदरे जन्म ।
 अध्यात्मप्रश्नः । क्षान्धर्म फलम् । नानादान फलम् । सावित्र्यै-
 मूलशक्ति महामन्त्रदानम् । पातकानां फलानि । कुण्डेषु ये पतन्ति
 तेषां लक्षणम् । अवशिष्टानां कुण्डानां कथनम् । पुनरपि शिष्टानां
 कुण्डानां कथनम् । देवीभक्त्या यमपुरीत्रयनाश कथनम् ।
 कुण्डानां लक्षणम् । देवीमहोत्कर्षः । महालक्ष्म्याख्यानम् । लक्ष्मी-
 जन्मादेनारदाय कथनम् । शक्रस्य ब्रह्मलोकं प्रति गमनम् ।
 महालक्ष्म्यर्चनक्रमादि । स्वाहाशक्तेरुपाख्यानम् । स्वधायाः-
 समुपाख्यानम् । दक्षिणाया उपाख्यानम् । षष्ठी देव्या उपाख्यानम् ।
 मंगलचण्ड्याः कथा । मनसायाः कथास्तोत्रादि । सुरभ्याख्यानम् ।
 राधाया दुर्गायाश्च चरित्रम् ।

दशमस्कन्धे :—

मनोःस्वायम्भुवस्याख्यानम् । भगवत्या विन्ध्याद्रिगमनम् ।
 विन्ध्येन भानुमार्गनिरोधः । वृषध्वजस्तुतिस्तस्मै वृत्तान्तकथनञ्च ।
 महाविष्णुस्तोत्रम् । अगस्त्येन देवी प्रार्थनातोविन्ध्याद्वेवृद्धि
 कुण्डनम् । मुनिना विन्ध्यवृद्धिकुण्डनम् । स्वारोचिषस्य मनोः कथा ।

चाक्षुषस्य मनोः कथा । सावर्णेर्मनोः कथा । महाकालीचरितम् ।
महालक्ष्मीमहासरस्वत्योश्चरितम् । नवमादि मन्त्रानां चरित्र
वर्णनम् ।

एकादशस्कन्धे :—

प्रातःकृत्यम् । शौचादि विधिः । स्नानादि विधिः रुद्राक्ष
धारण महिमा च । रुद्राक्षाणां बहुविधत्व कथनम् । जपमाला
विधानम् । रुद्राक्ष महिमा । एकवक्त्रादि रुद्राक्षाणां वर्णनम् ।
भूत शुद्धिः । शिरोव्रतविधानम् । गौण भस्मादि वर्णनम् ।
तस्य त्रिविधत्वं माहात्म्यञ्च । भस्म धारण विस्तरः । भस्मनो-
महिमा । विभूति धारण माहात्म्यम् । त्रिपुण्ड्रोर्ध्व पुण्ड्रयोर्महिमा ।
सन्ध्योपासनम् । सन्ध्यादि कृत्यम् । पूर्णोपचारादि कथनम् ।
मध्याह्न संध्या करणम् । ब्रह्मयज्ञादिकम् । गायत्री पुरश्चरणम् ।
वैश्वदेवादिकम् । भोजनान्ते करणीयं तप्तकृच्छ्रादि लक्षणञ्च ।
काम्यकर्म संग्रहणं प्रायश्चित्तविधानञ्च ।

द्वादशस्कन्धे :—

गायत्र्या ऋष्यादि कथनम् । वर्णानां शक्त्यादि । जगन्मातुः
कवचम् । गायत्री हृदयम् । गायत्री स्तोत्रम् । गायत्री नाम
सहस्रम् । दीक्षा विधिः । केनोपनिषत्कथा । गौतमं शापेन
ब्राह्मणानामन्यदेवतोपासनश्रद्धा । द्वीप वर्णनम् । पद्मरागादि
निर्मित प्राकार वर्णनम् । चिन्तामणि गृह वर्णनम् । जनमेजयेन
देवी मरघकरणम् । उपसंहारः पुराण फलदर्शनञ्च ।

भविष्यपुराणम्

सत्प्रतिपाद्य विषयाश्च नारदीय पुराणे ४ पा० १०० अ०

उक्ता यथा :—

अथ ते सम्प्रवक्ष्यामि पुराणं सर्वसिद्धिदम् ।
भविष्यं भवतः सर्वलोकाभीष्टप्रदायकम् ॥
तत्राहं सर्वदेवानामादिकर्त्ता समुद्यतः ।
सृष्ट्यर्थं तत्र सञ्जातोमनुः स्वायम्भुवःपुरा ॥
स मां प्रणम्यपप्रच्छ धर्मं सर्वार्थसाधकम् ।
अहं तस्मै तदाप्रीतः प्रावोचं धर्मसंहिताम् ॥
पुराणानां यदाव्यासो व्यासश्चक्रमहामतिः ।
तदा तां संहितां सर्वां पञ्चधा व्यभजन्मुनिः ॥
अघोरकल्पवृत्तान्तनानाश्चर्यकथाचिताम् ।”

तत्र प्रथमं पर्वणि :—

“तत्रादिमं स्मृतं पर्वं ब्राह्मं यत्रास्त्युपक्रमः ।
सूतशौनकसम्वादे पुराणप्रश्न संक्रमः ।
आदित्य चरितः प्रायः सर्वाख्यान समाखितः ।
सृष्ट्यादि लक्षणोपेतः शास्त्रसर्वस्वरूपकः ।
पुस्तलेखकलेखानां लक्षणञ्च ततःपरम् ।

संस्काराणाञ्च सर्वेषां लक्षणञ्चात्रकीर्तितम् ।
 पक्षत्यादितिथीनाञ्च कल्पाः सप्त च कीर्तिताः ।
 अष्टमाद्याः शेषकल्पा वैष्णवेपर्वणि स्मृताः ।
 शैवे च कामतोभिन्ना सौरैवान्त्यकथाचयः ।
 प्रतिसर्गाव्हयं पश्चान्नानाख्यानसमाचितम् ।
 पुराणस्योपसंहारः सहितं पर्व पञ्चमम् ।
 पृष्ठ पञ्चसु पूर्वस्मिन् ब्रह्मणो महिमाधिकः ।

द्वितीय तृतीय चतुर्थ पञ्चम पर्वसुः—

“धर्मे कामे च मोक्षे तु विष्णोश्चापिशिवस्य च ।
 द्वितीये च तृतीये च सौरो वर्गं चतुष्टये ।
 प्रतिसर्गाव्हयन्त्वान्त्यं प्रोक्तं सर्वं कथाचितम् ।
 एतद्विष्यं निर्दिष्टं पर्वव्यासेन धीमता ।
 चतुर्दशसहस्रं तु पुराणं परिकीर्तितम् ।
 भविष्यं सर्वदेवानां साम्यं यत्र प्रकीर्तितम् ।
 गुणानां तारतम्येन समं ब्रह्मेति हि श्रुतिः” ।

तत्फलश्रुतिः :—

तल्लिखित्वा तु यो दद्यात्पौष्पां चिद्धान्विमत्सरः ।
 गुडधेनुयुतं हेम वस्त्रमालयविभूषणैः ।
 वाचकम्पुस्तकञ्चापि पूजयित्वा विधानतः ।
 गन्वाद्यैर्भोज्यभक्ष्यैश्च कृत्वानीराजनादिकम् ।
 यो वै जितेन्द्रियो भूत्वा सोपवासः समाहितः ।
 अथवा यो नरो भक्त्या कीर्तयेच्छृणुयादपि ।

(६३)

स मुक्तः पातकैर्बोरैः प्रयाति ब्रह्मणः परम् ।
योऽप्यनुकम्पणीमेतां भविष्यस्य निरूपिताम् ।
पठेद्वा शृणुयान्चैतौ भुक्तिं मुक्तिञ्च बिन्दतः ।

नारदीय पुराणम्

तद्विषयाश्च :—

“शृणु विप्र ! प्रवक्ष्यामि पुराणं नारदीयकम् ।
पञ्चविंशतिसाहस्रं बृहच्चित्रकथाश्रयम् ॥ १ ॥

तत्रपूर्वभागे प्रथमपादे :—

“सूत शौनक सम्वादः सृष्टि संक्षेप वर्णनम् ।
नानाधर्मकथाः पुण्याः प्रवृत्तेः समुदाहृताः ।
प्राग्भागे प्रथमे पादे सनकेन महात्मना ।”

पूर्वभागे द्वितीयपादे :—

“द्वितीये मोक्षधर्माख्ये मोक्षोपायनिरूपणम् ।
वेदाङ्गानाञ्च कथनं शोकोत्पत्तिश्च विस्तरात् ।
सनन्दनेन गदिता नारदाय महात्मने ।”

पूर्वभागे तृतीयपादे :—

महातन्त्रे समुद्दिष्टं पशुपाशविमोक्षणम् ।
मन्त्रार्णां शोधनं दीक्षा मन्त्रोद्धारश्च पूजनम् ।

(६३)

प्रयोगाः कर्मफलैश्च साहचर्यं स्तोत्रमेव च ।
गणेशसूर्यविष्णूनां शिवशक्तयोरनुकृतात् ।
सनत्कुमार मुनिना नारदाय तृतीयके ।”

पूर्वभागे चतुर्थपादे :—

पुराण लक्षणञ्चैव प्रमाणं दानमेव च ।
पृथक् पृथक् समुद्दिष्टं दानकाल पुरःसरम् ।
चैत्रादि सर्वमासेषु तिथीनां च पृथक् पृथक् ।
प्रोक्तप्रतिपदादीनां व्रतं सर्वाघनाशनम् ।
सनातनेन मुनिना नारदाय चतुर्थके ।
पूर्वभागोऽयमुदितो बृहदाख्यान सञ्ज्ञितः ।”

तदुत्तरभागे :—

अस्योत्तरैविभागेतु प्रश्न एकादशी व्रते ।
वशिष्टेनाथ सम्वादो मान्धातुः परिकीर्तितः ।
रुक्माङ्गद कथापुण्या मोहिन्युत्पत्तिकर्म च ।
वसुशापश्च मोहिन्यै पञ्चादुद्धरणक्रिया ।
गंगा कथा पुण्यतमा गयायात्रानुकीर्तनम् ।
काश्यामाहात्म्यमतुलम्पुरुषोत्तम वर्णनम् ।
यात्रा विधानं क्षेत्रस्य ब्रह्माख्यानसमन्वितम् ।
प्रयागस्याथ माहात्म्यं कुरुक्षेत्रस्यतत्परम् ।
हरिद्वारस्य चाख्यानं कामोदाख्यानकन्तथा ।
बदरीतीर्थमाहात्म्यं कामाख्यायास्तथैव च ।

(६४)

प्रभासस्य च माहात्म्यं पुराणाख्यानकन्तथा ।
गौतमाख्यानकम् पश्चाद् वेदपादस्तवस्ततः ।
गोकर्णक्षेत्र माहात्म्यं लक्ष्मणाख्यानकं तथा ।
सेतु माहात्म्यं कथनं नर्मदातीर्थवर्णनम् ।
अवन्त्याश्चैव माहात्म्यं मथुरायास्ततःपरम् ।
वृन्दावनस्य महिमा वसो ब्रह्मान्तिकेगतिः ।
मोहिनीचरितम् पश्चादेवं वै नारदीयकम् ।

तत्फलश्रुतिः :—

यः शृणोति नरोभक्त्या श्रावयेद्वासमाहितः ।
स याति ब्रह्मणो धाम नात्र कार्याविचारणा ।
यस्त्वेतदिषपूर्णायां धेनूनां सप्तकाचितम् ।
प्रदद्याद्द्विजवर्याय स लभेन्मोक्षमेव च ।
यश्चानुक्रमणीमेतां नारदीयस्य वर्णयेत् ।
शृणुयाद्वैक चित्तेन सोऽपिस्वर्गगतिलभेत् ।

मार्कण्डेय पुराणम्

तत्प्रतिपाद्यविषयाश्च नारदपुराणं पूर्वभागे

८७ अ० उक्ता यथा :—

“यत्राधिकृत्य शकुनीन् सर्वधर्मं निरूपणम् ।
मार्कण्डेयेन मुनिना जैमिनेः प्राक् समीरितम् ॥

पक्षिणां धर्मसंज्ञानां ततो जन्म निरूपणम् ।
 पूर्वजन्मकथां चैषां विक्रिया च दिवस्पतेः ॥
 तीर्थयात्रा बलस्यातो द्रोपदेयकथानकम् ।
 हरिश्चन्द्रकथा पुण्या युद्धमाडीबकाभिधम् ॥
 पितापुत्रसमाख्यानं दत्तात्रेयकथा ततः ।
 हैहयस्याथ चरितं महाख्यानसमाचितम् ॥
 मदालसाकथा प्रोक्ता ह्यलकाचरिताचिता ।
 सृष्टिसंकीर्तनं पुण्यं नवधा परिकीर्तितम् ॥
 कल्पान्तकालनिर्देशो यक्षमसृष्टिनिरूपणम् ।
 रुद्रादिस्फुरिष्युक्ता द्वोपवर्षानुकीर्तनम् ॥
 मनूनां च कथा नाना कीर्तिताः पापहारिकाः ।
 तालु दुर्गाकथात्यन्तं पुण्यदा चाष्टमेऽन्तरे ॥
 तत्पश्चात्प्रणवोत्पत्तिस्त्रयीतेजः समुद्भवः ।
 मार्त्तण्डस्य च जन्माख्या तन्माहात्म्यसमाचिता ॥
 वैवस्वतान्वयश्चापि वत्सव्याश्चरितं ततः ।
 खनित्रस्य ततः प्रोक्ता कथा पुण्या महात्मनः ॥
 अविक्षिञ्चरितंचैव किमिच्छ द्रतकीर्तनम् ।
 नरिष्यन्तस्य चरितं इक्ष्वाकुचरितं ततः ॥
 तुलस्याश्चरितं पञ्चद्रामचन्द्रस्य सतकथा ।
 कुशवंशसमाख्यानं सोमवंशानुकीर्तनम् ॥
 पुरुरवः कथा पुण्या नहुषस्य कथाद्भुता ।
 ययाति चरितं पुण्यं यदुवंशानुकीर्तनम् ॥

(६६)

श्रीकृष्ण बालचरितं माथुरं चरितं ततः ।
द्वारकाचरितञ्चाथ कथा सर्वावतारजा ॥
ततः सांख्यसमुद्देशः प्रपञ्चासत्त्वकीर्त्तनम् ।
मार्कण्डेयस्य चरितं पुराणश्रवणे फलम् ।
यः शृणोति नरोभक्त्या पुराणमिदमादरात् ।
मार्कण्डेयामिधं वत्स स लभेत्परमां गतिम् ॥
यस्तु व्याकुरुते चैतच्छैवं स लभते पदम् ।
तत्प्रयच्छेद्विहित्वा यः सौवर्णकरिसंयुतम् ॥
कार्त्तिक्यां द्विजवर्याय स लभेद् ब्रह्मणः पदम् ।
शृणोति श्रावयेद्वापि यश्चानुक्रमणामिमाम् ॥
मार्कण्डेय पुराणस्य सलभेद्वाच्छिस्तफलम् ।

अग्निपुराणम्

तत्प्रतिपाद्यविषयाश्च—

भगवतोऽवतारः, सृष्टिप्रकारः, विष्णुपूजा, अग्निपूजा, मुद्रादि-
लक्षणम्, दीक्षा, अभिषेकः, मण्डपलक्षणम्, कुशमार्जनविधिः,
पवित्रारोपः, देवतायतनादिनिर्माणप्रकारः, शालग्रामलक्षणपूजे,
देवप्रतिष्ठानियामकदीक्षा, देवप्रतिष्ठाविधिः, ब्रह्माण्डस्वरूपं, गङ्गा-
द्वितीयमाहात्म्यं, दीपवर्णनम्, ऊर्ध्वार्धोलोकवर्णनम्, ज्योतिष्क-
स्वरूपम् । युद्धजयोपायषट्कर्मविधानम्, यन्त्रमन्त्रीषष्टप्रकारः,

कुञ्जिकार्चनविधिः, कोटिहोमविधानम्, ब्रह्मचर्यधर्मः, धाद-
कल्पः, ग्रहयज्ञः, वैदिकस्मार्त्तकर्मणी, प्रायश्चित्तम्, तिथिभेदे-
व्रतभेदः, धारव्रत नक्षत्रव्रते, मासव्रतम्, दीपदानविधिः, नूतन-
व्यूहारम्मादि, नरक निरूपणम्, दानव्रतम्, नाडी चक्रम् । सन्ध्या-
विधिः, गायत्र्यर्थः, शिवस्तोत्रं, राज्याभिषेकः, राजधर्मः,
राजाध्येय शास्त्रम्, शुभाशुभशकुनादि, मण्डलादि, रमणदीक्षा-
विधिः, श्रीरामनतिः, रत्नलक्षणम्, धनुर्विद्या, व्यवहारविधिः,
देवासुरयोर्युद्धम्, आयुर्वेदः, गजादिविकित्सा, पूजाप्रकारः ।
शान्तिविधिः, छन्दः शास्त्रम्, साहित्यम्, शिष्टानुशासनम्,
सृष्ट्यादि प्रलयवर्णने, शारीरिकरूपम्, नरकवर्णनम्, योगः, ब्रह्म-
ज्ञानम्, पुराणमाहात्म्यञ्च ।

ब्रह्मवैवर्त्त पुराणम्

तत्प्रतिपाद्यविषयाश्च बृहन्नारदीये ४ पा० १०१ अ०

उक्ता यथा—

ब्रह्मोवाच— शृणु वत्स प्रवक्ष्यामि पुराणं दशमं तव ।
ब्रह्मवैवर्त्तकं नाम वेदमार्गानुदर्शकम् । सार्वर्णिर्यत्र भगवान्
साक्षाद्देवर्षयेऽतिथिः । नारदाय पुराणार्थं प्राह सर्वमलौकिकम् ।
धर्मार्थकाममोक्षाणां सारः प्रीतिर्इरी हरे । तयोरभेदसिद्धयर्थं
ब्रह्मवैवर्त्तमुत्तमम् ।

(६८)

रथन्तरस्य कल्पस्य वृत्तान्तं यन्मयोदितम् ।
 शतकोटि पुराणं तत् संक्षिप्य प्राह वेदवित् ॥
 व्यासश्चतुर्द्धा संव्यस्य ब्रह्मवैवर्तं संक्षितम् ।
 अष्टादश सहस्रान्तपुराणं परिकीर्तितम् ॥
 ब्रह्म १ प्रकृति २ विघ्नेश ३ कृष्ण खण्ड ४ समाचितम् ।
 तत्र सूतर्षिसम्वादः पुराणोपक्रमो मतः ॥

तत्रप्रथमे ब्रह्मखण्डे :—

सृष्टिप्रकरणं त्वाद्यं ततो नारदवेधसोः ।
 विवादः सुमहान् यत्र द्वयोरासीत्पराभवः ॥
 शिवलोकगतिः पञ्चाज्ज्ञानलाभः शिवान्मुनेः ।
 शिववाक्येन तत्पश्चात् मरीचेनारदस्य तु ॥
 मननञ्चैव सावर्णिर्ज्ञानार्थं सिद्धसेविते ।
 आश्रमे सुमहापुण्ये त्रैलोक्याश्चर्यकारिणि ॥
 एतद्धि ब्रह्मखण्डं हि श्रुतं पापविनाशनम् ।

द्वितीये प्रकृति खण्डे :—

“ततः सावर्णिसम्वादो नारदस्य समीरितः ।
 कृष्णमाहात्म्यसंयुक्तो नानाख्यानकथोत्तरः ॥
 प्रकृतेरंशभूतानां कलानाञ्चापि वर्णितम् ।
 माहात्म्यं पूजनाद्यञ्च विस्तरैण यथास्थितम् ॥
 एतत्प्रकृतिखण्डं हि श्रुतं भूतिविधायकम् ।

तृतीये गणेश खण्डे :—

गणेशजन्मसम्प्रश्नः सपुण्यकमहाव्रतम् ।

पार्वत्याः कार्तिकेयेन सह विघ्नेशसम्भवः ॥
चरितं कार्तवीर्यस्य जामदग्न्यस्य चाद्भुतम् ।
विवादः सुमहान्पञ्चाजामदग्न्यगणेशयोः ॥
एतद्विघ्नेशखण्डं हि सर्वं विघ्नघिनाशनम् ।”

चतुर्थे श्रीकृष्णजन्मखण्डे :—

“श्रीकृष्णजन्म सम्प्रश्नो जन्मारुयानं ततोऽद्भुतम् ।
गोकुले गमनं पश्चात्पूतनादिवधोऽद्भुतः ॥
बाल्यकौमारजा लीलाविधिधास्तत्र वर्णिताः ।
रासक्रीडा च गोपीभिः शारदी समुदाहृता ॥
रहस्ये राधया क्रीडा वर्णिता बहुविस्तरा ।
सहाक्रूरेण तत्पश्चान्मथुरा गमनं हरेः ॥
कंसादीनां वधे वृत्ते सदस्यद्विजसंस्कृतिः ।
काश्य सान्दीपनेः पश्चाद् विद्योपादानमद्भुतम् ॥
यवनस्य वधः पश्चाद् द्वारकागमनं हरेः ।
नरकादि वधस्तत्र कृष्णेन विहितोऽद्भुतः ॥
कृष्णखण्डमिदं विप्र ! नृणां संसार खण्डनम् ।

तत्फलश्रुति :—

“पठितञ्च श्रुतं ध्यातं पूजितं चाभिघर्णितम् ।
इत्येतद् ब्रह्मवैवर्त्तं पुराणं चात्यलौकिकम् ॥
न्यासोक्तं चादिसम्भूतं पठन् शृण्वन् विमुच्यते ।
विज्ञानज्ञानशमनाद् घोरात्संसारसागरात् ॥

लिखित्वेदं च यो दद्यान्माध्यां वेनुसमाक्षितम् ।
 ब्रह्मलोकमवाप्नोति स मुक्तोऽज्ञानबन्धनात् ॥
 यश्चानुकमणीं वाऽपि पठेद् वा शृणुयादपि ।
 सोऽपि कृष्णप्रसादेन लभते वाञ्छितम्फलम् ॥

लिङ्गपुराणम्

व्यास प्रणीते महापुराणे प्रतिपाद्य विषयाः

नारदपुराणे १०२ अ० उक्ता यथा :—

ब्रह्मोवाच ।

शृणु पुत्र ! प्रवक्ष्यामि पुराणं लिङ्गसंज्ञितम् ।
 पठतां शृण्वताञ्चैव भुक्तिमुक्तिप्रदायकम् ॥
 यच्चलिङ्गामिधे तिष्ठन् चङ्गिलिङ्गे हरोऽभ्यधात् ।
 मह्यं धर्मादिसिद्धयर्थमग्निकल्पकथाश्रयम् ॥
 तदेव व्यासदेवेन भागद्वयसमाक्षितम् ।
 पुराणं लिङ्गमुदितं ब्रह्माख्यानविचित्रितम् ।
 तदेकादशसाहस्रं हरमाहात्म्यसूचकम् ।
 परं सर्वपुराणानां सारभूतं जगत्त्रये ।
 पुराणोपक्रमेप्रश्नः सृष्टि संक्षेपतः पुरा ॥

तत्र पूर्वभागे—

योगाख्यानं ततः प्रोक्तं कल्याणानं ततः परम् ॥
 लिङ्गोद्भवस्तदर्था च कीर्तिता हि ततः परम् ॥

सनत्कुमारशैलादि संवादश्चाथ पावनः ।
 ततो दधीचिचरितं युगधर्मनिरूपणम् ॥
 ततो भुवनकोषाख्या सूर्यसोमान्वयस्ततः ।
 ततश्च विस्तरात्सर्गस्त्रिपुराख्यानकस्तथा ॥
 लिंगप्रतिष्ठा च ततः पशुपाशविमोक्षणम् ।
 शिवव्रतानि च तथा सदाचारनिरूपणम् ॥
 प्रायश्चित्तान्परिष्ठानि काशीश्रोशैलवर्णनम् ।
 अन्धकारयानकपश्चात् बाराहचरितं पुनः ॥
 नृसिंहचरितं पश्चाज्जलन्धरवधस्ततः ।
 शैवं सहस्रनामाथ दक्षयज्ञविनाशनम् ॥
 कामस्य दहनं पश्चात् गिरिजायाः करग्रहः ।
 ततो विनायकाख्यानं नृत्याख्यानं शिवस्य च ॥
 उपमन्युकथा चापि पूर्वभाग इतीरितः ।”

उत्तर भागे—

विष्णुमाहात्म्यकथनमम्बरीषकथा ततः ।
 सनत्कुमारनन्दीशसम्वादश्चपुनर्मुने ॥
 शिवमाहात्म्यसंयुक्तस्नानयागादिकं ततः ।
 सूर्यपूजाविधिश्चैव शिवपूजा च मुक्तिदा ॥
 दानानि बहुधोकानि श्राद्धप्रकरणन्ततः ।
 प्रतिष्ठा तत्र गदिता ततोऽघोरस्य कीर्तनम् ॥
 व्रजेश्वरी महाविद्या गायत्री महिमा ततः ।
 त्र्यम्बकस्य च माहात्म्यं पुराणश्रवणस्य च ॥

एतस्योपरिभागस्ते लैगस्य कथितो मया ।
 व्यासेन हि निबद्धस्य रुद्रमाहात्म्यसूचिनः ॥
 लिखित्वैतत्पुराणन्तु तिलधेनुसमाचितम् ।
 फाल्गुन्यां पूर्णिमायां यो दद्याद्भक्त्या द्वित्रातये ॥
 यः पठेच्छृणुयाद्वापि लेङ्गं पापापहं नरः ।
 स भुक्तभोगोलोकेऽस्मिन्नन्ते शिवपुरम्बजेत् ॥
 लिङ्गानुक्रमणीमेतां पठेद्यः शृणुयात्तथा ।
 तावुभौ शिवभक्तौ तु लोकद्वितयभोगिनौ ॥
 जायेतां गिरिजाभर्तुः प्रसादान्नात्र संशयः ।

वराहपुराणम्

तद्विषयाश्च नारदीय पुगणे पूर्वभागे बृहदुपाख्याने

चतुर्थभागे १०३ अध्याये उक्ता यथा :—

श्री ब्रह्मोवाच

‘शृणु वत्स ! प्रवक्ष्यामि वाराहं वै पुराणकम् ।
 भागद्वययुतं शश्वद्विष्णुमाहात्म्यसूचकम् ।
 मानवस्य तु कल्पस्य प्रसङ्गं मत्कृतं पुरा ।
 निबबन्ध पुराणेऽस्मिन्नुत्विशसहस्रके ॥
 व्यासो हि विदुषां श्रेष्ठः साक्षान्नारायणो भुवि ।
 तत्रादौ शुभसंवादाः स्मृतो भूमिबराहयोः ।”

तत्र पूर्व भागे :—

“अथादिकृतवृत्तान्ते रम्यस्यचरितं ततः ।

दुर्जयाय च तत्पञ्चाङ्गाद्वकल्पउदीरितः ॥

महातपस आख्यानं गौर्युत्पत्तिस्ततःपरम् ।

चिनायकस्य नागानां सेनान्यादित्ययोरपि ॥

गणानाञ्च तथा देव्या धनदस्य वृषस्य च ।

आख्यानं सत्यतपसो ब्रताख्यानसमन्वितम् ॥

अगस्त्यगीता तत्पञ्चाङ्गद्विगीता प्रकीर्तिता ।

महिषासुरविध्वंसे माहात्म्यञ्च त्रिशक्तिजम् ।

पर्वार्ध्यायस्ततःश्वेतोपाख्यानं गोप्रदानिकम् ।

इत्यादिकृतवृत्तान्तं प्रथमोद्देशनामकम् ॥

भगवद्बुधर्मके पञ्चाद्व्रततार्थकथानकम् ।

द्वात्रिंशदपराधानां प्रायाश्चित्तं शरीरकम् ॥

तीर्थानाञ्चापि सर्वेषां माहात्म्यं पृथगीरितम् ।

मथुराया विशेषेण श्राद्धादीनां विधिस्ततः ॥

वर्णनं यमलोकस्य ऋषिपुत्रप्रसङ्गतः ।

विपाकः कर्मणाञ्चैव विष्णुव्रत निरूपणम् ॥

गोकर्णस्य च माहात्म्यं कीर्तितं पापनाशनम् ।

इत्येष पूर्वभागोऽस्य पुराणस्य निरूपितः ॥

उत्तरभागे :—

उत्तरे प्रविभागे तु पुलस्त्यकुराजयोः ।

संवादे सर्वतीर्थानां माहात्म्यं विस्तरात्पृथक् ॥

(७४)

अशेषधर्माश्चाख्याताः पौष्करं पुण्यपर्व च ।

इत्येवं सव वाराहं प्रोक्तं पापविनाशनम् ॥

तत्फलश्रुतिः :—

पठतां शृण्वताञ्चैव भगवद्भक्तिवर्द्धनम् ।

काञ्चनं गरुडं कृत्वा तिलध्रेनुसमाचितम् ॥

लिखित्वैतच्च यो दद्याच्चैत्र्यां विप्राय भक्तिः ।

स लभेद्वैष्णवं धाम देवविगणवन्दितः ॥

यो वानुकमणीमेतां शृणोत्यपि पठत्यपि ।

सोऽपि भक्तिं लभेद्विष्णौ संसारोच्छेदकारिणीम् ॥

वामन पुराणम्

तत्प्रतिपाद्य विषयाश्च नारद पुराणे उक्ता यथा :—

ब्रह्मोवाच ।

“शृणुवत्स ! प्रवक्ष्यामि पुराणं वामनाभिधम् ।

त्रिविक्रम चरित्राख्यं दशसाहस्रसंख्यकम् ॥

कूर्मकल्प समारुयानं वर्गत्रयकथानकम् ।

भागद्वय समायुक्तं वक्तुं श्रोतुं शुभावहम् ॥”

तत्र पूर्व भागे :—

“पुराणप्रश्नः प्रथमं ब्रह्मशीर्षेच्छिदा ततः ।

कपालमोचनाख्यानं दक्षयज्ञविहिंसनम् ॥

हरस्य कालरूपाख्या कामस्य दहनन्ततः ।

प्रह्लाद नारायणयो र्युद्धं देवासुराह्वयम् ॥
 सुकैश्यकसमाख्यानं ततो भुवनकोषकम् ।
 ततः काम्यव्रताख्यानं श्रीदुर्गाचरितं ततः ॥
 तपती चरितं पश्चात्कुरुक्षेत्रस्य वर्णनम् ।
 सरोमाहात्म्यमतुलं पार्वती जन्म कीर्त्तनम् ॥
 तपस्तस्या विवाहश्च गौर्युपाख्यानकन्ततः ।
 ततः कौशिक्युपाख्यानं कुमारचरितं ततः ॥
 ततोऽन्धकवधाख्यानं साध्योपाख्यानकन्ततः ।
 जाबालिचरितं पश्चादरजायाः कथाद्भुता ॥
 अन्धकेश्वरयोर्युद्धं गणत्वंचान्धकस्य च ।
 मरुतां जन्म कथनं बलेश्च चरितं ततः ॥
 ततस्तु लक्ष्म्याश्चरितं त्रैविक्रममतः परम् ।
 प्रह्लाद तीर्थ यात्रायां प्रोच्यन्ते तत्कथाः शुभाः ॥
 ततश्च धुन्धु चरितं प्रेतोपाख्यानकततः ।
 नक्षत्र पुरुषाख्यानं श्रीदामचरितं ततः ॥
 त्रिविक्रम चरित्रान्ते ब्रह्मप्रोक्तः स्तवोत्तमः ।
 प्रह्लादबलिसंवादे सुतले हरिशंसनम् ॥
 इत्येष पूर्व भागोऽस्य पुराणस्य तद्विदितः ॥”

तदुचरे भागे बृहद्रामनाख्ये :—

शृणुतस्योत्तरं भागं बृहद्वामन सञ्ज्ञकम् ।
 माहेश्वरी भगवती सौरी गाणेश्वरी तथा ॥
 चतस्रः संहिताश्चात्र पृथक् साहस्रसंख्यया ।

माहेश्वर्यान्तु कृष्णस्य तद्भक्तानाञ्च कीर्त्तनम् ॥
 भागवत्यांजगन्मातुरखतारकथाद्भुता ।
 सौर्व्या सूर्यस्य महिमा गदितः पापनाशनः ॥
 गणेश्वर्यां गणेशस्य चरितश्च महेशितुः ।
 इत्येतद् वामनं नाम पुराणं सुविचित्रकम् ॥
 पुलस्त्येन समारूपातं नारदाय महात्मने ।
 ततो नारदतः प्राप्तं व्यासेन सुमहात्मना ॥
 व्यासात्तु लब्धवान् वत्स तच्छिष्यो रोमहर्षणः ।
 स चारूपास्यति विप्रेभ्योनैमिषीयेभ्य एव च ॥
 एवं परम्पराप्राप्तं पुराणं वामनं शुभम् ॥”

तत्फलश्रुति :—

“ये पठन्ति च शृण्वन्ति तेऽपियान्ति परांगतिम् ।
 लिखित्वैतत्पुराणन्तु यः शरद्विषुवेऽर्पयेत् ॥
 चिन्ताय वेदविदुषे घृतत्रेनुसमाचितम् ।
 स समृद्धय नरकान्नयेत्स्वर्गं पितृन् स्वकान् ॥
 देहान्ते भुक्तभोगोऽसौ याति विष्णोः परम्पदम् ।

मत्स्यपुराणम्

तत्प्रतिपाद्य विषयाश्च तत्रैव २६० अध्याय उक्ता यथा—

सूतउवाच ।

पत्न्यः कथितं सर्वं यदुक्तं विश्वरूपिणा ।

मात्स्यं पुराणमखिलं धर्मकामार्थसाधनम् ॥
 यन्नादौ मनुसंम्वादो ब्रह्माण्ड कथनन्तथा ।
 सांख्यं शरीरकम्प्रोक्तं चतुर्मुखमुखोद्भवम् ॥
 देवासुराणामुत्पत्तिर्मास्तुतोत्पत्तिरेव च ।
 मदनद्वादशीतद्वल्लोकपालाभिपूजनम् ॥
 मन्वन्तराणामुद्देशो वैव्यराजाभिवर्णनम् ।
 सूर्याद्वैवस्वतोत्पत्तिर्बुधस्यागमनन्तथा ।
 पितृवंशानुकथनं श्राद्धकालस्तथैव च ॥
 पितृतीर्थप्रवासश्च सोमोत्पत्तिस्तथैव च ।
 कीर्त्तनं सोमवंशस्य ययातिचरितं तथा ॥
 कार्तवीर्यस्य माहात्म्यं वृष्णिवंशानुकीर्त्तनम् ।
 भृगुशा पस्तथा विष्णोर्देत्यशापस्तथैव च ॥
 कीर्त्तनं पुरुषेशस्य वंशो हौताशनस्तथा ।
 पुराणकीर्त्तनं तद्वत् क्रियायोगस्तथैव च ॥
 व्रतं नक्षत्रसंख्याकं मार्कण्डेयशयनं तथा ।
 कृष्णाष्टमीव्रतंतद्वद्रोहिणी चन्द्रसंज्ञितम् ॥
 तडागविधिमाहात्म्यं पादयोत्सर्ग एव च ।
 सौभाग्य शयनं तद्वदगस्त्यव्रतमेव च ॥
 तथानन्ततृतीया तु रसकल्याणिनी तथा ।
 आर्द्रानन्दकरी तद्वदुव्रतं सारस्वतं पुनः ॥
 उपरागामिषेकश्च सप्तमीश्नपनं पुनः ।
 भीमाख्या द्वादशी तद्वदनङ्गशयनं तथा ॥

अशून्यशयनं तद्वस्तथैवांगारकं व्रतम् ।
 सप्तमोसप्तकं तद्वद्विशोकद्वादशी तथा ॥
 मेरुप्रदानं दशधा ग्रहशान्तिस्तथैव च ।
 ग्रहस्वरूपकथनं तथा शिवचतुर्दशी ॥
 तथा सर्वफलत्यागः सूर्यवारव्रतं तथा ।
 संक्रान्तिस्नपनं तद्वद्विभूतिद्वादशी व्रतम् ।
 षष्टि व्रतानां माहात्म्यं तथा स्नानविधिक्रमः ॥
 प्रयागस्य तु माहात्म्यं सर्वतीर्थानुकीर्तनम् ।
 पैलाश्रमफलं तद्वद् द्वीपलोकानुकीर्तनम् ॥
 तथान्तरिक्षचारश्च ध्रुवमाहात्म्यमेव च ।
 भवनानि सुरेन्द्राणां त्रिपुरायोधनं तथा ॥
 पितृपिण्डदमाहात्म्यं मन्वन्तरं विनिर्णयः ।
 वज्राङ्गस्य तु सम्भूतिः तारकोत्पत्तिरेव च ॥
 तारकासुरमाहात्म्यं ब्रह्मदेवानुकीर्तनम् ।
 पार्वतीसम्भवस्तद्वत् तथा शिवतपोवनम् ॥
 अनङ्गदेहदाहस्तु रतिशोकस्तथैव च ।
 गौरीतपोवनं तद्वद्विश्वनाथप्रसादनम् ॥
 पार्वतऋषिसम्वादस्तथैवोद्वाहमङ्गलम् ।
 कुमारसम्भवस्तद्वत् कुमारविजयस्तथा ॥
 तारकस्य वधो घोरो नरसिंहोपवर्णनम् ।
 पद्मोद्भवविसर्गस्तु तथैवान्धकघातनम् ॥
 क्षाराणस्यास्तु माहात्म्यं नर्मदायास्तथैव च ।

प्रवरानुक्रमस्तद्वत् पितृनाथानुकीर्तनम् ॥
 ततोभयमुखोदानं दानं कृष्णाजिनस्य च ।
 तथा सावित्र्युपाख्यानं राजधर्मास्तथैव च ॥
 यात्रानिमित्तकथनं स्वप्नमाङ्गल्यकीर्तनम् ।
 वामनस्य तु माहात्म्यं तथैवादिचराहकम् ॥
 क्षारोदमथनं तद्वत्कालकूटमिशासनम् ।
 प्रासादलक्षणन्तद्वन्मण्डपानान्तु लक्षणम् ॥
 पुरुवंशे तु सम्प्रोक्तं भविष्यद्राजवर्णनम् ।
 तुलादानादि बहुशो महादानानुकीर्तनम् ॥
 कल्पानुकीर्तनं तद्वद्ग्रन्थानुक्रमणी तथा ।
 एतत्पवित्रमायुष्यमेतत्कीर्तिविचर्धनम् ॥
 एतत्पवित्रं कल्याणं महापापहरं शुभम् ।
 अस्मात् पुराणादपि पादमेकं पठेत्तु यः सोऽपि विमुक्तपापः ।
 नारायणाख्यं पदमेति नूनमनङ्गवद्विष्यसुखानि भुङ्क्ते ॥

कूर्म पुराणम्

व्यास प्रणीतेषु अष्टादश महापुराणेषु पञ्चदशे पुराणे
 तत्प्रतिपाद्य विषयाश्च बृहन्नारदीये दर्शिता यथा :—
 श्री ब्रह्मोवाच—

शृणु वत्स ! मरीचेऽयं पुराणं कूर्मं संक्षिप्तम् ।
 लक्ष्मीकल्पानुवरितं यत्र कूर्मवपुर्हरिः ॥

धर्मार्थकाममोक्षाणां माहात्म्यञ्च पृथक् पृथक् ।
 इन्द्रद्युम्नप्रसङ्गेन प्राहर्षिभ्यो दयाधिकम् ॥
 तत्सप्तदशसाहस्रं सचतुःसंहितं शुभम् ।
 यत्र ब्राह्म्या(संहिता)पुरा प्रोक्ता धर्मा नानाविधा मुने ॥
 नानाकथाप्रसङ्गेन नृणां सद्गतिदायकाः ।”

तत्पूर्व भागे—

“तत्र पूर्व विभागे तु पुराणोपक्रमः पुरा ।
 लक्ष्मीप्रद्युम्नसम्वादः कूर्मर्षिगणसङ्ख्या ॥
 वर्णाश्रमाचारकथा जगदुत्पत्तिकीर्तनम् ।
 कालसंख्या समासेन लयान्ते स्तघनं विभोः ॥
 ततः सङ्क्षेपतः सर्गः शाङ्करचरितं तथा ।
 सहस्रनाम पार्वत्या योगस्य च निरूपणम् ॥
 भृगुवंशसमाख्यानं ततः स्वायम्भुवस्य च ।
 देवादीनां समुत्पत्तिर्दक्षयज्ञाहतिस्ततः ॥
 दक्षसृष्टि कथा पश्चात् कश्यपान्वयकीर्तनम् ।
 आत्रेयवंशकथनं कृष्णाय चरितं शुभम् ॥
 मार्कण्डेयकृष्णसंवादो व्यासपाण्डवसंकथा ।
 युगधर्मानुकथनं व्यासजैमिनिकी कथा ॥
 वाराणस्याश्च माहात्म्यं प्रयागस्य ततः परम् ।
 त्रैलोक्यवर्णनञ्चैव वेदशास्त्रानिरूपणम् ॥”

तदुत्तर भागे—

उत्तरैःस्य विभागे तु पुरा गीतेश्वरी ततः ।

व्यासगीता ततः प्रोक्ता नाना धर्मप्रबोधिनी ॥

नानाविधानां तीर्थानां माहात्म्यञ्च पृथक् ततः ।

नानाधर्म प्रकथनं ब्राह्मीयं संहिता स्मृता ॥

अतः परं भगवती संहितार्थनिरूपणे ।

कथिता यत्र वर्णानां पृथग् वृत्तिरुदाहृता ॥

तदुत्तर भागे भगवत्याख्यद्वितीयसंहितायाः पञ्चसु पादेषु—

“पादेऽस्याः प्रथमे प्रोक्ता ब्राह्मणानां व्यवस्थितिः ।

सदाचारात्मिका वत्स ! भोगसौख्यविषर्द्धिनी ॥

द्वितीये क्षत्रियाणान्तु वृत्तिः सम्यक्प्रकीर्तिता ।

यया त्वाश्रितया पापं विधूयेह व्रजेहि वम् ॥

तृतीये वैश्यजातीनां वृत्तिरुक्ता चतुर्विधा ।

यया चरितया सम्यक् लभते गतिमुत्तमाम् ॥

चतुर्थेऽस्यास्तथा पादे शूद्रवृत्तिरुदाहृता ।

यया सन्तुष्यति श्रोत्रो नृणां श्रेयो विवर्द्धनः ॥

पञ्चमेऽस्यास्ततः पादे वृत्तिः सङ्कुरजन्मनाम् ।

यया चरितयाऽऽप्नोति भाविनीमुत्तमांजनिम् ॥

इत्येषा पञ्चपाद्युक्ता द्वितीया संहिता मुने ।

तृतीयात्रोदिता सौरी नृणां कामविधायिनी ॥

षोढा षट्कर्मसिद्धिं सा बोधयन्ती च कामिनाम् ।

चतुर्थी वैष्णवी नाम मोक्षदा परिकीर्तिता ॥

चतुष्पदी द्विजादीनां साक्षादुग्रहस्वरूपिणी ।

ताः क्रमात् षट्चतुर्द्वेषु साहस्राः परिकीर्तिताः ॥

तत्फलश्रुतिः :—

“एतत्कूर्मपुराणन्तु चतुर्वर्गफलप्रदम् ।
पठतां शृण्वतां नृणां सर्वोत्कृष्टगतिप्रदम् ॥
लिखित्वैतत्तु यो भक्त्या हेमकूर्मसमन्वितम् ।
ब्राह्मणायात्यने दद्यात् स याति परमांगतिम् ॥

स्कन्दपुराणम्

तत्प्रतिपाद्यविषयाश्च

श्री नारदीयपुराणे पूर्वभागे बृहदुपाख्याने चतुर्थपादे

१०४ अध्याये उक्ता यथा

ब्रह्मोवाच ।

शृणु वक्ष्ये मरीचे च पुराणं स्कन्दसंज्ञितम् ।
यस्मिन् प्रतिपदं साक्षान्महादेवो व्यवस्थितः ॥
पुराणे शतकोटी तु यच्छैवं वर्णितं मया ।
लक्षितस्यार्थज्ञातस्य सारो व्यासेन कीर्तितः ॥
स्कन्दाह्वयस्यत्र खण्डाः सप्तैव परिकल्पिताः ।
एकाशीति सहस्रन्तु स्कान्दं सर्वार्थहन्तनम् ॥
यः शृणोति पठेद्वापि स तु साक्षाच्छिवः स्थितः ।
यत्र माहेश्वरा धर्माः वण्मुखेन प्रकाशिताः ।
कल्पे तत्पुरुषेवृत्ताः सर्वसिद्धिविधायिकाः ॥

तत्र माहेश्वर खण्डे :—

“तस्य माहेश्वरश्चाद्यः खण्डः पापप्रणाशनः ॥

किञ्चिन्न्यूनाङ्गसाहसो बहुपुण्यो बृहत्कथः ।
 सुचरित्रशतैर्वृक्तः स्कन्दमाहात्म्यसूचकः ॥
 यत्र केदारमाहात्म्ये पुराणोपक्रमः पुरा ।
 दक्षयज्ञकथा पश्चाच्छिशुलिङ्गार्चनेफलम् ॥
 समुद्रमथनाख्यानं देवेन्द्रचरितं ततः ।
 पार्वत्या समुपाख्यानं विवाहस्तदनन्तरम् ॥
 कुमारोत्पत्तिकथनं ततस्तारकसङ्गरः ।
 ततः पशुपताख्यानं चण्डाख्यानसमाचितम् ॥
 द्यूतप्रवर्त्तनाख्यानं नारदेन समागमः ।
 ततः कुमारमाहात्म्ये पञ्चतीर्थकथानकम् ॥
 धर्मवर्मनृपाख्यानं नदीसागरकीर्त्तनम् ।
 इन्द्रद्युम्नकथा पश्चात्ताडीजङ्गकथाचिता ॥
 प्रादुर्भावस्ततो मह्याः कथा दमनकस्य च ।
 महीसागरसंयोगः कुमारेणकथा ततः ॥
 ततस्तारकयुद्धञ्च नानाख्यानसमाचितम् ।
 वधश्च तारकस्याथ पञ्चलिङ्गनिवेशनम् ॥
 द्वीपाख्यानं ततः पुण्यं ऊर्ध्वलोकव्यवस्थितः ।
 ब्रह्माण्डस्थितिमानञ्च वर्करेशकथानकम् ॥
 महाकालसमुद्भूतिः कथा चास्य महाद्भुता ।
 वासुदेवस्य माहात्म्यं कोरितीर्थं ततः परम् ॥
 नानातीर्थसमाख्यानं गुप्तक्षेत्रे प्रकीर्त्तितम् ।
 पाण्डवानां कथापुण्या महाविद्या प्रसाधनम् ॥

तीर्थायात्रासमाप्तिश्च कौमारमिदमद्भुतम् ।
 अरुणाचलमाहात्म्ये सनकब्रह्मसंकथा ॥
 गौरीतपःसमाख्यानं तत्तत्तीर्थनिरूपणम् ।
 महिषासुरजाख्यानं वधश्चास्य महाद्भुतः ॥
 शोणाचलेशिवास्थानं नित्यदा परिकीर्त्तिनम् ।
 इत्येष कथितः स्कान्दे खण्डो माहेश्वरोऽद्भुतः ॥

द्वितीये वर्णने खण्डे :—

द्वितीयो वैष्णवः खण्डस्तस्याख्यानानि मे शृणु ।
 प्रथमं भूमिवाराहं समाख्यानं प्रकीर्तितम् ॥
 यत्र चोचककुघ्नस्य माहात्म्यं पापनाशनम् ।
 कमलायाः कथा पुण्या श्रीनिवासस्थितिस्ततः ॥
 कुलालाख्यानकञ्चात्र सुवर्णमुखरी कथा ।
 नानाख्यानसमायुक्ता भारद्वाजकथाद्भुता ॥
 मतङ्गाञ्जनसंवादः कीर्त्तितः पापनाशनः ।
 पुरुषोत्तममाहात्म्यं कीर्त्तितं चोत्कले ततः ॥
 मार्कण्डेयसमाख्यानमम्बरीषस्य भूपतेः ।
 इन्द्रद्युम्नस्य चाख्यानं विद्यापतिकथा शुभा ॥
 जैमिनेः समुपाख्यानं नारदस्यापि बाङ्गव ।
 नीलकण्ठसमाख्यानं नारसिंहोपवर्णनम् ॥
 अश्वमेधकथा राज्ञो ब्रह्मलोकगतिस्तथा ।
 रथयात्राविधिः पञ्चाङ्गन्मस्नानविधिस्तथा ॥
 दक्षिणामूर्त्युपाख्यानं गुण्डिचाख्यानकं ततः ।

रथरक्षा विधानञ्च शयनोत्सवकीर्त्तनम् ॥
 श्वेतोपाख्यानमत्रोक्तं बह्व्युत्सवनिरूपणम् ।
 दोलोत्सवो भगवतो व्रतं सांवत्सराभिधम् ॥
 पूजा च कामिभिर्विष्णोरुद्दालकनियोगकः ।
 मोक्षसाधनमत्रोक्तं नानायोगनिरूपणम् ॥
 दशावतारकथनं स्नानादि परिकीर्तनम् ।
 ततो बदरिकायाश्च माहात्म्यं पापनाशनम् ॥
 अग्न्यादि तीर्थमाहात्म्यं वैनतेयशिलाभवम् ।
 कारणं भगवद्वासे तीर्थं कापालमोचनम् ॥
 पञ्चधाराभिधं तीर्थं मेरुसंस्थापनं तथा ।
 ततः कार्तिकमाहात्म्ये माहात्म्यं मदनालसम् ॥
 धूम्रकोशसमाख्यानं दिनकृत्यानि कार्तिके ।
 पञ्चमीष्मव्रताख्यानं कीर्त्तिदं भुक्तिमुक्तिदम् ॥
 तद्व्रतस्य च माहात्म्ये विधानं स्नानजं तथा ।
 पुण्ड्रादिकीर्त्तनञ्चात्र मालाधारणपुण्यकम् ॥
 पञ्चामृतस्नानपुण्यं घण्टानादादिजं फलम् ।
 नानापुष्पाञ्चनफलं तुलसीदलजम्फलम् ॥
 नैवेद्यस्य च माहात्म्यं हरिवासन (र) कीर्त्तनम् ।
 अखण्डैकादशी पुण्यं तथा जागरणस्य च ॥
 मत्स्योत्सवविधानञ्च नाम माहात्म्यकीर्त्तनम् ।
 ध्यानादि पुण्यकथनं माहात्म्यं मथुराभवम् ॥
 मथुरातीर्थमाहात्म्यं पृथगुक्तं ततः परम् ।

वनानां द्वादशानाञ्च माहात्म्यं कीर्तितं ततः ॥
 श्रीमद्भागवतस्यात्र माहात्म्यं कीर्तितं परम् ।
 वज्रशाण्डिल्यसम्बादमन्तलीलाप्रकाशकम् ॥
 ततो माघस्य माहात्म्यं स्नानदानजपोद्भवम् ।
 नानाख्यानसमायुक्तं दशाध्याये निरूपितम् ॥
 ततो वैशाखमाहान्त्ये शय्यादानादिजम्फलम् ।
 जलदानादि विधयः कामाख्यानमतः परम् ॥
 श्रुतदेवस्य चरितं व्याधोपाख्यानमद्भुतम् ॥
 तथाक्षयतृतीयादेर्विशेषान्पुण्यकीर्तनम् ।
 ततस्त्वयोध्या माहात्म्ये चक्रब्रह्माहतीर्थके ॥
 ऋणपापविमोक्षाख्ये तथाधारसहस्रकम् ।
 स्वर्गद्वारं चन्द्रहरि धर्महृदयुपवर्णनम् ॥
 स्वर्णवृष्टेरुपाख्यानं तिलोदा सरयूयुतिः ।
 सीताकुण्डं गुनहरिः सरयूर्ध्वराचयः ॥
 गोप्रचारञ्च दुग्धोदं गुरुकुण्डादि पञ्चकम् ।
 घोषार्कादीनि तीर्थानि त्रयोदश ततः परम् ॥
 गयाकूपस्य माहात्म्यं सर्वार्थविनिवर्त्तकम् ।
 माण्डव्याश्रमपूर्वाणि तीर्थानि तदनन्तरम् ॥
 अजितादि मानसादि तीर्थानि गदितानि च ।
 इत्येष वैष्णवः खण्डो द्वितीयः परिकीर्तितः ॥

तृतीये ब्रह्मखण्डे—

“अतः परं ब्रह्मखण्डं मरीचे शृणु पुण्यदम् ।

यत्र वै सेतुमाहात्म्ये फलं स्नानेक्षणोद्भवम् ॥
 गालवस्य तपश्चर्या राक्षसाख्यानकं ततः ।
 चकतीर्यादि माहात्म्यं देवीपतनसंयुतम् ॥
 वेतालतीर्थमहिमा पापनाशादि कीर्तनम् ।
 मङ्गलमदिकमाहात्म्यं ब्रह्मकुण्डादि वर्णनम् ॥
 हनूमत् कुण्डमहिमागस्त्यतीर्थभवम्फलम् ।
 रामतीर्यादि कथनं लक्ष्मीतीर्थनिरूपणम् ॥
 शङ्खादितीर्थमहिमा तथासाध्यामृतादिजः ।
 धनुष्कोट्यादि माहात्म्यं क्षीरकुण्डादिजं तथा ॥
 गायत्र्यादिक तीर्थानां माहात्म्यं चात्र कीर्तितम् ।
 रामनाथस्य महिमा तत्त्वज्ञानोपदेशनम् ॥
 यात्राविधानकथनं सेतौ मुक्तिप्रदं नृणाम् ।
 धर्मारण्यस्य माहात्म्यं ततः परमुदीरितम् ॥
 स्थाणुः स्कन्दाय भगवान् यत्र तत्त्वमुपादिशत् ।
 धर्मारण्यसुसंभूतिस्तत्पुण्य परिकीर्तनम् ॥
 कर्मसिद्धेः समाख्यानं ऋषिवंश निरूपणम् ।
 अप्सरातीर्थमुत्थानां माहात्म्यं यत्र कीर्तनम् ॥
 वर्णनमाश्रमाणाञ्च धर्मतत्त्वनिरूपणम् ।
 देवस्थानविभागश्च वकुलार्क कथा शुभा ॥
 छत्रा नन्दा तथा शान्ता श्रीमाता च मतङ्गिनी ।
 पुण्यदात्र्यः समाख्याता यत्र देव्यः समास्थिताः ॥
 इन्द्रेण्यदि माहात्म्यं द्वारकादि निरूपणम् ।

लोहासुरसमाख्यानं गङ्गाकूपनिरूपणम् ॥
 श्रीरामचरितञ्चैव सत्यमन्दिरवर्णनम् ।
 जीर्णोद्धारस्यकथनं शासनप्रतिपादनम् ॥
 जातिभेदप्रकथनं स्मृतिधर्मनिरूपणम् ।
 ततस्तु वैष्णवा धर्मा नानाख्यानैरुदीरिताः ॥
 चातुर्मास्ये ततः पुण्ये सर्वधर्मनिरूपणम् ।
 दानप्रशंसा तत्पश्चाद् व्रतस्य महिमा ततः ॥
 तपसश्चैव पूजायाः सच्छिद्रकथनन्ततः ।
 प्रकृतीनां भिदाख्यानं शालग्रामनिरूपणम् ॥
 तारकस्य वधोपायो व्यक्षार्धमहिमा तथा ।
 चिण्णोः शापश्च वृक्षत्वं पार्वत्यनुनयस्ततः ॥
 हरस्य ताण्डवं नृत्यं रामनामनिरूपणम् ।
 हरस्य लिङ्गपतनं कथायै जवनस्य च ॥
 पार्वतीजन्मचरितं तारकस्य वधोऽद्भुतः ।
 प्रणवैश्वर्यं कथनं तारकाचरितं पुनः ॥
 दक्षयज्ञ समाप्तिश्च द्वादशाक्षररूपणम् ।
 ज्ञानयोग समाख्यानं महिमा द्वादशार्णजः ॥
 श्रवणादिक पुण्यञ्च कीर्तितं शर्मदं नृणाम् ।

तृतीय ब्रह्मखण्डस्तोत्तर भागे—

“ततो ब्रह्मोत्तरे भागे शिवस्य महिमाद्भुतः ।
 पञ्चाक्षरस्य महिमा गोकर्णमहिमा ततः ॥
 शिवरात्रेश्च महिमा प्रदोषव्रतकीर्तनम् ।

सोमवारव्रतञ्चापि सोमन्तिन्याः कथानकम् ॥
 भद्रायुत्पत्ति कथनं सदाचारनिरूपणम् ।
 शिववर्म समुद्देशो भद्रायुद्वाहवर्णनम् ॥
 भद्रायुमहिमा चापि भस्ममाहात्म्य कीर्तनम् ।
 शवराख्यानकञ्चैव उमामाहेश्वर व्रतम् ॥
 रुद्राक्षस्य च माहात्म्यं रुद्राध्यायस्य पुण्यकम् ।
 श्रवणादिक पुण्यञ्च ब्रह्मखण्डोऽयमीरितः ॥”

चतुर्थं काशी खण्डे—

“अतः परं चतुर्थन्तु काशीखण्डमनुत्तमम् ।
 विन्ध्यनारदयोरेव सम्वादः परिकीर्तितः ॥
 सत्यलोकप्रभावश्चागस्त्यावासे सुरागमः ।
 पतिव्रता चरित्रञ्च तीर्थचर्या प्रशंसनम् ॥
 ततश्च सप्त पूर्याख्या संयमिन्या निरूपणम् ।
 ब्रध्नस्य च तथेन्द्राग्नयोर्लोकांसिः शिवशर्मणः ॥
 अग्नेः समुद्रवश्चैव क्रव्याद्वरुणसम्भवः ।
 गन्धवत्यलकापुट्योरीश्वर्याश्च समुद्रवः ॥
 चन्द्रोद्बुधलोकानां कुजेज्यार्कभुवां क्रमात् ।
 सप्तर्षिणां ध्रुवस्यापि तपोलोकस्य वर्णनम् ॥
 ध्रुवलोक कथा पुण्या सत्यलोक निरीक्षणम् ।
 स्कन्दागस्त्य समालापो मणिकर्णो समुद्रवः ॥
 प्रभावश्चापि गङ्गाया गङ्गानाम सहस्रकम् ।
 वाराणसी प्रशंसा च भैरवादिर्भवस्ततः ॥

दण्डपाणी ज्ञानवाप्योरुद्वः समनन्तरम् ।
 ततः कलावत्याख्यानं सदाचारनिरूपणम् ॥
 ब्रह्मचारिसमारूपानं ततः स्त्रीलक्षणानि च ।
 कृत्याकृत्यचिनिर्देशो ह्यविमुक्तेश्वर्णनम् ॥
 गृहस्थयोगिनो धर्म्माः कालज्ञानं ततः परम् ।
 दिवोदास कथा पुण्या काशीवर्णनमेव च ॥
 योगिचर्चा च लोलाकौत्तरशाम्बकजा कथा ।
 द्रुपदार्कस्य ताक्ष्याख्यारुणार्कस्योदयस्ततः ॥
 दशाश्वमेधतीर्थाख्या मन्दराश्च गणागमः ।
 पिशाचमोचनाख्यां गणेशप्रेषणन्ततः ॥
 मायामणपनश्चाथ भुवि प्रादुर्भवस्ततः ।
 चिण्णुमाया प्रपञ्चोऽथ दिवोदासविमोक्षणम् ॥
 ततः पञ्चनदोत्पत्तिर्बिन्दुमाधव सम्भवः ।
 ततो वैष्णवतीर्थाख्या शूलिनः काशिकागमः ॥
 जैर्गाणव्येण सम्वादो ज्येष्ठे शाखा महेशितुः ।
 क्षेत्राख्यानं कन्दुकेशव्याघ्रेश्वरसमुद्भवः ॥
 शैलेश्वरत्नेश्वरयोः कृत्तिवासस्य चोद्भवः ।
 देवतानामधिष्ठानं दुर्गासुर पराक्रमः ॥
 दुर्गाया विजयश्चाथ ओङ्कारेशस्य वर्णनम् ।
 पुनरोङ्कारमाहात्म्यं त्रिलोचन समुद्भवः ॥
 केदाराख्या च धर्म्मेश कथा विश्वभुजोद्भवा ।
 धीरेश्वरसमाख्यानं गङ्गामाहात्म्यकीर्तनम् ॥

विश्वकर्म्मेश महिमा दक्षयज्ञोद्भवस्तथा
 सतीशस्यामृतेशादेर्मुञ्जस्तम्भः पराशरैः ॥
 क्षेत्रतीर्थं कदम्बश्च मुक्तिमण्डपसंकथा ।
 विश्वेश विभवश्चाथ ततो यात्रा परिक्रमः ॥

पञ्चमे अवन्ती खण्डे :—

“अतः परं त्वचन्त्याख्यं शृणु खण्डश्च पञ्चकम् ।
 महाकालवनाख्यानं ब्रह्मशीर्षच्छिदा ततः ॥
 प्रायश्चित्तविधिध्याग्नेस्तपस्त्रिच समागमः ।
 देवदीक्षा शिवस्तोत्रं नानापातकनाशनम् ॥
 कपालमोचनाख्यानं महाकालवनस्थितिः ।
 तीर्थं कलकलेशस्य सर्वपापप्रणाशनम् ॥
 कुण्डमपसरसञ्ज्ञश्च सर्गं रुद्रस्य पुण्यदम् ।
 कुटुम्बेशश्च विद्याभ्रमर्कटेश्वरतीर्थकम् ॥
 स्वर्गद्वारं चतुःसिन्धुतीर्थं शङ्खवापिका ।
 सकरार्कं गन्धवती तीर्थं पापप्रणाशनम् ॥
 दशाश्वमेधैकानंशा तीर्थं च हरिसिद्धिदम् ।
 पिशाचकादि यात्रा च हनूमत्कयमेश्वरी ॥
 महाकालेशयात्रा च बल्मीकेश्वरतीर्थकम् ।
 शक्रेशमेशोपाख्यानं कुशस्थल्याः प्रदक्षिणम् ॥
 अक्रूरमन्दाकिन्यङ्गुपादचन्द्रार्कवैमघम् ।
 करमेश कुम्भकुटेश लङ्कुटेशादि तीर्थकम् ॥
 मार्कण्डेशं यज्ञवापी सोमेशं नरकान्तकम् ।

केदारेश्वर रामेश सौभाग्येश नरार्ककम् ॥
 केशार्कशक्तिभेदश्च स्वर्णक्षरमुखानि च ।
 ओङ्कारेशादि तीर्थानि अन्धकस्तुतिकीर्त्तनम् ॥
 कालारण्ये लिङ्गसंख्या स्वर्णशृङ्गाभिधानकम् ।
 कुशस्थलया अवन्त्याश्चोज्जयिन्या अभिधानकम् ॥
 पद्मावती कुमुद्वत्यमरावतीति नामकम् ।
 विशाला प्रतिकल्पाभिधाने च ज्वरशान्तिकम् ॥
 शिप्रास्नानादिकफलं नागोन्मीता शिवस्तुतिः ।
 हिरण्याक्षवधाख्यानं तीर्थं सुन्दरकुण्डकम् ॥
 नीलगङ्गा पुष्कराख्यं विन्ध्यावासन तीर्थकम् ।
 पुरुषोत्तमाधिमासं तर्त्तीर्थश्चाग्रनाशनम् ॥
 गोमती वामने कुण्डे विष्णोर्नाम सहस्रकम् ।
 वीरेश्वरसरः कालभैरवस्य च तीर्थके ॥
 महिमा नागपञ्चम्यां नृसिंहस्य जयन्तिका ।
 कुटुवेश्वरयात्रा च देवसाधककीर्त्तनम् ॥
 कर्कराजाख्यतीर्थश्च विघ्नेशादि सुरोहनम् ।
 खट्वकुण्डप्रभृतिषु बहुतीर्थनिरूपणम् ॥
 यात्राष्टतीर्थजा पुण्या रेवामाहात्म्यमुच्यते ।
 धर्मपुण्यस्यवैराग्ये मार्कण्डेयेन सङ्गमः ॥
 प्राग्लयानुभवाख्यानं अमृता परिकीर्त्तनम् ।
 कल्पे कल्पे पृथक् नाम नर्मदायाः प्रकीर्त्तितम् ॥
 स्तवमार्गं नार्मदश्च कालरात्रिकथा ततः ।

महादेवस्तुतिः पश्चात् पृथक्कल्पकथाद्भुता ॥
 विशाल्याख्यानं पश्चाज्जालेश्वरकथा तथा ।
 गौरीव्रतसमाख्यानं त्रिपुरज्वालनन्ततः ॥
 देहपातविधानञ्च कावेरीसङ्गमस्ततः ।
 दारुतीर्थं ब्रह्मवर्जं यत्रेश्वर कथानकम् ॥
 अग्नितीर्थं रवितीर्थं मेघनादं विदारुकम् ।
 देवतीर्थं नर्मदेशं कपिलाख्य करञ्जकम् ।
 कुण्डलेशं पिप्पलादं विमलेशञ्च श्लमिन् ॥
 शर्चीहरणमाख्यातमन्धकस्यवधस्ततः ।
 शूलभेदोद्भवो यत्र दानधर्म्माः पृथग्विधाः ॥
 आख्यानं दीर्घतपसःशृण्व्यशृङ्ग कथा ततः ।
 चित्रसेनकथा पुण्या काशिराजस्य मोक्षणम् ॥
 ततो देवशिलाख्यानं शवरी चरितान्वितम् ।
 व्याधाख्यानं ततः पुण्यं पुष्करिण्यर्कतीर्थकम् ॥
 आपित्येश्वर तीर्थञ्च शक्रतीर्थं करोटकम् ।
 कुमारेशमगस्त्येशं च्यवनेशञ्च मातृजम् ॥
 लोकेशं धनदेशञ्च मङ्गलेशञ्च कामजम् ।
 नागेशञ्चापि गोपारं गौतमं शङ्खचूडजम् ॥
 नारदेशं नन्दिकेशं वरुणेश्वरतीर्थकम् ।
 दधिस्कन्दादितीर्थानि हनूमन्तेश्वरन्ततः ॥
 रामेश्वरादि तीर्थानि सोमेशं पिङ्गलेश्वरम् ।
 ऋणमोक्षं कपिलेशं पूतिकेशं जलेशयम् ॥

चण्डार्कयमतीर्थञ्च कल्होडीशञ्च नान्दिकम् ।
 नारायणञ्च कोटीशं व्यासतीर्थं प्रभासिकम् ॥
 नागेशं सङ्कर्षणकं मन्मथेश्वरतीर्थकम् ।
 एरण्डोसङ्गमं पुण्यं सुवर्णशिलतीर्थकम् ॥
 करञ्जं कामहं तीर्थं भाण्डीरं रोहिणीभवम् ।
 चक्रतीर्थं धौतपापं स्कान्दमाङ्गिरसाह्वयम् ॥
 कोटितीर्थमपोन्याख्यमङ्गाराख्यं त्रिलोचनम् ।
 इन्द्रेण कम्बुकेशञ्च सोमेशं कोहनेशकम् ॥
 नार्म्मदं चार्कमाग्नेयं भार्गवेश्वरसत्तमम् ।
 ब्राह्मं देवं च भागेशमादि वाराहणंकवे ॥
 रामेशमथ सिद्धेश माहात्म्यं कङ्कटेश्वरम् ।
 शाकं सौम्यञ्च नान्देश तापेशं रुक्मिणीभवम् ॥
 योजनेशं वराहेशं द्वादशी शिव तीर्थके ।
 सिद्धेशं मङ्गलेशञ्च लिङ्गवाराहतीर्थकम् ॥
 कुण्डेशं श्वेतवाराहं भार्गवेशं रवीश्वरम् ।
 शुक्लादीनि च तीर्थानि ह्यकारस्वामितीर्थकम् ॥
 सङ्क्रमेशं नारकेशं मोक्षं सार्पञ्च गोपकम् ।
 नागं साम्बञ्च सिद्धेशं मार्कण्डाकूरतीर्थके ॥
 कामोदशूलारोपाख्यो माण्डव्यं गोपकेश्वरम् ।
 कपिलेशं पिंगलेशं भूतेशं गांगगीतमे ॥
 आश्वमेधं भृगुकच्छं केदारेशञ्च पापनुत् ।
 कनकलेशं जालेशं शालग्रामं वराहकम् ॥

चन्द्रप्रभासमादित्यं श्रीपत्याख्यञ्च हंसकम् ।
 मूलस्थानञ्च शूलेशमाग्रायाचित्रदैवकम् ॥
 शिखीशं कोटितीर्थञ्च दशकन्यं सुवर्णकम् ।
 ऋणमोक्षं भारभूतिरत्रास्ते पुंस्त्रमुण्डिमम् ॥
 आमलेशं कपालेशं शृङ्गेरणीमवन्ततः ।
 कोटितीर्थं लोटनेशं फलस्तुतिरतः परम् ।
 दूमिजङ्गलमाहात्म्ये रोहिताश्वकथाततः ॥
 धुन्धुमारसमाख्यानं वधोपगयस्ततोऽस्य च ।
 वधो धुन्धोस्ततः पश्चात् सतश्चित्रवहोद्भवः ।
 महिमास्य ततश्चण्डोशप्रभाषोऽतीश्वरः ॥
 केदारेशो लक्ष्मीतीर्थं ततो विष्णुपदीभवम् ।
 मुखारं च्यवनान्धाख्यं ब्रह्मणश्च सरस्ततः ॥
 चक्राख्यं ललिताख्यानं तीर्थञ्च बहुगोमथम् ।
 रुद्रावर्तञ्च मार्कण्डं तीर्थं पापप्रणाशनम् ॥
 रावणेशं शुद्धपटं देवान्धुर्प्रेततीर्थकम् ।
 जिहोदतीर्थसम्भूतिः शिवोद्भेदं फलस्तुतिः ॥
 एष खण्डो ह्यवन्त्याख्यः शृण्वतां पापनाशनः ।

षष्ठे नागरखण्डे :—

“अतः परं नागराख्यः खण्डः पद्योऽभिधीयते ।
 लिङ्गोत्पत्तिसमाख्यानं हरिश्चन्द्रकथा शुभा ॥
 विश्वामित्रस्य माहात्म्यं त्रिशङ्कुस्वर्गतस्तथा ।
 हाटकेश्वरमाहात्म्ये वृत्रासुरवधस्तथा ॥

नागविलं शङ्खतीर्थमचलेश्वरवर्णनम् ।
 चमत्कारपुराख्यानं चमत्कारकरं परम् ।
 गयशीर्षं बालशाख्यं बालमण्डं मृगाह्वयम् ॥
 विष्णुपादञ्च गोकर्णं युगरूपं समाश्रयः ।
 सिद्धेश्वरं नागसरः सप्तार्षियं ह्यगस्तकम् ॥
 भ्रूणगर्जनलेशञ्च भीष्मं दुर्वैरमर्ककम् ।
 शार्मिष्ठं सोमनाथञ्च दीर्गमानर्जकेश्वरम् ॥
 जमदग्निवधाख्यानं नैऋत्यिकथानकम् ।
 रामहृदं नागपुरं जडलिङ्गञ्च यज्ञभूः ॥
 मुण्डीरादि त्रिकार्कञ्च सतीपरिणयस्तथा ।
 बालखिल्यञ्च यागेशं बालखिल्यञ्च गारुडम् ॥
 लक्ष्मीशापः सातविंशः सोमप्रासादमेव च ।
 अम्बावृद्धं पादुकाख्यमाणेयं ब्रह्मकुण्डकम् ॥
 गोमुखं लोहयष्ट्याख्यमजापालेश्वरी तथा ।
 शानैश्वरं राजवापी रामेशो लक्ष्मणेश्वरः ।
 कुशेशाख्यं लवेषाख्यं लिङ्गं सर्वोत्तमोत्तमम् ।
 अष्टपष्टिसमाख्यानं दमयन्त्यास्त्रिजातकम् ॥
 ततोऽम्बारेवती चात्र भट्टिकातीर्थसम्भवम् ।
 क्षेमङ्करी च केदारं शुक्रतीर्थं मुखारकम् ॥
 सत्यसन्धेश्वराख्यानं तथा कर्णोत्पला कथा ।
 अटेश्वरं याज्ञवल्क्यं गौर्यं गाणेशमेव च ॥
 ततोवास्तुपदाख्यानमजागहकथानकम् ।

सौभाग्यान्धकशूलेशं धर्मराजकथानकम् ॥
 मिष्टान्नदेश्वराख्यानं गाणपत्यत्रयं ततः ।
 जाबालिचरितश्चैव मकरेशकथा ततः ॥
 कालेश्वर्यन्धकाख्यानं कुण्डमाप्सरसन्तथा ।
 पुष्यादित्यं रौहिताश्वं नागरोत्पत्तिकीर्त्तनम् ॥
 भार्गवं चरितं चैव वैश्वामित्रं ततः परम् ॥
 सारस्वतं पैप्पलादं कंसारीशञ्च पैण्डकम् ।
 ब्रह्मणो यज्ञचरितं सावित्र्याख्यानसंयुतम् ॥
 रैवतं मर्तु यज्ञाख्यं मुख्यतीर्थनिरीक्षणम् ।
 कौरवं हाटकेशाख्यं प्रभासं क्षेत्रकत्रयम् ॥
 पौष्करं नैमिषं धार्ममरण्यत्रितयं स्मृतम् ।
 वाराणसीद्वारकाख्यावन्त्याख्येति पुरीत्रयम् ॥
 वृन्दावनं खाण्डवाख्यं मद्रैकाख्यं वनत्रयम् ।
 कल्पः शालस्तथा नन्दोग्रामत्रयमनुत्तमम् ॥
 असिशुक्लपितृसङ्गं तीर्थत्रयमुदाहृतम् ।
 श्रवर्षुदौ रैवतश्चैव पर्वतत्रयमुत्तमम् ॥
 नदीनां त्रितयं गङ्गा नर्मदा च सरस्वती ॥
 सार्द्धकोटित्रयफलमेकैकञ्चैषु कीर्तितम् ।
 कृपिका शङ्खतीर्थञ्चामरकं बालमण्डनम् ।
 हाटकेशक्षेत्रफलप्रदं प्रोक्तं चतुष्टयम् ॥
 शाम्बादित्यं श्राद्धकल्पं यौधिष्ठिरमथान्धकम् ।
 जलशायि चतुर्म्मास्यभक्षण्यशयनव्रतम् ॥

मङ्कुणेशं शिवरात्रिस्तुलापुरुषदानकम् ।
 पृथ्वीदानं घाणकेशं कपालमोचनेश्वरम् ।
 पापपिण्डं सातलैङ्गं युगमानादिकीर्त्तनम् ।
 निम्बेशशाकम्भर्याख्या रुद्रैकादश कीर्त्तनम् ।
 दानमाहात्म्यकथनं द्वादशादित्यकीर्त्तनम् ।
 इत्येष नागरः खण्डः प्रभासाख्योऽधुनोच्यते ।

सप्तमे प्रभास खण्डे :—

“सोमेशो यत्र विश्वेशोऽर्कस्थलं पुण्यदं महत् ।
 सिद्धेश्वरादिकाख्यानं पृथगत्र प्रकीर्त्तितम् ॥
 अग्नितीर्थं कपर्दीशं केदारेशं गतिप्रदम् ।
 भोमभैरवचण्डीशभास्कराङ्गारकेश्वराः ।
 बुधेज्यभृगुसौरेन्द्रशिखीशाहरविग्रहाः ।
 सिद्धेश्वराद्याः पञ्चान्ये रुद्रास्तत्र व्यवस्थिताः ।
 वरारोहा ह्यजापाला मंगला ललितेश्वरी ।
 लक्ष्मीशोऽवाङ्मेशश्चाधीशः कामेश्वरस्तथा ॥
 गौरीशवरुणेशाख्यमुशीषञ्च गणेश्वरम् ।
 कुमारेशञ्च शाकल्यं शकुलतङ्कुगौतमम् ॥
 दैत्यघ्नेशं चक्रतीर्थं सन्निहत्यान्वहयन्तथा ।
 भूतेशादीनि लिङ्गानि आदिनारायणाह्वयम् ॥
 ततश्चक्रधराख्यानं शाम्बादित्यकथानकम् ।
 कथा कण्टकशोधिन्या महिषघ्न्यास्ततः परम् ॥
 कपालीश्वरकोटीशबालब्रह्माहसत् कथा ।

नरकेश सम्बर्त्तेश निधोश्चरकथा ततः ।
 बलभद्रेश्वरस्याथ गंगाया गणपस्य च ।
 जाम्बवत्याख्यसरितः पाण्डुकूपस्यसत्कथा ।
 शतमेधलक्षमेधकोटिमेधकथा तथा ।
 दुर्व्वासार्क्यदुस्थान हिरण्यासंगमोत्कथा ॥
 नगरार्कस्य कृष्णस्य सङ्कर्षणसमुद्रयोः ।
 कुमाट्याः क्षेत्रपालस्य ब्रह्मेशस्य कथा पृथक् ॥
 पिंगला संगमेशस्य शंकरार्कघटेशयोः ।
 ऋषितोर्थस्य नन्दार्कत्रितकूपस्य कीर्त्तनम् ॥
 शशोपानस्य पर्णार्कन्यङ्कुमत्योः कथाद्वया ।
 वाराहस्वामिवृत्तान्तं छायालिगाख्यगुल्फयोः ।
 कथा कनकनन्दायाः कुन्तागंगेशयोस्तथा ॥
 चमसोद्वेदविदुरत्रिलोकेशकथा ततः ।
 मङ्कणेश त्रैपुरेश पण्डतीर्थ कथा तथा ॥
 सूर्यप्राचीत्रीक्षणयोरुमानाथ कथा तथा ।
 भूद्वारशूलस्थलयोश्च्यवनार्केशयोस्तथा ।
 अजापालेशबालार्ककुबेरस्थलजा कथा ॥
 ऋषितोया कथा पुण्या संगालेश्वरकीर्त्तनम् ।
 नारदादित्यकथनं नारायणनिरूपणम् ॥
 तप्तकुण्डस्य माहात्म्यं मूलचण्डीशवर्णनम् ।
 चतुर्वक्त्र गणाध्यक्ष कलम्बेश्वरयोः कथा ।
 गोपालस्वामिवकुलस्वामिनोर्मस्ती कथा ।

क्षेमाकौञ्जतविघ्नेशजलस्वामिकथा तथा ।
 कालमेघस्य रुक्मिण्या उज्ज्वशीश्वरभेद्रयोः ।
 शङ्खावर्त्तमोक्षतीर्थ गोष्पदाच्युतसन्नाम् ।
 जालेश्वरस्य हङ्कारकूपखण्डीशयोः कथा ।
 आशानुरस्थविघ्नेशकलाकुण्डकथाऽद्भुता ॥
 कपिलेशस्य च कथा जरद्गवशिवस्य च ।
 नलककोटकेश्वरयोर्हाटकेश्वरजा कथा ॥
 नारदेशमन्त्रभूषा दुर्गकूटगणेशजा ।
 सुपर्णेलाभ्यभैरव्योर्मलतीर्थभवा कथा ॥
 कीर्त्तनं कर्द्दमालस्य गुप्तसोमेश्वरस्य च ।
 बहुस्वर्णेशशृंगेश कोटीश्वरकथा ततः ।
 मार्कण्डेश्वरकोटीश दामोदरगृहोत्कथा ।
 स्वर्णरेखा ब्रह्मकुण्डं कुन्तोभीमेश्वरौ तथा ॥
 मृगीकुण्डश्च सर्वस्वं क्षेत्रे वस्त्रापथे स्मृतम् ।
 दुत्राचित्वेशगंगेशरेवतानां कथाऽद्भुता ॥
 ततोऽर्बुदेश्वरकथा अचलेश्वरकोर्त्तनम् ।
 नागतीर्थस्य च कथा वशिष्ठाश्रमवर्णनम् ।
 भद्रं कर्णस्य माहात्म्यं त्रिनेत्रस्य ततः परम् ॥
 केदारस्य च माहात्म्यं तीर्थागमनकीर्त्तनम् ।
 कोटीश्वररूपतीर्थहृषीकेशकथा ततः ।
 सिद्धेश शुक्रेश्वरयोर्मणिकर्णेशकीर्त्तनम् ॥
 पङ्क्तुतीर्थ-यमतीर्थ-वाराहतीर्थवर्णनम् ।

चन्द्रप्रभासपिण्डोद् श्रीमाता शुक्लतीर्थजम् ॥
 कात्यायन्याश्च माहात्म्यं ततः पिण्डारकस्य च ।
 ततः कनखलस्याथ चक्रमानुषतीर्थयोः ॥
 कपिलाग्नितीर्थकथा तथा रक्तानुबन्धजा ।
 गणेशपार्थेश्वरयोर्यात्राया मुद्गलस्य च ॥
 चण्डीस्थानं नागमवशिरः कुण्डमहेशजा ।
 कामेश्वरस्य मार्कण्डेयोत्पत्तेश्च कथा ततः ॥
 उद्दालकेश सिद्धेश गततीर्थकथा पृथक् ।
 धीदेवमातोत्पत्तिश्च व्यासगौतमतोर्थयोः ॥
 कुलसन्तारमाहात्म्यं रामकोट्यावहतीर्थयोः ।
 चन्द्रोद्देशानशृङ्ग ह्यस्थानोद्भवोहनम् ॥
 त्रिपुष्कर-रुद्रहृद-गुहेश्वर-कथा शुभा ।
 अविमुक्तस्य माहात्म्यमुमामाहेश्वरस्य च ॥
 महौजसः प्रभावश्च जम्बुतीर्थस्य वर्णनम् ।
 गङ्गाधरमिश्रकयोः कथाचाथ फलश्रुतिः ॥
 द्वारकायाश्च माहात्म्ये चन्द्रशर्मकथानकम् ।
 जागराद्याख्यव्रतश्च व्रतमेकादशीभवम् ।
 महाद्वादशीकाव्यानं प्रह्लादपि समागमः ।
 दुर्ध्वासस उपाख्यानं यात्रोपक्रमकर्त्तनम् ॥
 गोमत्युत्पत्तिकथनं तस्यां स्नानादिजम्फलम् ।
 चक्रतीर्थस्य माहात्म्यं गोमत्युदधिसङ्गमः ॥
 सनकादिहृदाख्यानं नृगतीर्थकथा ततः ।

(१०२)

गोप्रचारकथा पुण्या गोपीनां द्वारकागमः ।
गोपीसरः समाख्यानं ब्रह्मतीर्थादिकीर्त्तनम् ।
पञ्चनद्यागमाख्यानं नानाख्यानसमन्वितम् ।
शिवलिङ्गमहातीर्थकृष्णपूजादिकीर्त्तनम् ।
त्रिविक्रमस्य मूर्त्याख्या दुर्वासः कृष्णसंकथा ।
कुशदैत्यवधोऽर्च्याख्या विशेषार्त्तनजम्फलम् ।
गोमत्यां द्वारकायाञ्च तीर्थागमनकीर्त्तनम् ।
कृष्णमन्दिरसंप्रेशा द्वारघट्यभिषेचनम् ।
तत्र तीर्थावासकथा द्वारका पुण्यकीर्त्तनम् ।
इत्येष सप्तमः प्रोक्तः खण्डः प्राभासिकोद्विजः ।
स्कान्दे सर्वोत्तरकथा शिवमाहात्म्यवर्णने ।

तत्फलश्रुति :—

लिखित्वैतत्तु यो दद्याद्धेमशूलसमाचितम् ।
माध्यां सत्कृत्य विप्राय स शैवे मोदते पदे ॥

गरुडपुराणम्

गरुडायोक्तं विष्णुना पुराणम् नारदीयपुराणे १०८

अध्याये तद्विषयाश्च

ब्रह्मोवाच—मरीचे ! शृणुवन्मया पुराणं गरुडं शुभम् ।
गरुडायाब्रवीत्पृष्टो भगवान्गरुडासनः ॥

एकोनविंशसाहस्रं तार्क्ष्यकल्पकथावितम् ॥

तत्र पूर्वखण्डे :—

पुराणोपक्रमो यत्र सर्गः संक्षेपतस्ततः ।
 सूर्यादिपूजनविधि दीक्षाविधिरतः परम् ।
 श्रयादिपूजा ततः पश्चाश्रवव्यूहाच्चर्चनं द्विज ।
 पूजाविधानञ्च वैष्णवं तथा पञ्जरन्ततः ।
 योगाध्यायस्ततो विष्णोर्नामसाहस्रकीर्तनम् ।
 ध्यानं विष्णोस्ततः सूर्यपूजामृत्युञ्जयाच्चर्चनम् ।
 माला मंत्रा शिवार्घ्याथ गणपूजा ततः परम् ।
 गोपालपूजा त्रैलोक्यमोहनं श्रीधराच्चर्चनम् ।
 विष्णवर्चा पञ्चतत्त्वार्चा चक्रार्चा देवपूजनम् ।
 न्यासादि सन्ध्योपास्तिश्च दुर्गार्घ्याथसुरार्चनम् ।
 पूजा माहेश्वरी चातः पवित्रारोहणाच्चर्चनम् ।
 मूर्तिध्यानं वास्तुमानं प्रासादानाञ्च लक्षणम् ।
 प्रतिष्ठा सर्वदेवानां पृथक् पूजाविधानतः ।
 योगोऽष्टाङ्गो दानधर्मः प्रायश्चित्तविधिक्रिया ।
 द्वीपेशनरकाख्यानं सूर्यव्यूहश्च ज्योतिषम् ।
 सामुद्रिकं स्वरञ्जानं नवरत्नपरीक्षणम् ।
 माहात्म्यमथ तीर्थानां गयामाहात्म्यमुत्तमम् ।
 ततो मन्वन्तराख्यानं पृथक्पृथग्विभागशः ।
 पित्राख्यानं वर्णधर्मा द्रव्यशुद्धिःसमर्पणम् ।
 श्राद्धं विनायकस्यार्चा ग्रहयज्ञस्तथाऽऽश्रमाः ।

मल्लहाख्या प्रेताशीचं नीबिसारोव्रतोक्तयः ।
 सूर्यवंशः सोमवंशोऽवतारकथनं हरेः ।
 रामायणं हरिवंशो भारताख्यानकन्ततः ।
 आयुर्वेदे निदानप्राक् चिकित्साद्वयजागुणाः ।
 रोगघ्नं कवचं विष्णो गर्गुडस्त्रैपुरोमनुः ।
 प्रश्नचूडामणिश्चान्ते हयायुर्वेदकीर्तनम् ।
 ओषधीनामकथनं ततो व्याकरणोहनम् ।
 छन्दः शास्त्रं सदाचारस्ततः स्नानविधिःस्मृतः ।
 तर्पणं वैश्वदेवञ्च सध्यापार्वणकर्म च ।
 नित्यश्राद्धं सपिण्डाख्यं धर्मसारोऽघनिष्कृतिः ।
 प्रतिसङ्क्रम उक्तोऽस्माद् युगधर्माः कृतेः फलम् ।
 योगशास्त्रं विष्णुभक्तिर्नमस्कृति फलं हरेः ।
 माहात्म्यं वैष्णवञ्चाथ नारसिंहस्तवोत्तमम् ।
 ज्ञानामृतं गृह्याष्टकं स्तोत्रं विष्णवर्चनाह्वयम् ।
 वेदान्तसारसिद्धान्तं ब्रह्मज्ञानात्मकं तथा ।
 गीतासारः फलोत्कीर्तिः पूर्वखण्डोऽयमीरितः ।

उत्तरखण्डे प्रेतकल्पे :—

अथास्यैवोत्तरे खण्डे प्रेतकल्पः पुरोदितः ।
 यत्र तादृश्येण संस्पृष्टो भगवानाह वाडवः ।
 धर्मप्रकटनं पूर्वं योनीनां गतिकारणम् ।
 दानादिकम्पलञ्चापि प्रोक्तमत्रोर्ध्वदेहिक्कम् ।

(१०५)

यमलोकस्य मार्गस्य वर्णनञ्च ततः परम् ।
षोडशश्राद्धफलकं वृत्तानाञ्चात्र वर्णितम् ।
निष्कृतिर्यममार्गस्य धर्मराजस्य वैभवम् ।
प्रेतपीडा विनिर्देशः प्रेतचिन्हनिरूपणम् ।
प्रेतानां चरिताख्यानं कारणप्रेततां प्रति ।
प्रेतकृत्यविचारश्च सपिण्डीकरणोक्तयः ।
प्रेतत्वमोक्षणाख्यानं दानानि च विमुक्तये ।
आवश्यकोत्तरं दानं प्रेतसौख्यकरं हितम् ।
शारीरकविनिर्देशो यमलोकस्य वर्णनम् ।
प्रेतबोद्धारकथनं कर्मकर्तृ विनिर्णयः ।
मृत्योः पूर्वक्रियाख्यानं पश्चात्कर्मनिरूपणम् ।
मध्यं षोडशकं श्राद्धं स्वर्गप्राप्तिक्रियोहनम् ।
मृतकस्याथ संख्यानं नारायणबलिक्रिया ।
वृषोत्सर्गस्य माहात्म्यं निषिद्धपरिवर्जनम् ।
अपमृत्युक्रियोक्तिश्च विपाकः कर्मणां नृणाम् ।
कृत्याकृत्यविचारश्च चिष्णुध्यानं विमुक्तये ।
स्वर्गतौ विहिताख्यानं स्वर्गसौख्यनिरूपणम् ।
भूलोकवर्णनञ्चैव सप्तधालोक वर्णनम् ।
पञ्चोर्ध्वलोककथनं ब्रह्माण्डस्थिति कीर्तनम् ।
ब्रह्माण्डानेकचरितं ब्रह्मजीवनिरूपणम् ।
आत्मान्तिकलषाख्यानं फलस्तुतिनिरूपणम् ।
इत्येतद्गारुडं नाम पुराणं भुक्तिमुक्तिदम् ॥

तत्फलश्रुति :—

कर्तितं पापशमनं पठतां शृण्वतां नृणाम् ।
लिखित्वैत्पुराणन्तु विप्रैः यः प्रयच्छति ॥
सौवर्णं हंसयुग्माढ्यं विप्राय स दिवं व्रजेत् ।

ब्रह्माण्डपुराणम्

नारदीय पुराणे ४ पा० १०६ अध्याय उक्ता

अस्य विषयाः ।

शृणु वत्स ! प्रवक्ष्यामि ब्रह्माण्डाख्यं पुरातनम् ।
तच्च द्वादशसाहस्रं भाविकल्पकथायुतम् ॥
प्रक्रियाख्योऽनुषङ्गाख्य उपोद्धातस्तृतीयकः ।
चतुर्थ उपसंहारः पादाश्चत्वार एव हि ॥
पूर्वपादद्वयं पूर्वो भागोऽत्र समुदाहृतः ।
तृतीयोमध्यमो भागश्चतुर्थस्तृत्तरोमतः ॥

तत्रपूर्वभागे प्रक्रियापादे :—

“आदौ कृत्यसमुद्देशो नैमिषाख्यानकं ततः ।
हिरण्यगर्भोत्पत्तिश्च लोककल्पनमेव च ॥
एष वै प्रथमःपादो द्वितीयं शृणु नारद ।

पूर्वभागेऽनुषङ्गपादे :—

कल्पमन्वन्तराख्यानं लोकज्ञानं ततः परम् ।
मानस सृष्टिकथनं रूद्रप्रसववर्णनम् ॥

महादेवविभूतिश्च ऋषिसर्गस्ततः परम् ।
 अग्निनां चिचयश्चाथ कालसद्भाववर्णनम् ॥
 प्रियव्रताश्च योद्देशः पृथिव्या याम विस्तरः ।
 वर्णनं भारतस्यास्य ततोऽन्येषां निरूपणम् ॥
 जम्बादिसप्तद्वीपाख्या ततोऽधोलोकवर्णनम् ।
 ऊर्ध्वलोकानुकथनं ग्रहचारस्ततः परम् ॥
 आदित्यव्यूहकथनं देवग्रहानुकीर्तनम् ।
 नीलकण्ठाव्याख्यानं महादेवस्य वैभवम् ॥
 अमावास्यानुकथनं युगतत्त्वनिरूपणम् ।
 यज्ञप्रवर्तनश्चाथ युगयोरन्त्ययोः कृतिः ॥
 युगप्रजालक्षणश्च ऋषिप्रवरवर्णनम् ।
 वेदानां व्यसनाख्यानं स्वायम्भुवनिरूपणम् ॥
 शेषमन्वन्तराख्यानं पृथिवीदोहनन्ततः ।
 चाश्रुपेऽद्यतने सर्गोद्वितीयोऽङ्घ्रि पुरोदत्ते ॥

मध्यभागे उपोद्घात पादे :—

“अथोपोद्घातपादे च सप्तर्षिपरिकीर्तनम् ।
 राजापत्यचयस्तस्माद्देवादीनां समुद्भवः ॥
 ततो जयामिव्याहारौ मरुदुत्पत्तिकीर्तनम् ।
 काश्यपेयानुकथनं ऋषिवंशनिरूपणम् ॥
 पितृकल्पानुकथनं श्राद्धकल्पस्ततः परम् ।
 वैवश्वतसमुत्पत्तिः सृष्टिस्तस्य ततः परम् ॥
 मनुपुत्राचयश्चातो गान्धर्वश्च निरूपणम् ।

इक्ष्वाकुवंशकथनं वंशोऽत्रेःसुमहात्मनः ॥
 अमावसोराचयश्च रजेश्वरितमद्भुतम् ।
 ययातिचरितञ्चाथ यदुवंशनिरूपणम् ॥
 कार्तवीर्यस्यचरितं जामदग्न्यं ततः परम् ।
 वृष्णिवंशानुकथनं सगरस्याथ सम्भवः ॥
 भार्गवस्यानुचरितं तथार्यकवधाश्रयम् ।
 सगरस्याथचरितं भार्गवस्य कथा पुनः ॥
 देवासुराहवकथाः कृष्णाविर्भाववर्णनम् ।
 इनस्य च स्तवः पुण्यः शुक्रेण परिकीर्तितः ॥
 बिष्णुमाहात्म्यकथनं बलीवंशनिरूपणम् ।
 भविष्यराजचरितं सम्प्राप्तेऽथकलौ युगे ॥
 एवमुक्तातपादोऽयं तृतीयो मध्यमे दले ।

उत्तरभागे उपसंहार पादः :—

चतुर्थमुपसंहारं वक्ष्ये खण्डे तथोत्तरे ॥
 वैवस्वतान्तराख्यानं विस्तरेण यथातथम् ।
 पूर्वमेव समुद्दिष्टं संक्षेपादिह कथ्यते ॥
 भविष्याणां मनूनांच चरितं हि ततः परम् ।
 कल्पप्रलय निर्देशः कालमानं ततः परम् ॥
 लोकाश्चतुर्दश ततः कथिता मानलक्षणैः ।
 वर्णनं नरकाणाञ्च विकर्माचरणैस्ततः ॥
 मनोमयपुराख्यानं लयः प्राकृतिकस्ततः ।
 शौकस्याथ पुरस्यापि वर्णनञ्च ततः परम् ॥

त्रिविधाद् गुणसम्बन्धाज्जन्तूनां कीर्तिता गतिः ।
 अनिर्देश्या-प्रसक्त्यस्य ब्रह्मणः परमात्मनः ॥
 अन्वय व्यतिरेकाभ्यां वर्णनं हि ततः परम् ।
 इत्येष उपसंहारः पादो वृत्तः सचोत्तरः ॥
 चतुष्पादं पुराणन्ते ब्रह्माण्डं समुदाहृतम् ।
 अष्टादशमनोपम्यं सारात्सारतरं द्विजः ! ॥
 ब्रह्मांडञ्चतुर्लक्षं पुराणत्वेन पठ्यते ।
 तदेव व्यस्य गदितमत्राष्टादशधा पृथक् ॥
 पाराशर्येण मुनिना सर्वेषामपि मानद ।
 वस्तुद्रष्ट्राथ तेनैव मुनीनां भाषितात्मनाम् ॥
 मत्तः श्रुत्वा पुराणानि लोकेभ्यः प्रचकाशिते ।
 मुनयो धर्मशीलास्ते दीनानुग्रहकारिणः ॥
 मया चेदं पुराणन्तु वशिष्टाय पुरोदितम् ।
 तेन शक्तिसुतायोक्तं जातूकार्णाय तेन च ॥
 व्यासो लब्ध्वा ततश्चैतन् प्रभञ्जनमुखोद्गतम् ।
 प्रमाणीकृत्यलोकेऽस्मिन् प्रावर्त्तयदनुत्तमम् ॥

तत्फलश्रुतिः—

य इदं कीर्तयेद्वत्स ! शृणोति च समाहितः ।
 स विभूयेह पापानि याति लोकमनामयम् ॥
 लिखित्वै तत् पुराणन्तु स्वर्णसिंहासनस्थितम् ।
 पात्रेणाच्छादितं यस्तु ब्राह्मणाय प्रयच्छति ॥
 स याति ब्रह्मणोलोकं नात्र कार्या विचारणा ।

मरीचे ! ऽष्टादशैतानि मया प्रोक्तानि यानि ते ॥
 पुराणानि तु संक्षेपाच्छ्रौतव्यानि च विस्तरात् ।
 अष्टादश पुराणानि यः शृणोति नरोत्तमः ॥
 कथयेद्वा विधानेन नेह भूयः स जायते ।
 सूत्रमेतत्पुराणानां यन्मयोक्तं तत्राऽधुना ॥
 तन्नित्यं शीलनीयं हि पुराणं फलमिच्छता ।
 न दाम्भिकाय पापाय देवगुर्वनुसूयवे ।
 देयं कदापि साधूनां द्वेषिणे न शठाय च ।
 शान्तायारागचित्ताय शुश्रूषाभिरताय च ॥
 निर्मत्सराय शुचये देयं सदैवैषणवाय च ।

विष्णुभागवतम् ।

तत्प्रतिपाद्यविषयाश्च नारद पु० ६६ अ० उक्ता यथा—

मरीचे ! शृणु वक्ष्यामि वेदव्यासेन यत्कृतम् ।
 श्रीमद्भागवतं नाम पुराणं ब्रह्मसंमितम् ॥
 तदष्टादशसाहस्रं कीर्तितं पापनाशनम् ।
 सुखादपरूपोऽयं स्कन्धैर्द्वादशभिर्गुतः ॥
 भगवानेव विप्रेन्द्र ! विश्वरूपी समीरितः ।

तस्य प्रथमस्कन्धः —

तत्र तु प्रथमे स्कन्धे सूतर्षीणां समागमः ।
 व्यासस्य चरितं पुण्यं पाण्डवानां तथैव च ॥
 पार्ष्णीक्षितमुपाख्यानमितीदं समुदाहृतम् ॥”

द्वितीयस्कन्धे :—

“परीक्षिच्छुकसम्वादे सृतिद्वयनिरूपणम् ।

ब्रह्मनारदसंवादेऽवतारचरितामृतम् ॥

पुराणलक्षणञ्चैव सृष्टिकारणसम्भवः ।

द्वितीयोऽयंसमुदितः स्कन्धो व्यासेन धीमता ॥”

तृतीयस्कन्धे :—

“चरितं विदुरस्याथ मैत्रेयेणास्य सङ्गमः ।

सृष्टिप्रकरणं पश्चाद्ब्रह्मणः परमात्मनः ॥

कापिलं सांख्यमप्यत्र तृतीयोऽयमुदाहृतः ।

चतुर्थस्कन्धे :—

“सत्याश्चरितमादौ तु ध्रुवस्यचरितं ततः ।

पृथोः पुण्यसमाख्यानं ततः प्राचीनवर्हिषः ॥

इत्येष तूर्य्यो गदितो विसर्गे स्कन्ध उक्तमः ।”

पञ्चमस्कन्धे :—

“प्रियव्रतस्य चरितं तद्वंश्यानाञ्च पुण्यदम् ।

ब्रह्माण्डान्तर्गतानाञ्च लोकानां वर्णनन्ततः ॥

नरकस्थितिरित्येव संस्थाने पञ्चमोमतः ।

षष्ठस्कन्धे :—

अजामिलस्य चरितं दक्षसृष्टिनिरूपणम् ।

वृत्राख्यानं ततःपश्चान्मरुतां जन्म पुण्यदम् ॥

षष्ठोऽयमुदितःस्कन्धो व्यासेन परिपोषणे ।

सप्तमस्कन्धे :—

“प्रह्लादचरितं पुण्यं वर्णाश्रमनिरूपणम् ।
सप्तमोगदितो वत्स ! वासनाकर्मकीर्त्तने ॥

अष्टमस्कन्धे :—

“गजेन्द्रमोक्षणाख्यानं मन्वन्तरनिरूपणम् ।
समुद्रमथनञ्चैव बलिवैभवग्रन्थनम् ॥
मत्स्यावतारचरितमष्टमोऽयं प्रकीर्त्तितः ।

नवमस्कन्धे :—

“सूर्यवंशसमाख्यानं सोमवंशनिरूपणम् ।
वंश्यानुचरिते प्रोक्तो नवमोऽयं महामते ॥

दशमस्कन्धे :—

“कृष्णस्य बालचरितं कौमारञ्च व्रजस्थितिः ।
केशोरं मथुरास्थानं यौवने द्वारकास्थितिः ॥
भूभारहरणाञ्चात्र निरोधे दशमः स्मृतः ।

एकादशस्कन्धे :—

“नारदेन तु संवादो वसुदेवस्य कीर्त्तितः ।
यदोश्च दत्तात्रेयेण श्रीकृष्णो नोद्धवस्य च ॥
यादवानां मिथोऽन्तश्च मुक्तावेकादशः स्मृतः ।

द्वादशस्कन्धे :—

“भविष्यकलिनिर्देशो मोक्षो राहः परीक्षितः ।
वेदशास्त्राप्रणयनं मार्कण्डेयतपः स्मृतम् ॥

(११३)

सौरी विभूतिरुदिता सास्वती च ततःपरम् ।
पुराणसंख्याकथनमाश्रये द्वादशो ह्यहम् ॥
इत्येवं कथितं वत्स ! श्रीमद्भागवतं तव ।

तत्फलश्रुतिः :—

“वक्तुः श्रोतुश्चोपदेष्टुरनुमोदितुरेव च ।
साहाय्यकर्तृर्गदितं भक्तिभुक्तिर्चिमुक्तिदम् ॥
प्रौष्ठपद्यां पूर्णिमायां हेमसिंहसमाचितम् ।
देयं भागवतायेदं द्विजाय प्रीतिपूर्वकम् ॥
सम्पूज्य वस्त्रहेमाद्यैर्भगवद्भक्तिमिच्छता ।
सोऽप्यनुक्रमणीमेतां श्रावयेच्छृणुयात्तथा ॥
स पुराणश्रवणजं प्राप्नोति फलमुत्तमम् ।

अष्टादशपुराणानामनुक्रमतोऽ वतरणवर्णनम्वायुपुराणे
प्रतिपादितम् :—

सर्वपापहरं पुण्यं पवित्रं च यशस्वि च ।
ब्रह्मा ददौ शास्त्रमिदं पुराणं मातरिश्वने ॥ ५८ ॥
तस्माच्चोशनसा प्राप्तं तस्माच्चापि बृहस्पतिः ।
बृहस्पतिस्तु प्रोवाच सवित्रे तदनन्तरम् ॥ ५९ ॥
सविता मृत्यवे प्राह मृत्युश्चन्द्राय वै पुनः ।
इन्द्रश्चापि वशिष्ठाय सोऽपि सारस्वताय च ॥ ६० ॥
सारस्वतस्त्रिधाम्ने च त्रिधामा च शरद्वते ।
शरद्वतस्त्रिविष्टाय सोऽन्तरिक्षाय दत्तवान् ॥ ६१ ॥

(११४)

वर्षिणे चान्तरिक्षो वै सोऽपि त्रय्यारुणाय च ।
त्रय्यारुणो घनञ्जये सच प्रादात्कृतञ्जये ॥ ६२ ॥
कृतञ्जयात्तृणंजयो [भरद्वाजाय सोऽप्यथ ।
गौतमाय भरद्वाजः सोऽपि निर्यन्तरे पुनः ॥ ६३ ॥
निर्यन्तरस्तु प्रोवाच तथा वाजश्रवाय च ।
स ददौ सोममुष्माय स ददौ तृणबिन्दवे ॥ ६४ ॥
तृणबिन्दुस्तु दक्षाय दक्षः प्रोवाच शक्तये ।
शक्तेः पराशरश्चापि गर्भस्थः श्रुतवानिदम् ॥ ६५ ॥
पराशराज्जातुकर्णस्तस्माद्द्वैपायनः प्रभुः ।
द्वैपायनात्पुनश्चापि मया प्रोक्तं द्विजोत्तमाः ॥ ६६ ॥

शंशपायन उवाच :—

मया वै तत्पुनः प्रोक्तं पुत्रायामितबुद्धये ।
इत्येव वाचा ब्रह्मादिगुरुणा समुदाहृताः ॥

—

पुराण परिचय (परिशिष्ट)

कतिपय सम्मतयः

एफ० मैक्समूलरः प्रतिपादयति स्वकीय ग्रन्थे

India what can it teach us.

By Rt. Hon.

F. Maxmuller,

(Longmans Green & Co.)

India, 1919.

COLLECTED WORKS

नामके

Page 3

“If I were to look over the whole world to find out the country richly endowed with all the wealth, power and beauty that nature can bestow—in some parts a very paradise on earth—I should point to India. If I were

यदि सारे संसार भर में मुझे ऐसे देश को खोजने के लिये कहा जाय जो धन, जन और प्राकृतिक सौन्दर्य साधन सम्पत्ति से परिपूर्ण हो और कुछ अंश में पृथ्वी पर स्वर्ग सदृश हो तो मेरा केन्द्र बिन्दु भारत होगा। यदि मुझे यह पूछा जाय कि विश्व में मानव मस्तिष्क के अधिकाधिक पवित्रतम स्वच्छन्द

asked under what sky the human mind has most freely developed some of its choicest gifts, has most deeply pondered on the greatest problems of life and has found solutions of some of them which will deserve the attention even of those who have studied Plato and Kant I should point to India.

And if I were to ask myself from what literature we here in Europe, we, who have been nurtured almost exclusively on the thoughts of Greeks and Romans and of one Semitic race the Jewish, may draw that

विकास की सुन्दरतम भेंट कौन से देश को प्राप्त हुई और किस देश के निवासियों ने जीवन की महती समस्याओं पर गम्भीर रूप से विचार किया है और उनका निश्चित समाधान भी पूर्ण रूप से प्राप्त कर लिया जिसके लिये प्लेटो और काण्ट जैसे दार्शनिकों की रचनाओं के प्रेमी भी अपने को अध्ययन करने का अधिकारी मानते हैं तो मेरा सङ्केत भारत भूमि के लिये होगा।

और यदि मुझे फिर एक प्रश्नवाचक चिन्ह द्वारा यह कहा जाय कि यूरोप में हमलोगों ने जिनके आदर्श पूर्णतया ग्रीस और रोमन जाति की विचार धारा पर आश्रित हैं और यहूदी जाति से भी प्रेरणा प्राप्त की है ऐसे सभी को किस साहित्य द्वारा

corrective which is most wanted in order to make our inner life more perfect, more comprehensive, more universal, in fact, more lively human—a life not for this life only, but a transfigured and eternal life—again I should point to India.

14

That very Sanskrit the study of which may at first seem so tedious to you and so useless, if only you will carry it on, as you may carry it on here at Cambridge better than anywhere else, open before you large

पूर्णता प्राप्ति की आन्तरिक रूप से पूर्ण बनने की, सर्वांशतः सार्वभौम और विकसनशील बनने की प्रेरणा मिली है। वास्तव में ऐहिक जीवन के सम्बन्ध में ही नहीं बल्कि आध्यात्मिक सत्य शाश्वत जीवन के लिये महत्त्वपूर्ण साहित्य से देन मिली तो मेरा सङ्कट फिर भी भारत ही होगा।

१४

यह संस्कृत भाषा का अध्ययन ही है जो पहले आप लोगों को कठिन परिश्रमसाध्य और अनुपयोगी लगता है यदि इसका सतत स्वाध्याय जैसा आप लोग कैम्ब्रिज में करते हैं वैसी ही गति और उत्साह से सदा ही करते रहे तो आपके सामने ऐसी साहित्यिक उन्मेष की गवेषणा दृष्टिगोचर होगी जो अभी तक

layers of literature as yet almost unknown and unexplored and allow you an insight into strata of thought deeper than any you have known before and rich in lessons that appeal to the deepest sympathies of the human heart.

“India occupies a place second to no other country.”

15

Whatever sphere of the human mind you may select for your special study, whether it be language, or religion, or mythology or philosophy, whether it be laws or customs, primitive

अज्ञाय और अनुसन्धान रहित थी और अन्तर्दर्शन की ऐसी सूक्ष्म क्षमता प्रदान करेगी अब शिक्षाप्रद उपदेशों से हमें उदात्त मानव बनने की बराबर प्रेरणा मिलती रहेगी, मानव हृदय की गम्भीर सहानुभूतियों को भी पूर्णतया प्रभावित करती है।

सत्यान्वेषण के मार्ग में भारत राष्ट्र का ही सर्व प्रथम प्रमुख स्थान है।

मानव मस्तिष्क के विकास की कोई भी देश को अपने विशेष अध्ययन के लिये हम क्यों न ले भले ही यह भाषा हो, धर्म हो, पौराणिक गाथा हो, दर्शन हो, व्यवहार हो, रीति-नीति हो या आरम्भिक कला या विज्ञान हो हमें उसका स्रोत भारत ही

art or primitive science, everywhere you have to go to India ; whether you like it or not, because some of the most valuable and most instructive materials in the history of man are treasured up in India, and in India only."

August wilhelm fon Schleger :—

It is perhaps the deepest and loftiest thing the world has to show.

"Schopen Hauer. The production of the highest Human Wisdom."

"Almost Super—Human Conception."

"It is the most satisfying and elevating reading (with the exception of the original texts) which is possible in the world ; it has been the solace of my life and will be the solace of my death."

मिलेगा। आप इस में सहमत हों या न हों सबसे अधिक मूल्यवान् और सर्वाधिक शिक्षाप्रद सामग्री जो मानव के इतिहास में उपलब्ध होती है उसकी सञ्चित निधि केवल भारत में ही है अन्यत्र नहीं।

आगष्ट विल्हेल्म फोनश्लेगर कहते हैं—भारत की आध्यात्मिक विशेषता गम्भीर और उदात्त वस्तुतत्त्वों की संसार को देन है।

शोपेन हावर कहता है—भारतीय दर्शन मनुष्य की उत्तम विकसित बुद्धि का अपूर्व आदर्श है जो कि विचारांश में अतिमानव प्रायः है।

“Now, if Einstein is right, or even partly right no physicists before his time knew quite well what they were talking about. When they used the ideas of distance and time, and practically every statement that they made which purported to be accurate was false.”

Possible worlds by

J. B. S. Haldane

Science is not yet in contact with ultimate reality.

वह यह भी सम्मति देता है कि उपनिषद् साहित्य का अध्ययन सन्तोष दायक, उन्नायक चिन्तारों से पूर्ण है इसका स्वाध्याय जैसे मुझे जीवन में शान्ति और स्फूर्तिदायक हुआ यह मृत्यु शय्या पर भी वैसे ही शान्तिदायक होगा ।

यदि सापेक्षवाद का अनुसन्धान कर्ता आइन्स्टीन ठीक हो या अंशतः ठीक हो तो कोई भी विज्ञान नेता इस के पूर्व इस से अनभिज्ञ था कि आजकल वैज्ञानिक लोग क्या क्या नई गवेषणा कर रहे हैं । जब उन्होंने दूरी समय औसतसम्बन्धी प्रत्येक विचरण तैयार किया और जिसे उस समय बिल्कुल ठीक बतलाते थे आज मिथ्या मालूम होता है ।

—जी० बी० एस० हाल्डेन

विज्ञान अभी तक पूर्ण सत्य के सम्पर्क में नहीं आया है ।

Once more then, if we mean by primitive, people who inhabited this earth as soon as the vanishing of the glacial period make this earth inhabitable, the Vedic poets were certainly not primitive. If we mean by primitive, people who were without a knowledge of fire, who used unpolished flints, and ate raw flesh, the Vedic poets were not primitive. If we mean by primitive, people who did not cultivate soil, had no fixed abodes, no kings, no sacrifices, no laws, again I say, the Vedic poets were not primitive. But if we mean by primitive the people who have been the first of the Aryan race to leave behind literary relics of their existence

एक बार फिर यदि हम आरम्भिक से ऐसे लोगोंको समझें जिन्होंने आदि कालमें सृष्टिको निवास योग्य बनाया तो वैदिक ऋषि आरम्भिक नहीं थे। पुनः यदि हमारा अभिप्राय आदि निवासी से ऐसी जातिका हो जिन्हें अग्नि का ज्ञान नहीं था जो खरदरे चकमकसे अग्नि जलाते थे और कच्चा मांस खाते थे तो इस अर्थ में वैदिक ऋषि आदिकालीन नहीं थे। पुनः यदि हमारा यह अभिप्राय हो कि वे ऐसे आदिवासी थे जिन्होंने भूमि पर हल नहीं चलाया; न स्थिरनिवासकी योजना की; न उनके राजा थे; न वे यह करते थे और न उनके लिये राज्यके नियन्त्रण करनेवाले

on earth, then I say the Vedic poets are primitive, the Vedic language is primitive, the Vedic religion is primitive, and taken as a whole, more primitive than anything else that we are ever likely to recover in the whole history of our race.

The prosperity of a country depends not on the abundance of its revenues, not on the strength of its fortifications not on the beauty of its public buildings ; but it consists in the number of its cultivated citizens, in the men of education, enlightenment and character.

नियम थे तो वैदिक ऋषिप्राचीन नहीं थे । परन्तु यदि हमारा अभि-
प्राय यह हो कि आदिकालीन वही हैं, जिन्होंने आर्य जातिके आदि
पुरुष होकर अपनी स्थिति में एक ऐसा अखण्डसाहित्य छोड़ा
जिसकी थाती से सभी गौरव अनुभव करते हैं, तो मैं कहूंगा
कि वैदिक ऋषि आदि हैं: वेदविद्या आदिकाल की है; वैदिक धर्म
आद्य है और वे ऋषि सम्पूर्ण मानव सभ्यसंसार के इतिहास में
भी सर्वप्रथम सभ्य होने का गौरव रखते हैं ।

किसी देशकी समृद्धि न तो इसके करोड़की प्रभूत संग्रह सम्पत्ति
पर आश्रित है; न इसकी सुपुष्ट रक्षा पङ्क्ति पर निर्भर है और न
इसके सार्वजनिक शोभायुक्त स्थानों पर अवलम्बित है। परन्तु इसका
आधार तो सुसभ्य, नागरिक और शिक्षित जन जो नैतिक और
बौद्धिक विकास में आगे बढ़े हुए हैं और जो उन्नतिशील हैं वे ही
देश की समृद्धि के वास्तविक मापदण्ड हैं ।

Lecture II.

Warren Hastings thus speaks of the Hindus in general :—

“They are gentle and benevolent, more susceptible of gratitude for kindness shown them, and less prompted to vengeance for wrongs inflicted than any people on the face of the earth, faithful, affectionate, submissive to legal authority.

But it is not Europe alone that has profited by this revival of the study of Sanskrit. India herself has lost the recollection of her past; here literature was sinking in oblivion numerous works of her celebrated writers had perished and others were annually perishing; her ancient language had died away and was

घारेन हैस्टिंग्स कहता है कि भारतीय भद्र, उदार, कृतज्ञ, और संसार की समस्त जातियों में जो बदला लेने की भावना भरी है उससे ऊपर उठे हुए विश्वासी, प्रेममय, और न्यायके सामने नतमस्तक होनेवाले मनुष्य हैं ।

संस्कृत विद्याके पुनरुद्धार एवं पुनरुज्जीवनका केवल यूरोपने ही लाभ नहीं उठाया बल्कि और देशोंने भी विशेषरूपेण पूर्ण उन्नति प्राप्त की है । परन्तु भारत अपने गौरवपूर्ण अतीत के संस्मरणों को स्वयं खो चुका है । इस देश में प्रसिद्ध ग्रन्थ-लेखकों के महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ सदा के लिये विलय हो गये और

cultivated merely by a few of her sons ; and last but not least her social fabric and religious belief had come to rest on mediaeval and modern works professedly derived from ; and in harmony with her most ancient sacred texts but in truth the composition of an interested degenerated priesthood ; corrupting her faith depraving her morality and sapping the very foundations of her life.

Introduction to Jaiminiya
Nyaya Mala Vistar
Edited by—Theoder Goldstucker
London Edition 1878.

प्रतिवर्ष नष्ट हो रहे हैं। उसकी प्राचीन गौरवमयी भाषा मृत प्रायः हो गई और केवल कुछ थोड़ेसे सरस्वतीके सुपुत्रों द्वारा पढ़ी जाती है। और अन्तमें, उसका सामाजिक ढांचा तथा धार्मिक विश्वास मध्यकालीन एवं वर्तमानकालीन ग्रन्थोंकी रचनापर आधारित है। कहनेको तो उनका स्रोत भी प्राचीन वैदिक साहित्य कहा जाता है परन्तु वास्तवमें यह सर्व निर्माण आधुनिक स्वार्थी पौरोहित्य कला विज्ञों का है इससे उसके निवासियोंका धार्मिक विश्वास विकृत ; उसकी नैतिक पतनकी पराकाष्ठा एवं उसके जीवनकी आधारभूत शिलायें भी निष्प्राण एवं गतिहीन हो गई हैं।

थ्योडोर गोल्डस्टुकर द्वारा सम्पादित जैमिनीयन्यायमाला-
विस्तरकी अंग्रेजी मूम्बिकासे लन्दन संस्करण १८७८ सन्०

Religious experience is a reality.

Science and theology as art forms:

Reality seems to concern religious beliefs much more than any others.

Page 326. The nature of the physical world : Eddington.

(Cambridge University edition)

Science is not yet in contact with ultimate reality. [Encyclopedia of modern knowledge the world ; whence and how].

Sir James Jeans.

(साइन्स और थ्योलोजी: एज आर्ट फार्मस से)

धार्मिक विश्वासोंका सत्यके साथ अन्य वस्तुओंसे कहीं घनिष्ठतर सम्बन्ध है।

३२६ पृ० (दी नेचर आब् दी फीजिकल वर्ल्ड)

एडिङ्गटन कृत (क्रेम्बिज विश्वविद्यालय संस्करण)

विज्ञान अन्तिम सत्यके सन्निकट नहीं पहुँचा है।

धार्मिक अनुभव वास्तविक तथ्य है।

इन्साइक्लोपिडिया ऑफ माडर्न नाटोज।

अभीतक हम वास्तविक तथ्यके सम्पर्कमें नहीं आये हैं

पदार्थका वस्तुतत्त्व हमारे मनस्तत्त्व और बुद्धितत्त्व के गम्य नहीं है—

दी वर्ल्ड ऑफ्स ऑण्ड हाऊ: सर जेम्स जीम्स

We are not yet in contact with ultimate reality.

Real essence of substance is beyond our knowledge.

When we consider the modern estimate, we may be inclined to sympathise rather with ancient Brahmins who thought that the world had always existed.

Science News :
Penguin Books 10

Bishop Auber said :—

The Hindus are brave, courteous, intelligent, most eager for knowledge and improvement ; sober, industrious, dutiful to parents, affectionable to their children ; uniformly gentle and

जब हम आधुनिक विचरण पर विचार करते हैं तो हमें प्राचीन ब्राह्मणों के विचारों में सत्य दीखता है जो संसार को शाश्वत बतलाते हैं ।

पेङ्ग्विन न्यूज पेङ्ग्विन बुक्स १०

विशप ओबर कहते हैं ।

भारतीय हिन्दू धीर, चिन्मय, बुद्धिमान, विवेकी, ज्ञानकी अमर जिज्ञासा रखनेवाले और विकासशील जाति है जो गौरवपूर्ण परिश्रमशील, माता पिता के प्रति कर्तव्यपरायण और बालकोंको

patient and more easily affected by kindness and attention to their wants and feelings than any people I ever met with.

Let us not forget that just as moral strength is the backbone of British prestige and power, as art is the backbone of life in France, so also religion is the bedrock of India's future prosperity and happiness. Religion plays a signal role in our lives in bringing the three hundred sixty two million people of India with numerous barriers of sects and castes in them together under one banner whether we are rich or poor, whether we are Hindus, Jains or Christians.

स्नेह भरी दृष्टि से देखनेवाले, एक समान उदार दयालु, धीर गम्भीर और सरलता पूर्वक मनाये जाने और सबकी भावनाओं का अधिकाधिक आदर करनेवाले राष्ट्र के व्यक्ति हैं ।

हमें यह नहीं भूल जाना चाहिये कि जिस प्रकार ब्रिटिश गौरव और शक्तिका आधार उस राष्ट्र की नौ सेना है और फ्रांस देशवासियों के जीवन का मेरुदण्ड कलानिर्माणकी श्रृंखला है इसी प्रकार भारतीय भावी समृद्धि और आनन्द की आधारशिला धर्म है । ३६ करोड़ भारतीयों के विभिन्न जाति, भाषा, धर्म आदि की विभिन्न बाधाओं के रहते हुए भी एक पताका के नीचे लानेवाला तत्त्व धर्म ही है । फिर भले ही कोई धनी या

We are all in a sense receiving our vital sustenance from the pulse beat of faith in one God.

Members of the Sanskrit Text Society :—

Patron :

His Royal Highness the Prince of Wales.

Vice Patron :

His Majesty the king of Belgians.

The Rt. Hon. the secretary of state for India.

President :

His Royal Highness the

Duc D' Aumala.

निर्धन हो, चाहे कोई हिन्दू, जैन, फारसी या ईसाई हो हम सब, एक शब्द में, अपनी धमनियों की अव्यर्थ जीवनी शक्तिके स्रोत के लिये आत्मामें ईश्वर के प्रति दृढ़ विश्वास को ही मानते हैं।

इंग्लैण्ड में स्थापित संस्कृत ग्रन्थ प्रकाशन समिति के सदस्यों की नामावलि—

संरक्षक—हिज रायल हाइनेस वेल्स के राजकुमार।

उपसंरक्षक—

हिज मेजेस्टी बेल्जियन्स के राजा व माननीय भारत मंत्री।

समापति—

हिज रायल हाइनेस ड्यूक डे अममला :

Vice Presidents :

His Excellency Mr. Van De Weyer.
The Right Hon. Lord Dufferin and Clanerboye

Treasurer :

David Salomons Esqr. M. M.

Hony Secy :

Octane Depierre, Esqr.

उपसभापति—

हिज एक्सेलेन्सी श्री वानडेवेयर, माननीय लार्ड डफरिन और
क्लेनर बाय ।

कोषाध्यक्ष—डेविड सलोमन्स एम० एम० ।

अधैक्षक सचिवी—ओक्टैन डि पियर ।

अणुभाष्येऽपि :—

अलौकिको हि वेदार्थो न युक्त्या प्रतिपद्यते ।
 तपसा वेद युक्त्या तु प्रसादात्परमात्मनः ॥
 सन्देहवारकं शास्त्रं बुद्धिदोषास्तदुद्बधः ।
 विरुद्धशास्त्रसम्भेदादङ्गैश्चाशक्यनिश्चयः ॥
 तस्मात्सूत्रानुसारेण कर्तव्यः सर्वनिर्णयः ।
 अन्यथा भ्रश्यते स्वार्थान्मध्यमश्च तथाऽऽदिमः ॥
 “श्रुतिस्मृति पुराणानां विरोधो यत्र दृश्यते ।
 तत्र श्रौतं प्रमाणन्तु तयोर्द्विधे स्मृतिर्वरा ॥ ४ ॥”

व्यास स्मृति १ अध्याय

वेदवेदाङ्गशास्त्राणि सेतिहासानि चाभ्यसेत् ।
 अध्यापयेच्च तच्छिष्यान् सङ्घिप्रांश्च द्विजोत्तमः ॥
 इतिहासपुराणानां वेदोपनिषदां द्विजः ।

शक्त्या सम्यक्पठेन्नित्यमल्पमप्यासमापनात् ॥ १० ॥

स यत्नदानतपसामखिलं फलमाप्नुयात् । वेदेभ्योऽन्यत्र सन्तुष्टः
 स विप्रः शूद्रतामियात् । तस्मादहरहर्वेदं द्विजोऽधीयीत वाग्यतः ।

ब्रह्मपुराणेऽपि

इतिहासपुराणानि यदन्यच्छब्दगोचरम् । स्वतो मुखे ममप्रा-
 यादभूच्च स्मृतिगोचरम् । वेदार्थश्च मया सर्वो ज्ञातोऽसौ तत्क्षणे-
 न च । ततः पुरुषसूक्तं तदस्मरं लोकविभूतम् । यज्ञोपकरणं
 सर्वं तदुक्तञ्च त्वकल्पयम् ।

१६१ अ० २७-२८ श्लो०

ब्राह्मणं च पुरस्कृत्य ब्राह्मणेन च कीर्तितम् ।
 पुराणं शृणुयान्नित्यं महापापद्वानलम् ॥
 पुराणं सर्वतीर्थेषु तीर्थञ्चाधिकमुच्यते ।
 यस्यैकपादश्चक्षणाद्धरिरेव प्रसीदति ।
 सर्वेषां जगतामेव हरिरालोकहेतवे ।
 तथैवान्तः प्रकाशाय पुराणाद्यद्यो हरिः ।
 विचरेदिह भूतेषु पुराणं पावनं परम् ।
 तस्माद्यदि हरेः प्रीतेरुत्पादे धीयते मतिः ।
 श्रोतव्यमनिशं पुम्भिः पुराणं कृष्णरूपिणः ।
 विष्णुभक्तेन शान्तेन श्रोतव्यमिति दुर्लभम् ।
 पुराणाख्यानममलममलीकरणं परम् ।
 यस्मिन्वेदार्थमाहृत्य हरिणा व्यासरूपिणा ।
 पुराणं निर्मितं विप्र तस्मास्तत्परमो भवेत् ।
 पुराणो निश्चितो धर्मो धर्मश्च केशवः स्वयम् ।
 तस्मात्कृती पुराणे हि श्रुते विष्णुर्भवेदिति ।
 तथा गङ्गाम्बुसेकेन नाशयेत्किञ्चिदं स्वकम् ।
 केशवो ब्रह्मरूपेण पापासारयते महीम् ।
 वैष्णवो विष्णुमजनस्याऽऽकाङ्क्षी यदि वर्तते ।
 गङ्गाम्बुसेकममलममलीकरणं चरेत् ।
 विष्णुभक्तिप्रदा देवी गङ्गा भुवि च गीयते ।
 विष्णुरूपा हि सा गङ्गा लोकनिस्तारकारिणी ।

ब्राह्मणेषु पुराणेषु यज्ञाणां गोषु विष्णवे ।

वारायणविषाणुस्मिर्भक्तिः कार्या ह्यैतुकी ।

पद्मपुराण आदिल्लण्डे ६२ अध्याय—५८-७०

योऽधीते श्रुतिमेवाऽऽदौ समं स्यात्तपसा मुने । ध्रुतेऽध्यापनात्पुण्यं
यदाप्नोति द्विजोत्तमः । तदध्यायाच्च जप्याच्च द्विगुणं फलमश्नुते ।
जगद्यथा निरालोकं जायते शशिभास्करो । बिना तथा पुराणं
हि ध्येयमस्मान्महामुने ! तपमानः सदाह्वानं यो धारयति शास्त्रतः
सम्बोधयति लोकञ्च तस्मात्पूज्यतमो गुरुः । सर्वेषाञ्चैव पात्राणां
श्रेष्ठं पात्रं पुराणवित् पतनात्त्रायते यस्मात्तस्मात्पात्रमुदाहृतम् ।

विष्णोरायतने यस्तु कारयेद्धर्मं पुस्तकं देव्याः शम्भोर्गणेशस्य
अर्कस्त्यच्च तथा पुनः ॥ राजसूयाश्वमेधाभ्यां फलमप्राप्नोति मानवः ।
इतिहासपुराणानां पुण्यं पुस्तकवाचनम् सर्वान्कामानवाप्नोति
सूर्यलोकमिनिप्ति सः । सूर्यलोकञ्च भित्त्वाऽसौ ब्रह्मलोकञ्च गच्छति ।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन कार्यमुस्तकवाचनम् । इतिहासपुराणानां
विष्णोरायतने शुभम् । [पद्मपुराण उत्तर खण्ड]

वैष्णवं दक्षिणो बाहुः शैवं वामो महेशितुः ।

उरु भागवतस्योक्तं नामिः स्यान्नारदीयकम् ।

मार्कण्डेयञ्च दक्षाङ्घ्रिर्वाभौ ह्यानेयमुच्यते ।

भविष्यं दक्षिणो जानुर्बिष्णोरेव महात्मनः ।

ब्रह्मवैवर्तसज्जन्तु वामजानुर्दाहृतः ।

लैङ्गस्तु गुल्फकं वसं वाराहं वामगुल्फकम् ।

स्कान्दं पुराणं लोमानि त्वगस्य वामनं स्मृतम् ।

कौर्मं पृष्ठं समाख्यातं मात्स्यं मेघः प्रकीर्त्यते ।

मज्जा तु गरुडस्योक्तं ब्रह्माण्डमसि गीयते ।

एषमेवाभवद्विष्णुः पुराणाद्ययो हरिः ।

[पद्यपुराण आदिम खण्ड]

अथ विष्णोः परेशस्य नानाविग्रहधारिणः ।

एकं पुराणफलकं तच्छृणुध्वं द्विजोत्तमाः ।

तत्र ब्रह्मकल्पवृत्तान्तोद्भवं ब्राह्मं हरेर्मस्तकं पद्मकल्पवृत्तान्तो-
द्भवं पाद्मं हृदयं, वाराहकल्पवृत्तान्तोद्भवं वैष्णवं दक्षिणबाहुः,
श्वेतकल्पवृत्तान्तोद्भवं शिवपुराणं वामबाहुः, सारस्वतकल्पवृत्ता-
न्तोद्भवं भागवतं वक्षःस्थलं, बृहत्कल्पवृत्तान्तोद्भवं नारदीयं नाभिः,
श्वेतवाराहकल्पवृत्तान्तोद्भवं मार्कण्डेयं दक्षिणाङ्घ्रिः, ईशानकल्प-
वृत्तान्तोद्भवं आग्नेयं वामाङ्घ्रिः, अघोरकल्पवृत्तान्तोद्भवं भविष्यं
दक्षिणजानुः, रथन्तरकल्पवृत्तान्तोद्भवं ब्रह्मवैवर्तं वामजानुः,
कल्पान्तवृत्तान्तोद्भवं लैङ्गं दक्षिणगुल्फः, मनुकल्पवृत्तान्तोद्भवं
वाराहं वामगुल्फः, तत्पुरुषकल्पवृत्तान्तोद्भवं स्कान्दं हरेः रोमानि,
शिवकल्पानुषङ्गि वामनं शरीरत्वक्, लक्ष्मीकल्पवृत्तान्तोद्भवं
कौर्मं पृष्ठं, कल्पादी सप्तकल्पवृत्तान्तोद्भवं मात्स्यं मेढ्रम्, गरुड-
कल्पवृत्तान्तोद्भवं गरुडं दक्षिणं पादाग्रं, भविष्यकल्पानां वृत्तान्तो-
द्भवं ब्रह्माण्डं वामपादाग्रं, एवं सस्वरजस्तम आद्यात्मकमष्टादश
पुराणरूपो हरिः पुराणेषु प्रकाशते । तत्र सात्त्विक पुराणे विष्णो
रधिकमाहात्म्यं राजसे प्रकृतिब्रह्मसूर्याणां तामसेऽग्निशिव-

मैरवादीनां माहात्म्यम् । मिश्रे तु पितृणां माहात्म्यम् । एव-
मष्टादशं मुख्यपुराणसंख्यासमूहश्चतुर्लक्ष एव ।

(इतिपाद्यमात्स्ययोः)

अथ च अष्टादशम्यञ्च पृथक् पुराणं यत्प्रदृश्यते । विजानीध्वं
द्विजश्रेष्ठास्तदैतेभ्यो विनिर्गतम् ।

तन्त्रघातिके प्रथमाध्यायस्य तृतीय पादेः—

एषेवेतिहासपुराणयोरप्युपदेशवाक्यानां गतिः ।

उपाख्यानानि त्वर्थवादिषु व्याख्यातानि ।

यस्तु पृथिवीविभागकथनं तद्धर्माधर्मसाधनफलोपभोग-

प्रदेशविवेकाय किञ्चिद्दर्शनपूर्वकं किञ्चिद्वेदमूलम् ।

वंशानुक्रमणमपि-ब्राह्मणक्षत्रियजातिगोत्रज्ञानार्थं

दर्शनस्मरणमूलम् । देशकालपरिमाणमपि लोकज्योतिः-

शास्त्रव्यवहारसिद्ध्यर्थं दर्शनगणितसम्प्रदायानुमान-

पूर्वकम् भाविकथनमपि त्वनादिकालप्रवृत्तयुगस्वभाव-

धर्माधर्मानुष्ठानफलविपाकवैचित्र्यज्ञानद्वारेण वेदमूलम्

अङ्गविद्यानामपि कर्त्तव्यपुरुषार्थप्रतिपादनं लोकवेदपूर्वकत्वेन

विवेक्तव्यम्—

इससे स्पष्ट हो गया कि धर्मशास्त्रों के पढ़े बिना विशाल
भावना का निर्माण असम्भव है । विशाल भावना के बिना शान्ति,
ऐश्वर्य और सुशील की अभिवृद्धि कभी नहीं हुआ करती ।

कुल विद्वानों की यह धारणा है कि पुराणों में अनेक स्थलों
पर उत्तरवर्ती आचार्यों ने अपने अपने मतों के स्थापन तथा पुष्टि

के लिये अनेक प्रक्षिप्त पाठ समाधिष्ट कर दिये हैं; परन्तु जहाँ तक मैंने इन पुराणोंका पारायण व मनन किया है उससे मेरी तुच्छ बुद्धि इसी निष्कर्ष पर पहुँची है कि इन अष्टादश पुराणों में कहीं भी प्रक्षिप्त पाठ का समावेश नहीं किया है। अन्य श्रीमद्भागवत आदि उपपुराणोंमें चाहे प्रक्षिप्त श्लोक समाधिष्ट कर दिये गये हों परन्तु अष्टादश महापुराणों में महर्षिप्रणीत पुरातन पाठ ही ज्यों का त्यों अपरिवर्तित तथा अपरिवर्द्धित रूपमें चला आ रहा है उसमें किसी प्रकार की वृद्धि साम्प्रदायिक आचार्यों के द्वारा नहीं की गई प्रतीत होती है। प्रत्युत बराहपुराण में तो महर्षि-प्रणीत पूरा पाठ भी नहीं उपलब्ध हो रहा है। इनमें आया हुआ एक एक शब्द ध्रुव सत्य तथा सृष्टि कल्याण भावना से ओत-प्रोत है। उसमें किसी प्रकार आशंका व सन्देह का अवकाश नहीं है। ईश्वरीय प्रकृति की मर्यादारूप से इनमें स्थिति है। इनकी जानकारी न होने के कारण ही आज का मानव मनमाने कर्म करके नाना कष्टों का शिकार बना हुआ है, अतः आत्म कल्याण-भिलाषी प्रत्येक मानव को इनका मनन करना नितान्त आवश्यक है।

आजकल विशाल भावनार्यें कितनी संकुचित होती जा रही हैं यह इसी बातसे स्पष्ट है कि बालकों के असीम ज्ञान को थोड़े से समय के लिये दिये गये प्रश्नपत्रों दुबारा ही परीक्षा कर उसकी योग्यता का प्रमाण पत्र दे दिया जाता है। इससे अनुशासनहीनता, प्राचीन गुरुशिष्य-परम्परा का अभाव और

और इसी विशाल ज्ञान राशि पाने पर भी अस्वस्थचित्तमें आज-कालके नवयुवकों का मस्तिष्क मटकता है कि इन्हें केवल सहर्ष, अज्ञान्ति और कलह की चिनगारी सुलगाने में ही आनन्द आता है ।

आज कल हमारे बालकों को जो पुस्तकें पढ़ाई जाती हैं उससे विकास बिल्कुल ही रुक जाता है । आज तो कुछ प्रश्नपत्र पढ़ाकर उनके अपेक्षित उत्तरों से सन्तोष माननेवाला अध्यापक सब शिष्य और उनके अभिभावकगण कृतकृत्य हो जाते हैं, सब एकही ध्येय बनाये रहते हैं ; उत्तीर्ण होना । क्या बालक के माता पिता, क्या भाई बहिन क्या अन्य शुभचिन्तक एक ही बात कहते हैं कि हमारा बालक उत्तीर्ण हो ।

इसका बुरा परिणाम यहां तक देखने में आता है कि नौनिहाल राष्ट्र की भाषी उन्नति ये बालक और ये नवयुवक अपने जीवन तक की भी बाजी लगा देते हैं । अर्थात् इस पर भी दुर्भाग्य से उत्तीर्ण होने का सुसमाचार न मिला तो लज्जित होकर वह नवयुवक आत्महत्या तक कर लेते हैं । ऐसे सुन्दर ज्ञान की प्राप्ति के लिये घृणित उपाय काम में लेते हैं जैसे, नकल करना, परीक्षक को अनाचार का शिकार बना उससे अनुचित रीति से अङ्क ले लेना । कहां तक कहें यदि कहीं थोड़ा सा भी प्रश्नपत्र कठिन आ जावे तो परीक्षा भवन में हो हल्ला मचा कर उहण्डता से प्रश्नपत्र के विरोध में हड़ताल कर देना अनुशासन तोड़ना, और यहां तक कि परीक्षा भवन के अध्यक्ष की हत्यातक भी की गई देखी गई हैं । ऐसे राष्ट्र की जड़ को खोखले

बनानेवाले दूषित तत्त्व इस शिक्षा के अनिवार्य अङ्ग बन चुके हैं। बस ऐसे विकास से भंगवान ही रक्षा करे। हमें विकास की अवश्य आवश्यकता है परन्तु शक्तिक्षीण करने वाला विकास अनिच्छित है।

ऊपर निवेदन किया है कि सारा यह दोष आजके विद्यार्थी का ही नहीं है इसमें उनकी शिक्षा पद्धति का बाह्य और अन्तः रूप बनाने वाली विश्वविद्यालय जैसी संस्थाओं का भी बड़ा दोष नहीं है। वे सब समय एक ही दृष्टि से काम करते हैं। किसी प्रकार विश्व-विद्यालय के परीक्षार्थी छात्रों की संख्या बढ़े। ये यह कभी नहीं सोचते कि जहां पञ्चवर्षीय-योजना के लिये बड़े भारी रूप में जो नदी बांध योजनायें विद्युत् उत्पादनशक्तिकेन्द्र और अन्नोत्पादनार्थ नहरें बनाई जा रही हैं उनके पीछे सब को चलाने वाले इस बौद्धिक केन्द्र मनुष्यरूपी शक्ति का सञ्चालन करने के लिये हमने क्यों उपेक्षा और अनवधानता कर रखी है ? आज तक इस शिक्षाको भारतीय रूपरेखा में ढालने का प्रयत्न हुआ अवश्य लेकिन सब ही नकार खाने में तूती की आवाज ही सिद्ध हुई। आज उत्पीर्ण होने के लिये प्रयत्न जोरों से चालू है और संसार यात्रामें प्रवेश करने पर उस कर्तव्याकर्तव्यशून्य व्यक्ति का ज्ञान उसे सदा अपेड़ों से सीधा करता है।

इस प्रकार हमें अपने आपको भावी सन्तान की विकाश-शील प्रवृत्ति के लिये सचेष्ट रूपमें प्रयत्न करना चाहिये इसीमें सब का कल्याण है।

धर्मशास्त्र ग्रन्थों में महर्षियों ने ज्ञान विज्ञान को कूट कूट कर मर दिया है। इन पुण्यश्लोक महर्षियों के लक्ष्य को उन्हीं के समान उदार लोकोपकारितापूर्ण बुद्धिसम्पन्न व्यक्ति ही जान सकते हैं क्योंकि इनका निर्माण ही तपः पूत महर्षियों की कल्याणमयी प्रवृत्ति एवं सद्बिचारपूर्ण भावनाओं से हुआ है।

आधुनिक लोग सत्यमार्ग बताने वाले शास्त्रों के अध्ययन को एक किनारे छोड़ बड़ी-डिग्रियों के लिये एड़ी चोटी का पसीना एक कर देने हैं। अपनी विद्वत्ता की कसौटी उन्हीं उपाधियों के प्रमाण पत्रों को ही समझते हैं। परन्तु यह सब शास्त्रीय ज्ञान एवं साहित्य को सङ्कुचित करने में ही अधिक सहायक हुआ है और साथ ही उस सुन्दर ज्ञान की खिल्ली उड़ाने में भी। क्योंकि इन गम्भीर परोक्ष अर्थों से पूर्ण शास्त्रों को सङ्कुचित भावों से देखने से ही अपना पराया किसी का भी हित साधन नहीं हो सकता है। इसी का परिणाम है सृष्टि की अशान्ति। मुझे तो खेद और दुःख तब होता है जब मैं यह सोचता हूँ कि ऐसे महानुभाव श्रुति स्मृति एवं पुराणादि के बिना अपने को सङ्कीर्ण मनोवृत्ति का शिकार बना अपनी उपाधियों से गौरवान्वित होकर हमारी भावी पीढ़ी को किस प्रकार शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, भात्मिक एवं सर्वाङ्गीण शिक्षा देकर उन्नत बनाने के लिये शिक्षा के अधिकारी कर्णधारों द्वारा चुने जाते हैं। क्या ये कभी भावी सन्तान को उन्नत शिक्षा दे सकेंगे? यह सब

प्रभु ही साक्षीरूप से जानें। मुझे तो किसी प्रकार भी उन भाषी सन्तानों का उद्धार इनसे 'असम्भव' सा ही लगता है।

शास्त्र स्पष्ट कहते हैं कि शास्त्रों के बिना जो भी कार्य करता है वह अपना एवं अपने से सम्बन्धित सभी का अत्यधिक अहित करता है।

श्रुतिहीनाय विप्राय स्मृतिहीने तथैव च । दानम्भोजनमन्यञ्च
दत्तं कुलविनाशनम् ।

अस्तु, सृष्टि में शान्ति स्थापना इनमें निहित भाषों को व्यापक दृष्टि से प्रचार करने से ही हो सकती है। इसका एकमात्र उपाय है बहुश्रुतता, श्रुति स्मृति पुराणादि की पूरी सङ्कति बिठाना एवं उदार प्राणिहित की भावना से अर्थ का प्रकाश करना।

बुद्धिवृद्धिकराण्याशु धन्यानि च हितानि च । नित्यं शास्त्राण्य-
वेक्षेत निगमांश्चैव वैदिकान् ॥ यथा यथा हि पुरुषः शास्त्रं
समधिगच्छति । तथा तथा विजानाति विज्ञानञ्चास्य रोचते ।
मनुस्मृति अ० ४।१६।२० ।

शास्त्रों को बुद्धिके द्वारा कसौटी पर कस कर पूर्ण सङ्गत अर्थ निकालना चाहिये जो सर्व प्राणि हित में पूर्ण सहायक हो क्योंकि इनका एक एक शब्द ईश्वराज्ञा है जिसका स्वार्थमय भूमिप्राय मानव की अपूर्णता और भवनति का द्योतक और हमारे लिये सदा ही घातक है।

जो लोग इस ज्ञानसे वञ्चित हैं उनकी खाली डिमियां

उपाधिमात्र हैं। “ज्ञानं भारः क्रियास्विना।” स्वरूपकी उपलब्धि युक्त क्रिया के बिना ज्ञान भार स्वरूप है।

“शास्त्राण्यधीत्यापि भवन्ति मूर्खा यस्तु क्रियावान् पुरुषः स विद्वान्” शास्त्राध्ययन करनेपर भी क्रिया रहित उच्च आशय से जीवनमें शास्त्र के सिद्धान्तों का आचरण न करने से प्राणिमात्र का उपकार न कर सकने के कारण ऐसे व्यक्ति के सब ग्रन्थों का पठन अपूर्ण ही माना जाता है। आज तो जब परीक्षा पिशाचिनी का जोर बढ़ रहा है तो ग्रन्थका उच्च लक्ष्य से आशय बिल्कुल समझा ही नहीं जाता और “पुस्तकी भवति पण्डितः” होकर अपने को धन्य समझनेमें ही उनके लक्ष्य की पूर्ति हो जाती है। फलतः शास्त्र जीवन शास्त्रबुद्धि और संस्कृति का रूप सब विरुद्ध हो गया है ऐसे लोगोंको शास्त्र का तत्त्व दुरधिगम है।

गुरु प्रसाद, भगवत्कृपा और शास्त्र बुद्धिसे इनका स्वाध्याय उदार हृदय और लोकोपकारितापूर्ण भावना द्वारा अध्ययन करने से ही शास्त्र जीवनी प्रचलित हो सकती है। तभी प्राणीमात्र का पूर्ण कल्याण है।

इस लिये सभी से मेरी विनम्र प्रार्थना है कि शास्त्रों में जो तत्त्व कूट कूटकर भरा है उसे यथार्थ रूपमें जानने का प्रयत्न हो इसी से शान्ति प्राप्त होकर अमरता, सफलता और स्थायिता मिलती है। अतः विशाल हृदय और उच्च भावना से इनका स्वाध्याय कर प्राणी मात्र के कल्याण में संलग्न रहें। साथही

यह ध्यान रहे बुद्धि के बिना तत्त्व परिणाम और ज्ञान की वृद्धि नहीं होती एवं ज्ञान की प्राप्ति के बिना मोक्ष असम्भव है। संस्कृत का अक्षर ज्ञान मुझे स्वल्प है न तो मैं स्वयं व्याकरण के व्युत्पत्ति लभ्य शब्द-अर्थ का ज्ञाता हूँ, न ही मैंने साहित्य का किसी प्रकार से विशेष अध्ययन किया है परन्तु मेरा मन सदा से ही इधर लगा है। हाँ, गतदशकों से मैं संस्कृत साहित्य का यत्किञ्चित् भास्वादन पण्डितों की सहायता से कर पाया हूँ। ज्यों ज्यों मेरा प्रवेश होता गया त्यों त्यों ज्ञानवृद्धि के साथ मेरा प्रेम और आकर्षण इस अलौकिक साहित्य के प्रति अधिकाधिक अगाध श्रद्धा के साथ बढ़ता गया। मुझे प्रति दिन अमित धन राशि मिलती जाती है। मेरा सम्पन्न दूसरे व्यवहार के कार्यों में लगा रहनेपर भी अपना मन अहर्निश इनके स्वाध्याय में प्रवृत्त होकर अमित आनन्द लूटने की अभिलाषा करता है। अवश्य ही जीवन में इनका स्वाध्याय स्पृहणीय है।

इसी अगाध श्रद्धा एवं प्रेम का ही प्रत्यक्ष फल यह पुराण परिचयके रूपमें इन पृष्ठोंमें एकत्रित संग्रह थोड़ा बहुत सेवा में प्रस्तुत है। मैं अपने नित्य स्वाध्यायसे जो कुछ इस महान् अगाध समुद्र में से प्राप्त करता हूँ वह सब यथासमय पत्रों द्वारा निवेदन किया जाता ही है।

भाशा है, उदार पाठकगण अभिनव, स्वतन्त्रता के विकसन-शील वातावरण में सर्वाधिक शास्त्रमय जीवन बनाकर भावार्थ

एवं यथार्थवादी कसौटी पर सिद्धान्तों का निर्धारण कर इन महान् ग्रन्थों में प्रस्तुत ज्ञान का सच्चे अर्थों में प्रचार करेंगे ।

उनमें जो कुछ सुन्दर बन सका है वह माप उदार सज्जनोंकी महनीय कृपा का फल है और कोई त्रुटिपूर्ण या असुन्दर वस्तु मूक से रह गई हो उसके लिये मैं करबख क्षमा प्रार्थी हूँ । मैं अहर्निश माप सभी महानुभावों के शुभाशीर्वाद का इच्छुक हूँ जिससे प्रभु कृपा द्वारा शक्ति एवं सत्यैरणा से कर्तव्य पालन में लगा रहूँ । अपने चिन्मित्र निवेदन का उपसंहार करते हुए प्रभु से हम सब को सद्बुद्धि प्रदान एवं कर्तव्य पालन क्षमता की सख्त प्रार्थना है ।

ॐ तत्सद् ब्रह्मार्पणमस्तु ।

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

श्रीब्रह्मपुराण में आये हुए विषयों का अनुक्रम

अध्याय

प्रधान विषय

पृष्ठांक

१ नैमिषारण्यवर्णनम्, मुनिगणलोमहर्षणसंवाद-
वर्णनम् ।

मंगलाचरण के श्लोक, नैमिषारण्य का वर्णन, मुनियों का शुभागमन, नैमिषारण्य में सूतजी का जाना तथा ऋषियों का उनके प्रति पुराण सुनाने के लिये सानुरोध प्रश्न, श्री लोमहर्षण द्वारा पुराणकथा का आरम्भ ।

१ आदिसर्गवर्णनम् ।

५

सृष्टि के सम्बन्ध में विवरण, जल की उत्पत्ति, ब्रह्माजी का आधिर्भाव, ब्रह्मा द्वारा अण्ड का दो भाग करना, ब्रह्मा से मरीचि आदि ऋषियों की उत्पत्ति । रुद्र आदि का उद्भव, वैवस्वत मनु की उत्पत्ति, आदि सर्ग के सुनने का फल ।

२ स्वायम्भुवमनुवंशवर्णनम्, पृथ्वीत्पत्तिः, तद्वंशवर्णनञ्च,
दक्षवंशवर्णनम् ।

७

स्वायम्भुव मनु के साथ शतरूपा का विवाह, शतरूपासे प्रियव्रत, उत्तानपाद दो पुत्र एवं काम्या नामक कन्या के जन्म

का आख्यान । उत्तानपाद के वंश का वर्णन । प्रसङ्ग से पृथुका जन्म । प्रचेताओं की उत्पत्ति प्रचेताओं के मुख से निकली हुई अग्नि से वृक्षों का जलना । उनका वृक्षकन्या के साथ विवाह । वृक्षकन्या में दक्ष की उत्पत्ति एवं दक्ष का वंशवर्णन एवं इस कथा के सुनने का फल ।

३ देवदानवोत्पत्तिवर्णनम् ।

१३

देवताओं की उत्पत्ति कथन । सर्व प्रथम दक्ष की मानसिक सन्तान का वर्णन पुनः मैथुन धर्म से असिक्री नामक पत्नी में हर्यश्वों का जन्म । पिता की आज्ञा से वंश बढ़ाने के लिये इच्छुक हर्यश्वों को नारदजी का उपदेश और उनका धन में जाना । फिर शबलाश्व नाम पुत्रों की उत्पत्ति, उनका भी नारद जी के उपदेश से पूर्ववत् धन में जाना । शबलाश्वों को नष्ट जान कर दक्ष ने फिर ६० कन्याओं की उत्पत्ति की उनका विवाह एवं उनकी सन्तानों का वर्णन । मरुद्गण की उत्पत्ति ।

अकृत्वा पादयोः शौचं दितिः शयनमाविशत् ।

निद्रां चाहारयामास तस्यां कुक्षिं प्रविश्य सः ॥

वज्रपाणिस्ततो गर्भं सप्तधा तं न्यकुन्तयत् ।

स पाट्यमानो गर्भाऽथ वज्रेण प्ररोदह ॥

मा रोदीरिति तं शक्रः पुनः पुनरथाब्रवीत् ।

सोऽभवत् सप्तधा गर्भं स्तमिन्द्रो रुषितः पुनः ॥

एकैकं सप्तधा चक्रे वज्रेणैवारिकर्षणः ।

मरुतो नाम ते देवा बभूवु द्विजसत्तमाः ॥

भूत सर्ग के सुमने का फल ।

४ पृथुमारभ्य सर्वदेवदानवादीनां राज्याभिषेकवर्णनम्
पृथुचरित्रवर्णनम्, पृथुपृथ्वीसंवादवर्णनम् २५

पितामह द्वारा उन-उन स्थलों पर किये गये देव दानवों का राज्याभिषेकवर्णन ।

पृथुचरित का आरम्भ । वेन का चरित । वेन के दुश्चरित्रों को देखकर ऋषियों द्वारा शाप देना । ऋषियों के शाप से मरे हुये वेन की बाहु के मथन से पृथु का जन्म, पृथु का राज्याभिषेक, पृथु के राज्यकी स्थितिका वर्णन, सूत, मागध एवं बन्दी जन द्वारा पृथु की स्तुति ।

आपस्तम्भमिमे तस्य समुद्रमभियास्यतः ।

पर्वताश्च ददुर्मागं ध्वजमङ्गश्च नाभवत् ॥

अकृष्टपण्या पृथिवी सिध्यन्त्यन्नानि चिन्तनात् ।

सर्वकामदुष्ठा गावः पुटके पुटके मधु ।

पृथु का पृथ्वी पर शासन ।

४ पृथ्वीदोहनवर्णनम् ३५

पृथु का पृथ्वी के दोहने का वर्णन ।

तत उत्सारयामास शैलान् शतसहस्रशः ।

धनुष्कोट्या तदा धेन्यस्तेन शैला बिभर्द्धिताः ॥

नहि पूर्व बिभर्गो वै बिषमे पृथिवीतले ।

संविभागः पुराणां वा प्रामाणां वामवत्तदा ॥

न शस्यानि न गोरक्ष्यं न कृषिर्न वणिक् पथः ॥

नैव सत्यानृतं वासीन्न लोभो न च मत्सरः ॥

वैवस्वतेऽन्तरे तस्मिन् साम्प्रतं समुपस्थिते ।

वैन्यात्प्रभृति वै विप्राः सर्वस्यैतस्य सम्भवः ॥

यत्र यत्र समं त्वस्या भूमेरासीत्तदा द्विजाः ।

तत्र तत्र प्रजाः सर्वा विवासं समरोचयन् ॥

आहारः फलमूलानि प्रजानामभवत्तदा ।

कृच्छ्रेण महता युक्त इत्येवमनुशुश्रुम ॥

स कल्पयित्वा वत्सं तु मनं स्वायम्भुवं प्रभुम् ।

स्वपाणौ पुरुषग्याघ्रो दुदोह पृथिवीं ततः ॥

शस्य जातानि सर्वाणि पृथुर्वैन्यः प्रतापवान् ।

तेनान्नेन प्रजाः सर्वा वर्तन्तेऽद्यापि सर्वशः ॥

दोहने में वत्स, पात्र, दुग्ध और दोहनेवालों का वर्णन ।

ऋषयश्च तदा देवाः पितरोऽथ सरीसृपाः । ६८

दैत्या यक्षाः पुण्यजना गन्धर्वाः पर्वता नगाः ॥

एते पुरा द्विजश्रेष्ठा दुदुहूर्धरणीं किल ।

क्षीरं वत्सश्च पात्रञ्च तेषां दोग्धा पृथक् पृथक् ॥

ऋषीणामभवत्सोमो वत्सो दोग्धा बृहस्पतिः ।

क्षीरं तेषां तपो ब्रह्म पात्रं छन्दांसि भो द्विजाः ॥

देवानां काञ्चनं पात्रं वत्सस्तेषां शतक्रतुः ।

क्षीरमोजस्करञ्चैव दोग्धा च भगवान् रविः ।

पितृणां राजतं पात्रं यमोवत्सः प्रतापवान् ।
 अन्तकङ्कामवद् दोग्धा क्षीरं तेषां सुधा स्मृता ॥
 नागानां तक्षकोवत्सः पात्रं चालाबुसङ्कम् ।
 दोग्धा त्वैरावतो नागस्तेषां क्षीरं विषं स्मृतम् ॥
 असुराणां मधुर्दोग्धा क्षीरं मायामयं स्मृतम् ।
 विरोचनस्तु वत्सोऽभूदायसं पात्रमेव च ॥
 यक्षाणामामपात्रं तु वत्सो वैश्रवणः प्रभुः ।
 दोग्धा रजतनामस्तु क्षीरान्तर्धानमेव च ॥
 सुमाली राक्षसेन्द्राणां वत्सं क्षीरञ्च शोणितम् ।
 दोग्धा रजत नामस्तु कपालं पात्रमेव च ॥
 गन्धर्वाणां चित्ररथो वत्सः पात्रं च पङ्कजम् ।
 दोग्धा च सुरुचिः क्षीरं तेषां गन्धः शुचिः स्मृतः ॥
 शैलं पात्रं पर्वतानां क्षीरं रत्नौषधीस्तथा ।
 वत्सस्तु हिमवानासीद् दोग्धा मेरुर्महागिरिः ॥
 प्लक्षो वत्सस्तु वृक्षाणां दोग्धा शालस्तु पुष्पितः ।
 पालाशपात्रं क्षीरञ्च छिन्नदग्धप्ररोहणम् ॥
 सेयं धात्री विधात्री च पावनी च वसुन्धरा ।
 चराचरस्य सर्वस्य प्रतिष्ठा योनिरेव च ॥
 सर्वकामदुघा दोग्धी सर्वशस्यप्ररोहिणी ।
 आसीदियं समुद्रान्ता मेदिनी परिबिभ्रता ।
 मधुकैटभयोः हृत्स्ना मेदसा सममिप्लुता ।
 तेनेयं मेदिनी देवी उच्यते ब्रह्मवादिभिः ॥

५ मन्वन्तरवर्णनम्

३७

मन्वन्तरो में देवर्षि इन्द्रादिकों का निरूपण । महाप्रलय एवं अल्प प्रलय का वर्णन ।

६ आदित्योत्पत्तिवर्णनम्

४४

आदित्य के पुत्र एवं कन्या का वर्णन, छाया एवं संज्ञा का संवाद और उनका चरित्र वर्णन । विवस्वान् (सूर्य) एवं यम का संवाद । छाया का घोड़ी रूप धारण करना, सूर्य का अश्व रूप से छाया के साथ संगम । देववैद्य अश्विनी-कुमारों की उत्पत्ति । संक्षेप से सूर्य पुत्र यमुना, शनैश्चर सावर्णि का वर्णन, देव सृष्टि के सुनने का माहात्म्य ।

७ सूर्यवंशवर्णनम्, इलोपाख्यानवर्णनम्, कुबलया-

श्चचरित्रवर्णनम्, सत्यव्रतचरित्रवर्णनञ्च

४६

सूर्य वंशमें इलाकी उत्पत्ति इला एवं मैत्रावरुण का संवाद । इलाका बुधके साथ समागम । सुद्युम्नादिकों का जन्म उनका वंश वर्णन, इक्ष्वाकु आदि मनु पुत्रों का वंश वर्णन । कुश-स्थलीका निर्माण । बलदेव और रेवतीका विवाह । कुबलयाश्वके चरित्रका वर्णन । पिताके द्वारा कुबलयाश्वका चरित्र वर्णन । पिता के द्वारा कुबलयाश्व का राज्याभिषेक एवं कुबलयाश्वके घरमें उत्तङ्क मुनिका आगमन और उनकेद्वारा धुन्धु राक्षस के चरित्रका वर्णन । पिताकी आज्ञासे कुबलयाश्व का उत्तङ्क के साथ धुन्धु राक्षस को मारने के लिये जाना । धुन्धु राक्षस

का वध । धुन्धुमार को उसङ्क का वरदान । धुन्धुमार के वंशमें होने वाले राजाओं का संक्षेप में चरित्र वर्णन । सत्यव्रत राजाका चरित्र वर्णन एवं गालव चरित्र कथन ।

समा द्वादश भो विप्रास्तेनाधर्मेण वै तदा ।
 दासस्तु तस्य विषये विश्वामित्रो महातपाः ॥
 सन्यस्य सागरास्तेतु चकार विपुलं तपः ।
 तस्य पत्नी गले बद्ध्वा मध्यमं पुत्रमौरसम् ॥
 शेषस्य भरणार्थाय व्यक्रोणाद् गोशते न वै ।
 तं च बद्धं गले दृष्ट्वा विक्रमार्थं नृपात्मजः ॥
 महर्षिपुत्रं धर्मात्मा मोक्षयामास भो द्विजाः ।
 सत्यव्रतो महाबाहुर्भरणं तस्य चाकरोत् ॥
 विश्वामित्रस्य तुष्ट्यर्थमनुकम्पार्थमेव च ।
 सोऽभवद्गालवोनाम गलेबन्धान्महातपाः ॥
 महर्षिः कौशिको धीमांस्तेन वीरेण मोक्षितः ।

८ सत्यव्रतचरित्रवर्णनम्, सगरोपाख्यानवर्णनम्, सगरवंश-
 वर्णनम् ६०

सत्यव्रतका त्रिशंकु नाम प्राप्ति करना, सशरीर त्रिशंकु का स्वर्ग जाना । हरिश्चन्द्र का जन्म कथन ।

अर्द्ध शकानां शिरसो मुण्डयित्वा व्यसर्जयत् ।
 यवनानां शिरः सर्वं काम्बोजानां दधेव च ॥
 पारदा मुक्तकेशाश्च पद्मवाः श्मश्रुधारिणः ।

मःस्वाध्यायव्यङ्काराः कृतास्तेन महत्तमा ॥

शका यवनकाम्बोजाः पारदाश्च द्विजोत्तमाः ।

कोणिसर्पा माहिषका र्ध्वाश्वोलाः सकेरलाः ॥

राजा सगर का अश्वमेध यज्ञ करना । घोड़े को खोजने के लिये पृथ्वी को खोदते हुये साठ हजार सगर के पुत्रों को कपिल मुनिका शाप । अवशिष्ट चार पुत्रोंको कपिलजी का वरदान । साठ हजार पुत्रों का जन्मकथन ।

घृतपूर्णेषु कुम्भेषु तान् गर्भान्निदध्रे ततः ।

धात्रीश्चैकैकशः प्रादात्तावतीः पोषणे नृपः ॥

ततो दशसु मासेषु समुत्तस्थुर्यथा क्रमम् ।

कुमारास्ते यथाकालं सगरप्रीतिवर्द्धनाः ॥

षष्टि पुत्र सहस्राणि तस्यैवमभवन् द्विजाः ।

भगीरथ की उत्पत्ति गंगाका भागीरथी नाम प्राप्त करना ।

६ सोमोत्पत्तिवर्णनम्

७०

अग्नि ऋषि का तप करना एवं अग्नि के नेत्रों द्वारा दश तरह की सृष्टि का वर्णन । चन्द्र की उत्पत्ति । चन्द्र का बीज और औषधियोंका स्वामी बनना एवं राजसूय यज्ञारंभ । चन्द्र द्वारा बृहस्पतिजी की ली तारा का हरण उसके निमित्त देव दानवों का युद्ध । बृहस्पति को तारा की प्राप्ति । गर्भ त्याग के लिये तारा के प्रति बृहस्पति का क्रोधयुक्त घबराव कहना । इषीकास्तम्भ में तारा द्वारा गर्भ त्याग एवं बुधका प्रादुर्भाव ।

१० सोमवंशवर्णनम्

७३

सोम पुत्र बुध के अंश से पुरुरवा की उत्पत्ति । पुरुरवा के पुत्र का आख्यान वर्णन । गाधिराजका जन्म । गाधि कन्या सतीका ऋचीक ऋषिके साथ विवाह । एक समय सत्यवती एवं उसकी माता ने पुत्र के लिये ऋचीक से प्रार्थना की । तदनन्तर ऋचीक ने दोनों के लिये दो चरुओं का निर्माण किया पुनः सत्यवती ने माता को अपना चरु दिया एवं माता का आप भक्षण कर गई इससे उलट-पलट सन्तानों का जन्म । सत्यवती के प्रति ऋचीक का घरदान । जमदग्नि की उत्पत्ति । रेणुका एवं जमदग्नि का विवाह । परशुराम की उत्पत्ति । विश्वामित्र का जन्म एवं तप आदि का वर्णन ।

११ सोमवंशवर्णनमायुवंशवर्णनञ्च

८०

आयु के पांच पुत्रों की उत्पत्ति । रजिका खरित्र वर्णन । रजि से ५०० सौ पुत्रों की उत्पत्तिकथन । देव दानवों का युद्ध । दैत्यों को जीतने के लिये देवताओं द्वारा रजि की प्रार्थना करना । रजि द्वारा इन्द्रपद की मांग करना तदनन्तर रजि ने दैत्यों को हरा दिया पुनः रजिको इन्द्र पद की प्राप्ति । रजि और इन्द्र का प्रेमालाप । रजि के पुत्रों द्वारा इन्द्रपद का हरण करना एवं इन्द्र द्वारा उनका बध । इन्द्र को अपने पद की प्राप्ति । राजा अनेना का

सन्तान का वर्णन । धनु नाम के राजा से धन्वन्तरि का जन्म तथा भरद्वाज से आयुर्वेद की प्राप्ति । आयुर्वेद के आठ भाग करके अपने शिष्यों को वितरण करना । काशी को निकुम्भ का शापदान तथा शाप के अन्त में अलर्क द्वारा पुनः स्थापना करना ।

१२ सोमवंशवर्णने ययातिचरित्रवर्णनम् ८६
नहुष से ययाति आदि पुत्रों का जन्म । ययाति के वंश का वर्णन । ययाति से पञ्च पुत्रों की उत्पत्ति । “मज्जरां गृहाण” मेरी वृद्धावस्था को ग्रहण करो इस प्रकार यदु के प्रति ययाति की आज्ञा । जरा नहीं ग्रहण करने वाले यदु को ययातिका शाप । पुरुसे ययातिको युवावस्था का दान और भोगनेके बाद ययातिको ज्ञान ।

न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति ।

हविषा कृष्णवर्त्मव भूयएवामिवर्द्धने ॥

यत्पृथिव्यां व्रीहियवं हिरण्यं पशवःस्त्रियः ।

नाल मेकस्य तत्सर्व मिति कृत्वा न मुह्यति ॥

१३ पुरुवंशवर्णनम् । ६२

पुरुवंश का वर्णन । पुरुवंश के अन्तर्गत बंगवंशकथन । दुष्यन्त का जन्म । दुष्यन्त से शकुन्तला नामक पत्नी में भरत की उत्पत्ति । “भरत प्रभृति वंश जातानां पुरुषाणां भारता इति संज्ञा” । जह्नु के द्वारा गङ्गाजी को शाप ॥ कुरु से निर्मित कुरुक्षेत्र का वर्णन । सोम वंश में प्रसिद्ध शान्तनु

आदि जनमेजय तक राजाओं का वर्णन। पुरे वंश की सम्पत्ति। कार्तवीर्यार्जुन का वर्णन कार्तवीर्य को आपस मुनि का शाप।

१४ यदुपुत्रक्रोष्टुवंशवर्णनम् ११२

यदु के पुत्र क्रोष्टु के वंशका वर्णन। वसुदेव का जन्म। वसुदेव की चौदह पत्नियों की नामावलि। संक्षेप में कृष्ण जन्मवर्णन। कालयवन के भय से कृष्ण सहित यादवों का (पलायन) भाग जाना।

मानुष्यां गर्गभार्यायां नियोगाच्छूलपाणिनः।

स कालयवनो नाम्ना जहो राजा महाबलः ॥

१५ वृष्णिवंशवर्णनम् ११७

चमत्कार युक्त राजा ज्यामघ का चरित्र वर्णन। वभ्रु ए देवावृध की महिमाका वर्णन। देवकके सात कन्याओं का उत्पन्न होना एवं कंस का जन्म।

१६ सत्राजिदुपाख्यानवर्णनम्। स्यमन्तकोपाख्यानम् १२४

सत्राजित् के चरित्र का वर्णन। स्यमन्तक मणि का आख्यान। कृष्ण का जाम्बवती के साथ विवाह। ऋक्षराज जाम्बवान् से स्यमन्तक मणि का लाना। कृष्ण और सत्यभामा का विवाह वर्णन।

१७ स्यमन्तकोपाख्यानवर्णनम् १२६

स्यमन्तक के लिये शतधन्वा के द्वारा सत्राजित् की मृत्यु।

भक्रूर के पास स्वयमन्तक मणि का मिलना ।

१८ भुवनकोशद्वीपवर्णनम्

- १३४

मुनियों का लोमहर्षण के साथ संवाद । भूगोल का वर्णन ।
सप्त द्वीप का वर्णन ।

एते द्वीपाः समुद्रैस्तु सप्तसप्तभिरावृताः ।

लवणेश्वरुसर्पिर्दधिदुग्धजलैः समम् ॥

जम्बू द्वीप का वर्णन एवं मेरु पर्वत का वर्णन । भरतादि-
खण्डों का वर्णन ।

अनीलोत्तरमम्भोधि समभ्येति द्विजोत्तमाः ।

आनीलनिषधायामौ माल्यवदुगन्धमादनौ ॥

तयोर्मध्यगतो मेरुः कर्णिकाकारसंस्थितः ।

भारताः केतुमालाश्च भद्राश्वाः कुरुवस्तथा ॥

पञ्चाणि लोकशैलाख्य मर्यादा शैलबाह्यातः ।

जठरो देवकूटश्च मर्यादापर्वतावुभौ ॥

तौ दक्षिणोत्तरायामावानीलनिषधायतौ ।

गन्धमादनकैलासौ पूर्वपश्चात् तावुभौ ॥

अशीति योजनायामावर्णवान्तर्व्यवस्थितौ ।

निषधः पारियात्रश्च मर्यादापर्वतावुभौ ॥

तौ दक्षिणोत्तरायामावानीलनिषधायतौ ।

मेरोः पश्चिम दिग्भागे यथा पूर्वी तथा स्थितौ ॥

मर्यादा पर्वतों का वर्णन ।

१६ जम्बूद्वीपवर्णनम्

१४०

भारतवर्षका वर्णन । नदी एवं उपनदियोंकी नामोत्पत्तिका
कथन । जम्बूद्वीप की प्रशंसा वर्णन ।

गायन्तिदेवाः किलगीतकानि धन्यास्तु ये भारतभूमिमागे ।
स्वर्गापवर्गास्पदहेतुभूते भवन्ति भूयः पुरुषा मनुष्याः ॥
कर्माण्यसंकल्पिततत्फलानि संन्यस्यचिष्णो परमात्मरूपे ।
अवाप्यतां कर्म महीमनन्ते तस्मिँल्लयं ये त्वमलाः प्रयान्ति ॥
जानीम नो तत्तु खयं विलीने स्वर्गप्रदे कर्मणि देहबन्धम् ।
प्राप्स्यन्तिधन्याः खलु ते मनुष्या ये भारतेनेन्द्रियचिप्रहीनाः ॥

२० जम्बूद्वीपवर्णनम्, समुद्रद्वीपपरिमाणवर्णनञ्च १४३

जम्बूद्वीपका वर्णन । प्लक्षद्वीपका वर्णन तथा वहां पर
रहने वाले मनुष्यों की आयु का प्रमाण । शात्मलद्वीप,
कुशद्वीप, क्रौञ्चद्वीप, शाकद्वीप, पुष्करद्वीप और लोका-
लोक पर्यंत का वर्णन ।

२१ पातालप्रमाणवर्णनम् ।

१४२

पातालादि सप्तलोकों का वर्णन तथा अनन्त का पराक्रम
वर्णन ।

२२ नरकवर्णनम् ।

१४५

रौरवादि नरकों की नामावलि । पापों का वर्णन । पाप से
नरक प्राप्ति ।

यावन्तो जन्तवः स्वर्गे तावन्तो नरकीकृतः ।

पापकृद् याति नरकं प्रायश्चित्तपराङ्मुखः ॥

पापी पुरुषों के पापों को नाश करने के लिये हरि स्मरण ही
प्रायश्चित्त बताया है ।

कृते पापेऽनुतापो वै यस्य पुंसः प्रजायते ।
प्रायश्चित्तन्तु तस्यैकं हरिसंस्मरणम्परम् ॥
प्रातर्निशि तथा सन्ध्या मध्याह्नादिषु संस्मरन् ।
नारायणमवाप्नोति सद्यः पापक्षयाग्नरः ॥
विष्णुसंस्मरणात् क्षीणसमस्तकलेशसञ्चयः ।
मुक्तिं प्रयाति भो विप्रा विष्णोस्तस्यानुकीर्तनात् ॥
वासुदेवे मनोयस्य जपहोमाचर्नादिषु ।
तस्यान्तरायो विप्रेन्द्रा देवेन्द्रत्वादिकं फलम् ॥
क नाकपृष्ठगमनं पुनरावृत्तिलक्षणम् ।
क जपो वासुदेवेति मुक्तिबीजमनुत्तमम् ॥
तस्मादहर्निशं विष्णुं संस्मरन् पुरुषो द्विजः ।
न याति नरकं शुद्धः संक्षीणाखिलपातकः ॥
मनः प्रीतिकरो स्वर्गो नरकस्तद्विपर्ययः ।
नरकस्वर्गसंज्ञो वै पापपुण्ये द्विजोत्तमाः ॥
वस्त्वेकमेव दुःखाय सुखायेष्योदयाय च ।
कोपाय च यतस्तस्माद्वस्तु दुःखात्मकं कुरु ॥
तदेव प्रीतये भूत्वा पुनर्दुःखाय जायते ।
तदेव कोपाय यतः प्रसादाय च जायते ॥
तस्माद्दुःखात्मकं नास्ति न च किञ्चित्सुखात्मकम् ।
मनसः परिणामोऽयं सुखदुःखादिलक्षणः ॥

ज्ञानमेव परं ब्रह्म ज्ञानं बन्धाय चेप्यते ।

ज्ञानात्मकमिदं विश्वं न ज्ञानाद्विद्यते परम् ॥

२३ भूर्भुवः स्वरादिलोकवर्णनम् । १६०

आकाश और पृथ्वी का वर्णन । सौरादि मण्डलों का तथा
भूर्भुवादि सप्तलोकों का प्रमाण वर्णन । महदादि की
उत्पत्तिका वर्णन ।

२४ ध्रुवसंस्थितिनिरूपणम् । १६५

शिशुमार चक्रका वर्णन ध्रुवस्थिति का वर्णन ।
वृष्ट्या धृतमिदं सर्वं जगत्स्थावरजङ्गमम् ।
सापि निष्पद्यते वृष्टिः सच्चिन्ना मुनिसत्तमाः ॥

२५ सर्वतीर्थमाहात्म्यवर्णनम् । १६७

शरीर तीर्थ का वर्णन जैसे—

यस्य हस्तौ च पादौ च मनश्चैव सुसंयतम् ।

विद्या तपश्च कीर्त्तिश्च स तीर्थं फलमश्नुते ॥

मनो विशुद्धं पुरुषस्य तीर्थं वाचां तथा चेन्द्रियनिग्रहश्च ।

पतानि तीर्थानि शरीरजानि स्वर्गस्य मार्गं प्रतिबोधयन्ति ॥

चित्तमन्तर्गतं दुष्टं तीर्थस्नानेनैव शुद्ध्यति ।

शतशोऽधि जलैर्धौतं सुरामाण्डमिवाशुचि ॥

जितेन्द्रिय पुरुष की प्रशंसा वर्णन । संक्षेप से तीर्थों का
नामकथन ।

प्रथमं पुष्करं तीर्थं नैमिषारण्यमेव च ।

प्रयागं च प्रवक्ष्यामि धर्मारण्यं द्विजोत्तमाः ॥

लोहाकुलं सकेदारं मन्दारारण्यमेव च ।

शाकम्भरी देवतीर्थं सुवर्णाक्षं कलिह्वदम् ।

तीर्थों के माहात्म्य पढ़ने का फलवर्णन ।

२६ स्वयम्भूब्रह्मर्षिसंवादवर्णनम् । १७६

वेद व्यासजी का मुनियों का संवाद । ब्रह्माजी के प्रक्षि-
मोक्ष के विषय में मुनियों का प्रश्न वर्णन ।

२७ भारतवर्षवर्णनम् । १८०

भरत खण्ड की प्रशंसा । भरत खण्ड में होने वाले पर्वत
और नदियों का वर्णन और वहाँ पर होने वाले नाना देशों
का वर्णन । भरत खण्ड के माहात्म्य का पठन एवं श्रवण
का फल ।

२८ कोणादित्यमाहात्म्यवर्णनम् । १८७

ओण्ड्र (उड़ीसा) का वर्णन तथा वहाँ पर रहनेवाले ब्राह्मणों
की प्रशंसा । कोणादित्य नामक सूर्य की महिमा का वर्णन ।
सूर्य की पूजा विधि का वर्णन । मदनभञ्जिका नामक यात्रा
की प्रशंसा । रामेश्वर नामक शिव लिंग की महिमा का
वर्णन ।

२९ सूर्यपूजावर्णनम् । १९४

सूर्य के ध्यान, पूजा और भक्ति के माहात्म्य का वर्णन ।
“माघे च सित सप्तम्यां” माघ मास में सप्तमी के दिन सूर्य

की आराधना से विशेष फलप्राप्ति का वर्णन ।

३० आदित्यमाहात्म्यवर्णनम् ।

२००

सम्पूर्ण जगत् की उत्पत्ति सूर्यसे ही है ऐसा वर्णन आया है ।
इन्द्र, धाता आदि बारह सूर्यो से शत्रुनाश एवं त्रिविध प्रजा
की उत्पत्ति । आदित्याख्यान का फलकथन ।

३१ आदित्य-नाममाहात्म्यवर्णनम् ।

२०६

त्रिलोकी का मूल एवं परम देव सूर्य ही है ऐसा बताया है ।
अग्नौ प्रास्ताहुतिः सम्यग् आदित्यमुपतिष्ठते ।
आदित्याज्जायते वृष्टिर्वृष्टेरन्नं ततः प्रजाः ॥
सूर्यात्प्रसूयते सर्वं तत्र चैव प्रलीयते ।

भावाभावी हि लोकानामादित्याभिस्सूतो पुरा ॥

आदित्य के सामान्यतः द्वादशनामों का वर्णन । विष्णु आदि
बारह आदित्यों का चैत्र आदि द्वादश महिनों में तपन कथन
अर्थात् कौनसा आदित्य कितनी किरणों से तपता है इसका
वर्णन आया है । सूर्यके विकर्तनादि २१ नामों का वर्णन
एवं फल कथन; इसका पाठ शरीर आरोग्य, धन और
यशको बढ़ानेवाला है ।

३२ मार्तण्डजन्ममाहात्म्यवर्णनम् ।

२१३

दैत्यों से पीड़ित देवताओं के दुःख नाश के लिये अदिति
द्वारा सूर्य की आराधना एवं स्तुति । अदिति को सूर्य
का दर्शन । अदिति की प्रार्थना से सूर्य ने प्रसन्न होकर

“वरं वृण्णीष्व” (वर मांगो) ऐसा कहा । तब अदिति ने “मेरे पुत्रों को यह भागी बनाओ ।” मैं तुम्हारे जन्म लेकर तुम्हारे शत्रुओं का नाश करूँगा ऐसा कहते हुए सूर्य का अलक्षित होना । देवमाता अदिति के गर्भमें सूर्यकी स्थिति । कृच्छ्र एवं चान्द्रायणादि व्रतों से गर्भ धारण करती हुई अदिति को कश्यपजी ने कहा “गर्भाण्डं मारयसि किं” अर्थात् इतने क्लिष्ट व्रतादिकों से गर्भ को क्यों नष्ट करती हो । तदनन्तर पति के वचनों से क्रोधित अदिति का गर्भ त्याग । गर्भाण्ड से प्रकट हुए आदित्य की कलाप (कश्यप) के द्वारा स्तुति । यह मार्तण्ड नामक तुम्हारा पुत्र होगा इस प्रकार आकाशवाणी हुई । आकाशवाणी का वचन सुन कर देवताओं का आगमन । मार्तण्ड की सहायता से देवताओं का दैत्यों के साथ युद्ध । युद्ध में दैत्यों की पराजय । प्रसन्न हुए देवताओं द्वारा सूर्यकी स्तुति । सूर्य का संज्ञा के साथ विवाह । सूर्य की सन्तानों का वर्णन । संज्ञा और छाया का संवाद । संज्ञा का पिता के घर जाना । तदनन्तर छाया की संतानों का वर्णन । छाया का संज्ञा की सन्तानों के साथ विषम भाव—

पदा तज्जयसे यस्मात्पितुर्भार्या गरीयसीम् ।

तस्मात्तवैष खरजः पतिष्यति न संशयः ॥

यमस्तु तेन शम्पेन भृशं पीडितमानसः ।

मनुना सह धर्मात्मा पित्रे सर्वं न्यवेक्ष्यत् ॥

त्वष्टा और संधा के संवाद में सूर्य चरित्र वर्णन । देवहस्त
सूर्यस्तुति । सूर्य के तेज की शान्ति (शमन) ।

३३ मार्तण्डमाहात्म्यवर्णनम् २२४

अन्धकार से विमूढ ब्रह्मादि देवों द्वारा सूर्य की स्तुति ।
नमो नमः कारणकारणाय नमो नमः पापविमोक्षनाय ।
नमो नमस्ते दितिजार्दनाय नमो नमो रोगविनाशनाय ॥
नमो नमः सर्वधरप्रदाय नमो नमः सर्वसुखप्रदाय ।

नमो नमः सर्वधनप्रदाय नमो नमः सर्वमतिप्रदाय ॥
देवताओं की सूर्यदेव का वरदान । रवि के १०८ नामों का
माहात्म्य (ॐ सूर्योऽयमा इत्यादि से मैत्रेयः करुणान्वितः
इत्यन्त) और उसका फल ।

३४ रुद्राख्यानवर्णनम् २३०

रुद्र की महिमा का वर्णन । संक्षेप से दक्षकथा । सती
आदि दक्ष पुत्रियों का यज्ञोत्सव देखने के लिये पिता के घर
जाना । दक्ष और सती का संवाद । क्रोधयुक्त सती का
योगाग्नि से शरीर दाह । शंकर और दक्ष का परस्पर शाप
दान । ब्रह्मा और मुनियों का संवाद ।

पार्वत्युपाख्यानवर्णनम् २३८

पार्वती के आरुशन का आरम्भ । हिमालय से उमा की
उत्पत्ति । कश्यप और हिमालय का संवाद । तप करते
हुए हिमालय को ब्रह्मा का वरदान । हिमालय से, मेना

नामक पत्नी में तीन कन्याओं की उत्पत्ति एवं उनका नाम-
करण । तप करती हुई पार्वती को ब्रह्म का वरदान ।

३५ पार्वत्युपाख्यानवर्णनम्

२४१

उमा का देवताओं के साथ संवाद । विह्वतरूपधारी महादेव
का पार्वती के पास जाना । विह्वत रूप का वर्णन जैसे —
विह्वतं रूपमास्थाय ह्रस्वो बाहुक एव च ।

विमग्ननासिको भूत्वा कुञ्जः केशान्तपिङ्गलः ॥

शिव पार्वती का संवाद ।

पार्वतीजी कहती हैं—

भगवन्न स्वतन्त्राहं पिता मे त्वग्रणीगृहे ।

स प्रभुर्मम दाने वै कन्याहं द्विजपुङ्गव ॥

गत्वा याचस्व पितरं मम शैलेन्द्रमग्र्यम् ।

स चेहदाति मां विप्र तुभ्यं तदुचितं मम ॥

विह्वत रूपी शिव का हिमालय के साथ वार्तालाप ।

“अयं शिवः” ऐसा जान कर पार्वती का शिवजी को वरण
करना ।

अशोक वृक्ष के प्रति शिवजी का वरदान । शिवजी का
अन्तर्धान होना । ग्राह से प्रस्त बालक का रोदन एवं पार्वती
तथा ग्राह का संवाद । “मेरा तप नष्ट हो गया” यह जान
कर पार्वती का पुनः तप करना और पार्वती को शंकर
का वरदान ।

११४ अ २९.१.५५

६६६६

३६ पार्वतीस्वयम्बरवर्णनम्

२४६

पार्वती के स्वयम्बर में सम्पूर्ण देवताओं का आना । देवताओं द्वारा पार्वती की प्रशंसा । शिशु रूप से पार्वती की गोद में शंकर का शयन । क्रोधयुक्त इन्द्रादि देवताओं द्वारा शिवजी पर शस्त्र प्रहार । शिवजी ने सम्पूर्ण देवताओं को अपनी माया से स्तम्भित (रोका) किया । सम्पूर्ण देवताओं को छुड़ाने के लिये ब्रह्माजी द्वारा शिवस्तुति ।

प्रधानं पुरुषो यस्त्वं ब्रह्म ध्येयं तदक्षरम् ।

अमृतं परमात्मा च ईश्वरः कारणं महत् ॥

ब्रह्म सृक् प्रकृतेः स्रष्टा सर्वकृत् प्रकृतेः परः ।

इयञ्च प्रकृतिर्देवी सदा ते सृष्टि कारणम् ॥

पत्नी रूपं समास्थाय जगत्कारणमागता ।

स्तुति सुन कर शंकर का प्रादुर्भाव । पार्वती के द्वारा शंकर के चरणों में माला का अर्पण । ब्रह्माजी का हिमालय की प्रशंसा करना । शिवजी के विवाह के लिये ब्रह्माके द्वारा नगर का निर्माण । देव-गन्धर्वादिकों का आगमन एवं वसन्तादि षट् (छै) ऋतुओं का आना ।

अस्तिजलदधीरध्वानवित्रस्तहंसा ।

विमलसलिलधारोत्पातनघ्नोत्पलाप्रा ॥

सुरभिकुसुमरैणुक्लृप्तसर्वाङ्गशोभा ।

गिरिदुहितृषिवाहे प्रावृडारिर्बभूव ॥

निर्मुक्तासितमेघकञ्जुकपटा पूर्णेश्वरिभानना ।

नीलाम्मोजविलोचना रविकरप्रोद्विजपदमस्तनी ॥
 नानापुष्परजःसुगन्धिपवनप्रह्लादिनी चेतसां ।
 तन्नाऽऽसीत्कलहंसनूपूररवा देव्या विवाहे शरत् ॥
 अत्यर्थं शीतलाम्मोमिः प्लावयन्ती दिशः सदा ।
 ऋतू हेमन्तशिशिरौ आजग्मतु रतिद्युती ॥
 विवाहे गिरिकन्याया वसन्तः समगाढतुः ।
 विधिपूर्वक पार्वती और शंकर का विवाह ।

३७ शिवस्तुतिवर्णनम्

२६५

देवकृत महेश्वर की स्तुति ।

पुरुषाय नमस्तेऽस्तु पुरुषेच्छाकराय च ।
 नमः पुरुषसंयोगप्रधानगुणकारिणे ॥
 प्रवर्तकाय प्रकृतेः पुरुषस्य च सर्वशः ।
 कृताकृतस्य सत्कर्त्रे फलसंयोगदाय च ॥

शिवजी के सम्मुख देवताओं का घर के लिये आना । अपने
 गणों के साथ महादेवजी का अपने स्थान पर जाना ।

३८ मदनदहनवर्णनम्

२६६

कामदेव का महेश्वर की नेत्राग्नि से दाह । रति को महेश्वर
 का घरदान । पार्वती और शंकर का क्रीडन । पार्वती
 का माता के घर जाना । माता मेना के द्वारा पार्वती का
 उपहास । महादेव के आगे माता के उपहास का वर्णन ।
 पार्वती के क्रोध शान्तिके लिये महादेवका सुन्दर हास्यालाप ।

३६ दक्षयज्ञविध्वंसनम्

२७४

इन्द्रादिक देवताओं का दक्ष के पास जाना, देवताओं के प्रति दधीचि का संवाद ।

दधीचिरुवाच—

अपूज्यपूजने चैव पूज्यानाञ्चाप्यपूजने ।

नरः पापमवाप्नोति महद्वै नात्र संशयः ॥

ऋषि दधीचिका दक्षके साथ संवाद । पार्वती और महेश्वर का संवाद वर्णन । वीरभद्र की उत्पत्ति और शिवजी की आज्ञा से वीरभद्र का दक्ष के यज्ञ में जाना एवं यज्ञ का विध्वंस ।

इन्द्रादिकों का वीरभद्र के प्रति प्रश्न “को भवानिति” । उत्तर में वीरभद्र ने कहा “वीरभद्रोऽहं” अर्थात् महादेव की आज्ञा से यज्ञ नष्ट करने के लिये आया हूँ । मृगरूप धारण कर दक्ष का आकाश में जाना । क्रोधित गणेशजी के ललाट के स्वेद बिन्दु (पसीने) से अग्नि की उत्पत्ति । वहां पर उत्पन्न हुए पुरुष के द्वारा यज्ञका विध्वंस । यज्ञ कर्म में देवता आपको भाग देंगे इस प्रकार ब्रह्मा का शंकर के प्रति वचन । शंकर से दक्ष को वरप्राप्ति ।

४० दक्षकृतशिवस्तुतिवर्णनम्

२८५

दक्ष द्वारा शिव सहस्र (१०००) नामों का वर्णन तथा प्रसन्न होकर शंकर का दक्ष को वरदान । सम्पूर्ण वस्तुओं

में शंकर के द्वारा उवर का विमाजित करना । उवरोत्पत्ति के पठन और श्रवण का फल । दक्ष के स्तोत्र का फल कथन ।

इमां उवरोत्पत्तिमदीनमानसः,

पठेत्सदा यः सुसमाहितो नरः ।

विमुक्त रोगः स नरो मुदायुतो,

लभेत् कामांश्च यथा मनीषितान् ॥

४१ एकाग्रक्षेत्रमाहात्म्यकथनम् २६६

एकाग्रक्षेत्र का माहात्म्य वर्णन ।

४२ उत्कलक्षेत्रवर्णनम् ३०८

विरजा देवी, वैतरणी और कपिलादि अष्ट तीर्थों का वर्णन ।

उत्कल तीर्थ का वर्णन और वहाँ पर पुरुषोत्तम क्षेत्र का माहात्म्य वहाँ ही लद्दादिक देवों के स्थानों का वर्णन ।

४३ अवन्तिकावर्णनम् ३१३

ब्रह्मा के प्रति मुनियों का प्रश्न और अवन्ति नगरी का वर्णन । महाकाल नामक शिव की महिमा का वर्णन तथा क्षिप्रा नदी का वर्णन । और वहाँ पर गोविन्द स्वामी नामक विष्णु की महिमा का वर्णन ।

४४ इन्द्रद्युम्नस्यदक्षिणोदधितटगमनम् ३२१

अवन्तीदेश के राजा इन्द्रद्युम्न का वर्णन और सम्पूर्ण नगर वासिन्दा के साथ दक्षिण समुद्र के तट पर जाना ।

४५ पुरुषोत्तमक्षेत्रवर्णनम्

३२६

ब्रह्मा के प्रति मुनियों का प्रश्न । मुनियों के संदेह दूर करने के लिये इतिहासकथन । सुमेरु पर्वत के ऊपर बैठे हुए श्रीलक्ष्मी और विष्णु का संवाद । विष्णु के द्वारा पुरुषोत्तम नामक तीर्थवर्णन के प्रसंग में सृष्टि का वर्णन । ब्रह्मा और विष्णु का वार्तालाप । पुरुषोत्तम क्षेत्र में स्थित न्यग्रोध (वट) वृक्ष का वर्णन । वटवृक्ष के दक्षिण की तरफ मन्दिर में विष्णु मूर्ति का दर्शन करने से सब मनुष्यों का वैकुण्ठगमन । तदनन्तर यम के द्वारा विष्णु की स्तुति । मूर्ति के आच्छादन (ढकने) के लिये यम की प्रार्थना । इसके बाद यमराज का अपनी नगरी संयमनी को जाना ।

४६ पुरुषोत्तमक्षेत्रवर्णनम्

३३८

पुरुषोत्तम क्षेत्रका वर्णन और वहाँ पर स्वित्रोत्पला नामक नदीका माहात्म्य । नदी के दोनों तरफ के गाँवों, वहाँ पर रहनेवाले एवं वर्णाश्रम धर्म को धारण करने वाले पुरुषों और स्त्रियों का वर्णन । राजा इन्द्रद्युम्न ने इतना रमणीय स्थान देख कर “सम्पूर्ण मन इच्छा पूर्ति कहूँगा” ऐसा संकल्प किया ।

४७ इन्द्रद्युम्नस्य प्रासादकरणार्थं राज्ञामाह्वानम् ३४१

महीपतीनामागमनम्, इन्द्रद्युम्नस्यवाजिमेधयज्ञकरणम् ।

राजा इन्द्रद्युम्न ने कारीगरोंको बुलाकर शुभ मुहूर्तमें मन्दिर

का निर्माणआरम्भ किया । इन्द्रद्युम्न की आज्ञासे उत्तम शिला लाने के लिये कलिक्रादि माण्डलिक राजाओंका विन्ध्याचल के प्रति प्रस्थान । इन्द्रद्युम्न के दूत द्वारा संसार के सम्पूर्ण राजाओं को सूचना देने पर उत्त क्षेत्र में आने का वर्णन । इन्द्रद्युम्न का राजाओं के साथ सम्वाद । राजा के द्वारा यज्ञ सिद्धिके लिये सब सामग्रियों का जुटाना । इन्द्रद्युम्न का आज्ञा से उसके पुरोहित द्वारा यज्ञस्थल के बनवाने का और यज्ञस्थल में सब लोगों के प्रवेश का वर्णन । यज्ञ का आरंभ यज्ञ के सम्भार को देखकर राजा को हर्षप्राप्ति । यज्ञ के घोड़े आदि सब पदार्थ लाने के लिये राजा का आदेश । ब्राह्मणों को वस्त्र आभूषण आदि अनेक दान देने का वर्णन । सबको अन्न के द्वारा तृप्ति । यज्ञ समाप्ति और प्रासाद समाप्ति ।

४८ इन्द्रद्युम्नस्य प्रतिमानिर्माणम् ३५१

प्रतिमा प्राप्ति के लिये दिन रात चिन्ता से व्याकुल राजा का सब भोगों का परित्याग ।

४९ इन्द्रद्युम्नकृत भगवत्स्तुतिः ३५३

राजा के द्वारा भगवान् की स्तुति । स्तुति पाठ का फल ।

५० प्रतिमोत्पत्तिकथनम् ३६०

चिन्ताग्रस्त राजा को स्वप्न में भगवान् का दर्शन ।

प्रतिमा प्राप्ति का उपाय बताना । प्रातः काल उठ कर

नित्यकर्म करने के बाद असहाय राजा का मूर्ति को जोड़ने के लिये जाना। बड़े वृक्ष को काटते हुए राजा के प्रति ब्राह्मण वेषधारी विष्णु एवं विश्वकर्मा का प्रश्न। प्रतिमा निर्माण करता हूँ ऐसा कहने पर भगवान प्रसन्न हुए और विश्वकर्मा को तीन प्रतिमा बनाने की आज्ञा दी। विष्णु की आज्ञा से विश्वकर्मा द्वारा तीन मूर्तियों का निर्माण। मूर्ति दर्शन को कौतुक भरी दृष्टि से देखते हुए राजा का “आप कौन हैं” यह प्रश्न।

५१ भगवद्इन्द्रद्युम्नसंवादकथनम्

३६६

सर्वजगन्नियन्तृत्वादि गुणों से युक्त मैं ही पुरुषोत्तम हूँ ऐसा भगवान् का वचन। राजाका निर्गुण आदि गुण विशिष्ट भगवत्पद प्राप्ति के लिये स्तुति पूर्वक याचना। भगवान का धरदान तुम्हारी इच्छानुसार सब कुछ होगा इसके बाद भगवान् अन्तर्धान हो गये और पुरुषोत्तम क्षेत्र में तीनों मूर्तियाँ का शुभ मुहूर्त में स्थापन। इस प्रकार राजा के मनोरथ की पूर्ति एवं विष्णुपद की प्राप्ति। ब्रह्माजी द्वारा पुरुषोत्तम में आये हुए पाँच तीर्थों का वर्णन।

५२ मार्कण्डेयाख्यानम्

३७४

मार्कण्डेय आख्यान का आरम्भ कल्पक्षय में अनेक तरह के क्लेशों से व्याकुल चित्त मार्कण्डेय की वटवृक्ष की दर्शन।

- ५३ मार्कण्डेयाख्यानम् ३७६
महाप्रलय के मेघों से व्याप्लावित पृथ्वी पर एकार्णव जल में स्नान करते हुए मार्कण्डेय को भगवान् के दर्शन । मार्कण्डेय को अमरदायक भगवान् के आश्वासन पूर्ण वचन । क्रोधयुक्त मार्कण्डेय को भगवान् की उक्ति । क्रोध के शान्त होने पर मार्कण्डेय को वटवृक्ष में भगवान् के दर्शन । मार्कण्डेय को भगवान् का आश्वासन ।
- ५४ मार्कण्डेयाख्यानम् ३८१
भगवान् के उदर में मार्कण्डेय का प्रवेश । उदरस्थ मार्कण्डेय को सम्पूर्ण लोकों का दर्शन ।
- ५५ मार्कण्डेयाख्यानम् ३८३
मार्कण्डेय का भगवान् के उदरसे बाहर निकलना । मार्कण्डेय कृत बालमुकुन्दस्तुति ।
- ५६ विस्तरेण विष्णुमार्कण्डेयसम्वादवर्णनम् ३८७
विस्तार से विष्णु एवं मार्कण्डेय का सम्वाद और भगवान् का अन्तर्धान ।
- ५७ पञ्चतीर्थविधिवर्णनम् ३९५
पञ्चतीर्थों का वर्णन तथा मार्कण्डेय तालाब की प्रशंसा ।
- „ वटवृक्ष पूजाविधि कथनम् ३९७
„ कृष्णदर्शनमाहात्म्यवर्णनम् „

षट्वृक्ष की पूजाविधि, विशेष रूप से पञ्चवीर्यों का वर्णन
कृष्णदर्शन का माहात्म्य ।

५८ नरसिंहमाहात्म्यवर्णनम् ४०१

ब्रह्मा और मुनियों के सम्वादमें नरसिंह पूजा का विधान तथा
नरसिंहमाहात्म्य का वर्णन ।

५९ श्वेतमाधवमाहात्म्य वर्णनम् ४०८

कपाल गौतम ऋषि के मृतपुत्र को जिलाने के लिये श्वेत
राजा की प्रतिज्ञा । ब्रह्मा के प्रति श्वेतमाधव की स्थापना
के लिये मुनियों का प्रश्न । वैष्णव पद की प्राप्ति के लिये
श्वेतकृत विष्णु स्तुति । श्वेत राजा को विष्णु का वरदान ।

६० समुद्रस्नानविधिवर्णनम् ४१८

अमृतस्यारणिस्त्वं हि देवयोनिरपां पते ।

वृजिनं हर मे सर्वं तीर्थराज नमोऽस्तुते ॥

नारायण के अष्टाक्षर मंत्र की प्रशंसा एवं नारायण कवच
का वर्णन ।

किं कार्यं बहुभिर्मन्त्रैर्मनोविभ्रमकारकैः ।

ॐ नमोनारायणायेति यं वदन्ति मनीषिणः ॥ (मन्त्रःसर्वार्थसाधकः)॥

आपो नरस्य स्रुत्वान्नारा इतीह कीर्तिताः ।

विष्णोस्तांस्त्वयनं पूर्वं तेन नारायणः स्मृतः ॥

नारायणपरा वेदा नारायणपरा द्विजाः ।

नारायणपरा यज्ञा नारायणपराः क्रियाः ॥

(३०)

नारायणपरा पृथ्वी नारायणपरं जलम् ।
 नारायणपरोवह्निर्नारायणपरं नमः ॥
 नारायणपरो वायुर्नारायणपरं मनः ।
 अहंकारश्च बुद्धिश्च उभे नारायणात्मके ॥
 जले स्थले च पाताले स्वर्गलोकेऽम्बरे नगो ।
 अवष्टभ्य इदं सर्वमास्तेनारायणः प्रभुः ॥
 किं चात्र बहुनोक्तेन जगदेतच्छरावरम् ।
 ब्रह्मादिस्तम्बपर्यन्तं सर्वंनारायणात्मकम् ॥
 नारायणात्परं किञ्चिन्नेह पश्यामि भो द्विजाः ।
 तेन व्याप्तमिदं सर्वं दृश्यादृश्यं चराचरम् ॥
 आपो ह्यायतनं विष्णोः स च एवाममसांपतिः ।
 तस्मादप्सुस्मरेन्नित्यं नारायणमघापहम् ॥
 स्नानकाले विशेषेण चोपस्थाय जले शुचिः ।
 स्मरैन्नारायणं ध्यायेदस्ते काये च विन्यसेत् ॥
 आस्तीर्य च कुशान्साग्रांस्तानावाह्य स्वमन्त्रतः ।
 प्राचीनाग्रेषु वै देवान्याम्याग्रेषु तथा पितॄन् ॥

समुद्र स्नान की विधि का वर्णन । जलमें ही स्नान के अङ्ग
 सन्ध्या आदि नित्य कर्म एवं देवता ऋषि पितृ तर्पण करे ।

६१ पूजाविधिकथनम् ४२४

शरीरशुद्धि का वर्णन । षोडशोपचार सहित पूजन विधि
 का वर्णन ।

यथा देहे तथा देवे सर्वतत्त्वानि योजयेत् ।

६२ समुद्रस्नानमाहात्म्यवर्णनम् ४३०

समुद्र में स्नान करने का माहात्म्य ।

तावद्गर्जन्ति तीर्थानि माहात्म्यैः स्वैः पृथक् पृथक् ।

यावन्न तीर्थराजस्य माहात्म्यं वर्ण्यते द्विजाः ॥

६३ पञ्चतीर्थीमाहात्म्यनिरूपणम् ४३३

पांच तीर्थों के माहात्म्यका वर्णन ।

अश्वमेधाङ्गसम्भूत तीर्थ सर्वाघनाशन ।

ज्ञानं त्वयि करोम्यद्य पापं हर नमोऽस्तुते ॥

पृथिव्यां यानि तीर्थानि सरितश्च सरांसि च ।

पुष्करिण्यस्तङ्गागानि वाप्यः कृपास्तथा हवाः ।

नानानद्यः समुद्राश्च सप्ताहं पुरुषोत्तमे ।

६४ महाज्यैष्ठीप्रशंसावर्णनम् ४३५

महाज्यैष्ठी (ज्यैष्ठा नक्षत्र युक्त जो तिथि है) की प्रशंसा का वर्णन । प्रयागादि तीर्थों तथा गङ्गादि नदियों में सूर्य और चन्द्र ग्रहण के अवसर पर स्नान-दान करने से जो फल होता है उतना ही महाज्यैष्ठी में राम, कृष्ण और सुमद्राका दर्शन करने से मिलता है ।

६५ कृष्णस्नानमाहात्म्यवर्णनम्, कृष्णावलोकने फलप्राप्ति-
कथनम् ४३८

कृष्ण के स्नान की विधि तथा स्नानका माहात्म्य । देवताओं

का कृष्ण की स्तुति करना । कृष्ण की मूर्ति का दर्शन करने से फल प्राप्ति ।

कपिलाशतदानेन यत्फलं पुष्करे स्मृतम् ।

तत्फलं कृष्णमालोक्य मञ्जुस्थं सहलायुधम् ॥

सुमद्रां च मुनिश्रेष्ठाः प्राप्नोति शुभकृन्नरः ।

भूमिदानेन विधिवद्यत्फलं समुदाहृतम् ।

तत्फलं कृष्णमालोक्य मञ्जुस्थं लभते नरः ॥

यत्फलं चान्नदानेन अर्घ्यातिथ्येन कीर्तितम् ।

तत्फलं कृष्णमालोक्य मञ्जुस्थं लभते नरः ॥

यत्फलं तोयदानेन ग्रीष्मे वाऽन्यत्र कीर्तितम् ।

तत्फलं कृष्णमालोक्य मञ्जुस्थं लभते नरः ॥

ततः समस्ततीर्थानां लभेत्क्षानादिकं फलम् ।

स्नानशेषेण कृष्णस्य तोयेनाऽऽत्माभिषिच्यते ॥

बन्ध्या मृतप्रजा या तु दुर्भगा ग्रहपीडिता ।

राक्षसाद्यैर्गृहीता वा तथा रोगैश्च संहताः ॥

सद्यस्ताः क्षानशेषेण उदकेनाभिषेचिताः ।

प्राप्नुवन्तीप्सितान् कामान्यान्यान्वाञ्छन्ति चेप्सितान् ।

६६ गुडिवा यात्रामाहात्म्यवर्णनम्

४४८

गुडिवा यात्रा का माहात्म्य ।

राजा इन्द्रद्युम्न ने भगवान् से प्रार्थना की किहे भगवन् आपकी यात्रा सात दिन तक मेरे लालाबके पास होनी चाहिए ।

तदनन्तर भगवान् ने कहा ऐसा ही होमा उस यात्रा को गुडिषायात्रा कहते हैं ।

६७ द्वादशयात्रामाहात्म्यवर्णनम् ४५१

प्रत्येक यात्रा का फल कथन । यात्रा के प्रसंग से पूजा विधि वर्णन । द्वादश (१२) यात्राओं का फल वर्णन ।

६८ विष्णुलोकवर्णनम् ४५६

विष्णुमन्दिर, विष्णुस्वरूप और विष्णुलोक के महत्त्व का वर्णन । वहां पर जाने वालों का निर्णय ।

६९ पुरुषोत्तममाहात्म्यनिरूपणम् ४६७

पुरुषोत्तम क्षेत्र का माहात्म्य ।

७० ब्रह्माणं प्रति तीर्थसंख्याविषयको नारदप्रश्नः ४७१

ब्रह्माजी के प्रति तीर्थ संख्या विषयक नारदजी का प्रश्न ।

„ चतुर्विधतीर्थलक्षणकथनम् ४७३

चतुर्विध तीर्थों का लक्षण तथा स्वरूप एवं उनका भेद वर्णन । गौतमी माहात्म्य का आरंभ ।

७१ गङ्गोत्पत्ति कथोपक्रमः, तारकशीत्या देवकृता

विष्णुस्तुतिः ४७६

गङ्गा की उत्पत्ति का वर्णन । तारकासुर के मय से देवताओंका विष्णुकी स्तुति करना । विष्णुकी आज्ञासे देवताओंका हिमालय के प्रति गमन ।

७१ बृहस्पतेराज्ञया मदनस्य शिवान्तिकंगमनम् ४७६

बृहस्पति की आज्ञा से कामदेव का शंकर के पास जाना और शंकरकी नेत्राग्नि से कामदेव का वाह ।

७२ हिमवद्वर्णनम्, शम्भुविवाहविधिकथनम् ४८१

हिमालय का वर्णन । शंभु के विवाह का वर्णन । गौरी के रूपदर्शन से ब्रह्माजी का वीर्यपात तथा उसी वीर्य से बाल-बिल्वों की उत्पत्ति ।

ममानुकम्पया चैव लोकानांहितकाम्यया ।

एतच्छकार लोकेशः शृणु नारद यत्नतः ॥

पापिनां पापमोक्षाय भूमिरापो भविष्यति ।

तयोश्च सारसर्वस्वमाहरिष्यामि पावनम् ।

एवं निश्चित्य भगवांस्तयोः सारं समाहरत् ॥

आपो वै मानरोद्देश्यो भूमिर्माता तथाऽपरा ।

स्थित्युत्पत्तिविनाशानां हेतुत्वमुभयोःस्थितिम् ॥

अत्र प्रतिष्ठितो धर्मो ह्यत्र यज्ञःसनातनः ।

अत्र भुक्तिश्चमुक्तिश्च स्थावरंजङ्गमन्तथा ॥

स्मरणाग्मानसं पापं वचनाद्वान्निकं तथा ।

स्नानपानामिषेकाश्च प्रणश्यत्यपि कायिकम् ॥

७३ बलिप्रशंसावर्णनम् ४८५

राजा बलि की प्रशंसा । राजा बलि के ऐश्वर्य को सहन न कर देवताओं का विष्णु के पास जाना ।

७३ देवकृता विष्णुस्तुतिः

४८७

देवतामा का विष्णु की स्तुति करना । माता अदिति के गर्भ से वामन की उत्पत्ति । राजा बलि के यज्ञ में वामनजी का गमन । राजा बलि और शुक्राचार्य का संवाद ।

,, वामनाय भूमिदानम्

४८६

वामनजी को भूमिदान तथा बलि और वामनजी का परस्पर संवाद । भगवान् वामन का राजा बलि को वरदान ।

,, गङ्गायामहेश्वरजटागमननिरूपणम्

४६१

गङ्गाजी का महेश्वर की जटा में गमन वर्णन ।

७४ गङ्गायाद्वैरूप्यकथनम्

४६३

गङ्गाजी के दो रूपों का कथन । शंकरकी जटा से गंगा को अलग करने के लिये पार्वती और गणेश की वार्ता ।

रसवृत्तौ स्थितो यस्मान्निर्ममे रसमुत्तमम् ।

रसिकत्वात्प्रियत्वाच्च स्त्रेणत्वात्पावनत्वतः ॥

,, गौतमाश्रमप्रशंसावर्णनम्

४६५

गौतम की प्रशंसा, तथा आश्रम का वर्णन ।

,, गौतमाश्रमंप्रति विघ्नराट्गमनम्

४६७

गौतमाश्रमे गोरूपधारिण्याजयायापतनम्

गौतमत्रिनायकसंवादकथनम् ।

स्वामी कार्तिकेय के साथ गणेशजीका गौतमजी के आश्रम

में जाना । गणेशजी की आज्ञा से गोकुप धारण करके जया (गणेशजी की बहिन) का गौतमजी के आश्रम में जाना, गौतम के रोकने पर जया का गिरना । गोवध के पाप को दूर करने के लिये गौतमजी को उपाय बतलाना । अपने संकल्प की सिद्धि के लिये “मन्वतां प्रसादोऽस्तु” इस प्रकार गौतम की प्रार्थना । सम्पूर्ण जनों का अपने २ स्थान में जाना । शंकर को प्रसन्न करने के लिये गौतमजी का कैलास पर्वत पर गमन ।

७५ गौतमकृतमुमामहेश्वरस्तवनम्, गौतमस्योमामहेश्वर-
दर्शनम् । ५०३

गंगाप्रशंसा, गौतम्यानयनञ्च ।

गौतम का उमामहेश्वर की स्तुति करना । गौतमजी को उमामहेश्वर का दर्शन । तदनन्तर गङ्गा प्राप्ति के लिये गौतम की प्रार्थना । गङ्गा की प्रशंसा और गौतमी का लाना ।

श्लाघ्यं कृते तपः प्रोक्तं त्रेतायां यज्ञकर्म च ।

द्वापरे यज्ञदाने च दानमेव कलौ युगे ।

७६ स्वर्गादीपञ्चदशाकृत्यागङ्गायागमनम् ५१०

स्वर्ग, मर्त्य और पाताल में विभाजित होकर १५ आकृति से गङ्गा का गमन । गोदावरी तीर्थ की स्नान विधि ।

ब्राह्मणान् भोजयित्वा च तेषामाक्षां प्रगृह्य च ।

ब्रह्मचर्येण गच्छन्ति पतितालापवर्जिताः ॥

यस्य हस्तौ च पादौ च मनश्चैव सुसंयतम् ।

विद्यातपश्च कीर्तिश्च स तीर्थफलमश्नुते ॥

७७ गौतमीमहत्त्ववर्णनम्

५१३

गौतमी का महत्त्व वर्णन कर सब नदियों में गौतमी को श्रेष्ठ बताया है ।

७८ सगराख्यानवर्णनम्

५१५

पुत्रहीन राजा सगर का वशिष्ठजी के प्रति सन्तानविषयक प्रश्न । वशिष्ठ के वरदान से सगर को पुत्रों की प्राप्ति । इन्द्र द्वारा चुराये गये घोड़े की खोज के लिये सगर पुत्रोंका इधर उधर जाना । निद्रासुखके अनुभवके लिये देवताओं की आज्ञा से कपिलजी का रसातल में गमन । सगर पुत्रों की कपिल के प्रति कठोर उक्ति (वचन) । कपिलजीके क्रोधसे सगर के पुत्रों का भस्म होना । सगर को नारद से अपने पुत्रों के नष्ट होने का वृत्तश्रवण । असमञ्जस को स्वदेश से निकालना । कपिल की आज्ञा से पूर्वजों के उद्धार के लिये भगीरथ का कैलास के प्रति गमन । भगीरथ की स्तुति से प्रसन्न होकर शंकर का वरदान । कपिलजी के शाप से मृत पूर्वजों को पवित्र करने के लिये गङ्गाजी के साथ भगीरथ का रसातल में जाना ।

७९ वराहतीर्थवर्णनम्

५२३

वराह तीर्थ का माहात्म्य वर्णन ।

८० कपोततीर्थवर्णनम्

५२६

लुब्धक चरित्र का वर्णन । कपोती के विरह से दुःखित कपोत का विलाप । कपोत के विलाप को सुन कर पति के प्रति कपोतकी का वचन । कपोती द्वारा अतिथि की प्रशंसा । लुब्धक के लिये कपोत का अग्नि प्रवेश । लुब्धक से कपोती की मुक्ति । कपोती कृत पतिव्रताधर्म की प्रशंसा । कपोती का देहत्याग । कपोत और कपोती का स्वर्ग गमन ।

गच्छावस्त्रिदशस्थानमापृष्टोऽसि महामुने ।

आद्ययोःस्वर्गसोपानमतिथिस्त्वं नमोऽस्तुते ॥

पाप दूर करने के लिये लुब्धक की प्रार्थना, तदनन्तर गौतमी ज्ञान से तथा पाप कथन से स्वर्गप्राप्ति वर्णन ।

८१ कुमारतीर्थवर्णनम्

५३६

स्वामी कार्तिकेय की विषयों में आसक्ति । कुमारतीर्थ का वर्णन ।

८२ कृत्तिकातीर्थवर्णनम्

५३८

नारद के वचन से कृत्तिकाओं का षण्मुख के पास जाना, कृत्तिकातीर्थवर्णन का उपसंहार ।

८३ दशाश्वमेधतीर्थवर्णनम्

५४०

भौवन का कश्यपजी के प्रति प्रश्न ? किस देश में यज्ञ की सफलता प्राप्त होगी । गुरु और गौतमी के प्रसाद से भौवन

को एक अश्वमेध से दश अश्वमेधों के फल की प्राप्ति ।
आकाशवाणी का वचन । दशाश्वमेधतीर्थ का विधान ।

८४ पैशाचतीर्थवर्णनम् ५४४

केसरी वानर का दक्षिण समुद्र के प्रति गमन । अञ्जन पर्वत
के ऊपर अगस्त्यजी का आना । अगस्त्यजी से अञ्जना
और अद्रिका को पुत्र प्राप्ति का वरदान । निर्मृति और
वायु के सम्पर्क से अञ्जना और अद्रिका का पुत्रप्राप्ति ।
पैशाच तीर्थ का विधान एवं प्रयोजन ।

८५ क्षुधातीर्थवर्णनम् ५४६

गौतमजी के ऐश्वर्य को नहीं सहन करते हुए कण्व का
सम्पत्ति उपाजन के लिए गमन । कण्वकृत गङ्गा एवं क्षुधा
की स्तुति और उसकी संनिधि में दो वरदानों की प्रार्थना ।
क्षुधातीर्थ का प्रयोजनकथन ।

८६ चक्रतीर्थगणिकामङ्गमवर्णनम् ५४८

विश्वधर वैश्य का पुत्र के मरने पर शोकाकुल होना । यम-
राजका संयमिनी से गौतमी के प्रति गमन । पृथ्वी का इन्द्र
के पास जाना । पृथ्वी और इन्द्र का संवाद । इन्द्र की
आज्ञा से सिद्धकिन्नरों का वैवस्वतपुर से यमराज को लानेके
लिए जाना । इन्द्रका सूर्य के प्रति प्रश्न ? यम कहाँ है—
तब सूर्य ने कहा कि गौतमी पर तप करने के लिए गया है ।
यमराज के तप को नाश करने के लिये तुम्हारे में से कौनसी

अप्सरा की शक्ति है ऐसा प्रश्न। चकतीर्थ का कारण वर्णन। तप मंग करने के लिए इन्द्र की प्रेरणा से गणिका का यमराज के पास गमन। प्रजाओं के नाश करने वाला अपना कार्य करो ऐसी यमराज को सूर्य की उक्ति तदनन्तर यमराज ने कहा ऐसा निन्दित कर्म मैं नहीं करूँगा। पुनः दोनों का अपने २ स्थानों पर गमन।

८७ अहल्यासंगमेन्द्रतीर्थवर्णनम्

५५६

ब्रह्माजी ने गौतम से कहा कि अहल्या की यौवन प्राप्ति पर्यन्त रक्षा करो फिर मेरे पास ले आना। जो पुरुष पृथिवी की परिक्रमा कर सर्व प्रथम मेरे पास आयेगा उसीको यह कन्या दी जायेगी ऐसी ब्रह्माजी की प्रतिज्ञा। ततः अहिल्या प्राप्ति के लिए देवताओं का पृथ्वी की परिक्रमा करना। फिर ब्रह्माजी ने सम्पूर्ण देवों को छोड़ कर गौतम का अहिल्याप्राप्ति का उपायकथन। विवाह के पश्चात् ब्रह्माजी के पास देवताओं का आगमन। विप्र वेश से इन्द्र का अहल्या के लिये गौतम के आश्रम में जाना। तदन्तर गौतम का इन्द्र को शाप पुनः इन्द्र की गौतम से शापोद्धार के लिये प्रार्थना। गौतमी स्नान से पापों का दूरीकरण ऐसा गौतम का कथन। इन्द्रतीर्थ के आख्यान का वर्णन।

८८ जनस्थानतीर्थवर्णनम्

५६३

राजा जनक ने याज्ञवल्क्यजी से पूछा कि सुख से मुक्ति कैसे होगी? याज्ञवल्क्य ने कहा कि वरुण से पूछो ऐसा

कह कर जनक और याज्ञवल्क्य वरुण के पास गये तदनन्तर वरुण ने कहा—

विधा तु संस्थिता मुक्तिः कर्मद्वारेऽप्यकर्मणि ।

वेदे च निश्चितो मार्गः कर्म ज्याट्यो ह्यकर्मणः ॥

सर्वं च कर्मणा बद्धं पुरुषार्थं नुष्ठयम् ।

अकर्मणेवाऽऽप्यत इति मुक्ति मार्गो मृषोच्यते ॥

कर्मणा सर्वधान्यानि सेत्स्यन्ति नृपसत्तम ।

तस्मात्सर्वात्मना कर्म कर्तव्यं वैदिकं नृभिः ।

तेन भुक्तिश्च मुक्तिश्च प्राप्नुवन्तोह मानवाः ॥

गृहस्थ से ही भुक्ति एवं मुक्ति मिलती है ऐसा वरुण का मत दर्शन । जनक और याज्ञवल्क्य ने वरुण से पूछा कि भुक्ति मुक्ति प्रदायक कौन देश, कौन तीर्थ है; इस पर वरुण ने कहा गौतमी सबसे श्रेष्ठ तीर्थ है ऐसा सुन कर दोनों अपने २ स्थान पर चले गये । जनस्थान तीर्थ का प्रयोजन ।

८६ अरुणावरुणासंगमाद्भवमानुतीर्थवर्णनम् ५६६

सूर्य पत्नी उषा ने छाया से कहा कि मैं पिता के घर जाती हूँ मेरे लौटने तक बालकों का पालन करो । तदनन्तर छाया का पिता के घर जाना । त्वष्टा का पुनः पति के घर जानेका आदेश । उषा का उत्तर कुरुदेश में तप करने के लिए जाना । छाया की सन्तानों का जन्म कथन । छाया ने यमराज को शाप दिया इसका वर्णन । यमराज ने पिता से कहा कि यह मुझे क्रोध दृष्टि से देखती है अतः मेरी

माता नहीं है। उत्तर कुरु में घोड़ी का रूप धारण कर उषा रहती है ऐसा जान कर घोड़े के रूप को धारण कर सूर्य का वहां जाना। आत्मरक्षा के लिये गौतमी पर बड़वा का जाना उसके बाद सूर्य का जाना। ऋषियों के प्रति सूर्य का शाप कथन। पुनः अश्विनीकुमारों की उत्पत्ति। त्वष्टा ने सूर्य से कहा कि उषा के निमित्त तेज को शमन करो।

६० गरुडतीर्थवर्णनम्

५७१

गरुड़ से अभयदान प्राप्ति के लिये मणिनाग नामक शेष पुत्र द्वारा शिष की स्तुति। शंकर से वरदान प्राप्त करके मणिनाग का इधर उधर भ्रमण। नन्दिकेश्वर ने शंकर के प्रति कहा—मालूम होता है कि गरुड़ने नागको भक्षण कर लिया है अथवा बांध लिया है इस लिये नहीं आया है। शंकर की आज्ञा से नाग को लाने के लिये नन्दीश्वर विष्णु के पास गया। विष्णु ने गरुड़ से कहा कि नन्दी को सर्प दो तब गरुड़ ने गर्वपूर्वक उत्तर दिया कि मेरे बल से ही दैत्याको पराजित करते हो तदनन्तर भगवान् ने गरुड़ का गर्व दूर किया। गरुड़ के द्वारा विष्णु की स्तुति। विष्णु की आज्ञा से नाग सहित गरुड़ का शंकर के पास गमन। शिष की आज्ञा से गरुड़ गौतमी पर स्नान करने को गया और उसका शरीर वज्र की तरह हो गया अपि च विष्णु की प्राप्ति हुई।

६१ गोवर्धनतीर्थवर्णनम् ५७६

नन्दी के द्वारा गायों का हरण । गायोंको लानेके लिये
देवताओंका शंकर के पास जाना । देवताओं को गायों की
प्राप्ति । गोवर्धन तीर्थ का कथन ।

६२ पापप्रणाशनतीर्थवर्णनम् ५७७

धृतव्रत को पत्नी महीका गालवाश्रम में जाना । पापप्रणा-
शनतीर्थ का माहात्म्य ।

६३ विश्वामित्रतीर्थवर्णनम् ५८३

विश्वामित्र तीर्थ के स्वरूप का वर्णन । भूख से पीड़ित
विश्वामित्र से प्रेरित शिष्योंका भिक्षा लाने के लिये जाना ।
शिष्यों द्वारा लाये गये मृत कुत्तेका पाक करण । इन्द्र और
विश्वामित्रका संवाद । इन्द्रकी आज्ञासे मेघोंका अमृत
की वर्षा करना ।

६४ श्वेततीर्थवर्णनम् ५८६

शिवभक्त श्वेतचिप्रको पूर्णायु होने पर यमदूत लानेको गये ।
यमदूतों के देरी करने पर चित्रक ने मृत्यु से कहा कि
श्वेत चिप्र कैसे नहीं आता है और दूत भी अभी तक नहीं
आये हैं । क्या कारण है ? मृत्यु और यमदूतों का संवाद ।
मृत्यु के वध को सुनकर क्रोधित यमराज का श्वेतके पास
जाना । शिवदूतों के साथ यमराज का युद्ध । कार्तिकेय
द्वारा यमराज का वध । बिष्णु आदि देवताओं का यम-

राज के पास गमन । देवताओं द्वारा शिव स्तुति । देवताओं ने शंकर से प्रार्थना की कि यमराज को जीवदान दो फिर शंकर ने कहा मेरे भक्त की मृत्यु न हो इस वचन के पालन से यम को पुनः जीवदान ।

६५ शुक्रतीर्थवर्णनम्

५६२

भार्गव और अङ्गिरा का संवाद । गुरु की पुत्र और शिष्य में विषमता देख कर शुक्र का गौतम के पास जाना और उनकी आज्ञासे गंगा पर जाकर शुक्र ने शिवकी स्तुति की । शुक्राचार्यको शिव द्वारा मृतसंजीवनी विद्या की प्राप्ति ।

६६ पुण्यासिक्तसंगमेन्द्रतीर्थादिसप्तसहस्रतीर्थवर्णनम् ५६६

ब्रह्महत्या से डरे हुए इन्द्र का कमलनाल में वास । ब्रह्मा की आज्ञा से देवताओंका गौतमी के प्रति जाना तदनन्तर गौतम के भय से नर्मदा के प्रति गमन । देवताओं द्वारा माण्ड्य ऋषि की प्रशंसा । मालवदेश का विधान तथा पुण्यासिक्तादि सातहजार तीर्थों का वर्णन ।

६७ पौलस्त्यतीर्थवर्णनम्

५६६

माता के वचन से रावण, कुम्भकरण और विभीषण का तप करने के लिये वन में जाना । रावण द्वारा कुबेर की पराजय । रावण को पुष्पकादि की प्राप्ति । भाई द्वारा निकाले गये वैश्रवण का पुलस्त्य के पास जाना । पुलस्त्य जी को आज्ञा से स्त्री सहित गौतमी पर गमन वहां कुबेर

द्वारा शंकर की स्तुति । पश्चात् आकाशवाणी हुई । शंकर
का अपने स्थान पर गमन । पौलस्त्य तीर्थ का माहात्म्य ।

६८ अग्नितीर्थावर्णनम्

६०४

मधुदैत्य से जातवेदा और दक्ष का वध । माई के मरने
पर अग्नि का गङ्गा में प्रवेश । अग्नि के पास देवताओं का
जाना । देवताओं ने कहा—

देवाजीवय हव्येन कव्येन च पितॄंस्तथा ।

मानुषानन्नपाकेन बीजानां कलेदनेन च ।

अग्नि तीर्थ का माहात्म्य वर्णन ।

६९ ऋणप्रमोचनतीर्थावर्णनम्

६०६

कक्षीवान् ने पुत्रों से कहा कि ऋणभय (तीनों ऋण) से
मुक्त होने के लिये विवाह करो—पुत्रों को विवाह के लिये
उदासीन देख कर स्नान के लिये गौतमी पर जाने की आज्ञा
ऋण मोचन तीर्थ का माहात्म्य ।

१०० कद्रू सुपर्णातीर्थावर्णनम्

६०८

बालखिल्यों ने कश्यपजी से कहा—हमारे दिये हुए भाघे
तपसे इन्द्र के दर्प (घमण्ड) को दूर करनेवाला पुत्र उत्पन्न
करो । पुनः प्रजापति कश्यप ने अर्धतप को ग्रहण कर सुपर्णा
एवं कद्रू में गर्भ की स्थापना कर कहीं भी न जाने की आज्ञा
दी । कद्रू और सुपर्णाका ऋषियज्ञमें जाना । वहाँ पर दोनों
को नदी होने का शाप । बालखिल्यों ने कश्यपजी से कहा

गौतमी पर जाकर शंकर की स्तुति करने से फिर स्त्री होंगी । कश्यपजी को स्तुति करने पर स्त्रियों की प्राप्ति । कद्रू को ऋषि का शाप ।

१०१ सरस्वतीसंगमपुरूरवसब्रह्मतीर्थसिद्धेश्वरतीर्थ-
वर्णनम् । ६१२

ब्रह्मा की सभा में पुरूरवा का जाना । उर्वशी और पुरूरवा का संभाषण । पुरूरवा के पास सरस्वती का गमन । ब्रह्मा के शाप से भयभीत सरस्वतीका गौतमी पर गमन । सरस्वती के शाप को दूर करने के लिए ब्रह्मा के प्रति गङ्गा का कथन । स्त्रियों के स्वभाव का वर्णन ।

१०२ पञ्चतीर्थमाहात्म्यवर्णनम् ६१४

हरिण रूपधारी ब्रह्मा को व्याधरूपधारी शिष का वचन । सावित्री आदि पञ्चनदियोंका ब्रह्माके पास जाना । पञ्चतीर्थों का माहात्म्य ।

१०३ शम्यादितीर्थवर्णनम् ६१६

प्रियव्रत के यज्ञ में हिरण्यक दानव के जाने पर इन्द्रादि देवताओं का भिन्न २ स्थानों पर पलायन (भागना) । दैत्य को रोकने के लिए वशिष्ठजी ने पुनः यज्ञारम्भ किया शम्यादि तीर्थों का वर्णन ।

१०४ विश्वामित्रादि द्वाविंशतिमहस्रतीर्थवर्णनम् ६१७

हरिश्चन्द्र के घर नारद और पर्वत ऋषि का गमन । हरिश्चन्द्र

ने उनसे प्रश्न किया कि पुत्र से क्या होगा । पुत्रवान् पुत्र्य
की प्रशंसा ।

नापुत्रस्य परो लोको विद्यते नृपसत्तम ।
जाते पुत्रे पिता स्नानं यः करोति जनाधिप ॥
दशानामश्वमेधानामभिषेकफलं लभेत् ।
आत्मप्रतिष्ठापुत्रात्स्यजायते चामरोत्तमः ॥
अमृतेनामरा देवाः पुत्रेण ब्राह्मणादयः ।
त्रिराह्णान्मोचयेत्पुत्रः पितरञ्च पितामहान् ॥
पुत्रएव परो लोको धर्मः कामोऽर्थ एव च ।
पुत्रो मुक्तिः परञ्ज्योतिस्तारकः सर्वदेहिनाम् ।

ऋषियों के प्रति पुत्रोत्पादन विषयक हरिश्चन्द्र का प्रश्न ।
पुत्र प्राप्ति के लिए वरुणाराधन कथन । वरुण की प्रसन्नता
से हरिश्चन्द्र को पुत्र प्राप्ति । वरुण और हरिश्चन्द्र की
परस्पर उक्ति-प्रत्युक्ति । विष्णुयजन के लिए रोहित की
प्रार्थना । अजीगर्त और रोहित का प्रश्नोत्तर । रोहित का
वन में जाना । वरुण के कोप से हरिश्चन्द्र को जलोदर की
प्राप्ति । अजीगर्त की रोहित के साथ पुत्र खरीदने के
विषय में बातचीत । अजीगर्त के द्वारा पुत्र का विक्रय ।
रोहित ने अजीगर्त के पुत्र शुनः शेष को हरिश्चन्द्र के लिए
दिया । शुनःशेष के यज्ञ में आकाशवाणी से यज्ञ की समाप्ति
और विश्वामित्र की शुनःशेष पर कृपा परंच पुत्रत्व स्वीकार
कर सब पुत्रों में शुनःशेष को ज्येष्ठ बना दिया ।

१०५ सोमतीर्थवर्णनम्

६२८

सोमतीर्थ का वर्णन ।

१०६ देवदानवानां मेरुपर्वतं प्राप्य मन्त्रकरणम् ६३१

देव दानवों ने सुमेरु पर्वत पर मन्त्रणा की पश्चात् समुद्र-मथन । सागर से अमृतप्राप्ति । अमृत बांटने के विषय में बृहस्पति से बातचीत । अमृत पीने के लिये विष्णु आदि देवताओं का सुमेरु पर गमन उनके साथ राहु का भी वहीं जाना । विष्णु ने राहु का शिर काट दिया । पश्चात् राहु का अभिषेक ।

१०७ वृद्धासंगमतीर्थवर्णनम् । वृद्धगौतमाख्यानम् ६३८

एकान्त में ब्रह्मचर्य में अवस्थित वृद्धा के साथ वृद्ध गौतम का संवाद । गौतम का सूर्य से विद्या प्राप्त कर वृद्धा को पत्नीत्व रूप से स्वीकार । अगस्त्य और गौतम का सम्वाद । वृद्धा को गङ्गा के अभिषेक से यौवन प्राप्ति । गङ्गाजी के द्वारा वर प्राप्त करने से वृद्धा के साथ सुख प्राप्ति ।

१०८ इलातीर्थवर्णनम्-इलोपाख्यानम्

६४६

इलका हिमालय में निवास । यक्षोंका इल के समीप आना । यक्षों के साथ इलका युद्ध । इलका उमावन में जाना और वहाँ उसको स्त्री रूप की प्राप्ति । यक्षिणी का इल के साथ सम्वाद । इल के स्त्री रूप होने पर बुध

के भाग्य में जाना । इला का बुध के साथ सम्बाध और दोनों का विवाह । बुधसे इलामें पुत्रोत्पत्ति व-देवताओं का वहाँ आना । बालक का पुरुरवा नामकरण । इला के साथ उसका सम्बाध । पुरुरवा को इक्ष्वाकु कुल का वर्णन और अपना पहले का वृत्तान्त कथन । बुध और ऐल का सम्बाध । इला की पुंस्त्व प्राप्ति के लिये पुरुरवाका प्रयत्न । ऐल और इला का हिमालय पर जाना वहाँ पर शंकर की स्तुति । देवी से पुंस्त्व की याचना । शंकर और पार्वती के अनुग्रह से पुंस्त्व प्राप्ति । ऐल का अभिषेक ।

१०६ चक्रतीर्थवर्णनम्

६६०

पार्वती का दक्ष यज्ञ में जाना । वहाँ पर शिव निन्दा सुनकर—
पितरं नाशये पापं क्षमेयं न कथंचन ।

शृण्वती दोषवाक्यानि पित्रा वोक्तानि भर्तरि ॥

पत्युः शृण्वन्ति या निन्दां तासां पापावधिः कुतः ।

यादृशस्तादृशोवाऽपि पतिः स्त्रीणां परामर्शः ॥

पार्वती का देह त्याग । महेश्वर का दक्ष यज्ञ में आना । यज्ञ का वर्णन । वीरभद्र द्वारा यज्ञ विध्वंस । देवताओं द्वारा शिव स्तुति । दक्षकृत शिव स्तुति । देवताओं द्वारा विष्णु की स्तुति । दैत्यों से उत्पन्न भय को जान कर देवताओं के साथ विष्णु का परामर्श । विष्णु के द्वारा ब्रह्म प्राप्ति के लिये शिव की आराधना । विष्णु को शंकर का वरदान और चक्र का होना ।

११० पिप्पलतीर्थवर्णनम्-दधीचेलोपाख्यानम् ६६७

पिप्पल तीर्थ का वर्णन । दधीचि ऋषि एवं लोपासुद्रा का वर्णन । दधीचि ऋषि के आश्रम में सब देवताओं का आगमन । अस्त्रों को रखने के लिये देवताओं का दधीचि से प्रश्न ? लोपासुद्रा का दधीचि के साथ वार्तालाप । देवताओं का दधीचि के पास अस्त्रों का रखना ।

एतदेव फलं पुंसां जीवतां मुनिसत्तम ।

तीर्थाप्लुतिभूतदया दर्शनं च भवादृशाम् ॥

दैत्यों के डरसे दधीचि द्वारा अस्त्रों के तेज का पान । दैत्यों से देवताओं को भय प्राप्ति । देवताओं का दधीचि के पास अस्त्रों के लिये जाना । देवताओं के लिये दधीचि का अस्थि दान (देवताओं का अस्त्र बनाना) दधीचि ऋषि की पत्नी का आगमन और उसका अग्नि के साथ सम्वाद । तदनन्तर अग्निकृत समाधान, प्रातिथेयी के द्वारा कुक्षिस्थ पुत्र का निकालना । प्रातिथेयी का अग्निप्रवेश, आश्रम में स्थित वृक्षों का विलाप । दधीचि के पुत्र को अमृत प्राप्ति तथा पिप्पलाद नाम की प्राप्ति ।

स तेन तृप्तो बबृधे शुक्लपक्षे यथा शशी ।

पिप्पलैः पालितो यस्मात् पिप्पलादः स बालकः ॥

पिप्पलाद के साथ वृक्षों का सम्वाद और अपने माता पिता का पूर्व वृत्तान्त श्रवण । सोम से पिप्पलाद को विद्या-

प्राप्ति और सोम की आत्मा से शंकर की स्तुति की। प्रसन्न हुए शंकर से देवताओं को नाश करने के लिये खर मांगना। पिप्पलाद के तप का वर्णन और शंकर के तृतीय नेत्र का दर्शन। तृतीय नेत्र से उत्पन्न कृत्या को देवताओं के संहार के लिये आदेश। कृत्या से अग्नि की उत्पत्ति तथा अग्नि के डरसे देवताओं का शंकर के पास जाना। देवताओं द्वारा शंकर की स्तुति। शंकर एवं देवताओं का संवाद। देवताओं का पिप्पलाद के साथ संवाद। पिप्पलाद ने देवताओं से कहा कि मेरे माता पिता को दिखावो। पिप्पलाद का स्वर्गलोक में जाना वहाँ पर माता पिता का दर्शन। विवाह करने के लिये दधीचि और पिप्पलाद का सम्वाद। देवताओं के संहार के लिये उत्पन्न कृत्या का समाधान। कृत्या को नदी रूप की प्राप्ति। शंकर के साथ देवताओं का सम्वाद। दधीचि की अस्थियों का एवं देवताओं का तथा गायोंका पवित्र होना। देवताओं का अपने २ स्थानों पर जाना एवं सूर्यका वहीं रहना। पिप्पलाद का गौतम की पुत्री के साथ विवाह। पिप्पलाद तीर्थ पर पिप्पलेभ्वर नामकी प्राप्ति।

१११ नागतीर्थवर्णनम्

६६८

सोमवंशभवशूरसेनाख्यानम्, भोगवत्याःविवाहवर्णनम्
भोगवत्या सह सर्पसंवादः ।

नागतीर्थ का वर्णन । सोमवंशोत्पन्न शूरसेन के चरित्र का वर्णन । शूरसेन से सर्प की उत्पत्ति । सर्प एवं शूरसेन का वैवाहिक विषय में सम्वाद ।

क्षत्रियाणां विवाहाश्च भवेयुर्वहुधा नृप ।
तस्माच्छस्त्रैरलंकारैर्विवाहःस्यान्महामते ॥
क्षत्रिया ब्राह्मणाश्चैव सत्यां वाचं वदन्ति हि ।
तस्माच्छस्त्रैरलंकारैर्विवाहस्त्वनुमन्यताम् ॥

विजय की पुत्री भोगवती का शस्त्र के साथ विवाह ।
भोगवती के साथ सर्प का सम्वाद । सर्प के शाप का वर्णन
और दिव्य रूप की प्राप्ति । नागतीर्थ की प्रसिद्धि ।

११२ मातृतीर्थवर्णनम् ७०७

मातृतीर्थ का वर्णन, देवदानवों का युद्ध । ब्रह्मा के द्वारा
शंकर की स्तुति । राक्षसों का रसातल में जाना ।

११३ ब्रह्मतीर्थवर्णनम् ७११

ब्रह्मतीर्थ का वर्णन । ब्रह्मा के पांचवें मुखका संहार कर
शंकर ने उसको धारण किया ।

११४ अविघ्नतीर्थवर्णनम् ७१३

अविघ्न तीर्थ का वर्णन । देवताओं का यज्ञारंभ और गणेश
की स्तुति । देवों का विनायक के साथ संवाद ।

- ११५ शेषतीर्थवर्णनम् ७१७
 शेषतीर्थ का वर्णन । शेष का ब्रह्मा के साथ संवाद । शेष
 ने शंकर की स्तुति की और उसको त्रिशूल की प्राप्ति हुई ।
- ११६ वडवादि सहस्रतीर्थवर्णनम् ७२०
 वडवादि सहस्र तीर्थों का वर्णन । राक्षसों के द्वारा ऋषियों के
 यज्ञ में उत्पात । ऋषियों ने तथा मृत्यु ने शंकर की स्तुति
 की । देवदानवों का आपस में वैर ।
- ११७ आत्मतीर्थवर्णनम् ७२३
 दत्तात्रेय का अत्रिके साथ संवाद । दत्त द्वारा शिव स्तुति ।
 शंकर द्वारा दत्त को आत्मज्ञानरूप वरदान ।
- ११८ अश्वत्थादितीर्थवर्णनम् ७२७
 अश्वत्थादि तीर्थों का वर्णन । अगस्त्यजी का दक्षिण दिशा
 में गमन । अश्वत्थ और पिप्पल नामक राक्षसों का वर्णन ।
 शनिश्चर के द्वारा राक्षस की मृत्यु ।
- ११९ सोमतीर्थवर्णनम् ७३०
 सोमतीर्थ का वर्णन । ऋषियों का ब्रह्मा के साथ संवाद ।
 गङ्गाकृत सोम और ऋषियों का विवाह ।
- १२० धान्यतीर्थवर्णनम् ७३३
 धान्य तीर्थ का वर्णन । गङ्गा तट पर दान का आह्वान ।

१२१ विदर्भासंगमरेवतीसंगमादितीर्थवर्णनम् ७३५

विदर्भा और रेवती का गङ्गा के साथ संगम । रेवती के साथ कठ का विवाह ।

१२२ पूर्णादितीर्थवर्णनम् ७३६

पूर्णादि तीर्थों का वर्णन । ब्रह्मा के साथ राजा धन्वन्तरि का संवाद । धन्वन्तरि का तप भंग । धन्वन्तरि कृत विष्णु स्तुति और उसको देवराज्य की प्राप्ति । ब्रह्मा, बृहस्पति और इन्द्र का संवाद । इन्द्र द्वारा हरिहर की स्तुति । हरिहर के साथ इन्द्र का संवाद । बृहस्पति के द्वारा इन्द्र का अभिषेक ।

१२३ रामतीर्थवर्णनम् । दशरथचरित्रवर्णनम् ७५०

रामकृतशिवस्तोत्रम् ।

रामतीर्थ का वर्णन । राजा दशरथ का वर्णन । देवदानवों का युद्ध । देवदानवों का दशरथ के पास आना । दशरथ द्वारा देवताओं की सहायता । युद्ध में कैकेयी का वर्णन । दशरथ के द्वारा मुनिपुत्र की मृत्यु । पुत्र की मृत्यु से माता पिता का विलाप और उसी शोकमें मृत्यु । रामादिकों का जन्म कथन । विध्वामित्र को पुत्र समर्पण । अहल्या का उद्धार और राक्षस का वध । सीता का विवाह । दशरथ की मृत्यु और नरकों की प्राप्ति तथा नरकों से मुक्ति । दशरथ का यमकिंकरों के साथ संवाद । राम लक्ष्मण और

दशरथ का संवाद और दशरथ का वृक्ष वर्णन करना ।
शोक निवृत्ति के लिये सीता का वचन । वैद्यनाथ के साथ
राम का संवाद । राम के द्वारा शंकर की स्तुति ।

१२४ पुत्रतीर्थवर्णनम् । मरुतांजन्मकथनम् ७७४
पुत्र तीर्थ का वर्णन । कश्यप के साथ दिति का संवाद ।
दिति और दनु का संवाद । मय के साथ इन्द्र का संवाद
और मरुतों का जन्म ।

अद्य प्रभृति ये कुर्यु रनयाद्वातृघातनम् ।

वंशच्छेदो विपत्तिश्च नित्यं तेषां भविष्यति ।

१२५ यमतीर्थवर्णनम् ७६१
कपोत और उलूक का युद्ध । हेति नाम की कपोतकी का
अग्नि की स्तुति करना और उलूकी के द्वारा यम की स्तुति ।
उलूकी के साथ यम का संवाद । यमतीर्थ का वर्णन ।

१२६ तपस्तीर्थवर्णनम् ७६८
अग्नि का वर्णन । देव, ब्रह्मा और मुनियों का संवाद ।
तपस्तीर्थ का वर्णन ।

१२७ देवतीर्थवर्णनम् ८०३
आश्विमेज राजा का आख्यान एवं हयमेध का
वर्णन । मिथुनामक दैत्य द्वारा पुरोहित सहित दीक्षित
राजा को रसातलमें ले जाना । पुरोहित पुत्र देवापि ने अपनी
माता से पूछा कि पिता कहाँ है ? उत्तर में माता ने

बुधको पिता का सम्पूर्ण वृत्तान्त कह दिया। देवाधि की प्रतिष्ठा। नन्दि द्वारा मिथु की मृत्यु। रसातल से देवाधि के पिता का आगमन। हयमेध की समाप्ति। अनेक तीर्थों का वर्णन।

१२८ तपोवनादितीर्थवर्णनम्

८१०

संक्षेप से कार्तिकेय का आख्यान। सन्तान के विषय में अग्नि और स्वाहा का संवाद। तारकासुर के भय से दुःखित देवों द्वारा अग्नि की प्रार्थना। शुक रूप से अग्नि का शिव के पास जाना। शिव पार्वती संवाद। अग्नि पत्नी स्वाहा के गर्भ से मिथुन (जोड़ा) की उत्पत्ति और उनका नामकरण (सुवर्ण-सुवर्णा) एवं विवाह। सुवर्णा और सुवर्ण को सुरासुर का शाप। शाप विमोचन के लिये ब्रह्मा के वचन से अग्नि का गौतमी के पास जाना वहाँ पर अग्नि द्वारा शिव की स्तुति। शाप मुक्ति के लिये शंकर का वरदान। गौतमी तट पर शिवलिङ्ग की स्थापना। तपोवनादि तीर्थों का वर्णन।

१२९ इन्द्रतीर्थवर्णनम्

८२०

गंगा और फेना का संगम। इन्द्र द्वारा नमुबि दैत्य का वध। हिरण्य दैत्य के पुत्र महाशनि से इन्द्र की पराजय। इन्द्र की पाताल में स्थिति। वरुण को पराजित करने के लिये ब्रह्माशनि का प्रस्थान। वारुणी और महाशनि का

बिबाह । इन्द्र की मुक्ति के लिये देव और बिष्णु का संवाद
बिष्णु की आज्ञा से महाशनि के पास बरुण का जाना ।
बरुण के वचन से इन्द्र की मुक्ति । इन्द्र और इन्द्राणी का
संवाद ।

पुनश्चेदं मया कान्त श्रुतमस्त्यतिशोभनम् ।
स्त्रीणां स्वभावं जानन्ति स्त्रिय एव सुराधिप ॥
तस्माद्भूमेस्तथा चापां नासाध्यं विद्यते प्रभो ।
तपो वा यज्ञकर्मादि ताभ्यामेव यतो भवेत् ।
तत्रापि तीर्थभूता तु या भूमिस्तां व्रजेद् भवान् ॥
तत्र बिष्णुं शिवं पूज्य सर्वान्कामानवाप्स्यसि ॥
श्रुतमस्ति पुनश्चेदं स्त्रियो याश्च पतिव्रताः ।
ता एव सर्वं जानन्ति धृतं तामिधराचरम् ॥
अज्ञात्वेकगुणं कर्म फलं दास्यति कर्मिणः ।
ज्ञात्वा शतगुणं तत्स्याद्धार्यया च तदक्षयम् ॥
पुंसः सर्वेषु कार्येषु भार्यैवेह सहायिनी ।
स्वल्पानामपि कार्याणां न हि सिद्धिस्तथा बिना ॥
एकेन यत्कृतं कर्म तस्मादर्थफलं भवेत् ।
जायया तु कृतं नाथ पुष्कलं पुरुषो लभेत् ॥
तस्मादेतत्सुविदितमर्थो जाया इति श्रुतेः ।

इन्द्राणी के वचन से इन्द्र का गौतमी के प्रति जाना । इन्द्र
द्वारा शंकर की स्तुति । शिव और इन्द्र का संवाद । शिव

के वचन से इन्द्र ने विष्णु की आराधना की पुनः प्रसन्न होकर भगवान् विष्णु ने महेश्वरानि दैत्य को मार दिया ।

१३० आपस्तम्बतीर्थवर्णनम्, आपस्तम्बोपाख्यानम् ८३५

आपस्तम्बकृत शिवस्तुतिः ।

आपस्तम्ब मुनि की प्रशंसा और उन के आश्रम में अगस्त्य मुनि का गमन । आपस्तम्ब ने अगस्त्यकी पूजा की और पूछा कि तीनों देवों में कौन श्रेष्ठ है ? अगस्त्य ने कहा कि तीनों देवों में भेद न होते हुए भी शिव ही सर्वसिद्धियों को देने वाला है । अगस्त्य के वचन से आपस्तम्ब का गौतमी पर जाना और वहां पर शंकर की स्तुति तदनन्तर आपस्तम्ब को शंकर का वरदान और आपस्तम्ब तीर्थ की महिमा ।

१३१ यमतीर्थवर्णनम्, सरमाख्यानवर्णनम् ८४०

यमतीर्थ के प्रसंग में सरमा के आख्यान का कथन । देव-गायों की रक्षा करने वाली सरमा को द्रव्य देकर दैत्यों ने गो हरण किया । सरमा ने इन्द्र से कहा कि मेरे को बांध कर दैत्य गायों को ले गये । पश्चात् बृहस्पति ने इन्द्र से कहा कि सरमा झूठ बोलती है तब इन्द्र ने सरमा को लात मारी और शाप दिया । गायों को लाने के लिये इन्द्र ने विष्णु की स्तुति की । विष्णु और दैत्यों का युद्ध तथा दैत्यों की पराजय । देवतार्त्रा को गायों की प्राप्ति । अपनी

माता को शाप से छुड़ाने के लिये सरमा के पुत्र का यम से प्रश्न ? सूर्य और यम का संवाद । सूर्य के वंशज से यम का गीतमी पर आना । गीतमी तीरस्थ अनेक तीर्थों का वर्णन और वहाँ पर स्नान करने वालों को अनेक फल की प्राप्ति ।

१३२ यक्षिणीसंगममाहात्म्यकथनम् ८४७

यज्ञ करने वाले ऋषियों का विश्वावसु की बहिन पिप्पला को शाप । विश्वावसु की प्रार्थना से शाप का निवारण । दुर्गा तीर्थ का वर्णन और यक्षिणी संगम तीर्थका माहात्म्य ।

१३३ शुक्लतीर्थवर्णनम् ८४८

शुक्लतीर्थ में भरद्वाज का यज्ञ वर्णन । यज्ञ में पुरोडाश को भक्षण करते हुए हव्यघ्न नामक राक्षस को मुनि का घचन । भरद्वाज और हव्यघ्न का संवाद । सम्पूर्ण अमृतों (जलों) में गीतमी जल की विरोधता । गीतमी जल से हव्यघ्न का अभिषेक और कृष्ण रूप से शुक्लत्व प्राप्ति एवं यज्ञ की समाप्ति । शुक्लादि तीर्थों का वर्णन ।

१३४ चक्रतीर्थवर्णनम् ८५१

चक्रतीर्थ में वशिष्ठादि सप्त ऋषियों का यज्ञारंभ । राक्षसों के विघ्न करने पर ब्रह्मा के पास जाना । ब्रह्मा की आज्ञा से माया द्वारा विघ्नका निवारण फिर यज्ञारंभ । जब शम्बर दैत्य ने माया को भक्षणकर लिया तब ऋषियों द्वारा

विष्णु की प्रार्थना। पश्चात् विष्णु ने उनकी रक्षार्थ चक्र दिया और उस चक्र से राक्षसों का वध एवं यज्ञ की समाप्ति। गङ्गाजल में चक्र का प्रक्षालन। चक्रतीर्थादि पांच सौ तीर्थों का वर्णन।

१३५ वाणीसंगमतीर्थवर्णनम्

८५३

ब्रह्मा और विष्णु का अपने २ महत्त्व पर संवाद। ब्रह्मा और विष्णु को आकाशवाणी की उक्ति। तत्पश्चात् ज्योतिर्मूर्ति संज्ञक शिवलिङ्ग के अन्त को खोजने के लिये ब्रह्मा विष्णु का प्रस्थान। अन्त को न देखते हुए विष्णु और ब्रह्मा का शिव के पास क्रम से सत्य और असत्य कहना। ब्रह्माजी के मुख से निकली हुई वाणी को हरिहर का शाप। पुनः शाप का निवारण। गौतमी और वाणी संगम का अनेक तरह से वर्णन। दोनों के तटों पर स्थित एक सौ उन्नीस तीर्थों का माहात्म्य।

१३६ विष्णुतीर्थवर्णनम्

८५६

मौद्गल्य चरित्र का वर्णन। मौद्गल्य द्वारा सदाचार का वर्णन। विष्णु और मौद्गल्य का संवाद। मौद्गल्य द्वारा दान की प्रशंसा। विष्णु तीर्थ की प्रशंसा।

१३७ लक्ष्मीतीर्थवर्णनम्

८६१

अपनी २ ज्येष्ठता के विषय में लक्ष्मी और दग्धिका संवाद। ब्रह्मा के पास दोनों का गमन ब्रह्मा के कहने से गौतमी पर

जाना । गौतमी द्वारा लक्ष्मी की प्रशंसा । लक्ष्मी तीर्थादि
छः हजार तीर्थों का वर्णन ।

१३८ मन्वादित्रिसहस्रतीर्थवर्णनम् । भानुतीर्थवर्णनम् ८६६

भानुतीर्थ के प्रसङ्ग में शर्याति राजाका चरित्र वर्णन । शर्याति
का दिग्विजय के लिये प्रस्थान । मार्ग में उसके पुरोहित
मधुच्छन्द का राजा के साथ सम्वाद । मधुच्छन्द द्वारा सूर्य
की आराधना । भानुतीर्थ के निकटवर्ती तीन हजार तीर्थों
का वर्णन ।

१३९ खड्गतीर्थवर्णनम् ८७१

खड्गतीर्थ के प्रसङ्ग से कवष के पुत्र पैलूष नामक मुनि का
चरित्र निरूपण । खड्गतीर्थ के निकटवर्ती छः हजार तीर्थों
का वर्णन ।

१४० आत्रेयतीर्थवर्णनम् ८७३

आत्रेय ऋषि का आख्यान । ब्रह्माजी के वर प्रसाद से आत्रेय
को इन्द्रपद की प्राप्ति । दिति के पुत्रों द्वारा सताये जाने पर
इन्द्रपद का त्याग ।

१४१ कपिलासंगमाख्यतीर्थवर्णनम् ८८०

कपिल नामक मुनि का चरित्र उसीके प्रसंग में पृथु राजाका
संक्षेप से चरित्र वर्णन ।

ततो गोरूपमास्थाय भूम्यासीत्कपिलान्तिके ।

दुदोह च महीषध्यो राजा वेनकरोद्भवः ॥

(६२)

यत्र देवाः सगन्धर्वा ऋषयः कपिलोमुनिः ।
महीं गोरूपमापन्नां नर्मदायां महामुने ॥
सरस्वत्यां भागीरथ्यां गोदवर्यां विशेषतः ।
महानदीषु सर्वासु दुबुहेऽसौ पयो महत् ॥
सा दुह्यमाना पृथुना पुण्यतोयाऽभवन्नदी ।
गौतम्या संगता चाभूत्तद्वृत्तमिवाभवत् ॥

कपिला संगम के निकटवर्ती अट्ठासी हजार तीर्थों का वर्णन ।

१४२ देवस्थानाख्यतीर्थवर्णनम् ८८३

सिंहिका के पुत्र राहु के लड़के मेघहास नामक दैत्य का
चरित्र उसके द्वारा तप किया जाना । देवस्थानों के निकटवर्ती
अठारह तीर्थों का वर्णन ।

१४३ सिद्धतीर्थवर्णनम् ८८५

रावण को ब्रह्माजी से शिवजी के एक सौ आठ नामों की
प्राप्ति । रावण के तपका वर्णन । रावण के द्वारा कैलास
को हिलाना । रावण को शिवजी से तलवार की प्राप्ति ।
सिद्धतीर्थ के निकट एक सौ आठ तीर्थों का वर्णन ।

१४४ परुष्णीसंगमतीर्थवर्णनम् ८८८

अत्रि ऋषिका उपाख्यान अत्रि को चार पुत्ररत्नों की प्राप्ति ।
आत्रेयी नामक अत्रि ऋषिकी कन्याका चरित्र । आत्रेयी और
ज्वलनका आख्यान । परुष्णी संगम के निकटवर्ती तीन
हजार तीर्थों का वर्णन ।

- १४५ मार्कण्डेयतीर्थवर्णनम् ८६२
मार्कण्डेय आदि मुनियोंका ब्रह्माजीके साथ सम्वाद । मार्क-
ण्डेय तीर्थ की महिमा का निरूपण उसके निकटस्थ भट्टानघों
तीर्थोंका वर्णन ।
- १४६ कालञ्जरतीर्थवर्णनम् ८६४
ययाति का आख्यान । कालञ्जर के निकटवर्ती एक सौ आठ
तीर्थों का वर्णन ।
- १४७ अप्सरोयुगसंगमतीर्थवर्णनम् ८६६
दो अप्सराओं द्वारा विश्वामित्र ऋषि के तपोभंग का वर्णन ।
विश्वामित्र के शाप से अप्सराओं को नदीत्व की प्राप्ति ।
- १४८ कोटितीर्थवर्णनम् ६०२
प्रसंगानुसार कण्व के पुत्र बाह्मीकका आख्यान । कण्वतीर्थ
के निकट पचास तीर्थों का वर्णन ।
- १४९ नारसिंहतीर्थवर्णनम् ६०५
हिरण्यकशिपु की प्रशंसा । नरसिंह द्वारा हिरण्यकशिपु का
वध । नरसिंह का गौतमी के प्रति आगमन व अम्बर्य संज्ञक
दैत्यका हनन । नारसिंह तीर्थ में स्नान दान आदि करने
वालों को नाना फलों की प्राप्ति का कथन । नारसिंहादि
आठ तीर्थों का वर्णन ।
- १५० पैशाचतीर्थवर्णनम् ६०७
पैशाचतीर्थ का वर्णन । अजीगर्त का आख्यान । अजीगर्त

द्वारा शुनःशेष नामक स्वपुत्र का बेचना । पुत्र को बेचने के बाद से अजीगर्त को नरक प्राप्ति । रोते हुए पिशाच के प्रति शुनःशेषका प्रश्न ? पिशाच की योनि में पड़े हुए अपने पिता के वचन सुन कर दुःखितअन्तःकरण शुनःशेष द्वारा पिशाच के ऊपर गौतमी जल का छिड़कना । गौतमी जल के स्पर्श होते ही अजीगर्त को विष्णुपद की प्राप्ति । पैशाच तीर्थ की प्रशंसा । पैशाच आदि तीनसौ तीर्थों का वर्णन ।

१५१ निम्नभेदतीर्थवर्णनम् ६१०

उर्वशी गमन से दुःखित पुरूरवा के प्रति वसिष्ठ का उपदेश । निम्नभेद आदि सात सौ तीर्थों का वर्णन ।

१५२ आनन्दतीर्थवर्णनम् ६१३

चन्द्र द्वारा तारा का हरण । शुक के पास गुरु का जाना । शुक के लिये स्त्री हरण कथन । तारा को लाने के लिए शुक की प्रतिज्ञा । चन्द्र को शुक का शाय । तारा की शुद्धि के लिये देवताओं के प्रति शुक का प्रश्न ? गङ्गा को गुरु का वचन । आनन्द तीर्थका वर्णन ।

१५३ भावतीर्थवर्णनम् ६१८

भावतीर्थ आदि सात तीर्थों का वर्णन ।

१५४ सहस्रकुण्डलतीर्थवर्णनम् ६२०

रावणादि को मार कर अयोध्या के प्रति सपरिवार रामका गमन । लोक के अपवाद से बाल्मीकि के आश्रम के

पास राम की आज्ञा से लक्ष्मण द्वारा सीता का त्याग ।
राम के अश्वमेध में लवकुश का जाना । सद्यस्कुण्डादि
दश तीर्थों का वर्णन ।

१५५ कपिलातीर्थवर्णनम् ६२३

अङ्गिरा को दक्षिणा में आदित्य द्वारा भूमिदान । कपिला
संगमादि १०० तीर्थों का वर्णन ।

१५६ शङ्खहृदतीर्थवर्णनम् ६२५

ब्रह्मा को भक्षण करने के लिये आते हुए राक्षसों का विष्णु
चक्र द्वारा वध । शङ्ख तीर्थादि अयुत तीर्थों का वर्णन ।

१५७ किष्किन्धातीर्थवर्णनम् ६२६

रावण के मरने पर सीता और लक्ष्मणके साथ श्रीराम का
गौतमी पर आना । रामकृत गौतमी प्रशंसा । राम एवं
वानरों का गौतमी पर स्नान और शिवलिङ्गपूजादि वर्णन ।
राम के प्रति विभीषण का वचन । किष्किन्धा तीर्थ का
महत्त्व ।

१५८ व्यासतीर्थवर्णनम् ६३२

अङ्गिरसों की उत्पत्ति । माता की आज्ञा के बिना तप करने
के लिए गये हुए आङ्गिरसों को विघ्न होना । अगस्त्य के
आश्रम में आङ्गिरसों का गमन व संवाद । अगस्त्य की
आज्ञा से उनका गौतमी पर आना । व्यास तीर्थ की
महिमा ।

१५६ चंडरासंगमतीर्थवर्णनम्

६३६

दास भाव को प्राप्त हुए गरुड़ का अपनी माता विनता के प्रति प्रश्न ? उत्तर में माता ने कहा कि मैं अपने ही अपराध से दासी भाव को प्राप्त हुई हूँ । कद्रू के बचन से गरुड़ का सर्पों को सूर्यलोक में ले जाना और उनका अधःपतन । तन्निमित्त कद्रू का विनता के प्रति क्रोधवाक्य । सर्पों की जरा दूर करने के लिये गरुड़ का रसातल से जल लाना । उस जल के प्रोक्षण से सर्पों का जरा दूरीकरण और उसीसे वंजर की उत्पत्ति । वंजर संगमादि सवा लाख तीर्थों का वर्णन ।

१६० देवागमतीर्थवर्णनम्

६४२

धन के निमित्त देवदानवों की ईर्ष्या । ब्रह्माकी आज्ञासे देवताओं का असुरों के साथ युद्धारम्भ । युद्ध के आरम्भ में गौतमी तट पर देवताओं का विष्णु एवं शंकर की स्तुति करना । गौतमी, हरि एवं शंकर की कृपा से देवताओं की विजय ।

१६१ कुशतर्पणतीर्थवर्णनम्

६४५

कुशतर्पण तीर्थ का वर्णन । ब्रह्मा की उत्पत्ति और सृष्टिक्रम । यज्ञसामग्री का वर्णन । विराट् पुरुष की उत्पत्ति । प्रणीता संगम कुश तीर्थ आदि छियासी हजार तीर्थों का वर्णन ।

१६२ मन्युतीर्थवर्णनम्

६५३

अपनी विजय के लिए और शूरवीर पुरुष की प्राप्ति के लिए देवताओं द्वारा महेश्वर की स्तुति। शंकर की कृपा से प्राप्त मन्यु नामक पुरुष के प्रति सामर्थ्यपरीक्षा के लिये देवताओं का वचन। मन्यु के स्वरूप का वर्णन। देवों द्वारा मन्यु को स्तुति। मन्यु के आश्रय से देवताओं को विजय प्राप्ति।

१६३ सारस्वततीर्थवर्णनम्, ब्रह्मरूपधारिपरशुनामक-

रक्षसउपाख्यानम्

६५७

परशु नामक राक्षस ने ब्राह्मण रूप धारण कर शाकल्य मुनि से कहा कि मुझे भोजन दो।

दूरादभ्यागतं श्रान्तमनुगच्छन्ति देवताः ।

तस्मिंस्तृप्ते तु तृप्ताः स्युरतृप्ते तु विपर्ययः ॥

अतिथिश्चापवादी च द्वावेतौ विश्ववान्धवौ ।

अपवादी हरेत्पापमतिथिः स्वर्गसङ्क्रमः ॥

अभ्यागतं पथिश्रान्तं सावज्ञं योऽभिवीक्षते ।

तत्क्षणादेव नश्यन्ति तस्य धर्मयशःश्रियः ॥

भोजन के समय परशु ने शाकल्य से कहा कि मैं ब्राह्मण नहीं हूँ तुम्हारा शत्रु हूँ तुम्हें खाने के लिये आया हूँ फिर शाकल्य ने अपना अपूर्व शरीर दिखाया। परशुराक्षस

ने शाकल्यकी स्तुति की। शाकल्यकी आज्ञासे परशु
ने सरस्वतीकी स्तुति की और उसको स्वर्ग प्राप्ति।

१६४ चिच्छिकतीर्थवर्णनम्

६६३

पवमान राजा का चिच्छिक नामक पक्षी से संवाद। पवमान
राजा के प्रति चिच्छिक पक्षी का पूर्वजन्म वृत्तान्तकथन।
ब्रह्महत्या सदृश पापों का वर्णन।

अविज्ञातं चोपविष्टं बिभेमीति च वाचिनम् ।

तं यदि क्षत्रियो हन्यात्स तु स्याद्ब्रह्मघातकः ॥

अधीतं विस्मरति यस्त्वं करोति तथोत्तमम् ।

अनादरञ्च गुरुषु तमाहुर्ब्रह्मघातकम् ॥

प्रत्यक्षे च प्रियं वक्ति परोक्षे परुषाणि च ।

अन्यद्भृदि बलस्यन्यत्करोत्यन्यत्सदैव यः ॥

गुरूणां शपथं कर्ता द्वेषा ब्राह्मणनिन्दकः ।

मिथ्याविनीतः पापात्मा स तु स्याद्ब्रह्मघातकः ॥

देवं वेदमथाध्यात्मं धर्मब्राह्मणसंगतिम् ।

एताभिन्दति यो द्वेषात्स तु स्याद्ब्रह्मघातकः ॥

चिच्छिक की मुक्ति के लिए राजा का प्रश्न। चिच्छिक ने
राजा से प्रार्थना की कि मुझे मुक्तिके लिए श्वेत पर्वत स्थित
भगवान् गदाधर के पास ले चलो। राजाके साथ गंगा, और
गदाधर के दर्शन के लिए चिच्छिक का गमन। चिच्छिक
द्वारा गंगा का स्तवन एवं स्वर्ग प्राप्ति। राजा पवमान का
अपने सेवकों के साथ अपने नगर में आना।

१६५ भद्रतीर्थवर्णनम्

६६८

कन्या के विवाह विषय में सूर्य का विचार । विवाह की अवधिकथन । कन्यादान के लिए कुल आदि का विचार । कन्या की प्रशंसा । कन्या आदि के विक्रय में निषेध । विवाह काल के उल्लङ्घन में दोष वर्णन । विभ्रकरूप और विष्टि का विवाह । भद्रतीर्थ का वर्णन ।

१६६ पतत्रितोर्थवर्णनम् ।

६७४

पतत्रि तीर्थ का वर्णन ।

१६७ विप्रतीर्थवर्णनम्

६७५

सोते हुए ब्राह्मण पुत्र आसन्दिष को लेकर राक्षसी का भागना । आसन्दिष और राक्षसी का संवाद । किसी ब्राह्मण कन्या के साथ आसन्दिष का विवाह । नारायण द्वारा राक्षसी का वध । विप्रतीर्थ का वर्णन ।

१६८ भानुतीर्थवर्णनम्

६८०

राजा अभिष्टुत का हयमेघ आरम्भ । याचना का लघुत्व वर्णन । ब्राह्मण वेशधारिदैत्या का यज्ञ में जाना । भान्वादि सौ तीर्थों का वर्णन ।

१६९ भिल्लतीर्थवर्णनम्

६८४

वेद नामक ब्राह्मण का शिवपूजा के अनन्तर भिल्लटन के लिए गमन । व्याध का शिवपूजा प्रकार । विधान से की

हुई पूजा को विध्वंस करनेवाले के लिए वेद के मन में क्रोध की उत्पत्ति । आदिकेश और वेद का संवाद । व्याध की भक्ति का वर्णन । व्याध को वर प्राप्ति ।

१७० चक्षुस्तीर्थवर्णनम्

६८६

चक्षु तीर्थ का वर्णन । गौतम और कुण्डल का धन उपार्जन विषयक संवाद । पुत्र धर्म का वर्णन । धर्म की प्रशंसा । धर्म प्रशंसा करने वाले कुण्डल के नेत्रों का नाश । विभीषण का पुत्र के साथ संवाद । कुण्डल वैश्य को नेत्रादि की प्राप्ति । महाराजा नामक राजा की पुत्री को नेत्रों की प्राप्ति (वह जन्मान्ध थी) । कुण्डलको राजकन्याकी प्राप्ति ।

१७१ उर्वशीतीर्थवर्णनम्

६६६

इन्द्र और प्रमिति का संवाद । इन्द्र और प्रमिति का क्रोडन वर्णन । प्रमिति और चित्रसेन का क्रोडन वर्णन । मधुच्छन्द के साथ प्रमिति पुत्र सुमति के द्वारा प्रमिति को पाशा खेलने से गये हुए राज्य को प्राप्ति । श्रेष्ठ पुरुषों के लिये बिना छलकी वृत्ति का विधान ।

अकैतवी च या वृत्तिः सा प्रशस्ता द्विजन्मनाम् ।

कृषिगोरक्ष्यबाणिज्यमपि कुर्यान्न कैतवम् ॥

यस्तु कैतववृत्त्या हि धनमाहर्तुमिच्छति ।

धर्मार्थकाममिजनैः स विमुच्येत पौरुषात् ॥

७२ समुद्रतीर्थवर्णनम्

१००५

गङ्गा और सागर का संवाद । गङ्गा के सप्त रूप का वर्णन ।

१७३ भीमेश्वरतीर्थवर्णनम्

१००८

गङ्गा के सात नामों का वर्णन ।

सप्तधा व्यभजन् गङ्गामृषयः सप्त नारद ।
 वाशिष्ठी दाक्षिणेयी स्याद्वैश्वामित्री तदुत्तरा ॥
 वामदेव्यपरा ज्ञेया गौतमी मध्यतः शुभा ।
 भारद्वाजी स्मृता चान्या आत्रेयी चेत्यथापरा ॥
 जामदग्नी तथा चान्या व्यपदिष्टा तु सप्तधा ।

ऋषि यज्ञ में देव शत्रु विश्वरूप का आगमन । विश्वरूप और
 ऋषि का संवाद ।

कर्मणा तात लभ्यन्ते फलानि विविधानि च ।
 त्रयाणां कारणानां च कर्म प्रथमकारणम् ॥
 कर्मणां कारणत्वं च कारणे पुष्कले सति ।
 भावाभावौ फले दृष्टौ तस्मात्कर्माश्रितं फलम् ॥
 भावात्प्रारभते तद्वद्भावेः फलमवाप्यते ।
 धर्मार्थकाममोक्षाणां कर्म चैव हि कारणम् ॥
 भावस्थितं भवेत्कर्म मुक्तिर्दं बन्धकारणम् ।
 स्वभावानुगुणं कर्म स्वस्यैवेह परत्र च ।

भीमेश्वर तीर्थ का वर्णन ।

१७४ गङ्गासागरसंगमवर्णनम्, सोमतीर्थवर्णनम् १०१२

गङ्गा और सागर का संगम वर्णन । देवताओं द्वारा हर और
 विष्णु का स्नान । सोम तीर्थ का माहात्म्य । नारदकृत

सौम स्तुति । भादित्य और बार्हस्पत्यादि तीर्थों का वर्णन ।

१७५ तीर्थादीनांचातुर्विध्यादिनिरूपणम् १०१६

गंगा की ब्रह्मा के कमण्डलु में, विष्णुके पद् में, शिवजी की जटाजूट में, ब्रह्मगिरि में और पूर्व समुद्र में क्रम से स्थिति का वर्णन । चार प्रकार के तीर्थों का बताना । तीर्थों का सत्ययुगादि में क्रम से त्रिदेवत्व भाव होने से कलियुग में भी दैवत भाव का निरूपण बताया है । तीर्थों का युग क्रम से दैव, आसुर, आर्ष और मनुष्यत्व प्राप्ति का वर्णन । गणेशजी को शंकर की जटा से गंगावतरण का पार्वती द्वारा कथन । पार्वती और गणेशजी के संवाद में ब्रह्मगिरि पर्वत से समुद्र पर्यन्त गौतमी के दोनों तटों की स्थिति विषयक गौतम के प्रति हर्षपुलकित शिवजी का वर प्रदान । शिवजी द्वारा वर्णित गौतमी की यात्रादि का वर्णन । विस्तार सहित गौतमी माहात्म्य का फल कथन ।

१७६ अनन्तवासुदेवमाहात्म्यवर्णनम् १०२६

अनन्तवासुदेव भगवान् का माहात्म्य । ब्रह्माजी की विश्वकर्मा को वासुदेव भगवान् की मूर्ति बनाने के लिये आज्ञा । देवतामण्डिके साथ रावणका संग्राम । रावण द्वारा इन्द्रको पराजय । रावणका इन्द्रपुरी में गमन । वहाँ पर स्थित भगवान् वासुदेवकी मूर्तिको पुष्पक विमान द्वारा लङ्कामें ले जाना । रावणसे विभीषणको मूर्तिकी

प्राप्ति । राम और रावण का युद्ध । युद्ध में रावण की मृत्यु । भगवान् राम का जयोध्या के प्रति गमन ।

१७७ पुरुषोत्तमक्षेत्रमाहात्म्यवर्णनम् १०३२

पुरुषोत्तम क्षेत्र के माहात्म्य का वर्णन ।

१७८ कण्डुचरित्रवर्णनम् १०३६

कण्डु के आश्रम में तपनाश करने के लिये प्रम्लोचा का जाना । कण्डु और प्रम्लोचा का संवाद । तप नष्ट होने से कण्डु का पुरुषोत्तम क्षेत्र में जाना और विष्णु की स्तुति एवं वरदान की प्राप्ति तदनन्तर मुक्ति । कण्डु की आख्यायिका का पठन एवं श्रवण का फल और पुरुषोत्तम क्षेत्रकी महिमा का वर्णन ।

१७९ बादरायणं प्रतिश्रीकृष्णावतारविषयको मुनीनां

प्रश्नः १०५६

संशयाविष्ट मुनियों द्वारा कृष्णावतार के विषय में व्यासजी से प्रश्न ।

वसुदेवकुले धोमान्वासुदेवत्वमागतः ।

अमरैश्चाऽऽवृतं पुण्यं पुण्यकृद्भिरलंकृतम् ॥

देवलोकं किमुत्सृज्य मर्त्यलोकं इहाऽऽगतः ।

देवमानुषयोर्नेता द्योर्मुखः प्रभवोऽप्ययः ॥

किमर्थं दिव्यमात्मानं मानुषेषु न्ययोजयत् ।

यत्कर्म वर्तयत्येको मानुषाणामनामयम् ॥

१६० श्रीकृष्णचरितारम्भः । चतुर्व्यूहवर्णनम् १०६३

मुनियों के प्रश्नोत्तरमें व्यासकृत भगवत्स्तुति व नानावतारों का वर्णन । चतुर्व्यूहकथन ।

१८१ अवतारप्रयोजनवर्णनम् १०६८

भाराक्रान्तायाः पृथ्व्या ब्रह्मणः समीपेगमनम् ।

ब्रह्माणं प्रति भगवद्वाक्यम् । हरेरंशावतारनिरूपणम् ।

भगवान् के अवतार धारण करने का प्रयोजन वर्णन । भार से पीड़ित पृथ्वी का ब्रह्माजी के पास जाना और अपने दुःख का निवेदन ।

अग्निः सुवर्णस्य गुरुर्गवां सूर्योऽपरो गुरुः ।

ममाप्यखिललोकानां वन्द्यो नारायणो गुरुः ॥

तत्संप्रतमिमेदैत्याः कालनेमिपुरोगमाः ।

मर्त्यलोकं समागम्य बाधन्तेऽहर्निशं प्रजाः ॥

भगवान् की प्रशंसा से गर्वित देवताओं के प्रति ब्रह्माजी का कथन । ब्रह्माजी द्वारा विष्णुस्तुति । स्तुतिश्रवण के अनन्तर विष्णु के द्वारा ब्रह्मा को सफेद और कृष्ण दो केशों का दान । विष्णु की सहायता के लिये इन्द्रादि देवताओं का अवतार । नारदजी ने कंस से कहा कि देवकी के बाठवें गर्भ से तुम्हारी मृत्यु होगी ऐसा सुन कर क्रोधित कंसने बल्लुदेव तथा देवकीको करानारमें डाल दिया । देवकी

के छे पुत्रांका कंस द्वारा वध । विष्णु और माया के
संवाद में माया के प्रति भगवान् की आज्ञा ।

त्वं भूतिः संनतिः कीर्तिः कान्तिर्वै पृथिवी धृतिः ।

लज्जा पुष्टिरुषा या च काचिदन्या त्वमेव सा ॥

ये त्वामार्येति दुर्गेति वेदगर्भेऽम्बिकेति च ।

भद्रेति भद्रकालीति क्षेम्या क्षेमंकरीति च ॥

प्रातश्चैवऽपराह्णे च स्तोष्यन्त्यानघ्रमूर्तयः ।

तेषां हि वाञ्छितं सर्वं मत्प्रसादाद्विचिष्यति ॥

१८२ श्रीकृष्णोत्पत्तिकथानिरूपणम् ।

१०७४

भगवान् की आज्ञासे माया द्वारा देवकी के गर्भ का आकर्षण
और रोहिणी के गर्भ में स्थापन । यशोदा के उदर में माया
की स्थिति । देवकी के उदर में भगवान् का प्रवेश । भग-
वान् के अवतार के समय देवताओं द्वारा पुष्प वृष्टि । वसु-
देव देवकी द्वारा भगवान् की स्तुति । देवकी के प्रति भगवान्
का वचन । गोकुल में जाकर वसुदेव द्वारा यशोदा के गृह
में पुत्रकी स्थापना कर कन्या को लाना । बालक का रोना
सुन कर देवकी के पुत्र जन्म का दूतों द्वारा वर्णन । कारा-
गार में कंस का आगमन । बलात्कार से कंस द्वारा रोती
हुई देवकी से कन्या का आकर्षण तत्पश्चात् माया का स्वर्ग
गमन ।

१८३ कंसविचारकथनम् ।

१०७८

अशान्त कंस द्वारा प्रलम्बादि दैत्यों की कन्या का वृत्तान्त

कृष्ण । कंस ने दैत्यों की बालकों के मारने का आदेश दिया । कंस ने वसुदेव देवकी के बन्धन को खोल कर उन्हें शान्ति करवाई ।

१८४ श्रीकृष्णबालचरितवर्णनम् ।

१०७६

मथुरा में ही नन्द के पास वसुदेव का जाना । वसुदेव और नन्द का प्रेम संवाद । वसुदेव की आज्ञा से नन्दादि गोपों का गोकुल में आना । कृष्ण के द्वारा पूतना का वध । गोपुच्छादि से कृष्ण की रक्षा । नन्द ने कृष्ण का स्वस्ति-वाचन करवाया । बालक के चरण प्रहार से शकट (गाड़ी) का गिरना । उससे गोपियों का आश्चर्य । तदनन्तर यशोदा द्वारा शकट की पूजा । वसुदेव से प्रेरित गर्ग द्वारा गुप्त रूप से बालकों का नामकरण । बाललोला का वर्णन । यमलार्जुन का उद्धार । उत्पातों के भय से गोप गोपियों का वृन्दावन प्रवेश । वृन्दावन को शोभा का वर्णन । बालकों की क्रीडा का वर्णन ।

१८५ कालीयदमनाख्यानम् ।

१०८५

बलराम के बिना गोपों के साथ कृष्ण का कालीयहृद् पर आगमन । उसको विषयुक्त देख कर कृष्ण का कालीयहृद् में कूटना । वहाँ पर सपरिवार कालीय का आगमन एवं कृष्ण को डँसना । गापियों का चित्राप । नन्दादिकों के दुःख को सुझाने के लिए बलदेव का कृष्ण के प्रति स्फुट-

करण । नागपत्नी द्वारा कृष्ण की स्तुति । कालीय द्वारा कृष्ण की स्तुति । समुद्र में जाने के लिये कालीय के प्रति कृष्ण की आज्ञा । सपरिवार कालीय का समुद्र के प्रति गमन । कृष्ण का हृद् से बाहर आना ।

६ धेनुकवधारुयानम् । १०६१

गोपों के साथ बलराम और कृष्ण का ताल बन के प्रति जाना । ताल फल की इच्छा से गोपों का रामकृष्ण के प्रति विज्ञापन । रामकृष्ण द्वारा तालफल को गिराना । धेनुकासुर द्वारा रामकृष्ण के वक्षस्थल का ताड़न । कृष्ण द्वारा धेनुकासुर का वध ।

१८७ रामकृष्णकृतबहुविधलीलावर्णनम् १०६३

बाह्यबाहक लक्षण खेल के मिथ से बलदेव द्वारा प्रलम्बासुर का वध । गोपों द्वारा बलराम की प्रशंसा । ब्रज के प्रति गमन । शरद् का वर्णन । गोवर्धनलीला का वर्णन ।

१८८ गोवर्धनारुयानवर्णनम् ११००

कृष्ण द्वारा गोवर्धन पर्वत का उद्धार और इन्द्र का मान भंग । इन्द्र द्वारा कृष्ण स्तुति । कृष्ण को गोविन्द नामकी प्राप्ति । इन्द्र द्वारा अर्जुन के विषय में प्रार्थना । इन्द्र और कृष्ण का अपने २ स्थान में जाना ।

१८९ अरिष्टवधनिरूपणम् ११०४

रासक्रीड़ा का वर्णन और अरिष्टासुर का वध ।

१६७ केशिवधनिरूपणम्

११११

कंस और नारद का सम्वाद । बलराम और कृष्ण को लाने के लिये कंस का अक्रूर की भेजना । बलराम और कृष्ण को मारने के लिये कंस की मलयुद्धयोजना । कृष्ण के वध के लिये केशि का वृन्दावन जाना । केशि के शब्दों से गोपों को भय । कृष्ण द्वारा केशि वध । नारदकृत कृष्णवर्णन ।

१६१ अक्रूरगमनवर्णनम्

१११६

अक्रूर का गोकुल गमन । अक्रूर द्वारा कृष्ण का वर्णन ।

१६२ अक्रूरप्रत्यागमनवर्णनम्

११२०

अक्रूर द्वारा कृष्ण को नमस्कार । अक्रूर द्वारा कंस की उक्ति का कथन । कंस के वध के लिये कृष्ण की उक्ति । मथुरा के लिये राम कृष्ण और अक्रूर का गमन । कृष्ण के गमन से दुःखित गोपियों का परस्पर संभाषण । यमुना जल में अक्रूर को भगवान् के दर्शन । अक्रूर द्वारा कृष्ण स्तुति । कृष्ण और अक्रूर का संवाद । मथुरा में बलराम और कृष्ण का पराक्रमवर्णन ।

१६३ कुञ्जोद्धारवर्णनम् । कंसवधनिरूपणम्

११२६

कुञ्जा के प्रति कृष्ण का कथन । कृष्णकृत अनुग्रह वर्णन । बलराम और कृष्ण को मारने के लिये चाणूर व मुष्टिक को कंस की आज्ञा । नागरिकों द्वारा बलराम और कृष्ण का

वर्णन । कृष्ण और बाणूर का युद्ध । मुष्टिक और कलराम का युद्ध । बाणूर और मुष्टिक का वध । कंस वध । वसुदेव द्वारा भगवत्स्तुति ।

१६४ देवकीवसुदेवाभ्यां सह कृष्णसंवादः ११३६

देवकी और वसुदेव के साथ कृष्ण का संवाद । कृष्ण द्वारा कंस की पत्नी का समाधान । कृष्ण द्वारा उग्रसेन का राज्याभिषेक । उग्रसेन को सुधर्मा नामक सभा की प्राप्ति । बलदेव और कृष्ण को गुरु सांदीपनि द्वारा अस्त्रप्रदान । सांदीपनि को पुत्रप्राप्ति ।

१६५ जरासन्धेन सह रामजनार्दनयुद्धवर्णनम् ११४२

जरासंध के साथ रामजनार्दन का युद्ध । जरासंध का तिरस्कार । जरासंध का युद्ध के लिये फिर आना । जरासंध की पराजय ।

१६६ कालयवनोपाख्यानम् ११४४

कालयवन की उत्पत्ति का वर्णन । कालयवन द्वारा यादवों का नाश । यादवों की रक्षा के लिये कृष्ण द्वारा द्वारका का निर्माण । मुचुकुन्द द्वारा कालयवन का नाश । मुचुकुन्द द्वारा भगवत्स्वरूप का वर्णन ।

१६७ गोकुले बलप्रत्यागमनवर्णनम् ११४६

मुचुकुन्द को भगवान् का वर प्रदान । तप के लिये मुचुकुन्द

का गन्धमादन के प्रति गमन । बलदेवजी का गोकुल में आना ।

११८ हलक्रीडावर्णनम् ११५१

वरुण और वारुणी का संवाद । यमुना और बलदेवजी का संवाद । बलदेवजी का मथुरा में गमन ।

११९ रुक्मिणीविवाहवर्णनम् ११५३

कृष्ण द्वारा रुक्मिणी का हरण । कृष्ण से रुक्मी को पराजय । रुक्मिणी विवाह एवं प्रद्युम्न की उत्पत्ति ।

२०० प्रद्युम्नारूपानवर्णनम् ११५५

शम्बरसुर द्वारा प्रद्युम्न का हरण । शम्बर का प्रद्युम्न को समुद्र में फेंकना । मत्स्य के उदर से शम्बर की स्त्री को प्रद्युम्न की प्राप्ति । शम्बर की स्त्री से नारद का संवाद । शम्बर और प्रद्युम्न का युद्ध । शम्बर का वध । द्वारका में प्रद्युम्न का आगमन । श्रीकृष्ण नारद संवाद ।

२०१ अनिरुद्धविवाहे रुक्मिवधनिरूपणम् ११५८

रुक्मिणी के पुत्रों के नाम । कृष्ण की स्त्रियों के नाम । अनिरुद्ध का विवाह । रुक्मी और बलदेव का द्यूत वर्णन । बलदेव द्वारा रुक्मी का वध ।

२०२ नरकवधवर्णनम् ११६२

इन्द्र का द्वारका में आना । इन्द्र द्वारा नरकासुर की चेष्टा का वर्णन । ज्योतिषपुर के प्रति कृष्ण का गमन । कृष्ण

द्वारा मुरदेव का वध । कृष्ण द्वारा नरकासुर का वध ।
पृथ्वी द्वारा कृष्ण को कुण्डल दान । अदितिको कुण्डल
देने के लिये भगवान् का स्वर्गगमन ।

२०३ अदितिकृता भगवत्स्तुतिः ११६६

पारिजातहरणवर्णनम् । शक्रस्तववर्णनम्

अदितिकृत भगवत्स्तुति । कृष्ण और अदिति का संवाद ।
सत्यमामाके वचनसे कृष्ण द्वारा कल्पवृक्ष का लाना ।
वनपालों के साथ श्रीकृष्ण का संवाद । वनपालों को
सत्यमामा की गर्वोक्ति । देवताओं के साथ श्रीकृष्ण का
युद्ध । इन्द्र के साथ सत्यमामा का संवाद । इन्द्र द्वारा
भगवद्वर्णन ।

२०४ इन्द्रकृष्णसंवादवर्णनम् ११७४

इन्द्र के साथ श्रीकृष्ण का संवाद । द्वारका में भगवान् का
आगमन । कल्पवृक्ष का वर्णन ।

२०५ अनिरुद्धचरित्रवर्णनम् । बाणयुद्धवर्णनम् । ११७५

रुक्मिणी आदि स्त्रियोंके पुत्र एवं पौत्रोंके नामोंका वर्णन । उषा
और अनिरुद्ध के विवाह का कथन । बाणासुर की लड़की
उषा का गौरी से संवाद । चित्रलेखा की लेखनकला
की चतुरता का वर्णन ।

२०६ बाणयुद्धवर्णनम् ११७६

भगवान् शंकर के साथ बाणासुर का संवाद और युद्ध के

लिये प्रार्थना । उषा के अन्तःपुर में बिजलेका द्वारा अनिरुद्ध का लाना । बाणासुर और अनिरुद्ध का युद्ध । अनिरुद्ध का बन्धन । कृष्ण और बलदेव का युद्ध के लिये आना । बाणासुर के साथ भगवान् का युद्ध । भगवान् और शंकर का युद्ध । हरिहर संवाद । भगवान् का सपत्नीक अनिरुद्ध के साथ द्वारका में आना ।

२०७ पौण्ड्रकवधवर्णनम्

११८४

काशिराज पौण्ड्रक के दूत का द्वारका में आगमन । दूत के साथ कृष्ण का संवाद । श्रीकृष्ण के साथ पौण्ड्रक का युद्ध । पौण्ड्रक का वध । शंकर के वरदान से काशिराज के पुत्र द्वारा कृत्या का उत्पादन । सुदर्शन चक्र के भय से कृत्या का वाराणसी में प्रवेश । चक्र द्वारा वाराणसी का दाह पश्चान् चक्र का कृष्ण के हाथ में घापिस आना ।

२०८ बलदेवमाहात्म्यवर्णनम्

११८६

व्यास और ऋषियों के संवाद में बलदेवजी के पराक्रम का वर्णन । साम्ब द्वारा दुर्योधन की कन्या का हरण । दुर्योधनादिकों द्वारा साम्ब का बन्धन । बलदेवजी का हस्तिनापुर में आगमन । कौरवों के साथ बलदेव का संवाद । बलदेव कृत हस्तिनापुर का आकर्षण । कौरवों द्वारा बलदेव की प्रार्थना ।

२०६ द्विविदवानरवधवर्णनम् ११६३

व्यासजी और ऋषियों का संवाद । बलदेव कृत द्विविद-
वानर वध ।

२१० भूमिभारावतरणकथनम् । यादवकुलसंहार- ११६६
वर्णनम् ।

व्यासजी और ऋषियों के संवाद में भूमि के भारावतरण का
कथन । यादव कुल के उपसंहार का वर्णन । भगवान् का
द्वारका त्याग तथा निजधाम गमन । यादवों के शाप का
हेतु कथन । देवताओं द्वारा भेजे हुए दूत का आगमन तथा
कृष्ण के साथ संवाद । महोत्पातों के शमन के लिये यादवों
का प्रभास में जाना । भगवान् का उद्धव के साथ संवाद ।
यादवों का नाश वर्णन ।

२११ कृष्णमानुषोत्सर्गकथनम् १२०२

भगवान् की कृपा से लुब्धक (व्याध) का स्वर्ग गमन ।

२१२ रुक्मिण्यादीनां परलोकगमनम् १२०४

आभीरार्जुनसंवाद कथनम् । आभीरार्जुनयुद्धवर्णनम् ।

अर्जुनविषादकथनम् । व्यामार्जुनसंवादकथनम् ।

अष्टावक्राख्यानम् ।

रुक्मिणी आदि रानियों का स्वर्गारोहण । आभीर और

अर्जुन का संवाद एवं युद्ध । अर्जुन की पराजय । म्लेच्छों द्वारा श्रेष्ठ स्त्रियों का हरण । अर्जुन के विषाद का वर्णन । व्यासजी और अर्जुन के संवाद में व्यासजी द्वारा अर्जुन का समाधान । अष्टावक्र के आख्यान का वर्णन । अष्टावक्र के तप का वर्णन । तिलोत्तमा रम्भा आदि अप्सराओं द्वारा अष्टावक्र की प्रशंसा । रम्भा को पुरुषोत्तम पति प्राप्ति रूप अष्टावक्र का वर प्रदान । जल से बाहर आये मुनि के शरीर का टेढ़ापन देख कर रम्भा द्वारा हास्य । रम्भा के हास्यसे कुपित मुनिका शाप पश्चात् प्रसन्न होकर वरप्रदान । सबान्धव पाण्डवों का महाप्रस्थान । परीक्षित् को राज्य दान तदुपरान्त वनगमन । कृष्ण चरित्र की समाप्ति कथन ।

२१३ वराहावतारवर्णनम् । नृसिंहावतारवर्णनम् १२२४

वामनावतारवर्णनम् । दत्तात्रेयावतारवर्णनम् ।

परशुरामावतारवर्णनम् । रामावतारवर्णनम् ।

विष्णोः प्रादुर्भावानुकीर्तनम् ।

वराह अवतार का वर्णन । वराहरूपी परमेश्वर के शरीर के अङ्गों का वर्णन । यज्ञवराह कृत पृथ्वी का उद्धारण । नृसिंह अवतार का वर्णन । हिरण्यकशिपु के तप का वर्णन एवं वरप्रदान । ब्रह्मा के साथ देवताओं का भगवान् के पास गमन । देवताओं द्वारा भगवान् की स्तुति । भगवान् का नृसिंह रूप में अवतरित होना । नृसिंह भगवान् द्वारा

हिरण्यकशिपु का वध । वामन अवतार का वर्णन । दैत्यों की नामावली का कथन । दत्तात्रेय के अवतार का वर्णन । परशुराम के अवतार का वर्णन । संक्षेप से श्रीराम चरित्र का वर्णन । श्रीकृष्णवतार वर्णन । कल्कि अवतार का वर्णन । भगवान् के अवतारों के चरित्रों का श्रवण एवं पठन का फल ।

२१४ नरकाणां वर्णनम् । यमयात्रावर्णनम् १२३३

नरकों के नाम तथा वर्णन । देहत्याग का वर्णन ।

तस्यान्ते च स्वयं प्राणैरनिच्छन्नपि मुच्यते ।

जलमग्निर्विशं शास्त्रं क्षुद्राग्निः पतनं गिरैः ॥

निमित्तं किञ्चिदासाद्य देही प्राणैर्विमुच्यते ।

विहाय सुमहत्कृत्स्नं शरीरं पाञ्चभौतिकम् ॥

ऊष्मा प्रकुपितः काये तीव्रवायुसमीरितः ।

मिनत्ति मर्मस्थानानि दीप्यमानो निरन्धनः ॥

उदानो नाम पवनस्ततश्चोर्ध्वं प्रवर्तते ।

भुज्यता (काना) मम्बुमक्ष्याणामधोगतिनिरोधकृत् ॥

ततो येनाम्बुदानानि कृतान्यन्नरसास्तथा ।

दत्ताः स तस्यामाहादमापदि प्रतिपद्यते ॥

यमदूतों का वर्णन । धार्मिक एवं पापीजनों का वर्णन ।

यमपुरी का वर्णन एवं पुरो के द्वारों का वर्णन ।

२१५ दक्षिणमार्गवर्णनम्, नरकगतपृथग्यातना- १२४६
वर्णनम् ।

(८६)

दक्षिण मार्ग से जाने वाले प्राणियों के दुःखों का वर्णन ।
चित्रगुप्त द्वारा पापियों का वर्णन । भयंकर नरकों का वर्णन ।
अनेक प्रकार के पापों का वर्णन । पापों के अनुरोध से
नरक प्राप्ति कथन ।

२१६ नरकगतदुःखनिवारणाय धर्माचरणवर्णनम् । १२६०
धार्मिकाणां सुगतिनिरूपणम्

नरकों के दुःख निवारण के लिये मुनियों द्वारा व्यास के
प्रति प्रश्न । व्यासजी द्वारा धर्म के आचरण से सुगति
प्राप्ति का वर्णन ।

प्राणान्त्यजनि यो मय्यः स्मरन्विष्णुं सनातनम् ।

यानेनार्कप्रकाशेन याति धर्मपुरं नरः ॥

सर्वतार्थेषु यत्पुण्यं सर्वयज्ञेषु यत्फलम् ।

अमांसभक्षणे विप्रास्तश्च तच्छ च तत्समम् ॥

ये तु तं धर्मराजानं नराः पुण्यानुभावतः ।

पश्यन्ति सौम्यमनसं पितृभृतमिवाऽऽत्मनः ॥

तस्माद्धर्मः सेवितव्यः सदा मुक्तिफलप्रदः ।

धर्माद्धर्मस्तथाकामो मोक्षश्चपरिणीत्यते ॥

धर्मोमाता पिताभ्राता धर्मोनाथःसुहृत्तथा ।

धर्मः स्वामी सखागोप्ता तथा धाता च पोषकः ॥

धर्मस्तु सेवितोविप्रास्त्रायते महतोभयात् ।

देवत्वं च द्विजत्वं च धर्मात्प्राप्नोत्यसंशयम् ॥

ये नरा नरकध्वंसिवासुदेवमनुव्रताः ।
ते स्वप्नेऽपि न पश्यन्ति यमं वा नरकार्णवम् ॥
कर्मणा मनसा वाचा येऽच्युतं शरणंगताः ।
न समर्थो यमस्तेषां ते मुक्तिफलभागिनः ॥

२१७ धर्मश्रेष्ठ्यवर्णनम् । शरीरोत्पत्तिकथनम् । १२६६
पुण्यपापानुरोधेन नानायोगिपूजनवर्णनम् ।

धर्म की श्रेष्ठता का वर्णन । शरीर की उत्पत्ति का वर्णन ।
पुण्य एवं पाप के अनुरोध से अनेक योनियों में जनन वर्णन ।
तदनन्तर पापपुण्य का वर्णन ।

२१८ अन्नदानप्रशंसावर्णनम् १२८१
शुभप्राप्ति विषयक मुनियों का व्यास के प्रति प्रश्न । अन्नकी
प्रशंसा । अन्नदान से शुभ प्राप्ति का कथन ।

नरःकृत्वाऽप्यकर्माणि ततो धर्मेण युज्यते ।
सर्वेषामेव दानानामन्नंश्रेष्ठमुदाहृतम् ॥
सर्वमन्नं प्रदातव्यमृजुनाधर्ममिच्छता ।
प्राणाह्यन्नं मनुष्याणां तस्माज्जन्तुःप्रजायते ॥
अन्ने प्रतिष्ठिता लोकास्तस्मादन्नं प्रशस्यते ।
अन्नमेव प्रशंसन्ति देवर्षिपितृमानवाः ॥
अन्नस्य हि प्रदानेन स्वर्गमाप्नोति मानवः ।
न्यायलब्धं प्रदातव्यं द्विजातिभ्योऽन्नमुत्तमम् ॥

२१६ श्राद्धविधिवर्णनम्

१२८४

श्राद्धविधिका निरूपण । पितरैश्वरों के साथ चन्द्रमा की कन्या का संवाद । चन्द्रमा का पितरों को शाप । सोमजा का कोका नामक नरी बनना । पितरों द्वारा भगवान की स्तुति । पितरों के उद्धार का कथन । अग्निकरण और पिण्डदान की विधि ।

२२० श्राद्धकल्पवर्णनम्

१२८६

श्राद्धकल्प का वर्णन । प्रतिपद् आदि तिथि क्रमसे श्राद्ध करने का फल कथन । सपिण्डोकरण का विधान । श्राद्ध में ब्राह्मण विचार । पिण्डदान कथन ।

२२१ सदाचारवर्णनम् । भक्ष्याभक्ष्यवर्णनम्

१३१६

सदाचार का कथन ।

गृहस्थेन सदा कार्यमाचारपरिरक्षणम् ।

न ह्याचारविहीनस्य भद्रमत्र परत्र वा ॥

दुराचारो हि पुरुषो नेहाऽऽयुर्विन्दते महन् ।

कार्यो धर्मः सदाचार आचारस्यैव लक्षणम् ॥

धर्म वर्णन । मलादिकों की त्याग विधिका वर्णन एवं आचमन विधि । अनध्याय कथन । कन्या वर्णन तथा ऋतुकाल में गमनप्रकार । देव पूजा कथन । देवता तथा पितरोंके तर्पण का वर्णन । वैश्वदेव का विधान । विप्रों के बसने योग्य देशों का वर्णन । सूतक का विचार ।

२२२ वर्णाश्रमधर्मवर्णनम्

१३३२

व्यास और मुनियों के संवाद में वर्णधर्म का कथन ।

भृत्यादिभरणार्थाय सर्वेषां च परिग्रहाः ।

ऋतुकालाभिगमनं स्वशरैषु द्विजोत्तमाः ॥

दया समस्तभूतेषु तितिष्ठा नाभिमानिता ।

सत्यं शौचमनायासो मङ्गलं प्रियवादिता ॥

मैत्री चेवास्पृहा तद्वदकार्पण्यं द्विजोत्तमाः ।

अनसूया च सामान्या वर्णानां कथिता गुणाः ॥

२२३ संकरजातिलक्षणवर्णनम्

१३३८

उमा महेश्वर संवाद में ब्राह्मणों को शूद्रत्वप्राप्ति कथन ।

शूद्रादिकों को उत्तम गति प्राप्ति कथन ।

शूद्रोऽप्यागमसंपन्नो द्विजो भवति संस्कृतः ।

ब्राह्मणो वाऽप्यसद्वृत्तः सर्वसंकरभोजनः ॥

स ब्राह्मण्यं समुत्सृज्य शूद्रो भवति तादृशः ।

कर्मभिः शुचिभिर्देवी शुद्धात्मा विजितेन्द्रियः ॥

२२४ उमामहेश्वरसंवादे मानवानामुत्तमगतिप्राप्ति-

वर्णनम्

१३४५

उमा महेश्वर संवाद में मनुष्यों को उत्तम गति प्राप्ति का

वर्णन । स्वर्ग प्राप्ति के हेतुभूत धर्म का कथन ।

आत्महेतोः परार्थे वा अधर्माश्रितमेव च ।

ये मृषा न वदन्तीह ते नराः स्वर्गगामिनः ॥

वृत्त्यर्थं धर्महेतोर्वा कामकारास्तथैव च ।
 अनृतं ये न भाषन्ते ते नराः स्वर्गगामिनः ॥
 श्लक्ष्णां वाणीं स्वच्छवर्णां मधुरां पापवर्जिताम् ।
 स्वागतेनाभिभाषन्ते ते नराः स्वर्गगामिनः ॥
 परुषं ये न भाषन्ते कटुकं निष्ठुरं तथा ।
 न पैशुन्यरताः सन्तस्ते नराः स्वर्गगामिनः ॥
 न कोपाद्व्याहरन्ते ये वाचं हृदयदारिणीम् ।
 शान्तिं चिन्दन्ति ये क्रुद्धास्ते नराः स्वर्गगामिनः ॥
 अरण्ये विजने न्यस्तं परस्त्वं दृश्यते यदा ।
 मनसाऽपि न गृह्णन्ति ते नराः स्वर्गगामिनः ॥
 तथैव परदारान्ये कामवृत्ता रहोगताः ।
 मनसाऽपि न हिंसन्ति ते नराः स्वर्गगामिनः ॥
 अवैरा ये त्वनायासा मैत्रचित्तरताः सदा ।
 सर्वभूतदयावन्तस्ते नराः स्वर्गगामिनः ॥

कर्म के फलोदय का फल कथन ।

पापेन कर्मणा देवि युक्तो हिंसादिभिर्यतः ।
 अहितः सर्वभूतानां होनायुरुपजायते ॥
 शुभेन कर्मणा देवि प्राणिघातविषर्जितः ।
 निक्षिप्तशस्त्रो निर्दण्डो न हिंसन्ति कदाचन ॥
 न घातयति नो हन्ति घ्नन्तं नैवानुमोदते ।
 सर्वभूतेषु सस्नेहो यथाऽऽत्मनि तथा परे ॥

ईदृशः पुरुषो नित्यं देवि देवत्वमश्नुते ।

उपपन्नान् सुखान् भोगान् सदाऽश्नाति मुदायुतः ॥

- २२५ उमामहेश्वरसंवादे देवलोकप्राप्तिकारणकथनम् १३५१
 कृपणादीनां नरकप्राप्तिकथनम् ।
 स्वधर्मनिरतानां वर्णनम् ।

उमामहेश्वर के संवाद में देवलोक प्राप्ति का कथन । कृपणा-
 दिकों को नरक प्राप्ति का वर्णन । स्वधर्मरत प्राणियों का
 वर्णन । पाप में रत प्राणियों को नरक प्राप्ति का कथन ।

- २२६ मुनिमहेश्वरसंवादे वासुदेवमहिमवर्णनम् १३५७
 मुनि महेश्वर संवाद में वासुदेव भगवान् की महिमा एवं
 भगवत् स्वरूप का वर्णन । मनु के वंश का वर्णन । व्यासजी
 और मुनियों के संवाद में कृष्णपूजा के फल का कथन ।
 २२६ (द्वि०) मुनिव्याससंवादे विष्णुपूजाकथनम् १३६४
 वैष्णवानां गतिवर्णनम्

व्यास और मुनियों के संवाद में विष्णु भगवान् की पूजा
 का वर्णन ।

- २२७ व्यासमुनिसंवादे विष्णुपूजाकथनम् । १३६६
 चाण्डालराक्षससंवादवर्णनम् । उर्वशीमूर्खसंवादकथनम्

विष्णु भगवान् के जागरणमें भगवद्भजन का फल । चाण्डाल और राक्षस का संवाद ।

धर्मार्थकाममोक्षाणां शरीरं साधनं यतः ।

महता तु प्रयत्नेन शरीरं पालयेद्बुधः ॥

जीवधर्मार्थसुखं नरस्तथाप्नोति मोक्षगतिमग्याम् ।

जीवन्कीर्तिमुपैति च भवति मृतस्य का कथालोके ॥

सत्य की प्रशंसा :—

सत्येनार्कः प्रतपति सत्येनाऽऽपो रसात्मिकाः ।

ज्वलत्यग्निश्च सत्येन घाति सत्येन मारुतः ॥

धर्मार्थकामसंप्राप्ति मोक्षप्राप्तिश्च दुर्लभा ।

सत्येन जायते पुंसां तस्मात्सत्यं न संत्यजेत् ॥

सत्यं ब्रह्म परंलोके सत्यं यज्ञेषु चात्तमम् ।

सत्यं स्वर्गसमायातं तस्मात्सत्यं न संत्यजेत् ॥

जागरण की पुण्य प्राप्ति के लिये राक्षस द्वारा मातङ्ग की प्रार्थना । ब्रह्मराक्षस के पूर्वजन्म का कथन एवं राक्षसत्व की प्राप्ति । चाण्डाल के पूर्वजन्म का कथन । मूर्ख ब्राह्मण और उर्वशी का संवाद । शकटदान का माहात्म्य ।

२२८ व्यासमुनिसंवादे विष्णुभक्तिहेतुकथनम् १३८५

भगवन्माया वर्णनम् । कामदमनाख्यानम् ।

व्यास और मुनियोंके संवादमें विष्णुभक्तिका हेतु कथन ।

सूर्यादि देवोंकी आराधना कथन । भगवान्की मायाका

कथन । कामदमनका आख्यान । कपालमोहन तीर्थको
उत्पत्ति वर्णन । कामदमनका स्वर्गगमन ।

२२६ व्यासमुनिसंवादे महाप्रलयवर्णनम् १३६८

कलिस्वरूपवर्णनम् । कलिगत भविष्यकथनम् ।

व्यास और मुनियोंके संवादमें महाप्रलयका वर्णन । कलि
के स्वरूप का वर्णन । कलियुग में भविष्य का वर्णन ।

तपसो ब्रह्मचर्यस्य जपादेश्च फलं द्विजाः ।

प्राप्नोति पुरुषस्तेन कलौ साधिवति भाषितम् ॥

ध्यायन्कृते यजन्यज्ञैस्त्रेतायां द्वापरेऽर्चयन् ।

यदाप्नोति तदाप्नोति कलौ संकीर्त्य केशवम् ॥

धर्मोत्कर्षमतीवात्र प्राप्नोति पुरुषः कलौ ।

स्वल्पायासेन धर्मज्ञास्तेन तुष्टोऽस्यहं कलौ ॥

२३० व्यासमुनिसंवादे द्वापरयुगान्तकथनम् । १४०६

भविष्यकथनम्

व्यास और मुनियोंके संवादमें द्वापर युगके अन्त का
कथन । नष्ट धर्मके निमित्त कारण । भविष्य कथन ।

अशिष्टवन्तोऽर्थपरा नरा मद्यामिषप्रियाः ।

मित्रभार्या भजिष्यन्ति युगान्ते पुरुषाधमाः ॥

राजवृत्तिस्थिताश्चौरा राजानश्चौरशीलिनः ।

भृत्या ह्यनिर्दिष्टभुजो भविष्यन्ति युगक्षये ॥

सर्वे ब्रह्म वदिष्यन्ति । द्विजा धाजसनेयिकाः ।

शूद्राभा वादिनश्चैव ब्राह्मणाश्चान्यवासिनः ॥

दन्ता जिताक्षाश्च मुण्डाः काषायवाससः ।

शूद्रा धर्मं वदिष्यन्ति शाठ्यबुद्ध्योपजीविनः ॥

आयुस्तत्र च मर्त्यानां परं त्रिशद्भविष्यति ।

दुर्बला विषयगलाना जराशोकैरभिप्लुताः ॥

२३१ व्यास-मुनिसंवादे प्राकृतप्रतिमंचरकथनम् । १४१५

कल्पमानकथनम्

व्यासजी और मुनियों के संवाद में प्राकृतलय का कथन ।

कल्पका मान कथन । नैमित्तिकलय का स्वरूप कथन ।

२३२ प्राकृतलयनिरूपणम् १४१६

प्राकृतलय का स्वरूप कथन ।

२३३ आत्यन्तिकलय निरूपणम् १४२४

आत्यन्तिकलय का निरूपण । आध्यात्मिकादि तीनों तीर्थोंका कथन । शिरदर्द, जुकाम खाँसी आदि आध्यात्मिक तापका निरूपण । काम क्रोधादि मानसिक तापका निरूपण । मृग पक्षि आदिकोसे हानेवाले आधिर्भौतिक तापका वर्णन । गर्भ, जन्म, वृद्धावस्था आदिसे उत्पन्न आधि-दैविक तापका कथन । गर्भमें स्थित प्राणीकी दुःखावस्था का निरूपण । बाल अवस्था, वृद्धावस्था और मरणावस्था का वर्णन । पाप कर्मों से नरक प्राप्ति का कथन एवं मुक्ति और ज्ञान की महिमा का वर्णन ।

२३४ योगाभ्यास निरूपणम्

१४३२

योगाभ्यास का वर्णन ।

युक्तनिद्रो जितक्रोधः सर्वभूतहिने रतः ।
सर्वद्वन्द्वसहोर्ध्वरः समकायाङ्घ्रिमस्तकः ॥
नाभौ निधाय हस्तौ द्वौ शान्तः पद्मासने स्थितः ।
संस्थाप्य दृष्टिं नासाग्रे प्राणानायस्य चाग्रतः ॥

२३५ सांख्ययोग निरूपणम्

१४३७

विस्तार से योग और सांख्य का वर्णन ।

सर्वभूतेषु चाऽऽत्मानं सर्वभूतानि चाऽऽत्मनि ।
यदा पश्यति भूतात्मा ब्रह्म संपद्यते तदा ॥
यावानात्मनि वेदाऽऽत्मा तावानात्मा परात्मनि ।
य एवं सततं वेदं स्मृत्स्मृतत्वाय कल्पते ॥

२३६ ज्ञानिनां मोक्षप्राप्ति निरूपणम्

१४४२

ज्ञानियों को मोक्ष प्राप्ति का निरूपण एवं कर्म करने वालों
को कर्मानुसार स्वर्गादिलोकों की प्राप्ति का वर्णन । आका-
शादि पञ्चमहाभूतों के गुणों का वर्णन ।

२३७ गुणसर्जनकथनम् । सर्वधर्मविशिष्टधर्मनिरूपणम् १४५१

गुणों की रचना का वर्णन । विद्वान् को अभय और मूर्ख
को भय की प्राप्ति का वर्णन । सब धर्मों में विशिष्ट धर्म
का वर्णन । क्षमादि से क्रोधादिका नाश बताया है ।

परित्यज्य निषेवेत यथाद्योगसाधनात् ।

ध्यानमध्ययनं दानं सत्यंहीराज्वं क्षमा ॥

शौचमाचारतः शुद्धिरिन्द्रियाणां च संयमः ।

एतैर्विबर्धते तेजः पाप्मानमुपहन्ति च ॥

२३८ योगविधिनिरूपणम्

१४५८

योग विधि का निरूपण । योग और सांख्य के मत को जानने वालों की दया आदि आचरणों की समानता का कथन । विशेषता से योगी की प्रशंसा का वर्णन । योगी के आहार का वर्णन ।

कणानां भक्षणे युक्तः पिण्याकस्य च भो द्विजाः ।

स्नेहानां वर्जने युक्तो योगी बलमवाप्नुयात् ॥

भुजानो यावत् रुक्षं दीर्घकालं द्विजोत्तमाः ।

एकाहारी विशुद्धात्मा योगी बलमवाप्नुयात् ॥

कामादि सम्पूर्ण शत्रुओं के जय का वर्णन । योग के अभ्यास से नारायण पद की प्राप्ति ।

२३९ सांख्यविधिनिरूपणम्

१४६४

सांख्य विधि का निरूपण । मनुष्यादिकों के विषयज्ञान का कथन । सांख्य ज्ञान को महिमा का वर्णन । सांख्य योग से ब्रह्मजनों की उत्तम कुल में उत्पत्ति ।

२४० वशिष्ठकरालजनकसंवादे क्षराक्षर विचार-

निरूपणम्

१४७६

क्षर (माशवान) और अक्षर (भ्रव) का वर्णन । मुनिर्या

द्वारा व्यासजी की प्रशंसा । वशिष्ठ और करालजनक का संवाद । संसार का क्षरत्व से प्रतिपादन और ईश्वर का अक्षरत्व से प्रतिपादन किया है । चौबीस तत्त्वों का वर्णन एवं तामसादिकों को नरक प्राप्ति तथा निर्गुण को मोक्ष प्राप्ति का कथन ।

२४१ वशिष्ठकरालजनकसंवादवर्णनम् १४८५

वशिष्ठ करालजनक का संवाद । क्षर और अक्षर का ज्ञान नहीं होने से बहुविध जन्मों की प्राप्ति । अभिमानी पुरुषों को बहुत से साधनों का कथन ।

२४२ वशिष्ठप्रति मोक्षधर्मविषयको जनकप्रश्नः १४८७

वशिष्ठ के प्रति मोक्ष धर्म के विषय में जनक का प्रश्न । ग्रन्थ के अर्थ ज्ञान के बिना ग्रन्थ का धारण केवल भार के लिये ही है इस प्रकार वर्णन किया है । ग्रन्थ के तत्त्वों को नहीं जान कर जो लोभ से विषाद करता है उसको नरक की प्राप्ति ।

यो हि वेदे च शास्त्रे च ग्रन्थधारणतरपरः ।

न च ग्रन्थार्थतत्त्वज्ञस्तस्य तद्धारणं कृथा ॥

भारं स वहते तस्य ग्रन्थस्यार्थं न वेत्ति यः ।

यस्तु ग्रन्थार्थतत्त्वज्ञो नास्य ग्रन्थागमो कृथा ॥

ग्रन्थस्यार्थं स पृष्टस्तु माहुर्यो वक्ष्यमर्हति ।

यथा तत्त्वमग्निं गमनादर्थं तस्य स विन्दति ॥

न वः समुत्सुकः कश्चिदुग्रन्थार्थं स्थूलबुद्धिमान् ।
 स कथं मन्दबिज्ञानो ग्रन्थं वक्ष्यामि निर्णयात् ॥
 अज्ञात्वा ग्रन्थतत्त्वानि वार्दं यः कुरुते नरः ।
 लोभाद्वाऽप्यथवा दम्भात्स पापी नरकं व्रजेत् ॥
 निर्णयं चापि छिद्रात्मा न लब्धयति तत्त्वतः ।
 सोऽपीहास्यार्थतत्त्वज्ञो यस्मान्नैवाऽऽत्मवानपि ॥

योगलक्षणवर्णनम् , सांख्यज्ञानकथनम् १४६१
 योग के लक्षण वर्णन । सांख्य ज्ञान का कथन । क्षेत्र और
 क्षेत्रज्ञ का लक्षण ।

२४३ विद्याविद्ययोः स्वरूपकथनम् १४६५
 अक्षरअक्षरयोःपुनर्विस्तरेणवर्णनम् , अभेदेन
 सांख्य योग कथनम् ।

विद्या और अविद्या का स्वरूप कथन । क्षर और अक्षर का
 विस्तार से वर्णन । अभेद से सांख्य योग का कथन ।

२४४ अज्ञस्यापि विक्रियया नानाभवनम् १४७०
 एकत्वनानात्त्रयोर्लक्षणम् , ज्ञानविज्ञान-
 संक्षितमोक्षवर्णनम् ।

अज्ञ परमात्मा भी विकारों से अनेक रूपों में भाग होता है ।

यकत्व और नानात्व का लक्षण । ज्ञान और विज्ञान से
संज्ञित मोक्ष का वर्णन । इस ज्ञान को देने के लिये अधि-
कारी का निर्णय ।

न देयमेतच्च यथाऽनृतात्मने,
शठाय क्लीबाय न जिह्मबुद्धये ।
न पण्डितज्ञानपरोपतापिने,
देयं तथा शिष्यविबोधनाय ॥

जनक के प्रति वशिष्ठजीने कहा—मुझे यह महा ज्ञान ब्रह्माजी
से प्राप्त हुआ है । ज्ञान प्राप्ति की परम्परा का कथन ।

२४५ अस्य श्रवण पठन कर्तृणां फलप्राप्ति कथनम् १५०७
पुराण को सुनकर प्रसन्न हुए मुनियों द्वारा व्यासजी की
प्रशंसा । तदनन्तर सब मुनियों का अपने २ आश्रमों में
जाना । ब्रह्मपुराण के श्रवण पठन करनेवालों को फल
प्राप्ति का कथन ।

२४५ धर्मप्रशंसा वर्णनम् १५११
धर्म की प्रशंसा ।

धर्मेण राज्यं लभते मनुष्यः,
स्वर्गं च धर्मेण नरः प्रयाति ।
आयुश्च कीर्तिश्च तपश्च धर्म,
धृ ण मोक्षं लभते मनुष्यः ॥

(१००)

धर्मोऽत्र मातापितरौ नरस्य,

धर्मः सखा चात्र परे च लोके ।

प्राता च धर्मस्त्विह मोक्षदध,

धर्माद्वृत्ते नास्ति तु किञ्चिदेव ॥

ब्रह्मपुराण की विषय-सूची समाप्त ।

अस्माभिः शोधितं सर्वं पुराणं ब्रह्मसंज्ञितम् ।

शोधने या हि त्रुटयः क्षन्तव्यास्ता महोदयैः ॥

विद्वज्जनचरणयुगलनुरागिणः—

लक्ष्मणदुर्ग वास्तव्य ब्रह्मदत्त त्रिवेदि

नवलदुर्गामिजन कजोड़ीलालमिश्र रामनाथ दाधीवाः ।

शुभम् ।

ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु



॥ श्री गणेशाय नमः ॥

ब्रह्मपुराणम् ।

प्रथमोऽध्यायः

तत्रादौ नैमिषारण्य वर्णनम्

नारायणं नमस्कृत्य नरञ्चैव नरोत्तमम् ।

देवीं सरस्वतीञ्चैव ततो जयमुदीरयेत् ॥

यस्मात् सर्वमिदं प्रपञ्चरचितं मायाजगज्जायते,
यस्मिंस्तिष्ठति याति चास्तसमये कल्पानुकल्पे पुनः ।
यं ध्यात्वा मुनयः प्रपञ्चरहितं विन्दन्ति मोक्षं ध्रुवं,
तं वन्दे पुरुषोत्तमाख्यममलं नित्यं विभुं निश्चलम् ॥१॥
यं ध्यायन्ति बुधाः समाधिसमये शुद्धं वियत्सन्निभं,
नित्यानन्दमयं प्रसन्नममलं सर्वेश्वरं निर्गुणम् ।
व्यक्ताव्यक्तपरं प्रपञ्चरहितं ध्यानैकगम्यं विभुं,
तं संसारविनाशहेतुमजरं वन्दे हरिं मुक्तिदम् ॥ २ ॥
सुपुण्ये नैमिषारण्ये पवित्रे सुमनोहरे ।
नानामुनिजनाकीर्णे नानापुष्पोपशोभिते ॥ ३ ॥
सरलैः कर्णिकारैश्च पनसैर्ध्रुवादिरे ।
साम्राज्यभूकपितृैश्च न्यग्रोधैर्द्वेष्टदारुभिः ॥ ४ ॥

मश्वत्यैः पारिजातैश्च चन्दनागुरुपाटलैः ।
 बकुलैः सप्तपणश्च पुन्नागैर्नागकेशरैः ॥ ५ ॥
 शालेस्तालेस्तमालैश्च नारिकेलैस्तथाऽर्जुनैः ।
 अन्यैश्च बहुभिर्वृक्षैश्चस्पकाद्यैश्च शोमिते ॥ ६ ॥
 नानापक्षिगणाकीर्णं नानामृगगणैर्युते ।
 नानाजलाशयैः पुण्यैर्दीर्घिकाद्यैरलङ्कृते ॥ ७ ॥
 ब्राह्मणैः क्षत्रियैर्वैश्यैः शूद्रैश्चान्यैश्च जातिभिः ।
 वानप्रस्थैर्गृहस्थैश्च यतिभिर्ब्रह्माचारिभिः ॥ ८ ॥
 सम्पन्नैर्गोकुलैश्चैव सर्वत्र समलङ्कृते ।
 यद्यगोधूमचणकैर्माषमुद्गतिलैश्चुभिः ॥ ९ ॥
 चीनकाद्यैस्तथा मेघैः शस्यैश्चान्यैश्च शोमिते ।
 तत्र दीप्ते हुतवहे हूयमाने महामखे ॥ १० ॥
 यजतां नैमिषेयाणां सत्रे द्वादशवार्षिके ।
 आजगमुस्तत्र मुनयस्तथाऽन्येऽपि द्विजातयः ॥ ११ ॥
 तानागतान् द्विजांस्ते तु पूजां चक्रुर्यथोचिताम् ।
 तेषु तत्रोपविष्टेषु ऋत्विग्भिः सहितेषु च ॥ १२ ॥
 तत्राजगाम सूतस्तुमतिर्माँल्लोमहर्षणः ।
 तं दृष्ट्वा ते मुनिवराः पूजां चक्रुर्मुदान्विताः ॥ १३ ॥
 सोऽपि तान् प्रतिपूज्यैव संविवेश वरासने ।
 कथां चक्रुस्तदान्योन्यं सूतेन सहिता द्विजाः ॥ १४ ॥
 कथान्ते व्यासशिष्यं ते पप्रच्छुः संशयं मुदा ।
 ऋत्विग्भिः सहिताः सर्व्वे सदस्यैः सह वीक्षिताः ॥ १५ ॥

मुनय ऊचुः ।

पुराणागमशास्त्राणि सेतिहासानि सत्तम । १
जानासि देवदैत्यानां चरितं जन्म कर्म च ॥ १६ ॥
न तेऽस्त्यविदितं किञ्चिद्दे शास्त्रे च भारते ।
पुराणे मोक्ष शास्त्रे च सर्व्वज्ञोऽसि महामते ॥ १७ ॥
यथापूर्व्वमिदं सर्व्वमुत्पन्नं सचराचरम् ।
ससुरासुरगन्धर्व्वं सयक्षोरगराक्षसम् ॥ १८ ॥
श्रोतुमिच्छामहे सूत ब्रूहि सर्व्वं यथा जगत् ।
बभूव भूयश्च यथा महाभाग भविष्यति ॥ १९ ॥
यतश्चैव जगत् सूत यतश्चैव चराचरम् ।
लीनमासीत्तथा यत्र लयमेप्यति यत्र च ॥ २० ॥

लोमहर्षण उवाच ।

अविकाराय शुद्धाय नित्याय परमात्मने ।
सदैकरूपरूपाय विष्णवे सर्व्वजिष्णवे ॥ २१ ॥
नमो हिरण्यगर्भाय हरये शङ्कराय च ।
वासुदेवाय ताराय सर्गस्थित्यन्तकर्मणे ॥ २२ ॥
एकानेकस्वरूपाय स्थूलसूक्ष्मात्मने नमः ।
अव्यक्ताव्यक्तभूताय विष्णवे मुक्तिहेतवे ॥ २३ ॥
स्वर्गस्थितिविनाशाय जगतो योऽजरामरः ।
मूलभूतो नमस्तस्मै विष्णवे परमात्मने ॥ २४ ॥
आधारभूतं विश्वस्याप्यणीयांसमणीयसाम् ।
प्रणम्य सर्व्वभूतस्थमच्युतं पुरुषोत्तमम् ॥ २५ ॥

ज्ञानस्वरूपमत्यन्तं निर्मलं परमार्थतः ।
 तमेवार्थस्वरूपेण भ्रान्तिदर्शनतः स्थितम् ॥ २६ ॥
 बिष्णुं प्रसिष्णुं विश्वस्य स्थितौ स्वर्गे तथा प्रभुम् ।
 सर्वज्ञं जगतामीशमजमक्षयमव्ययम् ॥ २७ ॥
 आद्यं सुसूक्ष्मं विश्वेशं ब्रह्मादीन् प्रणिपत्य च ।
 इतिहासपुराणज्ञं वेदवेदाङ्गपारगम् ॥ २८ ॥
 सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञं पराशरसुतं प्रभुम् ।
 गुरुं प्रणम्य वक्ष्यामि पुराणं वेदसम्मितम् ॥ २९ ॥
 कथयामि यथापूर्वं दक्षाद्यै मुनिसत्तमैः ।
 पृष्टः प्रोवाच भगवानजयोनिः पितामहः ॥ ३० ॥
 शृणुध्वं सम्प्रवक्ष्यामि कथां पापप्रणाशिनीम् ।
 कथ्यमानां मया चित्रां बहूनां श्रुतिविस्तराम् ॥ ३१ ॥
 यस्त्विमां धारयेन्नित्यं शृणुयाद्वाप्यभीक्ष्णशः ।
 स्ववंशधारणं कृत्वा स्वर्गलोके महीयते ॥ ३२ ॥
 अव्यक्तं कारणं यत्तन्नित्यं सदसदात्मकम् ।
 प्रधानं पुहवस्तस्मान्निर्ममे विश्वमोश्वरः ॥ ३३ ॥
 तं बुध्यध्वं मुनिश्रेष्ठः ब्रह्माणममितीजसम् ।
 स्रष्टारं सर्वभूतानां नारायणपरायणम् ॥ ३४ ॥
 ब्रह्मकारस्तु महतस्तस्माद्भूतानि जज्ञिरे ।
 भूतमेवाश्च भूतेभ्य इति सर्गः सनातनः ॥ ३५ ॥
 विस्तरावयवं चैव यथाप्रज्ञं यथाश्रुति ।
 कीर्त्यमानं शृणुध्वं वः सर्वेषां कीर्त्तिवर्द्धनम् ॥ ३६ ॥

कीर्तितं स्थिरकीर्त्तीनां सर्व्वेशं पुण्यवर्द्धनम् ।
 ततः स्वयम्भूर्भगवान् सिसृक्षुर्विविधाः प्रजाः ॥ ३७ ॥
 अप एव ससंज्जादौ तासु वीर्य्यमयासृजत् ।
 आपो नारा इति प्रोक्ता आपो वै नरसूनवः ॥ ३८ ॥
 अयनं तस्य ताः पूर्वं तेन नारायणः स्मृतः ।
 हिरण्यवर्णमभवत्तदन्तमुदकेशयम् ॥ ३९ ॥
 तत्र जज्ञे स्वयं ब्रह्मा स्वयम्भूरिति नः श्रुतम् ।
 हिरण्यवर्णो भगवानुसित्वा परिवत्सरम् ॥ ४० ॥
 तदन्तमकरोद्ब्रह्म दिवं भुवमथापि च ।
 तयोः शकलयोर्मध्य आकाशमकरोत्प्रभुः ॥ ४१ ॥
 अप्सु पारिप्लवां पृथ्वीं दिशश्च दशधा दधे ।
 तत्र कालं मना वाचं कामं क्रोधमथो रतिम् ॥ ४२ ॥
 ससर्ज सृष्टिं तद्रूपां स्रष्टुमिच्छन्प्रजापतीन् ।
 मरोचिमग्न्यङ्गिरसौ पुलस्त्यं पुलहं क्रतुम् ॥ ४३ ॥
 वसिष्ठं च महातेजाः सोऽसृजत्सप्त मानसान् ।
 सप्त ब्राह्मण इत्येते पुराणे निश्चयं गताः ॥ ४४ ॥
 नारायणात्मकानां तु सप्तानां ब्रह्मजन्मनाम् ।
 ततोऽसृजत् पुरा ब्रह्मा रुद्रं रोषात्मसम्भवम् ॥ ४५ ॥
 सनत्कुमारं च विभुं पूर्व्वयामपि पूर्व्वजम् ।
 सप्तस्वेता अजायन्त प्रजा रुद्राश्च भो द्विजाः ॥ ४६ ॥
 स्कन्दः सनत्कुमारश्च तेजः संक्षिप्य तिष्ठतः ।
 तेषां सप्त महावंशा दिव्या देवगणान्विताः ॥ ४७ ॥

क्रियावन्तः प्रजावन्तो महर्षिभिरलङ्कृताः ।
 विद्युतोऽशनिमेघाश्च रोहितेन्द्रधनूंषि च ॥ ४८ ॥
 वयांसि च ससर्जादी पर्जन्यञ्च ससर्ज ह ।
 ऋचो यजूंषि सामानि निर्गमे यज्ञसिद्धये ॥ ४९ ॥
 साध्यानजनयद्देवानित्येवमनुसङ्गगुः ।
 उच्चावचानि भूतानि गात्रेभ्यस्तस्य जज्ञिरे ॥ ५० ॥
 आपर्वस्य प्रजासर्गं सृजतो हि प्रजापतेः ।
 सृज्यमानाः प्रजा नैव विवर्द्धन्ते यदा तदा ॥ ५१ ॥
 द्विधा कृत्वात्मनो देहमर्द्धेन पुरुषोऽभवत् ।
 अर्द्धेन नारी तस्यां तु सोऽसृजद्विविधाः प्रजाः ॥ ५२ ॥
 दिवञ्च पृथिवीं चैव महिम्ना व्याप्य तिष्ठति ।
 विराजमसृजद्विष्णुः सोऽसृजत् पुरुषं विराट् ॥ ५३ ॥
 पुरुषं तं मनुं विशान्तस्य मन्वन्तरं स्मृतम् ।
 द्वितीयं मानसस्यैतन्मनोरन्तरमुच्यते ॥ ५४ ॥
 स वैराजः प्रजासर्गं ससर्ज पुरुषः प्रभुः ।
 नारायणविसर्गस्य प्रजास्तस्याप्ययोनिजाः ॥ ५५ ॥
 आयुष्मान् कीर्त्तिमान् पूर्णप्रज्ञावांश्च भवेन्नरः ।
 आदिसर्गं विदित्वेमं यथेष्टां चाप्नुथाद्गतिम् ॥ ५६ ॥

इति श्रीब्रह्म महापुराणे आदिसर्गवर्णनं

प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥



द्वितीयोऽध्यायः ।

तत्रादौ स्वयम्भुव मनुवंश वर्णनम्

लौमहर्षण उवाच ।

स सृष्ट्वा तु प्रजास्त्वेवमापवो वै प्रजापतिः ।
लेभे वै पुरुषः पत्नीं शतरूपामयोनिजाम् ॥ १ ॥
आपवस्य महिम्ना तु दिवमावृत्य तिष्ठतः ।
धर्मेणैव मुनिश्रेष्ठाः शतरूपा व्यजायत ॥ २ ॥
सा तु वर्षायुतं तप्त्वा तपः परमदुश्चरम् ।
भर्तारं दीप्ततपसं पुरुषं प्रत्यपद्यत ॥ ३ ॥
स वै स्वायम्भुवो विप्राः पुरुषो मनुकच्यते ।
तस्यैकसप्ततियुगं मन्वन्तरमिहोच्यते ॥ ४ ॥
वैराजात् पुरुषाद्वीरं शतरूपा व्यजायत ।
प्रियव्रतोत्तानपादौ वीरात् काम्या व्यजायत ॥ ५ ॥
काम्या नाम सुता श्रेष्ठा कर्द्दमस्य प्रजापतेः ।
काम्यापुत्रास्तु चत्वारः सम्राट् कुक्षिर्विराट्प्रभुः ॥ ६ ॥
उत्तानपादं जग्राह पुत्रमत्रिः प्रजापतिः ।
उत्तानपादाच्चतुरः सूनृता सुषुवे सुतान् ॥ ७ ॥
धर्मस्य कन्या सुश्रोणी सूनृता नाम विश्रुता ।
उत्पन्ना वाज्रमेधेन ध्रुवस्य जननी शुभा ॥ ८ ॥
ध्रुवञ्च कीर्त्तिमन्तञ्च आयुष्मन्तं वसुं तथा ।
उत्तानपादोऽजनयत् सूनृतायां प्रजापतिः ॥ ९ ॥

ध्रुवो वर्षसहस्राणि त्रीणि दिव्यानि भो द्विजाः ।
 तपस्तेपे महाभागः प्रार्थयन् सुमहद्वयशः ॥ १० ॥
 तस्मै ब्रह्मा दक्षौ प्रीतः स्थानमात्मसमं प्रभुः ।
 अचलञ्चैव पुरतः सप्तर्षीणां प्रजापतिः ॥ ११ ॥
 तस्याभिमानमृद्धिञ्च मदिमानं निरोक्ष्य च ।
 देवासुराणामाश्चर्य्यः श्लोकं प्रागुशना जगौ ॥ १२ ॥
 अहोऽस्य तपसा वीर्य्यमहो श्रुतमहोऽद्भुतम् ।
 यमद्य पुरतः कृत्वा ध्रुवं सप्तर्षयः स्थिताः ॥ १३ ॥
 तस्माच्छ्लर्ष्टि च भयं च ध्रुवाच्छम्भुर्यजायत ।
 श्लिष्टेराधत्त सुच्छाया पञ्च पुत्रानकल्मषान् ॥ १४ ॥
 रिपुं रिपुञ्जयं वीरं वृकलं वृकतेजसम् ।
 रिपोराधत्त बृहती चभ्रुषं सर्व्वतेजसम् ॥ १५ ॥
 अजीजनत् पुष्करिण्यां वैरण्यां चाश्रुषं मनुम् ।
 प्रजापतेरात्मजायां वीणस्य महात्मनः ॥ १६ ॥
 मनोरजायन्त दश नड्वलायां महौजसः ।
 कन्यायां मुनिशार्दूला वैराजस्य प्रजापतेः ॥ १७ ॥
 कुत्सः पुरुः शतद्युम्नस्तपस्वी सत्यवाक्कविः ।
 अग्निष्टुदितिरात्रश्च सुद्युम्नश्चेति ते नव ॥ १८ ॥
 अमिमन्युश्च दशमो नड्वलायां महौजसः ।
 पुरोरजनयत् पुत्रान् षड्गानेयी महाप्रभान् ॥ १९ ॥
 अङ्गं सुमनसं व्यासि क्रतुमङ्गिरसं नयम् ।
 अङ्गात् सुनीथापत्यं वी धेनमेकं व्यजायत ॥ २० ॥

अपचारेण वेनस्य प्रकोपः सुमहानभूत् ।
 प्रजार्थमृषयो यस्य ममन्धुर्दक्षिणं करम् ॥ २१ ॥
 वेनस्य मथिते पाणौ स बभूव महान्नृपः ।
 तं दृष्ट्वा मुनयः प्रादुरेष वै मुदिताः प्रजाः ॥ २२ ॥
 करिष्यति महातेजा यशश्च प्राप्स्यते महत् ।
 स धन्वी कवची जातो जलज्ज्वलनसन्निभः ॥ २३ ॥
 पृथुवैन्यस्तथा चेमां ररक्ष क्षत्रपूर्वजः ।
 राजसूयाभिषिक्तानामाद्यः स वसुधाधिपः ॥ २४ ॥
 तस्माच्चैव समुत्पन्नौ निपुणौ सूतमागधौ ।
 तेनेवं गौर्मुनिश्चेष्टा दुग्धा शस्यानि भूभृता ॥ २५ ॥
 प्रजानां वृत्तिकामेन देवैः सर्पिगणैः सह ।
 पितृभिर्दानवैश्चैव गन्धर्वैरप्सरोगणैः ॥ २६ ॥
 सर्पैः पुण्यजनैश्चैव वीरुद्भिः पर्वतैस्तथा ।
 तेषु तेषु च च पात्रेषु दुह्यमाना वसुन्धरा ॥ २७ ॥
 प्रादादुयथेप्सितं क्षीरं तेन प्राणानधारयन् ।
 पृथोस्तु पुत्रौ धर्मज्ञौ जज्ञानेऽन्तर्धिपातिनौ ॥ २८ ॥
 शिखण्डिनी हविर्धानमन्तर्धानाह्याजायत ।
 हविर्धानात् षड्गानेयी धियणाजनयत् सुताम् ॥ २९ ॥
 प्राचीनवर्हिषंशुक्रं गयं कृष्णं व्रजाजिनौ ।
 प्राचीनवर्हिर्भगवान्महानासीत्प्रजापतिः ॥ ३० ॥
 हविर्धानान्मुनिश्चेष्टा येन संवर्द्धिताः प्रजाः ।

प्राचीनाप्राः कुशास्तस्य पृथिव्यां द्विजसप्तमाः ।*

प्राचीनवर्हिर्मगवान् पृथिवीतलचारिणीः ॥ ३१ ॥

समुद्रतनयायां तु कृतदारोऽभवत् प्रभुः ।

महतस्तपसः पारे सवर्णायां प्रजापतिः ॥ ३२ ॥

सवर्णाधत्त सामुद्रो दश प्राचीनवर्हिषः ।

सर्वान् प्राचेतसो नाम धनुर्वेदस्य पारगान् ॥ ३३ ॥

अपृथग्धर्मचरणास्तेऽतप्यन्त महत्तपः ।

दश वर्षसहस्राणि समुद्रसलिलेशयाः ॥ ३४ ॥

तपश्चरत्सु पृथिवीं प्रचेतःसु महोरुहाः ।

अरक्ष्यमाणामावर्तुर्बभूवथ प्रजाक्षयः ॥ ३५ ॥

नाशकन्मारुतो वातुं वृतं खमभवद्द्रुमैः ।

दश वर्षसहस्राणि न शेकुश्चेष्टितुं प्रजाः ॥ ३६ ॥

तदुप्रश्रुत्य तपसा युक्तां सव्य प्रचेतसः ।

मुखेभ्यो वायुमग्निं च ससृजुर्जातमन्यवः ॥ ३७ ॥

उन्मूलानथ वृक्षांस्तु कृत्वा वायुरशोषयत् ।

तानग्निरदद्घोर एवमासीद्द्रुमक्षयः ॥ ३८ ॥

क्रमक्षयमथो बुद्ध्वा किञ्चिच्छिष्टेषु शास्त्रिषु ।

उपगम्याम्रवीदेतांस्तदा सोमः प्रजापतीन् ॥ ३९ ॥

कोपं यच्छत राजानः सर्वे प्राचीनवर्हिषः ।

वृक्षशून्या कृता पृथ्वी शाम्येतामग्निमारुतौ ॥ ४० ॥

* इदमर्थं कश्चिन्न लक्ष्यते ।

रत्नभूता च कन्येयं वृक्षाणां वरवर्णिनी ।

भविष्यं जानता तात धृता गर्भेण वै मया ॥ ४१ ॥

मारिषा नाम नाग्नैषा वृक्षाणामिति निर्मिता ।

भाट्या वोऽस्तु महाभागाः सोमवंशविवर्द्धिनी ॥ ४२ ॥

युष्माकं तेजसोऽर्द्धेन मम चार्द्धेन तेजसः ।

अस्यामुत्पत्स्यते विद्वान् दक्षो नाम प्रजापतिः ॥ ४३ ॥

स इमां दग्धभूयिष्ठां युष्मत्तेजोमयेन वै ।

अग्निनाग्निसमो भूयः प्रजाः संवर्द्धयिष्यति ॥ ४४ ॥

ततः सोमस्य वचनाञ्जगृह्णते प्रचतसः ।

संहृत्य कोपं वृक्षेभ्यः पत्नीं धर्मेण मारिषाम् ॥ ४५ ॥

दशभ्यस्त प्रचेतोभ्यो मारिषायां प्रजापतिः ।

दक्षो जज्ञे महातेजाः सोमस्यांशेन भो द्विजाः ॥ ४६ ॥

अचरांश्च चरांश्चैव द्विपदोऽथ चतुष्पदः ।

स सृष्ट्वा मनसा दक्षः पश्चादसृजत स्त्रियः ॥ ४७ ॥

ददौ दश स धर्माय कश्यपाय त्रयोदश ।

शिष्टाः सोमाय राज्ञे च नक्षत्राख्या दक्षी प्रभुः ॥ ४८ ॥

तासु देवाः खगा गावो नागा दितिजदानवाः ।

गन्धर्वाप्सरसश्चैव जहिरैन्याश्च जातयः ॥ ४९ ॥

ततः प्रभृति विप्रेन्द्राः प्रजा मैथुनसंभवाः ।

सङ्कल्पादर्शनात्स्पर्शात्पूर्वेषां प्रोच्यते प्रजाः ॥ ५० ॥

मुनय उचुः ।

देवानां दानवानाञ्च गन्धर्वोरगरक्षसाम् ।
 सम्भवस्तु श्रुतोऽस्माभिर्दक्षस्य च महात्मनः ॥ ५१ ॥
 अङ्गुष्ठावुग्रहगो जज्ञे दक्षः किल शुभवतः ।
 वामाङ्गुष्ठात्तथा चैवं तस्य पत्नी व्यजायत ॥ ५२ ॥
 कथं प्राचेतसत्वं स पुनर्लभे महातपाः ।
 एतन्नः संशयं सूत व्याख्यातुं त्वमिहार्हसि ॥
 दौहित्रश्चैव सोमस्य कथं श्वशुरतां गतः ॥ ५३ ॥

लोमहर्षण उवाच ।

उत्पत्तिश्च निरोधश्च नित्यं भूतेषु भोद्विजाः ।
 ऋषयोऽत्र न मुह्यन्ति विद्यावन्तश्च ये जनाः ॥ ५४ ॥
 युगे युगे भवन्त्येते पुनर्द्वादयो नृपाः ।
 पुनश्चैव निरुध्यन्ते विद्वांस्तत्र न मुह्यति ॥ ५५ ॥
 ज्येष्ठं कानिष्ठ्यमप्येषांपूर्व्वनासीद्विजोत्तमाः ।
 तप एव गरोयोऽभूत्प्रभावश्चैव कारणम् ॥ ५६ ॥
 इमां विसृष्टिं दक्षस्य यो विद्यात् सचराचराम् ।
 प्रजावानाथुरुत्तोर्णः स्वर्गलोके महीयते ॥ ५७ ॥
 इति श्रीब्राह्मे महापुराणे सृष्टिकथनं नाम
 द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

कुत्सीयोऽश्वत्थामः ।

देवदानवोत्पत्ति वर्णनम्

मुनय उचुः ।

देवानां दानवानां च गन्धर्वोरगरक्षसाम् ।

उत्पत्तिं विस्तरैणैव लोमहर्षण कीर्तय ॥ १ ॥

लोमहर्षण उवाच ।

प्रजाः सृजति व्यादिष्टः पूर्वं दक्षः स्वयम्भुवा ।

यथा ससर्ज भूतानि तथा ऋगुत भो द्विजाः ॥ २ ॥

मानसान्येव भूतानि पूर्वमेवासृजत् प्रभुः ।

ऋषीन्देवान्सगन्धर्वान्सुरान्यक्षराक्षसान् ॥ ३ ॥

यदास्य मानसी विप्रा न व्यवर्द्धत वै प्रजाः ।

तदा सञ्चिन्त्य धर्मात्मा प्रजाहेतोः प्रजापतिः ॥ ४ ॥

स मैथुनेन धर्मेण सिमृश्रुर्वविधाः प्रजाः ।

असिक्तोमावहन् पत्नीं वारणस्य प्रजापतेः ॥ ५ ॥

सुतां सुतपसा युक्तां महतीं लोकधारिणीम् ।

अथ पुत्रसहस्राणि वैरण्यां पञ्च वीर्यवान् ॥ ६ ॥

असिकन्यां जनयामास दक्ष एव प्रजापतिः ।

तांस्तु दृष्ट्वा महाभागान्संविद्वर्द्धयिषून् प्रजाः ॥ ७ ॥

देवर्षिः प्रियसंवादो नारदः प्राव्रवीदिदम् ।

नाशाय वचनं तेषां शापायैवात्मनस्तथा ॥ ८ ॥

यं कश्यपः सुतवरं परमेष्ठो व्यजीजनत् ।

दक्षस्य वै दुहितरि दक्षशापमयान्मुनिः ॥ ९ ॥

पूर्वं स हि समुत्पन्नो नारदः परमेष्ठिनः ।
 असिक्त्यामथ वैरण्यां भूयो देवर्षिसत्तमः ॥ १० ॥
 तं भूयो जनयामास पितेव मुनिपुङ्गवम् ।
 तेन दक्षस्य वै पुत्रा हर्यश्वा इति विश्रुताः ॥ ११ ॥
 निर्मम्य नाशिताः सर्व्वे विधिना च न संशयः ।
 तस्योद्यतस्तदा दक्षो नाशायामितविक्रमः ॥ १२ ॥
 ब्रह्मर्षेण पुरतः कृत्वा याचितः परमेष्ठिना ।
 ततोऽभिसन्धिञ्चक वै दक्षस्य परमेष्ठिना ॥ १३ ॥
 कन्यायां नारदो मह्यं तव पुत्रो भवेदिति ।
 ततो दक्षः सुतां प्रादात् प्रियां वै परमेष्ठिने
 स तस्यां नारदो जज्ञे भूयः शापभयाद्भूषिः ॥ १४ ॥

मुनय उचुः ।

कथं प्रणाशिताः पुत्रा नारदेन महर्षिणा ।
 प्रजापतेः सूतवर्ग्यं श्रोतुमिच्छाम तत्त्वतः ॥ १५ ॥

लोमहर्षण उवाच ।

दक्षस्य पुत्रा हर्यश्वा विवद्वयिषवः प्रजाः ।
 समागता महावीर्या नारदस्तानुवाच ह ॥ १६ ॥

नारद उवाच ।

बालिशा बत यूयं वै नास्या जानीत वै भुवः ।
 प्रमाणं स्मष्टकामा वै प्रजाः प्राचेतसात्मजाः ॥ १७ ॥
 अन्तरुर्ध्वमधश्चैव कथं सृजथ वै प्रजाः ।
 ते तु तद्वचनं श्रुत्वा प्रयाताः सर्व्वतो दिशः ॥ १८ ॥

अद्यापि न निवर्त्तन्ते समुद्रेभ्य इवापगाः ।
 हर्यश्वेष्वथ नष्टेषु दक्षः प्राचेतसः पुनः ॥ १६ ॥
 वैरण्यामथ पुत्राणां सहस्रमसृजत्प्रभुः ।
 विचर्द्धयिषवस्ते तु शबलाश्वास्तथा प्रजाः ॥ २० ॥
 पूर्वोक्तं वचनं ते तु नारदेन प्रचोदिताः ।
 अन्योन्यमूचुस्ते सर्वे सम्यगाह महानृषिः ॥ २१ ॥
 भ्रातृणां पदवीं ज्ञातुं गन्तव्यं नात्र संशयः ।
 ज्ञात्वा प्रमाणं पृथ्व्याश्च सूक्ष्मं क्क्ष्यामहे प्रजाः ॥ २२ ॥
 तेऽपि तेनैव मार्गेण प्रयाताः सर्वतो दिशम् ।
 अद्यापि न निवर्त्तन्ते समुद्रेभ्य इवापगाः ॥ २३ ॥
 तदा प्रभृति वै भ्राता भ्रातुरन्वेषणे द्विजाः ।
 प्रयातो नश्यति क्षिप्रं तन्न कार्यं विपश्चिता ॥ २४ ॥
 तांश्चैव नष्टान् विज्ञाय पुत्रान् दक्षः प्रजापतिः ।
 षष्टिं ततोऽसृजत् कन्या वैरण्यामिति नः श्रुतम् ॥ २५ ॥
 तास्तदा प्रतिजग्राह भाट्यार्थं कश्यपः प्रभुः ।
 सोमो धर्मश्च भो विप्रास्तथैवान्ये महर्षयः ॥ २६ ॥
 ददौ स दश धर्माय कश्यपाय त्रयोदश ।
 सप्तविंशतिः सोमाय चतस्रोऽरिष्टनेमिने ॥ २७ ॥
 द्वे चैव बहुपुत्राय द्वे चैवाङ्गिरसे तथा ।
 द्वे कृशाश्वाय विदुषे तासां नामानि मे शृणु ॥ २८ ॥
 अरुन्धती वसुर्यामी लम्बा भानुर्मरुत्वती ।
 सङ्कुल्पा च मुहूर्त्ता च साध्या विश्वा च भो द्विजाः ॥ २९ ॥

धर्मपत्न्यो दश त्वेतास्तास्वपत्यानि वीधत ।
 विश्वेदेवास्तु विश्वायाः साध्या साध्यान् व्यजायत ॥ ३० ॥
 मरुत्वत्यां मरुत्वन्तो वसोस्तु वसवः सुताः ।
 भानोस्तु भानवः पुत्रा मुहूर्त्तास्तु मुहूर्त्तजाः ॥ ३१ ॥
 लम्बायाश्चैव घोषोऽथ नागवीथी च यामिजा ।
 पृथिवीविषयं सर्वमरुन्धत्यां व्यजायत ॥ ३२ ॥
 सङ्कल्पायास्तु विश्वात्मा जज्ञे सङ्कल्प एव हि ।
 नागवीध्याञ्च यामिन्यां वृषलश्च व्यजायत ॥ ३३ ॥
 परा याः सोमपत्नीश्च दक्षः प्राचेतसो ददौ ।
 सत्त्वा नक्षत्रनाभ्यस्ता ज्योतिषे परिकीर्त्तिताः ॥ ३४ ॥
 ये त्वन्ये ख्यातिमन्तो वै देवा ज्योतिष्पुरोगमाः ।
 वसवोऽष्टौ समाख्यातास्तेषां वक्ष्यामि विस्तरम् ॥ ३५ ॥
 आपो ध्रुवश्च सोमश्च ध्रुवश्चैवानिलोऽनलः ।
 प्रत्यूषश्च प्रभासश्च वसवो नामभिः स्मृताः ॥ ३६ ॥
 आपस्य पुत्रो वैतण्डः श्रमः श्रान्तो मुनिस्तथा ।
 ध्रुवस्य पुत्रो भगवान् कालो लोकप्रकालनः ॥ ३७ ॥
 सोमस्य भगवान् वर्ष्वा वर्चस्वी येन जायते ।
 ध्रुवस्य पुत्रो द्रविणो हुतहव्यवहस्तथा ॥ ३८ ॥
 मनीह्रायाः शिशिरः प्राणोऽथ रमणस्तथा ।
 अनिलस्य शिवा माय्या तस्याः पुत्रो मनोजवः ।
 अविहातगतिश्चैव द्वौ पुत्रावनिलस्य च ॥ ३९ ॥

अग्निपुत्रः कुमारस्तु शरस्तन्वेश्रिया वृतः ।
 तस्य शाखो विशाखश्च नैगमेयश्च पृष्ठजः ॥ ४० ॥
 अपत्यं कृत्तिकानां तु कार्सिकेय इति स्मृतः ।
 प्रत्यूषस्य विदुः पुत्रमृषिं नाम्नाथं देवलम् ॥ ४१ ॥
 द्वौ पुत्रौ देवलस्यापि क्षमावन्तौ मनीषिणौ ।
 बृहस्पतेस्तु भगिनो वरखी ब्रह्मवादिनो ॥ ४२ ॥
 योगसिद्धा जगत् कृत्स्नमसक्ता विचक्षार ह ।
 प्रभासस्य तु सा भार्या वसूनामष्टमस्य तु ॥ ४३ ॥
 विश्वकर्मा महाभागो यस्यां जज्ञे प्रजापतिः ।
 कर्त्ता शिल्पसहस्राणां त्रिदशानाञ्च चार्द्धकिः ॥ ४४ ॥
 भूषणानाञ्च सर्वेषां कर्त्ता शिल्पवतां वरः ।
 यः सर्वेषां विमानानि दैवतानां चकार ह ॥ ४५ ॥
 मानुषाश्चोपजीवन्ति यस्य शिल्पं महात्मनः ।
 सुरभी कश्यपाद्रुद्रानेकादश विनिर्ममे ॥ ४६ ॥
 महादेवप्रसादेन तपसा भाविता सती ।
 अजैकपादहिर्बुध्न्यस्त्वष्टा रुद्रश्च वीर्यवान् ॥ ४७ ॥
 हरश्च बहुरूपश्च ऋम्बकश्चापराजितः ।
 वृषाकपिश्च शम्भुश्च कपर्दी रैवतस्तथा ॥ ४८ ॥
 मृगव्याधश्च शर्वश्च कपाली च द्विजोत्तमाः ।
 एकादशैते विख्याता रुद्रास्त्रिभुवनेश्वराः ॥ ४९ ॥
 शतं त्वेवं समाख्यातं रुद्राणाममितीजसाम् ।
 पुराणे मुनिशार्दूला यैर्व्याप्तं सचराचरम् ॥ ५० ॥

दारान् शृणुष्वं विप्रेन्द्राः कश्यपस्य प्रजापतेः ।
 अदितिर्दितिर्दनुश्चैव अरिष्टा सुरसा कसा ॥ ५१ ॥
 सुरमिर्विनता चैव ताम्रा क्रोधवशा इला ।
 कद्रुर्मुनिश्च भो विप्रास्तास्वपद्यानि बोधत ॥ ५२ ॥
 पूर्वमन्वतरे श्रेष्ठाद्वादशासन् सुरोत्तमाः ।
 तुषिता नाम तेऽन्योन्यमूचुर्वैवस्वतेऽन्तरे ॥ ५३ ॥
 उपस्थितेऽतियशसश्चाक्षुषस्यान्तरे मनोः
 हितार्थं सर्वलोकानां समागम्य परस्परम् ॥ ५४ ॥
 आगच्छत द्रुतं देवा अदितिं सम्प्रविश्य वै ।
 मन्वन्तरे प्रसूयामस्तन्नः श्रेयो भविष्यति ॥ ५५ ॥
 पञ्चमुक्ता तु ते सर्वे चाक्षुषस्यान्तरे मनोः
 मारीचात् कश्यपाज्जाजास्त्वदित्या दक्षकन्यया ॥ ५६ ॥
 तत्र विष्णुश्च शक्रश्च जज्ञाते पुनरेव हि ।
 अर्यमा चैव धाता च त्वष्टा पूषा तथैव च ॥ ५७ ॥
 विषस्वान् सविता चैव मित्रो वरुण एव च ।
 अंशो भगश्चातिनेजा आदित्या द्वादश स्मृताः ॥ ५८ ॥
 चाक्षुषस्यान्तरे पूर्वमासंस्ते तुषिताः सुराः ।
 वैवस्वनेऽन्तरे ते वा आदित्या द्वादश स्मृताः *
 सप्तविंशति ताः प्रोक्ताः सोमपत्न्यो महाव्रताः
 तासामपत्यान्यभवन् दीप्तान्यमिततेजसः ॥ ५९ ॥

* कचिदयं श्लोकोनास्ति ।

अरिष्टनेमिपत्नीनामपत्यानीह वोढुश ।

बहुपुत्रस्य विदुषश्चतस्रो विद्युतः स्मृताः ॥ ६० ॥

चाक्षुषस्यान्तरे पूर्वे ऋचो ब्रह्मर्षिस्तृक्ताः ।

कृशाश्वस्य च देवर्षेदेवप्रहरणाः स्मृताः ॥ ६१ ॥

एते युगसहस्रान्ते जायन्ते पुनरेव हि ।

सर्वे देवगणाश्चात्र त्रयस्त्रिंशत् कामजाः ॥ ६२ ॥

तेषामपि च भो विप्रा निरोधोत्पत्तिरुच्यते

यथा सूर्यस्य गगन उदयास्तमयाविह ॥ ६३ ॥

एवं देवनिकायास्ते सम्भवन्ति युगे युगे ।

दित्याः पुत्रद्वयं जज्ञे कश्यपादिति नः श्रुतम् ॥ ६४ ॥

हिरण्यकशिपुश्चैव हिरण्याक्षश्च धीर्यवान् ।

सिंहिकाचाभवत् कन्या विप्रचित्तेः परिग्रहः ॥ ६५ ॥

संहिकेया इति ख्याता तस्याः पुत्रा महाबलाः ।

हिरण्यकशिपोः पुत्राश्चत्वारः प्रथितौजसः ॥ ६६ ॥

हादश्च अनुहादश्च प्रह्लादश्चैव धीर्यवान् ।

संहादश्च चतुर्थोऽभूद्भ्रादपुत्रो ह्रदस्तथा ॥ ६७ ॥

ह्रदस्य पुत्रौ द्वौ धीरौ शिवः कालस्तथैव च ।

विरोचनस्तु प्राहादिर्बलिजज्ञे विरोचनात् ॥ ६८ ॥

बलेः पुत्रशतं त्वासीद्ब्रह्माणज्येष्ठं तपोधनाः ।

धृतराष्ट्रश्च सूर्यश्चचन्द्रमाश्चन्द्रतापनः ॥ ६९ ॥

कुम्भनाभो गर्हभाक्षः कुक्षिरित्येवमादयः ।

चाणस्तेषामतिबलो ज्येष्ठः पशुपतेः प्रियः ॥ ७० ॥

पुरा कल्पे तु बाणेन प्रसाद्योमापति प्रभुम् ।
 पार्श्वतो विहरिष्यामि इत्येवं याचितो वरः ॥ ७१ ॥
 हिरण्याक्षसुताश्चैव बिद्वांसश्च महाबलाः ।
 उर्जरः शकुनिश्चैव भूतसन्तापनस्तथा ॥ ७२ ॥
 महानाभश्च विक्रान्तः कालनाभस्तथैव च ।
 अभवन् दनुपुत्राश्च शतं तीव्रपराक्रमाः ॥ ७३ ॥
 तपस्विनो महावीर्याः प्राधान्येन ब्रवीमि तान् ।
 द्विमूर्द्धा शङ्कुर्कर्णश्च तथा हयशिरा विभुः ॥ ७४ ॥
 अयोमुखः शम्बरश्च करिलो वामनस्तथा ।
 मारीचिर्मघवांश्चैव इल्वलः खस्रुमस्तथा ॥ ७५ ॥
 विश्वोभणश्च केतुश्च केतुषोऽर्यशतहर्दा ।
 इन्द्रजित्सर्वजिञ्चैव वज्रनाभस्तथैव च ॥ ७६ ॥
 एकचक्रो महाबाहुस्तारकश्च महाबलः ।
 वैश्वानरः पुलोमा च विद्रावणमहाशिराः ॥ ७७ ॥
 स्वर्मानुवृषपञ्चा च विप्रचित्तिश्च वीर्यवान् ।
 सर्व एते दनोः पुत्राः कश्यपादमिजज्ञिरे ॥ ७८ ॥
 विप्रचित्तिप्रधानास्ते दानवाः सुमहाबलाः ।
 एतेषां पुत्रपौत्रन्तु न तच्छक्यं द्विजोत्तमाः ॥ ७९ ॥
 प्रसंख्यातुं बहुत्वाच्च पुत्रपौत्रमनन्तकम् ।
 स्वर्मानोस्तु प्रभा कन्या पुलोमस्तु शची सुता ॥ ८० ॥
 उपदानवी हयशिराः शर्मिष्ठा वार्षपर्वणी ।
 पुलोमा कालिका चैव वैश्वानरसुते उभे ।
 बह्वपत्ये महापत्ये मारीचेस्तु परिग्रहः ॥ ८१ ॥

तयोः पुत्रसहस्राणि षष्टिर्दानवमन्वनाः ।
 चतुर्दशशतानन्यान् हिरण्यपुरवासिनः ।
 मारीचिर्जनयामास महता तपसान्वितः ॥ ८२ ॥
 पौलोमाः कालकेयाश्च दानवास्ते महाबलाः ।
 अवध्या देवतानां हि हिरण्यपुरवासिनः ॥ ८३ ॥
 पितामहप्रसादेन ये हताः सव्यसाचिना ।
 ततोऽपरे महावीर्या दानवास्तत्बतिशरुणाः ॥ ८४ ॥
 सिंहिकायामथोत्पन्ना विप्रचिन्तेः सुतास्तथा ।
 दैत्यदानवसंयोगाज्जातास्तीव्रपराक्रमाः ॥ ८५ ॥
 सैहिकेया इति ख्यातास्त्रयोदश महाबलाः ।
 वंशः शल्यश्च बलिनी नलश्चैव तथा बलः ॥ ८६ ॥
 घातापिर्नमुचिश्चैव श्लवः खसुमस्तथा ।
 अञ्जिको नरकश्चैव कालनाभस्सथैव च ॥ ८७ ॥
 सरमाणस्तथा चैव स्वरकल्पश्च वीर्यवान् ८८ ॥
 मुकश्चैव तुहुण्डश्च हृदपुत्री बभूवतुः ।
 मारीचः सुन्दपुत्रश्च प्रस्तुतायां व्यजायत ॥ ८९ ॥ (१)
 एते वै दानवाः श्रेष्ठा दनोर्वंशविषर्जनाः ।
 तेषां पुत्राश्च पौत्राश्च शतशोऽथ सहस्रशः ॥ ९० ॥
 संह्रादस्य तु दैत्यस्य निवातकषचाः कुले ।
 समुत्पन्नाः सुमहता तपसा भावितात्मनः ॥ ९१ ॥

१ कचिदयं न लक्ष्यते ।

तिरः कोट्यः सुतास्तेषां निवत्यां निवासिनः
 अघध्यास्तेऽपि देवानामर्जुनेन निपातिताः ।
 षट्सुताः सुमहाभागास्ताम्रायाः परिकीर्तिताः ॥ ६२ ॥
 क्रौञ्ची श्येनी च भासो च सुग्रीवो शुचिगृध्रिका ।
 क्रौञ्ची तु जनयामास उलूकप्रत्यलूककान् ॥ ६३ ॥
 श्येनी श्येनांस्तथा भासी भासान्गृध्रांश्च गृध्रपि ।
 शुचिरौदकान्पक्षिगणान्सुग्रीवी तु द्विजोत्तमाः ॥ ६४ ॥
 अश्वानुष्टान् गर्हभांश्च ताम्रावंशः प्रकीर्तितः ।
 चिन्तायास्तु द्वौ पुत्रौ चिख्यातौ गरुडारुणौ ॥ ६५ ॥
 गरुडः पततां श्रेष्ठो दारुणः स्वेन कर्मणा ।
 सुरसायाः सहस्रन्तु सर्पाणाममितौजसाम् ॥ ६६ ॥
 अनेकशिरसां चिप्राः खचराणां महात्मनाम् ।
 काप्रवेयास्तु बलिनः सहस्रममितौजसः ॥ ६७ ॥
 सुपर्णवशागा नागा जङ्घिरे नैकमस्तकाः ।
 येषां प्रधानाः सततं शेषवासुकितक्षकाः ॥ ६८ ॥
 ऐरावतो महापद्मः कम्बलाश्वतरावुभौ ।
 पलापत्रश्च शङ्खश्च कर्कोटकधनञ्जयौ ॥ ६९ ॥
 महानीलमहाकर्णौ धृतराष्ट्रबलाहकौ ।
 कुहरः पुष्पदंष्ट्रश्च दुर्मखः सुमुखस्तथा ॥ १०० ॥
 शङ्खश्च शङ्खपालश्च कपिलो वामनस्तथा ।
 नहुषः शङ्खरोमाच मनिरित्येषमादयः ॥ १०१ ॥

तेषां पुत्राश्च पौत्राश्च शतशोऽथ सहस्रशः ।
 चतुर्दशसहस्राणि क्रूराणामनिलाशिनाम् ॥ १०२ ॥
 गणं क्रोधवशं विप्रास्तस्य सर्व्वं च दष्टिणः
 स्थलजाः पक्षिणोऽजाश्च धरायाः प्रसवाः स्मृताः ॥ १०३ ॥
 गास्तु वै जनयामास सुरभिमहिषीस्तथा ।
 इरा वृक्षलता वल्लीस्तुनजातीश्च सर्व्वशः ॥ १०४ ॥
 खसा तु यक्षरक्षांसि मुनिरप्सरसस्तथा ।
 अरिष्टा तु महासिद्धा गंधर्व्वानमितीजसः ॥ १०५ ॥
 एते कश्यपदायादाः कीर्त्तिताः स्थाणुजङ्गमाः ।
 येषां पुत्राश्च पौत्राश्च शतशोऽथ सहस्रशः ॥ १०६ ॥
 एष मन्वन्तरे विप्राः सर्गः स्वारोचिषे स्मृतः ।
 वैवश्वतेऽतिमहति वारुणे चितते कर्त्ता ॥ १०७ ॥
 जुह्वानस्य ब्रह्मणो वै प्रजासर्ग इहोच्यते ।
 पूर्वं यत्र समुत्पन्नानब्रह्मर्षीन्सप्त मानसान् ॥ १०८ ॥
 पुत्रत्वे कल्पयामास स्वयमेव पितामहः ।
 ततो विरोधे देवानां दानवानां च भो द्विजाः ॥ १०९ ॥
 दितिर्विनष्टपुत्रा वै तोषयामास कश्यपम् ।
 कश्यपस्तु प्रसन्नात्मा सम्यगाराधितस्तथा ॥ ११० ॥
 वरेण छन्दयामास सा च वने वरं तदा ।
 पुत्रमिन्द्रबधार्थाय समर्थममितीजसम् ॥ १११ ॥
 स च तस्मै वरं प्रादात् प्रार्थितः सुमहातपाः ।
 दत्त्वा च वरमत्युग्रो मारीचः समभाषत ॥ ११२ ॥

इन्द्रं पुत्रो निहन्ता ते गर्भं वै शरदां शतम् ।
 यदि धारयसे शौचतत्परा व्रतमास्थिता ॥ ११३ ॥
 तथेत्यभिहितो भर्ता तया देव्या महातपाः ।
 धारयामास गर्भं तु शुचिः सा मुनिसत्तमाः ॥ ११४ ॥
 ततोऽभ्युपागमद्वित्यां गर्भमाधाय कश्यपः ।
 रोधयन् वै गणं श्रेष्ठं देवानाममितौजसम् ॥ ११५ ॥
 तेजः संहृत्य दुर्धर्षमवध्यममरैरपि ।
 जगाम पर्वतायैव तपसे संशितव्रता ॥ ११६ ॥
 तस्याश्चैवान्तरप्रेत्सुरभवत् पाकशासनः ।
 जाते वर्षशते चास्या ददर्शान्तरमच्युतः ॥ ११७ ॥
 भकृत्वा पादयोः शौचं दितिः शयनमाविशत् ।
 निद्रां चाहारयामास तस्यां कुक्षिं प्रविश्य सः ॥ ११८ ॥
 वज्रपाणिस्ततो गर्भं सप्तधा तं न्यवृन्तवत् ।
 स पाठ्यममानो गर्भोऽथ वज्रेण प्ररुोद् ह ॥ ११९ ॥
 मा रोदीरिति तं शक्रः पुनःपुनरथाब्रवीत् ।
 सोऽभवत् सप्तधा गर्भस्तमिन्द्रो रुषितः पुनः ॥ १२० ॥
 एकैकं सप्तधा चक्रेःवज्रेणैवारिकर्षणः ।
 मरुतो नाम ते देवा बभूवु द्विजसत्तमाः ॥ १२१ ॥
 यथोक्तं वै मघवता तथैव मरुतोऽभवन् ।
 देवाश्चैकोनपञ्चाशत्सहाया वज्रपाणिनः ॥ १२२ ॥
 तेषामेवं प्रवृत्तानां भूतानां द्विजसत्तमाः ।
 रोधयन् वै गणश्रेष्ठान् देवानाममितौजसाम् ॥ १२३ ॥

ध्यायः] * देवदानवादीनां राज्याभिषेक वर्णनम् * २५

निकायेषु निकायेषु हरिः प्रादात् प्रजापतीन् ।
क्रमशस्तानि राज्यानि पृथुपूर्व्वानि भो द्विजाः ॥ १२४ ॥
स हरिः पुरुषो धीरः कृष्णो जिष्णुः प्रजापतिः
पर्जन्यस्तपनोऽनन्तस्तस्य सर्व्वमिदं जगत् ॥ १२५ ॥
भूतसर्गमिमं सम्यग्ज्ञानतो द्विजसत्तमाः ।
नावृत्तिभयमस्तीह परलोकभयं कुतः ॥ १२६ ॥
इति श्रीब्राह्मे महापुराणे देवसुराणामुत्-
पत्तिकथनं नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

चतुर्थोऽध्यायः ।

पृथुमारभ्य सर्वदेवदानवादीनां राज्याभिषेक वर्णनम्

लोमहर्षेण उवाच ।

अभिविच्याधिराजेन्द्रं पृथुं वेन्यं पितामहः ।
ततः क्रमेण राज्यानि व्यादेष्टुमुपवक्रमे ॥ १ ॥
द्विजानां धीरुधां चैव नक्षत्रमहयोस्तथा ।
यत्नानां तपसां चैव सोमं राज्येऽभ्यषेवयत् ॥ २ ॥
अपां तु वरुणं राज्ये राक्ष्सां वैश्रवणं पतिम् ।
आदित्यानां तथा बिष्णुं वसूनामथ पात्नकम् ॥ ३ ॥

प्रजापतीनां दक्षं तु मरुतामथ वासवम् ।
 दैत्यानां दानवानां वै प्रह्लादममितीजसम् ॥ ४ ॥
 वैवस्वतं पितृणाञ्च यमं राज्येऽभ्यषेचयत् ।
 यक्षाणां राक्षसाणाञ्च पार्थिवाणां तथैव च ॥ ५ ॥
 सर्वभूतपिशाचानां गिरीशं शूलपाणिनम् ।
 शैलानां हिमवन्तञ्च नदीनामथ सागरम् ॥ ६ ॥
 गंधर्वाणामधिपतिं चक्रे चित्ररथं प्रभुम् ।
 नागानां वासुकिं चक्रे सर्पाणामथ तक्षकम् ॥ ७ ॥
 वारणानां तु राजानमैरावतमथादिशत् ।
 उच्चैःश्रवसमश्वानां गरुडञ्चैव पक्षिणाम् ॥ ८ ॥
 मृगाणामथ शादूर्दूलं गोवृषन्तु गवां पतिम् ।
 वनस्पतीनां राजानं प्लक्षमेवाभ्यषेचयत् ॥ ९ ॥
 एवं विभाज्य राज्यानि क्रमेणैव पितामहः ।
 दिशां पालानथ ततः स्थापयामास स प्रभुः ॥ १० ॥
 पूर्वस्यां दिशि पुत्रं तु वैराजस्य प्रजापतेः ।
 दिशः पालं सुधन्वानं राजानं सोऽभ्यषेचयत् ॥ ११ ॥
 दक्षिणस्यां दिशि तथा कर्हमस्य प्रजापतेः ।
 पुत्रं शङ्खपदं नाम राजानं सोऽभ्यषेचयत् ॥ १२ ॥
 पश्चिमस्यां दिशि तथा रजसः पुत्रमच्युतम् ।
 केतुमन्तं महात्मानं राजानं सोऽभ्यषेचयत् ॥ १३ ॥
 तथा हिरण्यरोमाणं पर्जन्यस्य प्रजापतेः ।
 उदीच्यां दिशि दुर्धर्षं राजानं सोऽभ्यषेचयत् ॥ १४ ॥

तैरियं पृथिवी सत्त्वा सप्तद्वीपा सप्ततना ।
 यथाप्रदेशमद्यापि धर्मेण प्रतिपाल्यते ॥ १५ ॥
 राजसूयाभिषिक्तस्तु पृथुरेतैर्नराधिपैः ।
 वेददृष्टेन विधिना राजा राज्ये नराधिपः ॥ १६ ॥
 ततो मन्वन्तरेऽर्ताते चाक्षुषेऽमिततेजसि ।
 वैवस्वताय मनवे पृथिव्यां राज्यमादिशत् ॥ १७ ॥
 तस्य विस्तरमाख्यास्ये मनोर्वैवस्वतस्य ह ।
 भवतां चानुकूल्याय यदि श्रोतुमिहच्छथ ।
 महदेतदधिष्ठानं पुराणे तदधिष्ठितम् ॥ १८ ॥

मुनय ऊचुः ।

विस्तरेण पृथोर्जन्म लोमहर्षण कीर्त्तय ।
 यथा महात्मना तेन दुग्धा वेयं वसुन्धरा ॥ १९ ॥
 यथा वापि नृभिर्दुग्धा यथा देवैर्महर्षिभिः ।
 यथा दैत्यैश्च नागैश्च यथा यक्षैर्यथा द्रुमैः ॥ २० ॥
 यथा शैलेः पिशाचैश्च गंधर्वैश्च द्विजोत्तमैः ।
 राक्षसैश्च महासत्त्वैर्यथा दुग्धा वसुन्धरा ॥ २१ ॥
 तेषां पात्रविशेषांश्च वक्तुमर्हसि सुप्रत ।
 वत्सक्षीरविशेषांश्च दोग्धारं चानुपूर्वशः ॥ २२ ॥
 यस्माच्च कारणात् पाणिर्वेनस्य मथितः पुरा ।
 कुद्वैर्महर्षिभिस्तात कारणं तच्च कीर्त्तय ॥ २३ ॥

लोमहर्षण उवाच ।

शृणुध्वं कीर्त्तयिष्यामि पृथोर्वैन्यस्य विस्तरम् ।
 एकप्राः प्रयताश्चैव पुण्यार्था ये द्विजर्षभाः ॥ २४ ॥

नाशुचिः क्षुद्रमनसो नाशिष्यस्यामृतस्य च ।
 कीर्त्तयेयमिद् विप्राः कृतज्ञायाहिताय च ॥ २५ ॥
 स्वर्ग्यं यशस्यमायुष्यं धन्यं वेदैश्च सम्मितम् ।
 रहस्यमृषिभिः प्रोक्तं शृणुध्वं वै यथातथम् ॥ २६ ॥
 यश्चेमं कीर्त्तयेन्नित्यं पृथोर्वैन्यस्य विस्तरम् ।
 ब्राह्मणेभ्यो नमस्कृत्य न स शोचेत् कृताकृतम् ॥ २७ ॥
 आसीद्धर्मस्य संगोता पूर्वमत्रिसमः प्रभुः ।
 अत्रिवंशे समुत्पन्नस्तङ्गो नाम प्रजापतिः ॥ २८ ॥
 तस्य पुत्रोऽभवद्देवो नात्यर्थं धर्मकोविदः ।
 जातो मृत्युसुतायां वै सुनीथायां प्रजापतिः ॥ २९ ॥
 स मातामहदोषेण तेन कालात्मजात्मजः ।
 स्वधर्मं पृष्ठतः कृत्वा कामलोभेष्ववर्त्तत ॥ ३० ॥
 मर्यादां भेदयामास धर्मोपितां स पार्श्ववः
 वेदधर्मानतिक्रम्य सोऽधर्मनिरतोऽभवत् ॥ ३१ ॥
 निःस्वाध्यायवपट्काराः प्रजास्तस्मिन् प्रजापतौ ।
 प्रवृत्तं न पपुः सोमं हुतं यज्ञेषु देवताः ॥ ३२ ॥
 न यष्टव्यं न होतव्यमिति तस्य प्रजापतेः ।
 आसीत् प्रतिज्ञा क्रूरं चिनाशे प्रत्युपस्थिते ॥ ३३ ॥
 अहमिज्यश्च यष्टा च यज्ञश्चेति भृगूद्वहः ।
 मयि यज्ञो विधातव्यो मयि होतव्यमित्यपि ॥ ३४ ॥
 तमतिक्रान्तमर्यादमाद्धानमसाग्रतम् ।
 ऊर्ध्वमर्हयः सर्वं मरीचिप्रमुखास्तदा ॥ ३५ ॥

वयं दीक्षां प्रवेक्ष्यामः संघत्सरगणान् बहून् ।
 अधर्मं कुरु मा वेन एष धर्मः सनातनः ॥ ३६ ॥
 निधनेऽन्नेः प्रसूतस्त्वं प्रजापतिरसंशयम् ।
 प्रजाश्च पालयिष्येऽहमितीह समयः कृतः ॥ ३७ ॥
 तांस्तथा रुतः सर्वान्महर्षीन्प्रवीक्ष्य तदा ।
 वेनः प्रहस्य दुर्वृद्धिरिममर्थमनर्थवित् ॥ ३८ ॥

वेन उवाच ।

स्रष्टा धर्मस्य कश्चान्यः श्रोतव्यं कस्य वा मया ।
 श्रुतवीर्य्यतपःसत्यै मया वा कः समो भुवि ॥ ३९ ॥
 प्रभवं सर्वभूतानां धर्माणां च विशेषतः ।
 सम्मूढा न विदुर्न भवन्तो मां विचेतसः ॥ ४० ॥
 इच्छन् दहेयं पृथिवीं प्लावयेयं जलैस्तथा ।
 द्यां वै भुवं च रुद्धेयं नात्र कार्या विचारणा ॥ ४१ ॥
 यदा न शक्यते मोहादधलेपाच्च पार्थिवः ।
 अपनेतुं तदा वेनस्ततः क्रुद्धा महर्षयः ॥ ४२ ॥
 तं निगृह्य महात्मानो विस्फुरन्तं महाबलम् ।
 ततोऽस्य सव्यमुखं ते ममन्थु जातमन्यसः ॥ ४३ ॥
 तस्मिन्निर्मथ्यमाने वै राज्ञ उरौ तु जङ्घिषान् ।
 ह्रस्वोऽतिमात्रः पुंरुषः कृष्णश्चेति बभूव ह ॥ ४४ ॥
 स भीतः प्राञ्जलिभूत्वा तस्थिवान् द्विजसत्तमाः ।
 तमन्निर्विह्वलं दृष्ट्वा निषीदेत्यग्रवीक्ष्य तदा ॥ ४५ ॥

निषादवंशकर्त्तासौ बभूव वदतांशराः ।
 धीवरानसृजन्नापि वेनकल्मषसम्भवान् ॥ ४६ ॥
 ये चान्ये विद्यानिलयास्तथा पर्वतसंश्रयाः ।
 अधर्मलब्धयो विप्रास्ते ते वै वेनकल्मषाः ॥ ४७ ॥
 ततः पुनर्महात्मानः पाणिं वेनस्य दक्षिणम् ।
 अरणीमिव संरन्धा ममन्धुर्जातमन्यवः ॥ ४८ ॥
 पृथुस्तस्मात् समुत्पन्नः कराज्ज्वलनसन्निभः ।
 दीप्यमानः स्ववपुषा साक्षादग्निरिव ज्वलन् ॥ ४९ ॥
 अथ सोऽजगच्चं नाम धनुर्गृह्य महारघम् ।
 शरांश्च दिव्यान् रक्षार्थं कवचं च महाप्रभम् ॥ ५० ॥
 तस्मिन् जातेऽथ भूतानि सम्ग्रहृष्टानि सर्व्वशः ।
 समापेतुर्महाभागा वेनस्तु त्रिविधं ययौ ॥ ५१ ॥
 समुत्पन्नेन भो विप्राः सत्पुत्रेण महात्मना ।
 आतः स पुरुषव्याघ्रः पुत्राप्तो नरकात्तदा ॥ ५२ ॥
 तं समुद्राश्च नद्यश्च रत्नान्यादाय सर्व्वशः ।
 तोयानि चाभिषेकार्थं सर्व्व एवोपतस्थिरे ॥ ५३ ॥
 पितामहश्च भगवान् देवैराङ्गिरसैः सह ।
 स्थावरानि च भूतानि जङ्गमानि च सर्व्वशः ॥ ५४ ॥
 समागम्य तदा वैन्यमन्यविञ्चनराधिपम् ।
 महता राजराजेन प्रजास्तेनानुरजिताः ॥ ५५ ॥
 सोऽभिषिक्तो महातेजा विधिबद्धर्मकोविदैः
 आधिराज्ये तदा राज्ञां पृथुर्वैन्यः प्रतापवान् ॥ ५६ ॥

पित्रापरञ्जितांस्तस्य प्रजास्तेनानुरञ्जिताः ।
 अनुरागास्ततस्तस्य नाम राजाभ्यजायत ॥ ५७ ॥
 आपस्तस्तस्मिन्ने तस्य समुद्रमभियास्यतः ।
 पर्वताश्च ददुर्म्मार्गं ध्वजमङ्गश्च नाभयत् ॥ ५८ ॥
 अकृष्टपत्न्या पृथिवी सिध्यन्त्यन्नानि विन्तिनात् ।
 सर्व्वकामदुघा गावः पुटके पुटकेमधु ॥ ५९ ॥
 पतस्मिन्नेव काले तु यज्ञे पैतामहे शुभे ।
 सूतः सूत्यां समुत्पन्नः सौत्येऽहनि महामतिः ॥ ६० ॥
 तस्मिन्नेव महायज्ञे यज्ञे प्राज्ञोऽथ मागधः ।
 पृथोः स्तवार्थं तौ तत्र समाहूतौ महर्षिभिः ॥ ६१ ॥
 ताबूचुर्मुषयः सर्व्वे स्तूयतामेष पार्थिवः ।
 कर्मैतदनुरूपं वां पात्रं चायं नराधिपः ॥ ६२ ॥
 ताबूचतुस्तदा सर्वांस्तानृषीन् सूतमागधौ ।
 आवां देवानृषीश्चैव प्रीणयावः स्वकर्मभिः ॥ ६३ ॥
 न चास्य विद्मो वै कर्म नाम वा लक्षणं यशः ।
 स्तोत्रं येनास्य कुर्याव राजस्तेजस्विनो द्विजाः ॥ ६४ ॥
 ऋषिभिस्तौ नियुक्तौ तु भविष्ये स्तूयतामिति
 यानि कर्माणि कृतवान् पृथुः पञ्चान्महाबलः ॥ ६५ ॥
 ततः प्रभृति वै लोके स्तवेषु मुनिसत्तमाः ।
 आशीर्वादाः प्रयुज्यन्ते सूतमागधवन्दिभिः ॥ ६६ ॥
 तयो स्त्वान्ते सुप्रीतः पृथुः प्रादत्प्रजेश्वरः
 अनूपदेशं सूताव मगधं मागधाय च ॥ ६७ ॥

तं दृष्ट्वा परमप्रीताः प्रजाः प्रोचुर्मनीषिणः ।
 वृत्तीनामेव वो दाता भविष्यति नराधिपः ॥ ६८ ॥
 ततो वैन्यं महात्मानं प्रजाः सममिदुद्रुवुः ।
 त्वं नो वृत्तिं विधत्स्वेति महर्षिष्वचनास्तदा ॥ ६९ ॥
 सोऽभिद्रुतः प्रजाभिस्तु प्रजाहितचिकीर्षया ।
 धनुर्गृह्य पृषत्कांश्च पृथिर्वीमाद्रब्रह्मली ॥ ७० ॥
 ततो वैन्यभयव्रस्ता गौर्भूत्वा प्राद्रवन्मही ।
 तां पृथुर्धनुरादाय द्रवन्तीमन्वधावत ॥ ७१ ॥
 सा लोकान् ब्रह्मलोकादीन् गत्वा वैन्यमयात्तदा
 प्रददर्शाग्रतो वैन्यं प्रगृहीतशरासनम् ॥ ७२ ॥
 ज्वलद्गुभिर्निशितैर्बाणैर्दीप्ततेजसमन्ततः ।
 महायोगं महात्मानं दुर्द्धर्ममरैरपि ॥ ७३ ॥
 अलभन्ती तु सा त्राणं वैन्यमेवान्वपद्यत ।
 कृताञ्जलिपुटा भूत्वा पूज्या लोकैस्त्रिभिस्तदा ॥ ७४ ॥
 उवाच वैन्यं नाधर्मं स्त्रीवधे परिपश्यसि ।
 कथं धारयिता चासि प्रजा राजान् विना मया ॥ ७५ ॥
 मयि लोका स्थिता राजन्मयेदं धार्यते जगत् ।
 मन्त्रिनाशे विनश्येयुः प्रजाः पार्थिव चिद्धि तत् ॥ ७६ ॥
 न मामर्हसि हन्तुं वै श्रेयश्चेत्त्वं चिकीर्षसि ।
 प्रजानां पृथिवीपाल शृणु चेदं वचो मम ॥ ७७ ॥
 उपायतः समारब्धा सर्वे सिध्यन्त्यप्रक्रमाः ।
 उपायं पश्य देन त्वं धारयेथाः प्रजामिमाम् ॥ ७८ ॥

हत्वापि मां न शक्तस्त्वं प्रजानां पोषणे नृप ।
 अनुकूला भविष्यामि यच्छ कोपं महामते ॥ ७६ ॥
 अवध्यां च स्त्रियं प्राहुस्तिर्यग्योनिगतेष्वपि ।
 यद्येवं पृथिवीपाल न धर्मं त्यक्तुमर्हसि ॥ ८० ॥
 एवं बहुविधं वाक्यं श्रत्वा राजा महामनाः ।
 कोपं निगृह्य धर्मात्मा वसुधामिदमब्रवीत् ॥ ८१ ॥

पृथुरुवाच ।

एकस्यार्थे तु यो हन्यादात्मनो वा परस्य वा ।
 बहून् वा प्राणिनोऽनन्तं भवेत्तस्येह पातकम् ॥ ८२ ॥
 सुखमेधन्ति बहवो यस्मिंस्तु निहतेऽशुभे ।
 तस्मिन् हते नास्ति भद्रे पातकं चोपपातकम् ॥ ८३ ॥
 सोऽहं प्रजानिमित्तं त्वां हनिष्यामि वसुधारे
 यदि मे वचनाम्राद्य करिष्यसि जगद्धितम् ॥ ८४ ॥
 त्वां निहत्याद्य बाणेन मच्छासनपराङ्मुखीम् ।
 आत्मानं प्रथयित्वाहं प्रजा धारयिता स्वयम् ॥ ८५ ॥
 सा त्वं शासनमास्थाय मम धर्मभृतां वरे ।
 सञ्जीवय प्रजाः सर्वाः समर्थास्तसि धारणे ॥ ८६ ॥
 दुहितृत्वं च मे गच्छ तत एतमहं शरम् ।
 नियच्छेयं त्वद्वधार्थमुद्यन्तं घोरदर्शनम् ॥ ८७ ॥

वसुधोवाच ।

सर्व्वमेतदहं वीर विधास्यामि न संशयः ।
 क्वत्सं तु मम सम्पश्य क्षरेयं येन क्वत्सला ॥ ८८ ॥

समाञ्च कुरु सर्वत्र मां त्वं धर्मेभृतां वर ।

तथा विस्मयन्मानं मे क्षीरं सर्वत्र भावयेत् ॥ ८६ ॥

लोमहर्षण उवाच ।

तत उत्सारयामास शैलान् शतसहस्रशः ।

धनुष्कोट्या तदा वैन्यस्तेन शैला विवर्द्धिताः ॥ ८७ ॥

न हि पूर्वविसर्गे वै विषमे पृथिवीतले ।

संविभागः पुराणां वा ग्रामाणां बाभवत्तदा ॥ ८८ ॥

न शस्यानि न गोरक्ष्यं न कृषिर्न वणिकपथः ।

नैव सत्यानृतं चासीन्न लोभो न च मत्सरः ॥ ८९ ॥

वैवस्वतेऽन्तरे तस्मिन् साम्प्रतं समुपस्थिते ।

वैन्यात्प्रभृति वै विप्राः सर्वस्यैतस्य सम्भवः ॥ ९० ॥

यत्र यत्र समं त्वस्या भूमेर्गालात्तदा द्विजाः ।

तत्र तत्र प्रजाः सर्वा विवासं समरोचयन् ॥ ९१ ॥

आहारः फलमूलानि प्रजानामभवत्तदा ।

कृच्छ्रेण महता युक्त इत्येवमनुपशुश्रुम ॥ ९२ ॥

स कल्पयित्वा वत्सं तु मनुं स्वायम्भुवं प्रभुम् ।

स्वपाणौ पुरुषय्याधौ दुदोह पृथिवीं ततः ॥ ९३ ॥

शस्यजातानि सर्वाणि पृथुर्वैन्यः प्रतापवान् ।

तेनाग्रे न प्रजाः सर्वा वर्तन्तेऽद्यापि सर्वशः ॥ ९४ ॥

ऋषयश्च तदा देवाः पितरोऽथ सरोत्सवाः ।

दैत्या यक्षाः पुण्यजना गन्धर्वाः पर्वता नगाः ॥ ९५ ॥

पते पुरा द्विजश्रेष्ठा दुदुहर्धरणीं किल ।

क्षीरं वत्सश्च पात्रं च तेषां दोग्धा पृथक्पृथक् ॥ ६६ ॥

ऋषीणामभवत्सोमो वत्सो दोग्धा बृहस्पतिः ।

क्षीरं तेषां तपो ब्रह्म पात्रं छन्दांसि भो द्विजाः ॥ १०० ॥

देवानां काञ्चनं पात्रं वत्सस्तेषां शतक्रतुः ।

क्षीरमोजस्करं चैव दोग्धा च भगवान्रविः ॥ १०१ ॥

पितॄणां राजतं पात्रं यमो वत्सः प्रतापवान् ।

अन्तकश्चाभवद्दोग्धा क्षीरं तेषां सुधा स्मृता ॥ १०२ ॥

नागानां तक्षको वत्सः पात्रं चालाबुसङ्गकम् ।

दोग्धा त्वैरावतो नागस्तेषां क्षीरं विषं स्मृतम् ॥ १०३ ॥

असुराणां मधुर्दोग्धा क्षीरं मायामयं स्मृतम् ।

विरोचनस्तु वत्सोऽभूदायसं पात्रमेव च ॥ १०४ ॥

यक्षाणामामपात्रं तु वत्सो वैश्रवणः प्रभुः ।

दोग्धा रजतनाभस्तु क्षीरान्तर्धानमेव च ॥ १०५ ॥

मुमाली राक्षसेन्द्राणांवत्सं क्षीरञ्च शोणितम् ।

दोग्धा रजतनाभस्तु कपालं पात्रमेव च ॥ १०६ ॥

गन्धर्वानां चित्ररथो वत्सः पात्रं च पङ्कजम् ।

दोग्धा च सुररविः क्षीरं तेषां गन्धः शुचिः स्मृतः ॥ १०७ ॥

शैलं पात्रं पर्वतानां क्षीरं रत्नीपथीस्तथा ।

वत्सस्तु हिमवानासोद्दोग्धा मेरुर्महागिरिः ॥ १०८ ॥

प्लक्षो वत्सस्तु वृक्षाणां दोग्धा काष्ठस्तु पुष्पितः ।

पालाशापात्रं क्षीरञ्च छिन्नदण्डप्ररोहणम् ॥ १०९ ॥

सेयं धात्री विधात्री च पावनी च वसुन्धरा ।
 चराचरस्य सर्वस्य प्रतिष्ठा योनिरेव च ॥ ११० ॥
 सर्वकामदुग्धा दोग्ध्री सर्वशस्यप्ररोहणी ।
 आसीदियं समुद्रान्ता मेदिनी परिविध्रुता ॥ १११ ॥
 मधुकैटभयोः कृत्स्ना मेदसा समभिप्लुता ।
 तेनेयं मेदिनी देवी उच्यते ब्रह्मवादिभिः ॥ ११२ ॥
 ततोऽभ्युपगमाद्राज्ञः पृथोर्वैन्यस्य भो द्विजाः ।
 दुहितृत्वमनुप्राप्ता देवी पृथ्वीति वोच्यते ॥ ११३ ॥
 पृथुना प्रविभक्ता च शोधिता च वसुन्धरा ।
 शस्याकरवती स्फोता पुरपत्तनशालिनी ॥ ११४ ॥
 एवमप्रभावो वैन्यः स राजासीद्राजसत्तमः ।
 नमस्यश्चैव पूज्यश्च भूतग्रामैर्न संशयः ॥ ११५ ॥
 ब्राह्मणैश्च महाभागैर्वेदवेदाङ्गपारगैः ।
 पृथुरेव नमस्कार्यो ब्रह्मयोनिः सनातनः ॥ ११६ ॥
 पार्थिवैश्च महाभागैः पार्थिवत्वमिहेच्छुभिः ।
 आदिराजो नमस्कार्यः पृथुर्वैन्यः प्रतापवान् ॥ ११७ ॥
 योधैरपि च विक्रान्तैः प्राप्तुकामैर्जयं युधि ।
 आदिराजो नमस्कार्यो योधानां प्रथमो नृपः ॥ ११८ ॥
 यो हि योद्धा रणं याति कीर्त्तयित्वा पृथुं नृपम् ।
 स घोररूपात्संग्रामात्क्षेमी भवति कीर्त्तिमान् ॥ ११९ ॥
 वेश्यैरपि च विस्तादयैर्वैश्यवृत्तिविधायिभिः ।
 पृथुरेव नमस्कार्यो वृत्तिदाता महायशः ॥ १२० ॥

तथैव शूद्रैः शुचिभिस्त्रिवर्णपरिचारिभिः ।
 पृथुरैव नमस्कार्यः श्रेयः परमिहेप्सुभिः ॥ १२१ ॥
 एते षट्सविशेषाश्च दोग्धारः क्षीरमेव च ।
 पात्राणि च मयोक्तानि किं भूयो वर्णयामि वः ॥ १२२ ॥
 इति श्रीब्राह्मे महापुराणे पृथोर्जन्ममाहात्म्यकथनं
 नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

पञ्चमोऽध्यायः

मन्वन्तर वर्णनम्

ऋषय ऊचुः ।

मन्वन्तराणि सर्वाणि विस्तरेण महामते ।
 तेषां पूर्वविसृष्टिं च लोमहर्षण कीर्तय ॥ १ ॥
 यावन्तो मनवश्चैव यावन्तं कालमेव च ।
 मन्वन्तराणि भो सूत श्रोतुमिच्छाम तत्त्वतः ॥ २ ॥
 लोमहर्षण उवाच ।
 न शक्यो विस्तरो विप्रा वक्तुं वर्णशतैरपि ।
 मन्वन्तराणां सर्वेषां संक्षेपाच्छृणुत द्विजाः ॥ ३ ॥
 स्वायम्भुवो मनुः पूर्वं मनुः स्वारोचिषस्तथा ।
 उत्तमस्तामसश्चैव रैवतश्चाश्रुषस्तथा ॥ ४ ॥

वेवस्वतश्च भो विप्राः सागप्रतं मनुकच्यते ।
 सावार्णिश्च मनुस्तद्वद्रेभ्यो रौच्यस्तथैव च ॥ ५ ॥
 तथैव मेरुसावर्ण्यश्चत्वारो मनवः स्मृताः ।
 अतीता वर्त्तमानाश्च तथैवानागता द्विजाः ॥ ६ ॥
 कीर्तिता मनवस्तुभ्यं मयेवेते यथाश्रुताः ।
 ऋषींस्त्वेषां प्रवक्ष्यामि पुत्रानदेवगणांस्तथा ॥ ७ ॥
 मरीचिरभ्रिर्मगवानङ्गिराः पुलहः क्रतुः ।
 पुलस्त्यश्च वशिष्ठश्च सप्तैते ब्रह्मणः सुताः ॥ ८ ॥
 उत्तरस्यां दिशि तथा द्विजाः सप्तर्णयस्तथा ।
 आग्निध्रश्चाग्निबाहुश्च मेध्यो मेधातिथिर्वसुः ॥ ९ ॥
 ज्योतिष्मानद्युतिमान्हव्यः सबलः पुत्रसंज्ञकः ।
 मनोः स्वायंभुवस्यैते दश पुत्रा महौजसः ॥ १० ॥
 एतद्वै प्रथमं विप्रा मन्वन्तरमुदाहृतम् ।
 उर्वर्षो वसिष्ठपुत्रश्च स्तम्बः कश्यप एव च ॥ ११ ॥
 प्राणो बृहस्पतिश्चैव दत्तोऽत्रिश्च्यवनस्तथा ।
 एते महर्णयो विप्रा वायुप्रोक्ता महाव्रताः ॥ १२ ॥
 देवाश्च तुषिता नाम स्मृताः स्वारोचिषेऽन्तरै ।
 हविष्मन्ः सुकृतिर्ज्योतिरापोमूर्तिरपि स्मृतः ॥ १३ ॥
 प्रतीतश्च नभस्यश्च नभ ऊर्जस्तथैव च ।
 स्वारोचिषस्य पुत्रास्ते मनोविप्रा महात्मनः ॥ १४ ॥
 कीर्तिताः पृथिवीपाला महावीर्यपराक्रमाः ।
 द्वितीयमेतत्कथितं विप्रा मन्वन्तरं मया ॥ १५ ॥

इदं तृतीयं वक्ष्यामि तद्बुधं ध्यध्वं द्विजोत्तमाः ।
 वसिष्ठपुत्राः सप्तासन् वासिष्ठा इति विश्रुताः ॥ १६ ॥
 हिरण्यगर्भस्य सुता ऊर्जा जाताः सुनेत्रसः ।
 ऋषयोऽत्र मया प्रोक्ताः कीर्त्यमानान्निबोधत ॥ १७ ॥
 उत्तमेयान्मुनिश्रेष्ठा दश पञ्चान्मनोरिमान् ।
 इष ऊर्जस्तनूर्जस्तु मधुर्माधव एष च ॥ १८ ॥
 शुचिः शुक्रः सहश्चैव नभस्यो नभ एव च ।
 भानवस्तत्र देवाश्च मन्वन्तरमुदाहृतम् ॥ १९ ॥
 मन्वन्तरं चतुर्थं वः कथयिष्यामि साम्प्रतम् ।
 काव्यः पृथुस्तथैवाग्निर्जह्नुर्धाता द्विजोत्तमाः ॥ २० ॥
 कपीवानकपीवांश्च तत्र सप्तर्षयो द्विजाः ।
 पुराणे कीर्त्तिताविप्राः पुत्राः पौत्राश्चभोद्विजाः ॥ २१ ॥
 तथा देवगणाश्चैव तामसस्यान्तरै मनोः ।
 द्युतिस्तपस्यः सुतपास्तपोभूतः सनातनः ॥ २२ ॥
 तपोरतिरकल्माषस्तन्वी धन्वी परन्तपः ।
 तामसस्य मनोरेते दश पुत्राः प्रकीर्त्तिताः ॥ २३ ॥
 वायुप्रोक्ता मुनिश्रेष्ठाश्चतुर्थं चैतदन्तरम् ।
 देवबाहुर्यदुधश्च मुनिर्व्वेदशिरास्तथा ॥ २४ ॥
 हिरण्यरोमा पञ्जर्ज्य ऊर्ध्वबाहुश्च सोमजः ।
 सत्यनेत्रस्तथात्रेय एने सप्तर्षयोऽपरे ॥ २५ ॥
 देवाश्चाभूतरजसस्तथा प्रकृतयः स्मृताः ।
 वारिप्लवश्च रैम्यश्च मनोरन्तरमुच्यते ॥ २६ ॥

अथ पुत्रानिमांस्तस्य बुध्यध्वं गदतो मम ।
 धृतिमानव्ययो युक्तस्तत्त्वदर्शी निरुत्सुकः ॥ २७ ॥
 भारण्यश्च प्रकाशश्च निर्मोहः सत्यवाक्कृती ।
 रैवतस्य मनोः पुत्राः पञ्चमं चैतदन्तरम् ॥ २८ ॥
 षष्ठं तु सम्प्रवक्ष्यामि तद्बुध्यध्वं द्विजोत्तमाः ।
 भृगुर्नभो विषखांश्च सुधामा विरजास्तथा ॥ २९ ॥
 अतिनामा सहिष्णुश्च सप्तैते च महर्षयः ।
 चाध्रुषस्यान्तरे विप्रा मनोर्देवास्त्वमे स्मृताः ॥ ३० ॥
 अप्रसूताश्च ऋषयः * पृथक्त्वेन दिवौकसः ।
 लेखाश्च नामतो विप्राः पञ्च देवगणाः स्मृताः ॥ ३१ ॥
 ऋषेरङ्गिरसः पुत्रा महात्मानो महौजसः ।
 नाड्यलेया मुनिश्रेष्ठा दश पुत्रास्तु विश्रुताः ॥ ३२ ॥
 रुद्रप्रभृतयो विप्राश्चाध्रुषस्यान्तरे मनोः ।
 षष्ठं मन्वन्तरं प्रोक्तं सप्तमं तु निबोधत ॥ ३३ ॥
 अत्रिर्वसिष्ठो भगवान् कश्यपश्च महानृषिः ।
 गौतमोऽथ भरद्वाजो विश्वामित्रस्तथैव च ॥ ३४ ॥
 तथैव पुत्रो भगवानृचीकस्य महात्मनः ।
 सप्तमो जमदग्निश्च ऋषयः साम्प्रतं दिवि ॥ ३५ ॥
 साध्या रुद्राश्च विश्वे च वसवो मरुतस्तथा ।
 भादित्याश्चाश्विनौ चापि देवौ वैवस्वतौ स्मृतौ ॥ ३६ ॥

* “भावाल प्रथिता स्ते वै” कबिदेवं पाठः ।

मनोर्व्वेवस्वतस्यैते वर्त्तन्ते साम्प्रतेऽन्तरै ।
 इक्ष्वाकुप्रमुखाश्चैव दश पुत्रा महात्मनः ॥ ३७ ॥
 एतेषां कीर्त्तितानान्तु महर्षीणां महौजसाम् ।
 तेषांपुत्राश्च पौत्राश्च दिक्षु सर्वासु भो द्विजाः ॥ ३८ ॥
 मन्वन्तरेषु सर्व्वेषु प्रागासन् सप्त सप्तकाः ।
 लोके धर्ममवस्थार्थं लोकसंरक्षणाय च ॥ ३९ ॥
 मन्वन्तरे व्यतिक्रान्ते चत्वारः सप्तका गणाः ।
 कृत्वा कर्म दिवं यान्ति ब्रह्मलोकमनामयम् ॥ ४० ॥
 ततोऽन्ये तपसां युक्ताः स्थानं तत्पूरयन्त्युत ।
 अतीता वर्त्तमानाश्च क्रमेणैतेन भो द्विजाः ॥ ४१ ॥
 अनागताश्च सप्तैते स्मृता द्विचि महर्षयः ।
 मनोरन्तरमासाद्य सावर्णस्येह भो द्विजाः ॥ ४२ ॥
 रामो व्यासस्तथात्रेयो दीप्तिमन्तो बहुश्रुताः ।
 भारद्वाजस्तथा द्रौणिरश्वथामा महाद्युतिः ॥ ४३ ॥
 गौतमश्चाजराश्चैव शरद्वान्नाम गौतमः ।
 कौशिको गालवश्चैव और्व्व काश्यप एष च ॥ ४४ ॥
 एते सप्त महात्मानो भविष्या मुनिसत्तमाः ।
 वेरी चैवाध्वरीवांश्च शमनो धृतिमान् वसुः ॥ ४५ ॥
 आरिष्टश्चाप्यधृष्टश्च बाजी सुमतिरेव च ।
 सावर्णस्य मनोः पुत्रा भविष्या मुनिसत्तमाः ॥ ४६ ॥
 एतेषां कल्यमुत्थाय कीर्त्तनात् सुखमेधते ।
 यशश्चाप्नोति सुमहदायुष्मांश्च भवेन्नरः ॥ ४७ ॥

पतान्युकानि भो विप्राः सप्तसप्त च तत्त्वतः ।
 मन्वन्तराणि संक्षेपाच्छृणुतानागतान्यपि ॥ ४८ ॥
 सावर्णा मनवो विप्राः पञ्च तांश्च निबोधत ।
 एको वैवस्वतस्तेषां चत्वारस्तु प्रजापतेः ॥ ४९ ॥
 परमेष्ठिसुता विप्रा मेरुसावर्ण्यतां गताः ।
 दक्षरूपेते हि दौहित्राः प्रियायास्तनया नृपाः ॥ ५० ॥
 महता तपसा युक्त्वा मेरुपृष्ठे महौजसः ।
 रुचेः प्रजापतेः पुत्रो रौच्यो नाम मनुः स्मृतः ॥ ५१ ॥
 भूत्यां चोत्पादितो देव्यां भौत्यो नाम रुचेः सुतः ।
 अनागताश्च सप्तैते कल्पेऽस्मिन्मनवः स्मृताः ॥ ५२ ॥
 तैरियं पृथिवी सर्वा सप्तद्वीपा सप्ततना ।
 पूर्णं युगसहस्रन्तु परिपाल्या द्विजोत्तमाः ॥ ५३ ॥
 प्रजापति (ते) श्च तपसा संहारं तेषु नित्यशः ।
 युगानि सप्ततिस्तानि साम्राणि कथितानि च ॥ ५४ ॥
 कृतव्रतादियुकानि मनोरन्तरमुच्यते ।
 चतुर्दशैते मनवः कथिताः कीर्त्तिवर्जनाः ॥ ५५ ॥
 वेदेषु सपुराणेषु सर्व्वेषु प्रमविष्णवः ।
 प्रजानां पतयो विप्रा धन्यमेषां प्रकीर्त्तनम् ॥ ५६ ॥
 मन्वन्तरेषु संहाराः संहारान्तेषु सम्भवाः ।
 न शक्यतेऽन्तस्तेषां वै वक्तुं वर्षशतैरपि ॥ ५७ ॥
 विसर्गस्य प्रजानां वै संहारस्य च भो द्विजाः ।
 मन्वन्तरेषु संहाराः भूयन्ते द्विजसत्तमाः ॥ ५८ ॥

सशेषास्तत्र तिष्ठन्ति देवाः सप्तर्षिभिः सह ।
 तपसा ब्रह्मचर्येण श्रुतेन च समन्विताः ॥ ५९ ॥
 पूर्णे युगसहस्रे तु कल्पो निःशेष उच्यते ।
 तत्र भूतानि सर्वाणि द्वाधान्यादित्यरश्मिभिः ॥ ६० ॥
 ब्रह्माणमग्रतः कृत्वा सहादित्यगणैर्द्विजाः ।
 प्रविशन्ति सुरश्रेष्ठं हरिनारायणं प्रभुम् ॥ ६१ ॥
 स्रष्टारं सर्वभूतानां कल्पान्तेषु पुनःपुनः ।
 अव्यक्तं शाश्वतो देवस्तस्य सर्वमिदं जगत् ॥
 अत्र घः कीर्त्तयिष्यामि मनोवैभवस्वतस्य वै ।
 विसर्गं मुनिशार्दूलाः साग्रतन्तु महाद्युतेः ॥ ६३ ॥
 अत्र वंश प्रसङ्गेन कथ्यमानं पुरातनम् ।
 यत्रोत्पन्नो महात्मा स हरिर्वृष्णिकुले प्रभुः ॥ ६४ ॥
 इति श्रीब्राह्मे महापुराणे मन्वन्तरकीर्त्तनं नाम
 पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

षष्ठोऽध्यायः ।

आदित्योत्पत्ति कथनम्

लोमहर्षण उवाच ।

विवस्वान् कश्यपाञ्जने दाक्षायण्यां द्विजोत्तमाः ।
तस्य भार्याभवत्संज्ञा त्वाष्ट्री देवी विवस्वतः ॥ १ ॥
सुरैरुगिति विख्याता त्रिषु लोकेषु भाविनी ।
सावै भार्या भगवतो मार्त्तण्डस्य महात्मनः ॥ २ ॥
भर्तृरूपेण नातुष्यद्रूपयौवनशालिनी ।
संज्ञा नाम सुतपसा सुदीप्तेन समन्विता ॥ ३ ॥
आदित्यस्य हि तद्रूपं मण्डलस्य सुतेजसा ।
गात्रेषु परिदग्धं वै नातिकान्तमिषामवत् ॥ ४ ॥
न क्षत्स्वयं मृतोऽण्डस्य इति स्नेहाद्भाषत ।
अजानन् कश्यपस्तस्मान्मार्त्तण्ड इति चोच्यते ॥ ५ ॥
तेजस्वभ्यधिकं तस्य नित्यमेव विवस्वतः ।
येनातितापयामास त्रीं ल्लोकान् कश्यपात्मजः ॥ ६ ॥
ग्रीण्यपत्यानि भो विप्राः संज्ञायांतपतां वरः
आदित्यो जनयामास कन्यां द्वी च प्रजापती ॥ ७ ॥
मनुर्वैवस्वतः पूर्वं श्रद्धादेवः प्रजापतिः ।
यमश्च यमुना चैव यमजी सम्भूवतुः ॥ ८ ॥

श्यामवर्णन्तु तद्रूपं संज्ञा दृष्ट्वा विषस्वतः ।
 असहन्ती तु स्थां छायां सवर्णां निर्म्ममे ततः ॥ ९ ॥
 मायामयी तु सा संज्ञा तस्यां छायासमुत्थिताम् ।
 प्राञ्जलिः प्रणता भूत्वा छाया संज्ञां द्विजोत्तमाः ॥ १० ॥
 उवाच किं मया कार्यं कथयस्व शुचिस्मिते ।
 स्थितास्मि तव निर्देशे शाधि मां वरवर्णिनि ॥ ११ ॥

संज्ञोवाच ।

अहं यास्यामि भद्रं ते स्वमेव भवनं पितुः ।
 त्वयैव भवने मया वस्तव्यं निर्विशङ्कया ॥ १२ ॥
 इमौ च बालकौ मया कन्या ज्ञेयं सुमध्यमा ।
 सम्भाव्यास्ते न चाख्येयमिदं भगवते क्वचित् ॥ १३ ॥

सवर्णो वाच ।

आ कचग्रहणाद्देवि आ शापान्नैव कर्हिचित् ।
 आख्यास्यामि नमस्तुभ्यं गच्छ देवि यथासुखम् ॥ १४ ॥

लोमहर्षण उवाच ।

समादिश्य सवर्णान्तान्तयेत्युक्ता तथा च सा ।
 त्वष्टुः समीपमगमद्ग्रीडितेव तपस्विनी ॥ १५ ॥
 पितुः समीपगा सा तु पित्रा निर्भर्त्सिता शुभा ।
 भक्तुः समीपं गच्छेति नियुक्ता च पुनःपुनः ॥ १६ ॥
 आगच्छद्बद्धवा भूत्वाच्छाद्यरूपमनिन्दिता ।
 कुरुनयोत्तरान् गत्वा तृणान्यथ वचार ह ॥ १७ ॥

द्वितीयायान्तु संज्ञायां संज्ञेयमिति चिन्तयन् ।

आदित्यो जनयामास पुत्रमात्मसमं तदा ॥ १८ ॥

पूर्वजस्य मनोविप्राः सदृशोऽयमिति प्रभुः ।

मनुरेवाभवन्नाम्ना सावर्ण इति बोध्यते ॥ १९ ॥

द्वितीयो यः सुतस्तस्याः स विज्ञेयः शनैश्चरः ।

संज्ञा तु पृथिवी विप्राः स्वस्य पुत्रस्य वै तदा ॥ २० ॥

चकाराभ्यधिकं स्नेहं न तथा पूर्वजेषु वै ।

मनुस्तस्या अक्षम यमस्तस्या न चक्षमे ॥ २१ ॥

स वै रोषाच्च बाल्याच्च भाविनोऽर्थस्य वानघ ।

पदा सन्तर्जयामास संज्ञां वैवस्वतो यमः ॥ २२ ॥

तं शशाप ततः क्रोधान् सावर्णजननी तदा ।

चरणः पततामेव तवेति भृशदुःखिता ॥ २३ ॥

यमस्तु तत् पितुः सर्व्वं प्राञ्जलिः प्रत्यवेदयत् ।

भृशं शापमयोद्विभ्रः संज्ञावाक्यैर्विशङ्कितः ॥ २४ ॥

शापोऽयं विनिवर्त्तितं प्रोवाच पितरं द्विजाः ।

मात्रा स्नेहेन सर्व्वेषु वर्त्तितव्यं सुतेषु वै ॥ २५ ॥

संयमस्मान्पाल्येह विवस्वन् सम्बुभूषति ।

तस्यां मयोद्यतः पावो न तु देहे निपातितः ॥ २६ ॥

बाल्याद्वा यदि वा लौल्यान्मोहात्तत्क्षन्तुमर्हसि ।

शप्तोऽहमस्मि लोकेश जनन्या तपतांवर ।

तव प्रसादाच्चरणो न पतेन्मम गोपते ॥ २७ ॥

विषयानुवाच

असंशयं पुत्र महद्भविष्यत्यत्र कारणम् ।
 येन त्वामाविशेत् क्रोधो धर्मज्ञं सत्यवादिनम् ॥ २८ ॥
 न शक्यमेतन्मिथ्या तु कर्तुं मातृवचस्तव ।
 कृतयो मांसमादाय यास्यन्त्यवनिमेव च ॥ २९ ॥
 कृतमेवं वचस्तथ्यं मातुस्तव भविष्यति ।
 शापस्य परिहारेण त्वं च त्रातो भविष्यसि ॥ ३० ॥
 आदित्यश्चाब्रवीत् संज्ञां किमर्थं तनयेषु वै ।
 तुल्येष्वभ्यधिकः स्नेह एकस्मिन् क्रियते त्वया ॥ ३१ ॥
 सा तत् परिहरन्तो तु नावचक्षे विवस्वते ।
 स चात्मानं समाधाय योगात्तथ्यमपश्यत् ॥ ३२ ॥
 तां शप्तुकामो भगवान्नाशपन्मुनिसत्तमाः ।
 मूर्धजेषु निजग्राह स तु तां मुनिसत्तमाः ॥ ३३ ॥
 ततः सर्व्वं यथावृत्तमावचक्षे विवस्वते ।
 विवस्वानथ तच्छ्रुत्वा क्रुद्धस्त्वष्टारमभ्यगान् ॥ ३४ ॥
 दृष्ट्वा तु तं यथान्यायमर्चयित्वा विभावसुम् ।
 निर्दग्धुकामं रोषेण सान्त्वयामास वै तदा ॥ ३५ ॥

त्वष्टोवाच ।

तवाति तेजसाविष्टमिदं रूपं न शोभते ।
 असहन्ती च संज्ञा सा वने चरति शङ्कले ॥ ३६ ॥
 द्रष्टा हि तां भवानद्य स्वां भार्यां शुभचारिणीम् ।
 श्लाघ्यां बोगबलीपेतां योगमास्थाय गोपते ॥ ३७ ॥

अनुकूलं तु ते देव यदि स्यान्मम सम्मतम् ।
 रूपं निर्वर्त्तयाम्यद्य तव कान्तमरिन्दम ॥ ३८ ॥
 ततोऽभ्युपागमस्त्वष्टा मार्त्तण्डस्य विषस्वतः ।
 भ्रमिमारोप्य तत्तेजः सान्त्वयामास भो द्विजाः ॥ ३९ ॥
 ततो निर्भासितं रूपं तेजसा संहतेन वै ।
 कान्तात् कान्ततरं द्रष्टुमधिकं शुशुभे तदा ॥ ४० ॥
 ददर्श योगमास्थाय स्वां भार्यां वड्ढां ततः ।
 अधृष्यां सर्वभूतानां तेजसा नियमेन च ॥ ४१ ॥
 वड्ढावपुषा विप्राश्चरन्तीमकुतोभयाम् ।
 सोऽभ्वरूपेण भगवांस्तां मुखे समभावयत् ॥ ४२ ॥
 मैथुनाय विचेष्टन्तीं परपुंसोऽवशङ्कया ।
 सा तन्निरवमच्छुक्रं नासिकाभ्यां विषस्वतः ॥ ४३ ॥
 देवौ तस्यामजायेतामश्विनौ मिषजां वरौ ।
 नासत्यश्चैव दक्षश्च स्मृतौ द्वावश्विनाविति ॥ ४४ ॥
 मार्त्तण्डस्यात्मजावेतावष्टमस्य प्रजापतेः ।
 तां तु रूपेण कान्तेन दर्शयामास भास्करः ॥ ४५ ॥
 सा तु दृष्ट्वैव भर्तारं तुतोष मुनिसत्तमाः ।
 यमस्तु कर्मणा तेन भृशं पीडितमानसः ॥ ४६ ॥
 धर्मेण रज्जयामास धर्मराज इमाः प्रजाः ।
 स लेभे कर्मणा तेन शुभेन परमद्युतिः ॥ ४७ ॥
 पितृणामाधिपत्यं च लोकपालत्वमेव च ।
 मनुः प्रजापतिस्त्वासीत्सावर्णिः स तपोधनाः ॥ ४८ ॥

भाव्यः समामते तस्मिन्मनुः सार्वर्णिकेऽन्तरै ।
 मेरुपृष्ठे तपो नित्यमद्यापि स खरत्युत ॥ ४९ ॥
 भ्राता शनैश्चरस्तस्य ग्रहत्वं स तु लब्धवान् ।
 त्वष्टा तु तेजसा तेन विष्णोश्चक्रमकल्पयत् ॥ ५० ॥
 तदप्रतिहतं युद्धे दानवान्तचिकीर्षया ।
 यचीयसो तु साप्यासीद्व्यामी कन्या यशस्विनी ॥ ५१ ॥
 अमवच्च सरिच्छ्रेष्ठा यमुना लोकपावनी ।
 मनुरित्युच्यते लोके सावर्ण इति चोच्यते ॥ ५२ ॥
 द्वितीयो यः सुतस्तस्य मनोभ्राता शनैश्चरः ।
 ग्रहत्वं स च लेभे वै सर्वलोकामिपूजितः ॥ ५३ ॥
 य इदं जन्म देवानां शृणुयाच्च सत्तमः ।
 आपदं प्राप्य मुच्येत प्राप्नुयाच्च महद्दयशः ॥ ५४ ॥
 इति श्रीब्राह्म महापुराणे आदित्योत्पत्तिकथनं नाम
 षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

सप्तमोऽध्यायः ।

सूर्यवंश वर्णनम् ।

लोमहर्षेण उवाच ।

मनोर्वैद्यस्वतस्यासन् पुत्रा वै नव तत्समाः ।
 शङ्खाकुश्वैव नामागो धृष्टः शर्यातिरैव च ॥ १ ॥

नरिष्यन्तश्च यष्टो वै प्रांशं रिष्टश्च सप्तमः ।
 करुषश्च पृषधश्च नदैते मुनिसत्तमाः ॥ २ ॥
 अकरोत् पुत्रकामस्तु मनुरिष्टिं प्रजापतिः ।
 मित्रावरुणयोर्विप्राः पूर्वमेव महामतिः ॥ ३ ॥
 अनुत्पन्नेषु बहुषु पुत्रेष्वेतेषु मो द्विजाः ।
 तस्यां च वर्त्तमानायामिष्ट्यां च द्विजसत्तमाः ॥ ४ ॥
 मित्रावरुणयोरंशे मनुराहुतिमावहत् ।
 तत्र दिव्याम्बरधरा दिव्याभरणभूषिता ॥ ५ ॥
 दिव्यसहमना चैव इला जज्ञ इति श्रुतिः ।
 तामिलेत्येव होवाच मनुर्दण्डधरस्तदा ॥ ६ ॥
 अनुगच्छस्व मां भद्रे तमिला प्रत्युवाच ह ।
 धर्मयुक्तमिदं वाक्यं पुत्रकामं प्रजापतिम् ॥ ७ ॥
 इलोवाच ।

मित्रावरुणयोरंशे जातास्मि वदतांवर ।
 तयोः सकाशं यास्यामि न मां धर्महतां कुरु ॥ ८ ॥
 सेवमुक्त्वा मनुं देवं मित्रावरुणयोरिला ।
 गत्वान्तिकं वरारोहा प्राञ्जलिर्वाक्यमब्रवीत् ॥ ९ ॥
 इलोवाच ।

अंशेऽस्मि युवयोर्जाता देवौ किं करवाणि वाम् ।
 मनुना चाहमुक्ता वा अनुगच्छस्व मामिति ॥ १० ॥
 तौ तथावादिनीं साध्वीमिलां धर्मपरायणाम् ।
 मित्रश्च वरुणश्चोभाइचतुस्तां द्विजोत्तमाः ॥ ११ ॥

मित्रावरुणावूचतुः ।

अनेन तव धर्मेण प्रश्रयेण दमेन च ।
 सत्येन चैव सुश्रोणि प्रीतौ स्वो वरवर्णिनि ॥ १२ ॥
 आचयोस्त्वं महामागे वयाति कन्येति यास्यसि ।
 मनोर्वंशकरः पुत्रस्त्वमेव च भविष्यसि ॥ १३ ॥
 सुद्युम्न इति विख्यातस्त्रिषु लोकेषु शोभने ।
 जगत्प्रियो धर्मशीलो मनोर्वंशविषर्द्धनः ॥ १४ ॥
 निवृत्ता सा तु तच्छ्रुत्वा गच्छन्ती पितुरन्तिकात् ॥ १५ ॥
 बुधेनान्तरमासाद्य मैथुनायोपमन्त्रिता ।
 सोमपुत्राद्वुधाद्विप्रास्तस्यां जज्ञे पुरूरवाः ॥ १६ ॥
 जनयित्वा ततः सा तमिला सुद्युम्नतां गता ।
 सुद्युम्नस्य तु दायदास्त्रयः परमधार्मिकाः ॥ १७ ॥
 उत्कलश्च गयश्चैव विनताश्वश्च भो द्विजाः ।
 उत्कलस्योत्कला विप्रा विनताश्वस्य पश्चिमाः ॥ १८ ॥
 दिक् पूर्वा मुनिशादूर्ध्वा गयस्य तु गया स्मृता ।
 प्रविष्टेषु तु मनौ विप्रा दिवाकरमरिन्दमम् ॥ १९ ॥
 दशधा तत्पुनः क्षत्रमकरोत् पृथिवीमिमाम् ।
 इक्ष्वाकुर्ज्येष्ठदायादो मध्यदेशमवाप्तवान् ॥ २० ॥
 कन्याभावात् सुद्युम्नो नैतद्राज्यमवाप्तवान् ।
 बलिष्ठवचनास्वासीन् प्रतिष्ठाने महात्मनः ॥ २१ ॥
 प्रतिष्ठा धर्मराजस्य सुद्युम्नस्य द्विजोत्तमाः ।
 तत्पुरूरवसे प्रादाद्राज्यं प्राप्य महायशाः ॥ २२ ॥

मानवेयो मुनिश्रेष्ठाः स्त्रीपुंसोल क्षर्णैर्युतः ।
 धृतवांस्तामिलेत्येवं सुद्युमेति च विभुतः ॥ २३ ॥
 नरिष्यन्ताः शकाः पुत्रा नामागस्य तु भो द्विजाः ।
 अम्बरीषोऽभवन् पुत्रः पार्थिवर्वमसत्तमः ॥ २४ ॥
 धृष्टस्य धार्ष्टिकं क्षत्रं रणवृत्तं बभूव ह ।
 करुषस्य च कारुषाः क्षत्रिया युद्धदुर्मदाः ॥ २५ ॥
 नामागधृष्टपुत्राश्च क्षत्रिया वैश्यतां गताः ।
 प्रांशोरेकोऽभवत्पुत्रः प्रजापतिरिति स्मृतः ॥ २६ ॥
 नरिष्यन्तस्य दायदो राजा दन्तधरो यमः ।
 शर्यातिर्मिथुनं त्वासीदानर्त्तो नाम विभ्रुतः ॥ २७ ॥
 पुत्रः कन्या मुकन्या च या पत्नी व्यवनस्य ह ।
 आनर्त्तस्य तु दायदो रेवो नाम महाद्युतिः ॥ २८ ॥
 आनर्त्तविषयश्चैव पुरी चास्य कुशस्थली ।
 रेवस्य रेवतः पुत्रः ककुद्मी नाम धार्मिकः ॥ २९ ॥
 ज्येष्ठः पुत्रः स तस्यासीद्राज्यं प्राप्य कुशस्थलीम् ।
 स कन्यासहितः श्रुत्वा गान्धर्व्वं ब्रह्मणोऽन्तिके ॥ ३० ॥
 मुहूर्त्तभूतं देवस्य तस्थौ बहुयुगं द्विजाः ।
 आजगाम स चैवाथ स्वां पुरीं यादवैर्वृताम् ॥ ३१ ॥
 कृतां द्वारवतीं नाम बहुद्वारां मनोरमाम् ।
 भोजवृष्ण्यन्धकैर्गुप्तां वसुदेवपुरोगमे ॥ ३२ ॥
 तत्रैव रेवतो ज्ञात्वा यथातत्त्वं द्विजोत्तमाः ।
 कन्यां तां बलदेवाय सुमद्रां नाम रेवतीम् ॥ ३३ ॥

दत्त्वा जगाम शिखरं मेरोस्तपसि संस्थितः ।
रैमे रामोऽपि धर्मात्मा रैवत्या सहितः सुखी ॥ ३४ ॥

मुनय ऊचुः ।

कथं बहुयुगे काले समतीते महामते ।
न जरा रैवतीं प्राप्ता रैवतं च ककुदुमिनम् ॥ ३५ ॥
मेरुं गतस्य वा तस्य शर्यातिः सन्ततिः कथम् ।
स्थिता पृथिव्यामद्यापि श्रोतुमिच्छाम तत्त्वतः ॥ ३६ ॥

लोमहर्षण उवाच ।

न जरा क्षुत्पिपासा वा न मृत्युर्मुनिसत्तमाः ।
मृतुचक्रं प्रभवति ब्रह्मलोके सदानयाः ।
ककुदुमिनः स्वर्लोके तु रैवतस्य गतस्य ह ॥ ३७ ॥
हृता पुण्यजनैर्विप्रा राक्षसैः सा कुशस्थली ।
तस्य भ्रातृशतं त्वासीद्गार्मिकस्य महात्मनः ॥ ३८ ॥
तद्वध्यमानं रक्षोभिर्दिशः प्राकामदच्युताः ।
विद्रुतस्य च विप्रेन्द्रास्तस्य भ्रातृशतस्य वै ॥ ३९ ॥
अन्ववायस्तु सुमहांस्तत्र तत्र द्विजोत्तमाः ।
तेषां ह्येते मुनिश्रेष्ठाः शर्याता इति विश्रुताः ॥ ४० ॥
क्षत्रिया गुणसम्पन्ना विश्वे सर्वासु विश्रुताः ।
सर्व्वशः सर्व्वगहनं प्रविष्टास्ते महीजसः ॥ ४१ ॥
नाभागरिष्टपुत्री द्वौ वेश्यौ ब्राह्मणतां गतौ ।
करूपस्य तु कारुषाः क्षत्रिया युद्धदुर्म्मावाः ॥ ४२ ॥

पृषन्नो हिंसयित्वा तु गुरोर्गां द्विजसत्तमाः ।
 शापाच्छूदत्वमापन्नो नवैते परिकीर्त्तिताः ॥ ४३ ॥
 वैवस्वतस्य तनया मुनेर्वै मुनिसत्तमाः ।
 क्षुषतस्तु मनोर्विप्रा इक्ष्वाकुरभवत् सुतः ॥ ४४ ॥
 तस्य पुत्रशतं त्वासीदिक्ष्वाकोर्मूरिदक्षिणम् ।
 तेषां विकुक्षिर्ज्येष्ठस्तु विकुक्षित्वादयोधताम् ॥ ४५ ॥
 प्राप्तः परमधर्मज्ञः सोऽयोध्याधिपतिः प्रभुः ।
 शकुनिप्रमुखास्तस्य पुत्राः पञ्चशतं स्मृताः ॥ ४६ ॥
 उत्तरापथदेशस्य रक्षितारो महाबलाः ।
 चत्वारिंशदशष्टौ च दक्षिणस्यां तथा दिशि ॥ ४७ ॥
 वशातिप्रमुखाश्चान्ये रक्षितारो द्विजोत्तमाः ।
 इक्ष्वाकुस्तु विकुक्षि वा अष्टकायामथादिशत् ॥ ४८ ॥
 मांसमानय श्राद्धार्थं मृगान् हत्वा महाबलः ।
 श्राद्धकर्मणि चोद्दिष्टे अकृते श्राद्धकर्मणि ॥ ४९ ॥
 भक्षयित्वा शशं विप्रा शशादो मृगयां गतः ।
 इक्ष्वाकुणा परित्यक्तो वसिष्ठवचनात् प्रभुः ॥ ५० ॥
 इक्ष्वाको संस्थिते विप्राः शशादस्तु नृपोऽभवत् ।
 शशादस्य तु दायादः ककुत्स्थो नाम वीर्यवान् ॥ ५१ ॥
 अनेनास्तु ककुत्स्थस्य पृथुश्चानेनसः स्मृतः ।
 विष्टराभवः पृथोः पुत्रस्तस्मादार्द्रस्त्वजायत ॥ ५२ ॥
 भार्द्रस्य युवनाभवस्तु श्रावस्तस्तत्सुतो द्विजाः ।
 जज्ञे श्रावस्तको राजा श्रावस्ती येन निर्मिता ॥ ५३ ॥

श्रावस्तस्य तु दायदो बृहदश्वो महीपतिः ।

कुवलाश्वः सुतस्तस्य राजा परमधार्मिकः ॥ ५४ ॥

यः स धुन्धुवधाद्राजा धुन्धुमारत्वमागतः ॥ ५५ ॥

मुनय ऊचुः ।

धुन्धोर्वधं महाप्राज्ञ श्रोतुमिच्छाम तत्वनः ।

यद्वधात्कुवलाश्वोऽसौ धुन्धुमारत्वमागतः ॥ ५६ ॥

लोमहर्षेण उवाच ।

कुवलाश्वस्य पुत्राणां शतमुत्तमधन्विनाम् ।

सर्वे विद्यासु निष्णाता बलवन्तो दुरासदाः ॥ ५७ ॥

बभूवुर्धार्मिकाः सर्वे यज्वानो भूरिक्षिणाः ।

कुवलाश्वं पिता राज्ये बृहदश्वो न्ययोजयत् ॥ ५८ ॥

पुत्रसंक्रामितश्रीस्तु वनं राजा विवेश ह ।

तमुत्तङ्कोऽथ विप्रर्षिः प्रयान्तं प्रन्यषारयत् ॥ ५९ ॥

उत्तङ्क उवाच ।

भवता रक्षणं कार्यं तच्च कर्तुं त्वमर्हसि ।

निरुद्धिन्नस्तपश्चतुं न हि शक्नोमि पार्थिव ॥ ६० ॥

ममाश्रमसमीपे वै समेषु मरुधन्वसु ।

समुद्रो बालुकापूर्ण उद्दालक इति स्मृतः ॥ ६१ ॥

देवतानामवध्यश्च महाकायो महाबलः ।

अन्तर्भूमिगतस्तत्र बालुकान्तर्हितो महान् ॥ ६२ ॥

राक्षसस्य मधोः पुत्रो धुन्धुर्नाम महासुरः ।

शेते लोकविनाशाय तप आस्थाय दारुणम् ॥ ६३ ॥

संवत्सरस्य पठ्यन्ते स निश्वासं विमुष्णति ।
 यदा तदा मही तत्र चलति स्य नराधिप ॥ ६४ ॥
 तस्य निःश्वासघातेन रज उद्धयते महत् ।
 आदित्यपथमावृत्य सप्ताहं भूमिकम्पनम् ॥ ६५ ॥
 सविस्फुलिङ्गं साङ्गारं मधुममतिदारुणम् ।
 तेन तात न शक्नोमि तस्मिन् स्थातुं स्व आश्रमे ॥ ६६ ॥
 तं मारय महाकायं लोकानां हितकाम्यया ।
 लोकाः स्वस्था भवन्त्यद्य तस्मिन् विनिहते त्वया ॥ ६७ ॥
 त्वं हि तस्य वधायैकः समर्थः पृथिवीपते ।
 विष्णुना च वरो दत्तो मह्यं पूर्वयुगे नृप ॥ ६८ ॥
 यस्तं महासुरं रौद्रं हनिष्यति महाबलम् ।
 तस्य त्वं वरदानेन तेजश्चाख्यापयिष्यसि ॥ ६९ ॥
 न हि धुन्धुर्महातेजास्तेजसालपेन शक्यते ।
 निर्दग्धं पृथिवीपाल त्विरं युगशतैरपि ॥ ७० ॥
 वीर्यञ्च सुमहत्तस्य देवैरपि दुरासदम् ।
 स एवमुक्तो राजर्षिरुत्तङ्गेन महात्मना ।
 कुचलाश्वं सुतं प्रादात्तस्मै धुन्धुर्निबर्हणे ॥ ७१ ॥

बृहदश्व उवाच ।

भगवन्न्यस्तशस्त्रोऽहमयं तु तनयो मम ।
 भविष्यति द्विजश्रेष्ठ धुन्धुमारो न संशयः ॥ ७२ ॥

लोमहर्षण उवाच ।

स तं व्यादिश्य तनयं राजर्षिर्धुन्धुमारणे ।
 जगाम पर्वतायैव नृपतिः संशितव्रतः ॥ ७३ ॥

कुवलाश्वस्तु पुत्राणां शतेन सह भो द्विजाः ।
 प्रायादुत्तङ्कसहितो धुन्धोस्तस्य निवर्तणे ॥ ७३ ॥
 तमाविशतदा विष्णुस्नेजसा भगवान् प्रभुः ।
 उत्तङ्कस्य नियोगाद्वै लोकानां हितकाम्यया ॥ ७५ ॥
 तस्मिन् प्रयाते दुर्द्धर्षे दिवि शम्भो महानभूत् ।
 एष श्रीमानवधोऽद्य धुन्धुमारो भविष्यति ॥ ७६ ॥
 दिव्यैर्गन्धैश्च माल्यैश्च तं देवाः समवाकिरन् ।
 देवदुन्दुभयश्चैव प्रणेदुष्टिजसत्तमाः ॥ ७७ ॥
 स गत्वा जयतां श्रेष्ठस्तनयैः सह वीर्यवान् ।
 समुद्रं खानयामास बालुकान्तरमव्ययम् ॥ ७८ ॥
 तस्य पुत्रैः खनद्विश्च बालुकान्तर्दितस्तरा ।
 धुन्धुरासादितो विप्रा दिशमावृत्य पश्चिमाम् ॥ ७९ ॥
 मुखजेनाग्निना क्रोधाह्लोकानुवृत्तयन्निव ।
 वारि सुस्त्राव वेगेन महोदधिरिषोदये ॥ ८० ॥
 सोमस्य मुनिशाद्दूला वरोर्मिकलिलो महान् ।
 तस्य पुत्रशतं दग्धं त्रिभिरूनन्तु रक्षसा ॥ ८१ ॥
 ततः स राजा द्युतिमान् राक्षसं तं महाबलम् ।
 आससाद् महातेजा धुन्धुं धुन्धुविनाशनः ॥ ८२ ॥
 तस्य वारिमयं वेगमार्पीय स नराधिपः ।
 योगी योगेन वह्निञ्च शमयामास वारिणा ॥ ८३ ॥
 निहत्य तं महाकायं बलेनोदकराक्षसम् ।
 उत्तङ्कं दर्शयामास ह्युत्कर्म्मा नराधिपः ॥ ८४ ॥

उत्तङ्कस्य वरं प्रादात्तस्मै राज्ञे महात्मने ।
 ददौ तस्याक्षयं वित्तं शत्रुमिध्वापराजितम् ॥ ८५ ॥
 धर्मे रतिञ्च सततं स्वर्गे वासं तथाक्षयम् ।
 पुत्राणां बाक्ष्याल्लोकान् स्वर्गे ये रक्षसा हताः ॥ ८६ ॥
 तस्य पुत्रास्त्रयः शिष्टा दृढाश्वो ज्येष्ठ उच्यते ।
 चन्द्राश्वकपिलाश्वौ तु कनीयांसौ कुमारकौ ॥ ८७ ॥
 धौन्धुमारैर्दृढाश्वस्य हर्ष्यश्वश्चात्मजः स्मृतः ।
 हर्ष्यश्वस्य निकुम्भोऽभूत् क्षत्रधर्मरतः सदा ॥ ८८ ॥
 संहताश्वो निकुम्भस्य सुतो रणविशारदः ।
 अक्रुशाश्वक्रुशाश्वौ तु संहताश्वसुतौ द्विजाः ॥ ८९ ॥
 तस्य हैमवतो कन्या स तां मत्वा दूषद्वती ।
 विख्याता त्रिषु लोकेषु पुत्रश्चास्याः प्रसेनजित् ॥ ९० ॥
 लेभे प्रसेनजिद्वार्या गौरीं नाम पतिव्रताम् ।
 अभिशस्ता तु सा भर्त्रा नदी वै बाहुदाभवत् ॥ ९१ ॥
 तस्य पुत्रो महानासीद्युवनाश्वो नराधिपः ।
 मान्धाता युवनाश्वस्य त्रिलोकविजयी सुतः ॥ ९२ ॥
 तस्य चैत्ररथी भार्या शशबिन्दोः सुताभवत् ।
 साध्वी बिन्दुमती नाम रूपेणासदृशी भुवि ॥ ९३ ॥
 पतिव्रता च ज्येष्ठा च भ्रातृणामयुतस्य वै ।
 तस्यामुत्पादयामास मान्धाता ह्यौ सुतौ द्विजाः ॥ ९४ ॥
 पुरुकुत्सञ्च धर्मज्ञं मुबुकुन्दञ्च पार्थिवम् ।
 पुरुकुत्ससुतस्त्वासीत्प्रसदस्युर्महोपतिः ॥ ९५ ॥

नर्मदायामथोत्पन्नः सम्भृतस्तस्य चात्मजः ।
 सम्भृतस्य तु दायादस्त्रिधन्वा रिपुमर्दनः ॥ ६६ ॥
 राक्षस्त्रिधन्वनस्त्वासीद्विद्वान्त्रय्यारुणः प्रभुः ।
 तस्य सत्यव्रतो नाम कुमारोऽभून्महाबलः ॥ ६७ ॥
 परिग्रहणमन्त्राणां विघ्नं चक्रे सुदुर्मतिः ।
 येन भार्या कृतोद्वाहा हता चैव परस्य ह ॥ ६८ ॥
 बाल्यात् कामाच्च मोहाच्च साहसाच्चापलेन च ।
 जहार कन्यां कामार्तः कस्यचित् पुरवासिनः ॥ ६९ ॥
 अधर्मशङ्कुना तेन तं स त्रय्यारुणोऽत्यजत् ।
 अपध्वंसेति बहुशो वदन् क्रोधसमन्वितः ॥ १०० ॥
 सोऽब्रवीत् पितरं त्यक्तं क गच्छामीति वै मुहुः ।
 पिता च तमथोवाच श्वपार्कः सह वर्त्तय ॥ १०१ ॥
 नाहं पुत्रेण पुत्रार्थी त्वयाद्य कुलपांसन ।
 इत्युक्तः स निराक्रामन्नगराद्वचनात् पितुः ॥ १०२ ॥
 न च तं वारयामास वसिष्ठो भगवानृषिः ।
 स तु सत्यव्रतो विप्राः श्वपाकावसथान्तिके ॥ १०३ ॥
 पित्रा त्यक्तोऽवसद्वीरः पिताप्यस्य वनं ययौ ।
 ततस्तस्मिंस्तु विषये नावर्षत् पाकशासनः ॥ १०४ ॥
 समा द्वादश भो विप्रास्तेनाधर्म्येण वै तदा ।
 दारांस्तु तस्य विषये विश्वामित्रो महातपाः ॥ १०५ ॥
 संन्यस्य सागरास्ते तु चकार विपुलं तपः ।
 तस्य पत्नी गले बद्ध्वा मध्यमं पुमञ्जीरसम् ॥ १०६ ॥

शेषस्य भरणार्थाय व्यकीणाद्गोशतेन वै ।
 तं च बद्धं गले दृष्ट्वा विक्रयार्थं नृपात्मजः ॥ १०७ ॥
 महर्षिपुत्रं धर्मात्मा मोक्षयामास भो द्विजाः ।
 सत्यव्रतो महाबाहुर्मरणं तस्य चाकरोत् ॥ १०८ ॥
 विश्वामित्रस्य तुष्ट्यर्थमनुकल्पार्थमेव च ।
 सोऽभवद्गालवो नाम गले बन्धान्महातपाः ॥ १०९ ॥
 महर्षिः कौशिको धीमांस्तेन वीरेण मोक्षितः ।
 इति श्रीब्राह्मे महापुराणे सूर्यवंशनिरुपणं नाम
 सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

— —

अष्टमोऽध्यायः ।

सूर्यवंशं वर्णनम् ।

लोमहर्षण उवाच ।

सत्यव्रतस्तु भक्त्या च कृपया च प्रतिज्ञया ।
 विश्वामिकलत्रं तु बभार विनये स्थितः ॥ १ ॥
 हृत्वा मृगान् घराहांश्च महिषांश्च वनेचरान् ।
 विश्वामित्राभ्रमाभ्यासे मांसं वृक्षे बधन्ध च ॥ २ ॥
 उपांशुव्रतमास्थाय दीक्षां द्वादशवार्षिकीम् ।
 पितुर्नियोगाद्बसत्तस्मिन् वनगते नृपे ॥ ३ ॥

अयोध्यां चैव राज्यं च तथेवान्त पुरं मुनिः
 याज्योपाध्यायसंयोगाद्बसिष्ठः पर्यरक्षत ॥ ४ ॥
 सत्यव्रतस्तु बाल्याच्च भाविनोऽर्थस्य वै बलात् ।
 बसिष्ठेऽभ्यधिकं मन्युं धारयायास नित्यशः ॥ ५ ॥
 पित्रा हि तं तदा राष्ट्रात्प्रज्यमानं प्रियं सुतम् ।
 निवारयामास मुनिर्बहुना कारणेन च ॥ ६ ॥
 पाणिग्रहणमन्त्राणां निष्ठा स्यात् सप्तमे पदे ॥ ७ ॥
 न च सत्यव्रतस्तस्माद्धतवान् सप्तमे पदे ॥
 जानन् धर्मंबसिष्ठस्तु न मां व्रातीति भो द्विजाः ।
 सत्यव्रतस्तदा रोषं बसिष्ठे मनसाकरोत् ॥ ८ ॥
 गुणबुद्ध्या तु भगवान् बसिष्ठः कृतवांस्तथा ।
 न च सत्यव्रतस्तस्य तमुपांशुमबुध्यत ॥ ९ ॥
 तस्मिन्नपरितोषञ्च पितुरासीन्महात्मनः ।
 तेन द्वादश वर्षाणि नावर्षत् पाकशासनः ॥ १० ॥
 तेन त्विदानीं विहितां दीक्षां तां दुर्वहां भुवि ।
 कुलस्य निष्कृतिर्विप्राः कृता सा वै भवेदिति ॥ ११ ॥
 न तं बसिष्ठो भगवान् पित्रा त्यक्तं न्यवारयत् ।
 अभिषेक्ष्याम्यहं पुत्रमस्येत्येवंमतिर्मुनिः ॥ १२ ॥
 स तु द्वादश वर्षाणि तां दीक्षामवहद्बली ।
 अविद्यमाने मांसे तु बसिष्ठस्य महात्मनः ॥ १३ ॥
 सर्व्वकामदुष्ठां दोग्ध्रीं स ददर्श नृपात्मजः ।
 तां वै क्रोधाच्च मोहाच्च श्रमाच्चैव क्षुधाच्चितः ॥ १४ ॥

बध्नाः पारदाश्चैव काम्बोजाः पद्मवास्तथा ।
 एते ह्यपि गणाः पञ्च हैहयार्थं पराक्रमम् ॥ ३६ ॥
 हृतराज्यस्तदा राजा स वै बाहुर्वनं ययौ ।
 पत्न्या चानुगतो दुःखी तत्र प्राप्नानवासृजन् ॥ ३७ ॥
 पत्नी तु यादवी तस्य सगर्भा पृष्ठतोऽन्वगात् ।
 सपत्न्या च गरस्तस्यै दत्तः पूर्वं किलानघाः ॥ ३८ ॥
 सा तु मर्तुश्चितां कृत्वा बध्ने तामभ्यरोहत ।
 ऊर्ध्वस्तां भार्गवो विप्राः कारुण्यात् समचारयत् ॥ ३९ ॥
 तस्याश्रमे च गर्भः स गरीणैव सहाच्युतः ।
 व्यजायत महाबाहुः सगरो नाम पार्थिवः ॥ ४० ॥
 ऊर्ध्वस्तु जातकर्मादींस्तस्य कृत्वा महात्मनः ।
 अध्याप्य वेदशास्त्राणि ततोऽस्त्रं प्रत्यपादयत् ॥ ४१ ॥
 आग्नेयं तु महाभागो अमरैरपि दुःसहम् ।
 स तेनास्त्रबलेनाजौ बलेन च समन्वितः ॥ ४२ ॥
 हैहयान् विजघानाशु क्रुद्धो रुद्रः पशूनि च ।
 आजहार च लोकेषु कीर्त्तिं कीर्त्तिमतां वरः ॥ ४३ ॥
 ततः शकांश्च यवनान् काम्बोजान् पारदांस्तथा ।
 पद्मवांश्चैव निःशेषान् कर्तुं व्यवसितो नृपः ॥ ४४ ॥
 ते बध्यमाना घीरेण सगरेण महात्मना ।
 बसिष्ठं शरणं गत्वा प्रणिपेतुर्मनीषिणम् ॥ ४५ ॥
 बसिष्ठस्त्वथ तान् दृष्ट्वा समयेन महाद्युतिः ।
 सगरं वारयामास तेषां दत्तामयं तदा ॥ ४६ ॥

सगरः स्वां प्रतिष्ठां तु गुरोर्वाक्यं निशम्य च ।
 धर्मं जघान तेषां वै वेशानन्यांश्चकार ह ॥ ४७ ॥
 अर्द्धं शकानां शिरसो मुण्डयित्वा व्यसर्जयत् ।
 यवनानां शिर सर्वं काम्बोजानां तथैव च ॥ ४८ ॥
 पारदा मुक्तकेशाश्च पहनवाः श्मश्रुधारिणः ।
 निःस्वाध्यायवस्त्रकाराः कृतास्नेन महात्मना ॥ ४९ ॥
 शका यवनकाम्बोजाः पारदाश्च द्विजोत्तमाः ।
 कोणिसर्पा माहिषका दुर्वाश्चोलाः सकेरलाः ॥ ५० ॥
 सर्वे ते क्षत्रिया विप्रा धर्मस्तेषां निराकृतः
 वसिष्ठवचनाद्राज्ञा सगरेण महात्मना ॥ ५१ ॥
 स धर्मविजयी राजा विजित्येमां वसुन्धराम् ।
 अश्वं प्रचारयामास वाजिमेधाय दीक्षितः ॥ ५२ ॥
 तस्य चारयतः सोऽश्वः समुद्रे पूर्वदक्षिणे ।
 वेलासमीपेऽपहृतो भूमिं चैव प्रवेशितः ॥ ५३ ॥
 स तं देशं तदा पुत्रैः खानयामास पार्थिवः ।
 आसेदुस्तु तदा तत्र खन्यमाने महार्णवे ॥ ५४ ॥
 तमादिपुरुषं देवं हरिं कृष्णं प्रजापतिम् ।
 विष्णुं कपिलरूपेण स्वपन्तं पुरुषं तदा ॥ ५५ ॥
 तस्य चक्षुःसमुत्थेन तेजसा प्रतिबुध्यतः ।
 दग्धाः सर्वे मुनिश्रेष्ठाश्चत्वारस्त्ववशेषिताः ॥ ५६ ॥
 बर्हिक्तेतुः सुकेतुश्च तथा धर्मरथो नृपः ।
 शूरः पञ्चनदस्त्वैव तस्य वंशकरा नृपाः ॥ ५७ ॥

प्रादाच्च तस्मै भगवान् हरिर्नारायणो वरम् ।

अक्षयं वंशमिक्ष्वाकोः कीर्त्तिं चाप्यनिवर्त्तिनोम् ॥ ५८ ॥

पुत्रं समुद्रं च विभुः स्वर्गे वासं तथाक्षयम् ।

समुद्रश्चार्घ्यमादाय वचन्दे तं महोपतिम् ॥ ५९ ॥

सागरत्वं च लेभे स कर्मणा तेन तस्य ह ।

त्वञ्चाश्वमेधिकं सोऽश्वं समुद्रादुपलब्धवान् ॥ ६० ॥

आजहाराश्वमेधानां शतं स सुमहातपाः ।

पुत्राणां च सहस्राणि षष्टिस्तस्येति नः श्रुतम् ॥ ६१ ॥

मुनय ऊचुः ।

सगरस्यात्मजा वीराः कथं जाता महाबलाः ।

विक्रान्ताः षष्टिसाहस्राः विधिना केन सत्तम ॥ ६२ ॥

लोमहर्षण उवाच ।

द्वे भार्य्ये सगरस्यास्तां तपसा दग्धकिल्बिषे ।

ज्येष्ठा विदर्भदुहिता केशिनी नाम नामतः ॥ ६३ ॥

कनीयसी तु महती पत्नी परमधर्मिणी ।

अरिष्टनेमिदुहिता रूपेणाप्रतिमा भुवि ॥ ६४ ॥

ऊर्ध्वस्नाभ्यां वरं प्रादात्तदुध्यध्वं द्विजोत्तमाः ।

षष्टिं पुत्रसहस्राणि गृह्णात्वेका नितम्बिनी ॥ ६५ ॥

एकं वंशधरं त्वेका यथेष्टं वरयत्विति ।

तत्रैका जगृहे पुत्रान् षष्टिसाहस्रसंस्तितान् ॥ ६६ ॥

एकं वंशधरं त्वेका तथेत्याह ततो मुनिः ।

राजा पञ्चजनो नम्रः शम्भुः स महापुंसि ॥ ६७ ॥

इतरा सुषुवे तुम्बीं बीजपूर्णांमिति श्रुतिः ।
 तत्र षष्टिसहस्राणि गर्भास्ते तिलसम्मिताः ॥ ६८ ॥
 घृतपूर्णेषु कुम्भेषु तान् गर्भांश्चिदधे ततः ॥ ६९ ॥
 धात्रीश्चैकैकशः प्रादात्तावतीः पोषणे नृपः ।
 ततो दशसु मासेषु समुत्तस्थुर्यथाक्रमम् ॥ ७० ॥
 कुमारास्ते यथाकालं सगरप्रीतिवर्द्धनाः ।
 षष्टिपुत्रसहस्राणि तस्यैवमभवन् द्विजाः ॥ ७१ ॥
 गर्भादलानुमध्याद्वै जातानि पृथिवीपतेः ।
 तेषां नारायणं तेजः प्रविष्टानां महात्मनाम् ॥ ७२ ॥
 एकः पञ्चजनो नाम पुत्रो राजा बभूव ह ।
 शूरः पञ्चजनस्यासीदंशुमान्नाम वीर्यवान् ॥ ७३ ॥
 दिलोपस्तस्य तनयः खट्वाङ्ग इति विश्रुतः ।
 येन स्वर्गादिहागम्य मुहूर्तं प्राप्य जीवितम् ॥ ७४ ॥
 त्रयोऽभिसन्धिता लोका बुद्ध्या सत्येन चानघाः ।
 दिलीपस्य तु दायादो महापाजो भगीरथः ॥ ७५ ॥
 यः स गङ्गां सरिच्छ्रेष्ठामवातारयत प्रभुः ।
 समुद्रमानयच्चैनां दुहितृत्वेऽप्यकल्पयत् ॥ ७६ ॥
 तस्माद्वागीरथी गङ्गा कथ्यते वंशचिन्तकः ।
 भगीरथसुतो राजा श्रुत इत्यभिविश्रुतः ७७ ॥
 नामागस्तु श्रुतस्यासीत् पुत्रः परमधार्मिकः ।
 अम्बरीषस्तु नामागिः सिन्धुद्वीपपितामहवत् ॥ ७८ ॥

अयुताजित् दायदः सिन्धुद्वीपस्य वीर्यवान् ।
 अयुताजित्सुतस्त्वासीद्वतुपर्णो महायशाः ॥ ७६ ॥
 दिव्याक्षहृदयक्षो वै राजा नलसखो बली ।
 ऋतुपर्णसुतस्त्वासीदार्क्षपर्णिर्महायशाः ॥ ८० ॥
 सुदासस्तस्य तनयो राजा इन्द्रसखोऽभवत् ।
 सुदासस्य सुतः प्रोकः सौदासो नाम पार्थिवः ॥ ८१ ॥
 ख्यातः कल्माषपादो वै राजा मित्रसहोऽभवत् ।
 कल्माषपादस्य सुतः सर्वकर्मैति विश्रुतः ॥ ८२ ॥
 अनरण्यस्तु पुत्रोऽभूद्विश्रुतः सर्वकर्मणः ।
 अनरण्यसुतो निघ्नो निघ्नोतो द्वौ बभूवतुः ॥ ८३ ॥
 अनमित्रो रघुश्चैव पार्थिवर्षभसत्तमौ ।
 अनमित्रसुतो राजा विद्वान् दुलिदुहोऽभवत् ॥ ८४ ॥
 दिलीपस्तनयस्तस्य रामस्य प्रपितामहः ।
 दीर्घबाहुर्दिलीपस्य रघुर्नाम्ना सुतोऽभवत् ॥ ८५ ॥
 अयोध्यायां महाराजो यः पुरासीन्महाबलः ।
 अजस्तु राघवो जज्ञे तथा दशरथोऽप्यजात् ॥ ८६ ॥
 रामो दशरथाज्जज्ञे धर्मात्मा सुमहायशाः ।
 रामस्य तनयो जज्ञे कुश इत्यभिसंज्ञितः ॥ ८७ ॥
 अतिथिस्तु कुशाज्जज्ञे धर्मात्मा सुमहायशाः ।
 अतिथेस्त्वभवत्पुत्रो निषधो नाम वीर्यवान् ॥ ८८ ॥
 निषधस्य नलः पुत्रो नमः पुत्रो नलस्य तु ।
 नमस्य पुण्डरीकस्तु क्षेमधन्वा ततः स्मृतः ॥ ८९ ॥

क्षेमधन्वसुतस्वासीद् वानीकः प्रतापवान् ।
 आसीदहीनगुर्नाम देवानोकात्मजः प्रभुः ॥ ६० ॥
 भहीनगोस्तु दायादः सुधन्वा नाम पार्थिवः ।
 सुधन्वनः सुतश्चापि ततो जज्ञे शलो नृपः ॥ ६१ ॥
 उक्थो नाम स धर्मात्मा शलपुत्रो बभूव ह ।
 वज्रनाभः सुतस्तस्य नलस्तस्य महात्मनः ॥ ६२ ॥
 नलो ह्यावेव विख्यातो पुराणे मुनिसत्तमाः ।
 वीरसेनात्मजश्चैव यश्चेक्ष्वाकुकुलोद्ब्रह्मः ॥ ६३ ॥
 इक्ष्वाकुवंशप्रभवाः प्राधान्येन प्रकीर्त्तिताः ।
 एते विवस्वतो वंशे राजानो भूरितेजसः ॥ ६४ ॥
 पठन् सम्यगिमां सृष्टिमादित्यस्य विवस्वतः ।
 श्राद्धदेवस्य देवस्य प्रजानां पुष्टिदस्य च ।
 प्रजावानेति सायुज्यमादित्यस्य विवस्वतः ॥ ६५ ॥
 इति श्रीब्राह्म महापुराणे आदित्यवंशानुकीर्त्तनं
 नामाष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

नवमोऽध्यायः

तत्रादौ सोमोत्पत्ति वर्णनम्

लोमहर्षण उवाच ।

पिता सोमस्य भो विप्रा जज्ञेऽन्निर्भगवानृषिः ।
ब्रह्मणो मानसात्पूर्वं प्रजासर्गं विधित्सतः ॥ १ ॥
अनुत्तरं नाम तपो येन तप्तं हि तत्पुरा ।
त्रीणि वर्षसहस्राणि दिव्यानीति हि नः श्रुतम् ॥ २ ॥
ऊर्ध्वमाचक्रमे तस्य रेतः सोमत्वमीयिवान् ।
नेत्राभ्यां वारि सुस्त्राव दशधा द्योतयन् दिशः ॥ ३ ॥
तं गर्भं विधिनादिष्टो दश दैव्यो ददुस्ततः ।
समेत्य धारयामासुर्न च ताः समशक्नुवन् ॥ ४ ॥
यदा न धारणे शक्तास्तस्य गर्भस्य ता दिशः ।
ततस्ताभिः स त्यक्तस्तु निपपात वसुन्धराम् ॥ ५ ॥
पतितं सोममालोक्य ब्रह्मा लोकपितामहः ।
रथमारोपयामास लोकानां हितकाम्यया ॥ ६ ॥
तस्मिन्निपतिते देवाः पुत्रेऽन्नेः परमात्मनि ।
तुष्टुबुध्न्ये पुत्रास्तथान्ये मुनिसत्तमाः ॥ ७ ॥
तस्य संस्तूयमानस्य तेजः सोमस्य भास्वतः ।
आप्यायनाय लोकानां भावयामास सर्वतः ॥ ८ ॥

स तेन रथमुख्येन सागरान्तां वसुन्धराम् ।
 त्रिःसप्तकृतवोऽतिथशाश्वकाराभिप्रदक्षिणाम् ॥ ६ ॥
 तस्य यच्चरितं तेजः पृथिवीमन्वपद्यत ।
 ओषध्यस्ताः समुद्भूता यामिः सन्धार्यते जगत् ॥ १० ॥
 स लभ्रतेजा भगवान् संस्तवैश्च स्वकर्मभिः ।
 तपस्तेपे महाभागः पद्मानां दर्शनाय सः ॥ ११ ॥
 ततस्तस्मै दशै राज्यं ब्रह्मा ब्रह्मविदांवरः ।
 वीजौषधीनां विप्राणामपां च मुनिसत्तमाः ॥ १२ ॥
 स तत्प्राप्य महाराज्यं सोमः सौम्यवतांवरः ।
 समाजहे राजसूयं सहस्रशतदक्षिणम् ॥ १३ ॥
 दक्षिणामददात् सोमस्त्रील्लोकानिति नः श्रुतम् ।
 तेभ्यो ब्रह्मर्षिमुख्येभ्यः सदस्येभ्यश्च भो द्विजाः ॥ १४ ॥
 हिरण्यगर्भो ब्रह्मात्रिभृगुश्च ऋत्विजोऽभवत् ।
 सदस्योऽभूद्धरिस्तत्र मुनिभिर्वहुभिर्वृतः ॥ १५ ॥
 तं सिनीश्च कुहूश्चैव द्युतिः पुष्टिः प्रभा वसुः ।
 कीर्त्तिर्धृतिश्च लक्ष्मीश्च नव देव्यः सिपेचिरै ॥ १६ ॥
 प्राप्यावभृथमप्यग्नं सर्व्वदेवर्षिपूजितः ।
 बिरराजाधिराजेन्द्रो दशधा भासयन् दिशः ॥ १७ ॥
 तस्य तत्प्राप्य दुष्प्राप्यमैश्वर्य्यमृषिसत्कृतम् ।
 विबभ्राम मतिस्ताताचिनयादनयाहता ॥ १८ ॥
 बृहस्पतेः स वै भार्य्यामैश्वर्य्यमदमोहितः ।
 जहार तरसा सोमो विमत्याङ्गिरसः सुतम् ॥ १९ ॥

स याच्यमानो देवैश्च तथा देवर्षिभिर्मुहुः ।
 नैव व्यसज्जयत्तारां तस्मा आङ्गिरसे तदा ॥ २० ॥
 उशना तस्य जग्राह पार्णिमाङ्गिरसस्तथा ।
 रुद्रश्च पार्णिं जग्राह गृहीत्वा जगत्वं धनुः ॥ २१ ॥
 तेन ब्रह्मशिरो नाम परमास्त्रं महात्मना ।
 उद्दिश्य देवानुत्सृष्टं येनैषां नाशितं यशः ॥ २२ ॥
 तत्र तद्व्युद्धमभवत् प्रख्यातं तारकामयम् ।
 देवानां दानवानाञ्च लोकक्षयकरं महत् ॥ २३ ॥
 तत्र शिष्टाश्च ये देवास्तुषिताश्चैव ये द्विजाः ।
 ब्रह्माणं शरणं जग्मुर्वादिदेवं सनातनम् ॥ २४ ॥
 तदा निवार्योशनसं तं वै रुद्रञ्च शङ्करम् ।
 ददावाङ्गिरसे तारां स्वयमेव पितामहः ॥ २५ ॥
 तामन्तःप्रसवां दृष्ट्वा क्रुद्धः प्राह बृहस्पतिः ।
 मदीयायां न ते योनीं गर्भो धार्यः कथञ्चन ॥ २६ ॥
 इषीकास्तम्बमासाद्य गर्भं सा चोत्ससज्ज ह ।
 जातमात्रः स भगवान् देवानामाक्षिपद्वपुः ॥ २७ ॥
 ततः संशयमापन्नास्तारामूचुः सुरोत्तमाः ।
 सत्यं ब्रूहि सुतः कस्य सोमस्याथ बृहस्पतेः ॥ २८ ॥
 पृच्छ्यमाना यदा देवैर्नाह सा विबुधान् किल ।
 तदा तां शप्तुमारब्धः कुमारो दस्युहन्तमः ॥ २९ ॥
 तं निवार्य ततो ब्रह्मा तारां पप्रच्छ संशयम् ।
 यदत्र तथ्यं तद्वन्न हि तारे कस्य सुतस्त्वयम् ॥ ३० ॥

उवाच प्राञ्जलिः सां तंसोमस्येति पितामहम् ।
तदा तं मूर्ध्निचाघ्राय सोमो राजा सुतंप्रति ॥ ३१ ॥
बुध इत्यकरोन्नाम तस्य बालस्य धीमतः ।
प्रतिकूलञ्च गगने समभ्युत्तिष्ठने बुधः ॥ ३२ ॥
उत्पादयामास तदा पुत्रं वै राजपुत्रिकाम् ।
तस्यापत्यं महातेजा बभूवैलः पुरुषाः ॥ ३३ ॥
उर्वश्यां जज्ञिरे यस्य पुत्राः सप्त महात्मनः
एतन् सोमस्य वो जन्म कीर्त्तितं कीर्त्तिवर्द्धनम् ॥ ३४ ॥
वंशमस्य मुनिश्रेष्ठाः कीर्त्त्यमानं निबोधत ।
धन्यमायुष्यमारोग्यं पुण्यं सङ्कल्पसाधनम् ॥ ३५ ॥
सोमस्य जन्म श्रुत्वैव पापेभ्यो विप्रमुच्यते ॥
इति श्रोत्राह्नौ महापुराणे सोमोत्पत्तिकथनं नाम
नवमोऽध्यायः ॥ ६ ॥

दशमोऽध्यायः

तत्रादौ सोमवंशवर्णनम्

लोमहर्षेण उवाच ।

बुधस्य तु मुनिश्रेष्ठा विद्वान् पुत्रः पुरुषाः ।
तेजस्वी दानशीलश्च यज्वा विपुलदक्षिणः ॥ १ ॥
ब्रह्मवादी पराक्रान्तः शत्रुभिर्युधि दुर्दमः ।
आहर्त्ता चाग्निहोत्रस्य यज्ञानाञ्च महीपतिः ॥ २ ॥